CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी

संवत् २०५६ १६ नवम्बर १९९९

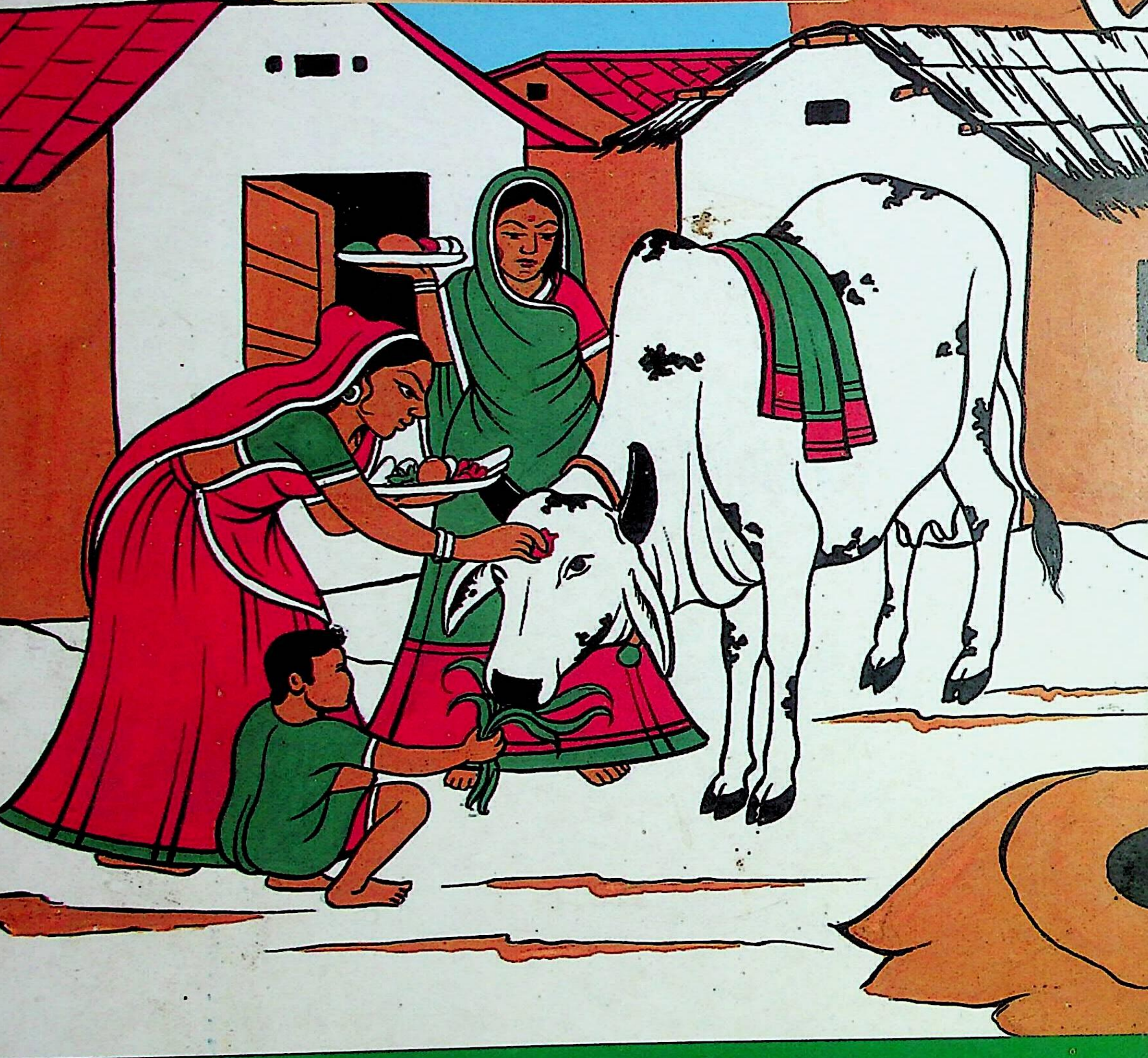

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

शाखा : सदर (गोलघर), गोकुल (बावनबीघा), सारंग, रामेश्वर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From

RKBK

Radhakrishna Bimalkumar Limited
C.26/35, Ramkatora, Varanasi-221 001
Ph. : 343668, 342414, 346217 Fax : 0542-348579

DEALING IN

Kerosene, Petrol, Diesel, Mobil Oil, Fertilizer, Cement & Tea

Regd. Office : 216, Acharya Jagadish Chandra Bose Road, CALCUTTA-700 017
Ph. 247-0818, 0969 Gram : Sambhavit

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

प्रधान कार्यालय
के० ४०/२५, दुलहिनजी रोड, गोलघर, वाराणसी-२२१ ००१

शाखाएँ

सदर (गोलघर)	फोन : ३३३४१३
गोकुल (बावनबीघा)	फोन : ५८५६०३
सारंग	
रामेश्वर	फोन : ६२४२६६
मधुबन	फोन : ६२४३६८
वृन्दावन	
पाँचो शिवाला	फोन : ६२४२६७

११३वाँ वार्षिक कार्य-विवरण

संवत् २०५५-५६

गोपाष्टमी, संवत् २०५६
मंगलवार, १६ नवम्बर, १९९९

सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी
श्रीराम माहेश्वरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शासक-मण्डल (सन् १९९९-२००० ई०)

श्री राधेश्याम खेमका	*अध्यक्ष*
श्री राजकुमार जैन	*उपाध्यक्ष*
श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा	*मंत्री*
श्री रघुनाथप्रसाद प्रहलादका	*उपमंत्री*
श्री मातादीन अग्रवाल	*कोषाध्यक्ष*

सदस्य

श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	श्री गोपीकुमार सिंघानिया
श्री गगनेन्द्र केडिया	श्री राजकुमार साह
श्री परमानन्द सर्राफ	श्री काशीनाथ चौधरी
श्री नन्दलाल जालान	श्री कुंजबिहारी गुप्त
श्री दीनदयाल जालान	श्री प्रभातकुमार ढ़ाँढ़निया

प्रबन्धकारिणी समिति (सन् १९९९-२००० ई०)

श्री रामकुमार रूँगटा	*संरक्षक*
श्री श्रीगोपाल गोयल	*सभापति*
श्री राधेकृष्ण अग्रवाल	*उपसभापति*
श्री मुकुन्दलाल टण्डन	*उपसभापति*
श्री रामअवतार अग्रवाल	*प्रधानमंत्री*
श्री लोकेन्द्र करवा	*उपप्रधानमंत्री*
श्री अंजनीकुमार सर्राफ	*कोषाध्यक्ष*
श्री मोहनलाल लढ़िया	*कृषिमंत्री*

सदस्य

श्री भरत लढ़िया	श्री सूर्यकान्त जालान
श्री श्रीराम माहेश्वरी	श्री मुरारीलाल डिडवानिया
श्री आनन्द ड्रोलिया	श्री रामजीलाल चांडक
श्री भगवती अग्रवाल	श्री भरत सर्राफ
श्री शशिकान्त तिवारी	श्री कमलेश बाजोरिया
श्री भूपेन्द्र वालिया	श्री मांगी लाल सारडा

श्री कैलाश चौधरी

आय-व्यय निरीक्षक

दीपक यशदीप एण्ड कम्पनी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशाला विकास समिति (१९९९-२०००)

रामेश्वर शाखा

नाम	पद	निवास	कार्यालय
श्री सत्यनारायण अग्रवाल	*संयोजक*	३३०६०४, ३३०९०६	३३०६०४, ३३०९०६
श्री अशोक जालान	*सह-संयोजक*	३८२०२१	३८२०२१
श्री संजीव अग्रवाल		३८२२२५	३८२९४१
श्री संजीव जायसवाल		३८२१०९	३८२१०९
श्री संतोष जायसवाल		५८६२१६	५८६२१६
श्री रामस्वरूप अग्रवाल		३३३५६३, ३३०३१३	३३०६८७
श्री हरिशंकर जालान		३३०२९४	३३००८५
श्री विजय अग्रवाल		३११३०३	३८३८८०
श्री अनूप सर्राफ		३१४९८८	३२१४१६

गोलघर, बावनबीघा शाखा

श्री देवेन्द्र बजाज		३५५००१	—
श्री मदनमोहन बल्दुआ		२२०९२१	—
श्री दीपक भौतिका		३२१७१९	३२१७१८
श्री पुरुषोत्तम धानुका		३१३०३६	—
श्री राजकुमार चौधरी		—	३९०२३१
श्री आनन्दस्वरूप अग्रवाल		३३०३१३, ३३३५६३	३३०८१६
श्री शिवशंकर अग्रवाल		३१४११९	३३१६७०
श्री मोहनदास एडवोकेट		३३०१९४	३३०१९४
श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शासक मण्डल (१९९९-२०००)

नाम	पद	निवास	कार्यालय
श्री राधेश्याम खेमका	*अध्यक्ष*	३५१४०७, ३५०२८४, ३५७१७०	३५३९५२ ३५३५४६, ३५४८२६
श्री राजकुमार जैन	*उपाध्यक्ष*	३२०६४६	३३०९७८
श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा	*मंत्री*	३३३३२६, ३३४७८८	३३०६१०
श्री रघुनाथप्रसाद प्रहलादका	*उपमंत्री*	३५३८०६	३५३८०६
श्री मातादीन अग्रवाल	*कोषाध्यक्ष*	३६०८६१, ३६०८६२, ३६३८६४	—
श्री पुरुषोत्तमदास मीदी	*सदस्य*	३३२५६६, ३३४३४९	३५३७४१, ३५३०८२
श्री गोपीकुमार सिंघानिया	*सदस्य*	३४३०७७, ३४८६९७	३५१२८२, ३५१२८४
श्री गगनेन्द्र केडिया	*सदस्य*	२२०३८७, २२०३८९	३५२९७५, ३५९२६८
श्री राजकुमार साह	*सदस्य*	२२००७३	३५८३८१, ३५८३८४
श्री परमानन्द सर्राफ	*सदस्य*	३६०१३८	३२०१३०, ३२०१४०, ३२०९२०
श्री काशीनाथ चौधरी	*सदस्य*	३२१८७४	३२०१७७
श्री नन्दलाल जालान	*सदस्य*	३२७९५४	—
श्री कुंजबिहारी गुप्त	*सदस्य*	३५४६६०	—
श्री दीनदयाल जालान	*सदस्य*	३१००७१, ३१००७२	३५२९४२, ३५२९४३
श्री प्रभातकुमार ढ़ांढ़निया	*सदस्य*	२२०९९७, २२०९९८	—

प्रबन्धकारिणी समिति (१९९९-२०००)

श्री रामकुमार रूँगटा	*संरक्षक*	३१४७०५	—
श्री श्रीगोपाल गोयल	*सभापति*	३११४१५, ३११३१५	३११७१५, ३१३६१५
श्री राधेकृष्ण अग्रवाल	*उपसभापति*	३२०६३६, ३९३७९७	३२०१३४, ३९३६७४
श्री मुकुन्दलाल टण्डन	*उपसभापति*	३५३३९५, ३५३३७७	३५३३९५
श्री रामअवतार अग्रवाल	*प्रधानमंत्री*	२११०६१	३५१९१३, ५५१९१४
श्री लोकेन्द्र करवा	*उपप्रधानमंत्री*	३७००७१, ३७००७२	मोबाइल : ९८३९०४०९३४
श्री अंजनीकुमार सर्राफ	*कोषाध्यक्ष*	३३३५५४	३२०१३०, ३२०१४०
श्री मोहनलाल लढ़ा	*कृषिमंत्री*	३३१५६३	३३५९८८
श्री भरत लड़िया	*सदस्य*	३५९४६१	३२०१४३, ३२५५९२ मोबाइल : ९८३९०५८६२५
श्री सूर्यकान्त जालान	*सदस्य*	३१००७१, ३१००७२	३५२९४२, ३५५६००
श्री श्रीराम माहेश्वरी	*सदस्य*	३४८६१४	३३३१३२, ३३१२७०
श्री मुरारीलाल डिडवानिया	*सदस्य*	२२१२३७	३५३८५१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाम	पद	निवास	कार्यालय
श्री आनन्द ड्रोलिया	सदस्य	३३००२५, ३३१८४४	३३१९४४
श्री रामजीलाल चांडक	सदस्य	३६०१३१, ३६११३१	३२०१०१
श्री भगवती अग्रवाल	सदस्य	३११११३	३२०११३, ३२७९४२
श्री भरत सर्राफ	सदस्य	३१३८३१	३२००४८
श्री शशिकान्त तिवारी	सदस्य	—	३३४०७५
श्री कमलेश बाजोरिया	सदस्य	३६२२३१	३३०९५३, मोबाइल : ९८३८०४५३२१
श्री भूपेन्द्र वालिया	सदस्य	३१०७३२	३५३४३०, ३२५६४५
श्री मांगीलाल सारडा	सदस्य	३६३९११	३२०२७०, ३२८०९८
श्री कैलाश चौधरी	सदस्य	३२०१७७	३२१८७४

सम्पादकीय आभार

- लेखकों के प्रति जिनकी लेखनी ने स्मारिका को समृद्ध किया।
- श्री श्रीनाथ शर्मा के प्रति जिनकी तूलिका ने मुखपृष्ठ का शृंगार किया।
- आचार्य शरदकुमार साधक के प्रति उनके परामर्श एवं आत्मीय सहयोग के लिए, डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह, डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र, श्री कैलाश पाण्डे, श्री शशिनाथ पाण्डे के प्रति उनके सहयोग के लिए।
- कल्याण, गोग्रास, गोधन, आचार्यकुल, आरोग्य, अहिंसक खेती, दैनिक जागरण, आज, गाण्डीव, राष्ट्रीय सहारा के प्रति
- विज्ञापनदाताओं के प्रति श्रद्धा-ज्ञापन हेतु।
- सर्वश्री वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा०लि० के प्रति मुद्रण, साज-सज्जा के लिए।
- श्री श्रीगोपाल गोयल (अध्यक्ष, प्रबन्धकारिणी समिति) के प्रति उनके स्नेहसिक्त सहयोग के लिए।
- श्री बृजमोहन मूंदड़ा (मंत्री, शासक मण्डल) के प्रति जिनका सब प्रकार का सहयोग हर क्षण उपलब्ध रहा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

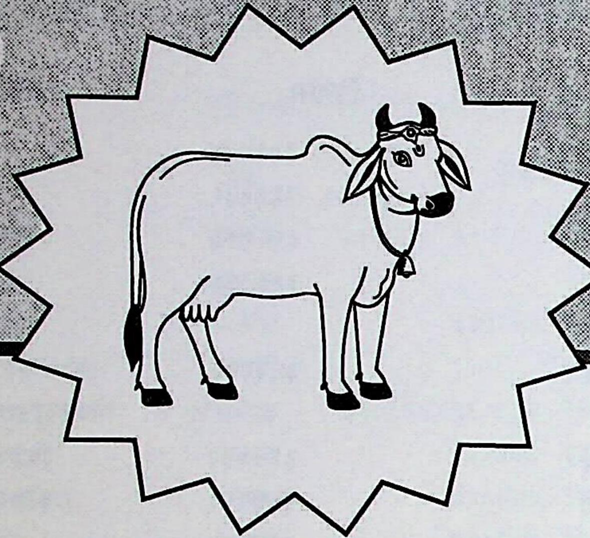

महर्षि दयानन्द के कथनानुसार तो गाय की हत्या करके एक समय में केवल २० व्यक्तियों को ही भोजन दिया जा सकती है, जबकि वही गाय अपने पूरे जीवनकाल में कम-से-कम २०,००० लोगों को अपने दूध से अमृततुल्य तृप्ति प्रदान कर सकती है।

With Best Compliments on Gopashtmi

Hast Kala

Exclusive Sarees

3, Tirupati Apartment, Bhulabhai Desai Road
Opp. Mahalaxmi Temple
MUMBAI-400 026
Phone : 4973258, 4932853

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

		पृष्ठ
१. निवेदन	श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा	1
२. गोलघर, गोकुल, सारंग शाखा का कार्यवृत्त	श्री भरत लढ़िया	3
३. रामेश्वर शाखा का कार्यवृत्त	श्री सूर्यकान्त जालान	4
१. गो-सेवा से भगवत-प्राप्ति	बालव्यास पं० श्रीकान्त शर्मा	१
२. गोसेवा का नया प्रतिमान	डॉ० विद्यानिवास मिश्र	२
३. गाय का अर्थशास्त्र	श्री भरत झुनझुनवाला	३
४. भावी विश्व-व्यवस्था में गोवंश की भूमिका	श्री शरदकुमार साधक	५
५. गोवंश की रक्षा : राष्ट्ररक्षा	डॉ० कपिलदेव पाण्डेय	८
६. गोरक्षा पर राष्ट्रपिता बापू के चिंतन	श्री श्रीगोपाल गोयल	११
७. गाय का दूध कैसे बढ़ाएँ?	श्री आनन्द ड्रोलिया	१६
८. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा के लिये पूर्ण गोहत्या-बंदी आवश्यक	श्री राधेश्याम खेमका	१७
९. गाय और गोपाष्टमी	श्री दीनानाथ झुनझुनवाला	२०
१०. गाय का शास्त्रीय विवेचन	डॉ० देवीप्रसाद द्विवेदी	२२
११. भगवान बुद्ध का गौ प्रेम	डॉ० प्रेमनारायण स्वामी	२४
१२. सिक्ख-पंथ और गोभक्ति	सरदार जसवन्त सिंह	२५
१३. जिसने हमारी गाय बनाई	मौलवी मु० इस्माईल	२६
१४. भारतीय कृषि का आधार गाय	डॉ० मणिशंकर उपाध्याय	२७
१५. नन्हे कदम गोमाता के नाम पर	श्री भरत लढ़िया	२८
१६. गोरस भण्डार	श्रीराधाकृष्ण बजाज	२९
१७. कृपया जर्सी गाय न पालें	श्री वेदव्यास गौशाला समिति	३१
१८. विदेशी नस्ल से देसी नस्लों का संकरीकरण हानिकारक	श्री परमानन्द मित्तल	३२
१९. प्रत्यक्षस्य किं प्रमाणम्	श्री माताप्रसाद जायसवाल	३३
२०. गोमूत्र का चमत्कार	श्री परसुराम हंस	३३
२१. गोविकास की चुनौतियाँ	श्री भवानीशंकर सिंह	३४
२२. गाय, प्यारे राष्ट्र का जीवन रही है	श्रीवास्तव 'सुधाकर'	३५
२३. पशुओं को हरा चारा क्यों	श्री एस०एन० सिंह	३६
२४. दूध की शुद्धता परखने की सरल विधि		३७
२५. डेयरी प्रदूषण उन्मूलक नया खमीर	श्री मातादीन अग्रवाल	३८
२६. कीट उन्मूलन के घरेलू नुस्खे	श्री इमान्युएल वांगिबे	३९
२७. गोबर और गोमूत्र से खाद बनाना सीखें	श्री महेन्द्र बुम	४०
२८. ट्रैक्टर और पर्यावरण	डॉ० सुशीला नायर	४१
२९. दूध में रसायनों की मिलावट	डॉ० राकेश अग्रवाल	४२
३०. ऋषि-कृषि का मूल आधार अमृत पानी	डॉ० ओ०एन० सोलंकी	४३
३१. गोबर एवं गोमूत्र के विविध उपयोग	श्री लोकेन्द्र करवा	४४
३२. मांगलिक अवसरों पर स्वास्थ्य एवं आयुवर्धक पेय	श्री देवेन्द्र बजाज	४४
३३. गोमाता	श्री जगदीश चन्द्र अरोड़ा	४५
३४. अब्दुल मियां की गाय माता	श्री मोहनलाल लढ़ा	४७
३५. अहिंसा की भावना	श्री गुमानमल लोढ़ा	४८
३६. भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड	श्री गुमानमल लोढ़ा	५०
३७. गोमाता की जय हो	डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र	५१
३८. गोशालाओं की प्रासंगिकता	श्री सूर्यकान्त जालान 'कानू'	५४
३९. गोबर की राख से बर्तनों की सफाई क्यों?	श्री रघुनाथप्रसाद	५५
४०. कीटनाशकों का विष जलस्रोतों तक पहुँच रहा है।	श्री रामजीलाल चांडक	५५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

		पृष्ठ
४१. कृषक वन्दना	श्री अमिताभ	५६
४२. पंचगव्य : अमृत महौषधि के उपयोग का विधान कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को	श्री शान्तिलाल जैन	५६
४३. प्रणाम तुम्हें गोमाता	श्री राजकुमार केजरीवाल	५७
४४. आस्था और आवश्यकता से जुड़े प्रश्नों की तलाश		५८
४५. गायों के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा	डॉ० यू०एन० सिंह	६१
४६. अनजान में गोहत्या के भागीदार होने से बचें	श्री वीरेन्द्रकुमार धुरारिया	७८

		पृष्ठ
४७. सृष्टि सन्तुलन और गाय	श्री नरेन्द्र दूबे	७९
४८. गोग्रास का महत्त्व	डॉ० वामदेव मिश्र	८५
४९. दानदाताओं का विवरण (१९९८-९९)		८७
५०. गौओं की सेवा	श्री हरिशंकर जालान	९५
५१. आय-व्यय (१९९८-९९)		९७
५२. गृहणियों की गो-सेवा	डॉ० सुमन जैन	१०५
५३. गोपालकों से भेंटवार्ता		१०७
५४. विगत १५वर्षों में शासक मण्डल तथा प्रबन्धकारिणी समिति		१०८
५५. गाय	श्री श्यामकुमारदास	१०९

✤

गोपाष्टमी स्मारिका

संवत् २०५५-५६

प्रकाशक

ब्रजमोहन मूँदड़ा

मंत्री

शासक मण्डल

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

वाराणसी

मुद्रक

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा०लि०

चौक, वाराणसी-२२ १००१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निवेदन

गोशालाओं के संचालन हेतु आर्थिक स्रोत का मुख्य आधार दान से प्राप्त सहयोग है। केवल इस पर आश्रित रहने से निकट भविष्य में गोशालाओं का संचालन संदिग्ध हो जाएगा। अत: गोशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने की कार्य योजना पर अमल शुरू करना होगा।

आस्था, अनुकूल परिस्थितियाँ तथा आर्थिक लाभ किसी व्यवस्था को संचालित करने के लिए आवश्यक तत्त्व हैं। गोपालन के सन्दर्भ में गाय के प्रति आस्था जगजाहिर है। गाय के चरने के लिए चारागाह अनकूल परिस्थितियों की श्रेणी में आता है, गो-दुग्ध का उचित मूल्य, गोबर-गोमूत्र का उचित मूल्य अथवा उसके उपयोग से रासायनिक खाद कीटनाशक दवाओं पर होने वाले खर्च की बचत आर्थिक लाभ के पहलू है। इसलिए यह आवश्यक है कि, निम्नलिखित योजनाओं का कार्यान्वयन किया जाय—

१. नगरीय क्षेत्रों में गोवंश के गोबर-गोमूत्र का संग्रह और विपणन शुरू हो।
२. ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर-गोमूत्र का खाद और कीटनाशक के रूप में प्रयोग को बढ़ावा देने की योजना। केवल गोबर के उपयोग से उत्पादित अनाज, साग-सब्जी का अपेक्षाकृत अधिक मूल्य दिलाने के लिए उनका विपणन।
३. गोबर गैस प्लांट को प्रोत्साहन। पोर्टेबुल गोबर-गैस प्लांट की कल्पना पर चिन्तन।

गोशालाओं को अपनी भूमि के कुछ भाग पर रासायनिक खाद से विरत रहकर गोबर की खाद का उपयोग करते हुए खाद्यान्न, फल, साग-सब्जी का उत्पादन करके उनकी मार्केटिंग करना चाहिए। शेष भूमि पर इतना हरा चारा उत्पन्न करना चाहिए, कि अपने गोवंश की खपत के बाद बचे हुए हरे चारे को अन्य गोपालकों को सुलभ कराया जा सके। इससे गोवंश को हरा चारा सुलभ होगा तथा गोपालकों का गोशालाओं से जुड़ाव बढ़ेगा।

गोशालाओं को अपनी भूमि पर जैविक खाद का उपयोग करते हुए उच्चकोटि के बीजों का उत्पादन तथा विक्रय करना चाहिए। गोशाला को मिलने वाली प्रत्येक सहयोग-राशि का उपयोग उसी मद में होना चाहिए जिस मद के लिए वह सहयोग प्राप्त हुआ हो।

श्री सूर्यकान्त जालान (कानूबाबू) ने 'काशी गोशाला' की रामेश्वर शाखा का १२ वर्षों तक अपने अप्रतिम योगदान के साथ अपूर्व संचालन किया। गोशाला के इतिहास में उनकी भूमिका सदैव याद की जाएगी। उनकी सेवाओं से प्रभावित होकर उ० प्र० सरकार ने उन्हें उ० प्र० गो-सेवा-आयोग का उपाध्यक्ष मनोनीत किया है, पूरे गोशाला परिवार के लिए यह गर्व का विषय है। पूरे प्रदेश में 'कानू बाबू' के कार्य क्षेत्र का विस्तार होने, उनकी अति व्यस्तता तथा उनकी पारिवारिक मजबूरियों के कारण इस सत्र से रामेश्वर शाखा का संचालन 'प्रबन्धकारिणी समिति' द्वारा किया जा रहा है। हमें आशा है कि गोशाला परिवार को उनका सहयोग भविष्य में भी मिलता रहेगा।

गोभक्त दानदाताओं के सहयोग से गो-ग्रास सुलभ होता है, जिससे व्यवस्था-संचालन का भार उठाना संभव होता है, स्थायी निर्माण खड़े होते हैं, गोरक्षण-गोपालन-गोसंवर्धन की विविध योजनाएँ संचालित होती हैं, वन्दनीय हैं। दाताओं के मन में गो-सेवा का भाव उदीप्त करने वाले तथा गोशाला के प्रबन्ध में समय देने वाले गो-भक्तों का महत्त्व अभिनन्दनीय है।

अपने चिन्तन, कृतृत्त्व और लेखनी से गो-उपासना में निमग्न मनीषियों का उपकार मानना हमारा धर्म है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आचार्य शरदकुमार साधक के बहुआयामी सहयोग से 'काशी गोशाला' लाभान्वित हुई है।

हम आभारी हैं गो-दुग्ध प्रेमियों के जिनके सहयोग से दूध का उचित मूल्य प्राप्त करने का हमारा प्रयास सफलता की ओर अग्रसर है।

मैं प्रबन्धकारिणी समिति तथा विकास-समिति के सदस्यों का आभारी हूँ जो मेरे साथ सहयोग करने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री श्रीगोपालजी गोयल तथा निवर्तमान प्रधानमंत्री श्री भरत लढ़िया और वर्तमान प्रधानमंत्री श्री रामअवतार अग्रवाल का योगदान गोशाला-परिवार का गौरव बढ़ाता है। आकस्मिक आवश्यकता खड़ी होने पर श्री श्रीगोपाल गोयल तथा श्री भरत लढ़िया सहयोग हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। गोशाला की किसी समिति में न रहते हुए भी श्री वीरेन्द्र कुमार भुरारिया गोशाला के हित-चिन्तन में सदैव प्रस्तुत रहते हैं।

गोशाला की प्रबन्ध-व्यवस्था में श्री मोहनलाल लढ़ा, श्री अंजनी सर्राफ तथा श्री मुरारीलाल डिडवानिया की पहचान नए उभड़ते हुए सहयोगियों के रूप में हो रही है। प्रशासनिक सहयोग प्राप्त करने में श्री नवरतन राठी के योगदान के लिए हम आभारी हैं।

गोशाला संचालन के बौद्धिक कार्यों में श्री श्रीराम माहेश्वरी की प्रमुख भूमिका रही है। समारोह आयोजन, संचालन यहाँ तक की स्मारिका प्रकाशन उनके बिना संभव नहीं, उनके प्रति आभार नहीं साधुवाद अपेक्षित है।

शासक मण्डल के अध्यक्ष श्री राधेश्याम खेमका उपाध्यक्ष श्री राजकुमार जैन, 'मण्डल' के सदस्य श्री पुरुषोत्तमदास मोदी तथा श्री दीनदयाल जालान के प्रति उनके योगदान के लिए मैं आभारी हूँ। 'मण्डल' के कोषाध्यक्ष श्री मातादीन अग्रवाल का गोशाला के संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

गोशाला की प्रबन्ध व्यवस्था में श्री भवानी सिंह, डॉ० यू०एन० सिंह, श्री एस०एन० सिंह का सहयोग रचनात्मक परिणाम में सहायक होता है। गोशाला की सभी शाखाओं के व्यवस्था-प्रबन्धक और गो-सेवकों के अनुकूल सहयोग से ही गोशाला का सुगम-संचालन संभव है।

मैं काशी की जनता और पत्रकार बन्धुओं द्वारा दिए गए सहयोग और स्नेह के लिए अत्यन्त आभारी हूँ।

ब्रजमोहन मूँदड़ा
मंत्री
गोशाला-शासक-मण्डल

काशी गोशाला की रामेश्वर शाखा
की
कामधेनु
सेठ किशोरीलाल जालान सेवा ट्रस्ट

रामेश्वर शाखा की दैनन्दिनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा वृहद् शोध-कार्यों के लिए विपुल धनराशि की सदैव आवश्यकता बनी रहती है। गो-भक्तों से प्राप्त सहयोग से उसके कुछ अंश की ही पूर्ति हो पाती है, शेष जब जितने आर्थिक सहयोग की आवश्यकता पड़ी, कामधेनु गाय की भाँति सेठ किशोरीलाल जालान सदैव उसकी पूर्ति करता रहा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोलघर, गोकुल, सारंग शाखा का कार्यवृत्त

(०१.०७.९८ से ३०.०६.९९)

बावनबीघा शाखा में भू-भाग पर रासायनिक खाद के प्रयोग से विरत रहकर गोबर की खाद का उपयोग करते हुए गेहूँ और हल्दी का उत्पादन किया गया। इन दोनों उत्पादों की गुणवत्ता की सबने सराहना की तथा बाजार में प्रचलित मूल्य से अधिक मूल्य देकर खरीदा। यह इस बात को प्रमाणित करता है कि अपने देश में भी गोबर की खाद से उत्पन्न वस्तुओं को अपेक्षाकृत अधिक मूल्य देकर खरीदने वाले उपभोक्ताओं का वर्ग तैयार हो रहा है। श्री श्रीगोपाल जी गोयल ने देसी नस्ल के उन्नत साँड़ तैयार करने के लिए हरियाणा नस्ल के उच्च श्रेणी के बाछे दिए तथा साँड़ बनने तक उनके भरण-पोषण का वे दायित्व उठा रहे हैं। देसी नस्ल की गायों के विकास-क्रम को आगे बढ़ाने के लिए हरियाणा नस्ल की ६ गौएँ इस वर्ष ली गई हैं, इन्हें मिलाकर देसी नस्ल की ४० गाएँ हो गईं। श्री राधेश्याम खेमका द्वारा अपने पिता स्व० श्री सीतारामजी खेमका की स्मृति में निर्मित कराए जा रहे ओवर हेड वाटर टैंक तथा उसके नीचे बारादरी एवं सभाकक्ष के निर्माण का कार्य पूरा हो गया है।

गोपाष्टमी उत्सव '९८ में माननीय ओमप्रकाश सिंह (सिंचाई एवं गन्ना विकास मंत्री-उ० प्र०) तथा माननीय भरत झुनझुनवाला (विख्यात अर्थ विश्लेषक) तथा ऋषि स्वरूप डॉ० भगवानदास अरोड़ा (संस्थापक सम्पादक गाण्डीव) तथा माननीय गुमानमलजी लोढ़ा (पूर्व न्यायाधीश एवं सांसद तथा अध्यक्ष, जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई) का सदर (गोलघर) और बावनबीघा शाखा में स्वागत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

शासक मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री मातादीन अग्रवाल का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है। कार्य हेतु प्रेरित करने तथा कार्य के क्रियान्वयन में अग्रणी रहकर प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों को उसमें भागीदार बनाने हेतु शासक मण्डल के मंत्री श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा का कृतज्ञ हूँ। ऊर्जा और दक्षता से प्राप्त यश को पूरे गोशाला-परिवार में बाँटते रहने की उनकी भावना सराहनीय है। गोशाला परिवार के सभी अंगों में समन्वय स्थापित करने में उनका धैर्य और सूझ-बूझ गोशाला के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होती है।

मैं प्रबन्धकारिणी समिति के सभी सदस्यों का उनके योगदान के लिए आभारी हूँ। 'समिति' के निरन्तर सक्रिय और उदारमना अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल गोयल, समिति के सदस्य श्री रामअवतार अग्रवाल व श्री मोहनलाल लढ़ा का विशेष योगदान मिला, मैं इनका हृदय से आभारी हूँ।

गत कई वर्षों से गो-राशन की आपूर्त्ति की निर्विघ्न-सुचारु व्यवस्था श्री ब्रजेश माहेश्वरी के माध्यम से हो रही है, इसके लिए उन्हें धन्यवाद!

सभी शाखाओं के व्यवस्थापकों तथा गो-सेवक अपने-अपने कार्यों के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। दुग्ध-हाकरों के माध्यम से दुग्ध-वितरण व्यवस्था सुचारु रूप से चल पाती है, उनकी नियमबद्धता सराहनीय है।

अन्त में गोमाता को नमन है, जिसने सेवा करने का अवसर प्रदान कृतार्थ किया।

भरत लढ़िया
प्रधानमंत्री
प्रबन्धकारिणी समिति, सत्र ९८-९९

> **इन-सा उपकारक जीव नहीं,**
> **पय तुल्य न पेय पदार्थ कहीं।**
>
> राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वर्ष १९९८-९९ रामेश्वर गोशाला में सम्पन्न हुए कार्य

(१ जुलाई १९९८ से ३० जून १९९९ तक)

श्री सूर्यकान्त जालान

रामेश्वर गोशाला में बेकार पशु, बेकार भूमि, बेकार आदमी को उपयोगी बनाने की दृष्टि से बहुआयामी सेवा कार्य किये जा रहे हैं, जिससे गोशाला के निकटवर्ती ग्रामवासियों को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा सुलभ होने लगी है।

पशुपालन—१ जुलाई १९९८ से ३ जून १९९९ की अवधि में यहाँ सुधरी हुई देशी नस्ल की गायों के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। गंगातीरी, हरियाणा, साहीवाल का संरक्षण, संवर्धन हुआ। राठी नस्ल के साँड़ और बछड़े-बछड़ी भी मँगाये गये। कई बछड़े साँड़ के रूप में विकसित किये गये, उनमें से तीन बछड़े पशुपालन विभाग द्वारा साँड़ हेतु चयनित किये गये। अनुपयोगी गोवंश उपयोगी होने से उ०प्र० के राज्यपाल श्री सूरजभान के सुझावानुसार २१ गायें गरीब गोपालकों को दी गयी। इसी तरह ५० विकसित बछिया भी जिलाधिकारी वाराणसी द्वारा ग्रामजनों में वितरित की गयी।

चारा एवं अन्य उपज—रामेश्वर गोशाला की भूमि कई खण्डों में बँटी होने से मधुबन, वृन्दावन, पंचशिवाला प्रकल्पों में चारा उत्पादन किया जाता है। गोवंश को बारहों मास हरा चारा मिले—ऐसा फसल चक्र बनाया गया है। इस वर्ष प्रकल्पों की १६ हेक्टेयर भूमि का समतलीकरण किया गया। परिणामत: खेती के अन्तर्गत २ हेक्टेयर भूमि का सृजन हुआ। इन्हीं प्रकल्पों पर सुधार, भूमि एवं जल संरक्षण करके भूमि को उर्वर बनाया गया। कृषि के अन्तर्गत नई फसलों का प्रयोग हुआ जिसमें राजमा एवं सोयाबीन प्रमुख है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान संस्थान के सौजन्य से चना, मटर, राजमा की नवीनतम प्रजातियों का उत्पादन नई तकनीक के अनुसार किया गया। बैलचालित कल्टीवेटर (जो भोपाल स्थित कृषि इंजीनियरिंग संस्थान से मँगाया गया था) में क्षेत्रीय स्तर पर संशोधन करके उसे चलाने में इस प्रकार सुगम बनाया गया कि बैलों को कम-से-कम शक्ति लगानी पड़े। यहाँ की भाषा में ग्रामीण उसे बैलचालित ट्रैक्टर की संज्ञा दे रहे हैं। एक बैलचालित चार पहियों की गाड़ी का निर्माण किया गया जो काफी लोकप्रिय हुई है।

वानकी—इस कार्यक्रम के अन्तर्गत एक लाख पौधे नीम की नर्सरी तैयार की गयी। इसके अतिरिक्त सागोन, कदम, पपीता, गुलाब, बेल की भी नर्सरी तैयार की गयी और उसे गोपाष्टमी ग्रामोदय मेले के अवसर पर किसानों को नि:शुल्क वितरित किया गया। रास्ते के किनारे पर इमारती लकड़ी एवं छायादार वृक्ष लगाये गये, प्रमुख स्थानों पर शोभाकारी वृक्ष लगाये गये। इस प्रकार बाँझ भूमि को शस्य-श्यामल बनाया गया और यह भी प्रयास किया गया कि भविष्य में इससे धनार्जन भी हो। इसी दृष्टिकोण से कामनी, करौंदे, गुलाब, गेंदा, गुलदावदी, डेहलिया की पुष्प वाटिका लगाई गई। लगभग एक हजार क्रोटन भी गमलों में तैयार किये गये। बोरों में पौध लगाने की तकनीक भी विकसित की गयी। वृक्षों के अन्तर्गत विविधता का सर्वदा ध्यान रखा गया।

गोबर—गोबर से समुचित लाभ लेने हेतु रामेश्वर परिसर में एक गोबर गैस की स्थापना की गयी जिससे विभिन्न कार्यों के लिए ऊर्जा सुलभ हुई। इससे प्राप्त स्लरी से गोबर की मात्रा की दूनी खाद तुरन्त उपयोग हेतु तैयार होती है। कम-से-कम गोबर से वानकी एवं फसलों के अवशेष से नडेप पद्धति से खाद तैयार करने हेतु तीस (३०) गड्ढे तैयार किये गये। सब्जी अनुसंधान केन्द्र आराजी लाईन के सहयोग से सब्जियों की खेती की गयी। फलों एवं फसलों के परागण में सहायता पहुँचाने और उससे उत्पादन में वृद्धि के लिए मधुमक्खी पालन का कार्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी प्रारम्भ किया गया। शहद भी मिलने लगा है।

निर्माण कार्य—(क) *भोजन कक्ष*—एक विस्तृत कक्ष में भोजनालय एवं भोजन करने के स्थान का निर्माण किया गया जिसमें एक साथ लगभग एक सौ व्यक्ति सुविधापूर्वक भोजन कर सकते हैं।

दुग्ध कक्ष—दूध से दही, मट्ठा, घी आदि बनाने हेतु एक भवन का निर्माण किया गया। इसी प्रकार अचार या अन्य फल संरक्षण के कार्यों के सम्पादन हेतु दूसरे कक्ष का निर्माण किया गया।

गोशाला परिवार हेतु प्रयोग में आने वाले चावल, आटा, दाल बनाने हेतु चावल मिल व आटा चक्की की स्थापना की गयी। इसके अतिरिक्त सभी खटालों, आवासीय भवनों व अतिथि गृह की मरम्मत एवं सफाई का कार्य किया गया। पाँचोशिवाला प्रकल्प में एक बड़े नलकूप की बोरिंग की गयी और नलकूप पम्प भी बनाया गया।

शैक्षिक कार्य—४० प्रशिक्षुओं के दो सत्र गोशाला प्रबन्धन के प्रशिक्षण हेतु चलाये गये। ये सभी प्रशिक्षु शिक्षण प्राप्त करके विभिन्न गोशालाओं में गोशाला प्रबन्धक का कार्य सम्पादित कर रहे हैं। ग्राम विकास संस्थान के सहयोग से पाँच अल्पकालिक प्रशिक्षण शिविर ग्राम के पंचायत सदस्यों का चलाया गया। जिनको ग्राम विकास में गाय, ग्रामोद्योग एवं कृषि का समन्वित लाभ बताया गया। इसके अतिरिक्त वाराणसी, मिर्जापुर, आजमगढ़, गोरखपुर मण्डल के मुख्य विकास अधिकारियों की बैठक भी आयोजित की गयी और उन्हें गोशाला पर सम्पादित कार्यों का दिग्दर्शन कराया गया। पशुपालन एवं दुग्धविकास मंत्री के साथ गोसेवकों का शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें गोवंश की समस्याओं एवं विकास पर चर्चा हुई। काशी विद्यापीठ, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय एवं उदयप्रताप महाविद्यालय के विद्यार्थियों का राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर लगाया गया। इसके अतिरिक्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान संस्थान तथा तकनीकी विज्ञान संस्थान के विद्यार्थियों के दल यहाँ आये व विभिन्न प्रयोग व प्रदर्शनों का अवलोकन किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा सम्मेलन का एक दिन का सत्र भी गोशाला में चला, जिसमें पूरे विश्व के प्रतिनिधि आये। आचार्यकुल, जयजगत सेवा संस्थान, खादी ग्रामोद्योग से जुड़े महानुभावों से प्रशिक्षणार्थियों को मार्गदर्शन मिला। सुरभि शोध संस्थान, सेठ किशोरीलाल जालान सेवा ट्रस्ट आदि के सहयोग से संचालित सेवा प्रकल्पों में समग्र विकास के नये-नये क्षेत्र खोले।

ग्रामोद्योग—गोशाला क्षेत्र को खुशहाल, रोजगार परक बनाने हेतु गोपालन, कृषि, उद्यान-बागवानी को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त विविध ग्रामोद्योग की सम्भावनाओं को तलाशा गया जिनसे गोरस भण्डार, महिला उद्यमिता केन्द्र, असंगठित मजदूर सेवा केन्द्र खड़े हुए।

मेला एवं गोष्ठियाँ—गोपाष्टमी के अवसर पर एक वृहद कृषि एवं विकास मेले का आयोजन किया गया, जिसमें विकास विभाग के सभी अधिकारियों ने अपने द्वारा सम्पादित कार्यों की प्रदर्शनी लगायी। महामहिम राज्यपाल महोदय एवं माननीय मुख्यमन्त्री (उ०प्र० सरकार) ने स्वयं पधार कर हमारा उत्साहवर्धन किया। कई मन्त्रियों, राज्य मन्त्रियों के अतिरिक्त श्री गुमानमल लोढ़ा, जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष व डॉ० महेश शर्मा, अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष ने मेले में भाग लिया एवं यहाँ के विकास में पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया।

माननीय ओमप्रकाशजी प्रान्तीय अध्यक्ष 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' के सौजन्य से गोशालाओं के विकास हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सम्बन्धित मन्त्रियों के अतिरिक्त 'संघ' के विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए।

भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री गुमानमल लोढ़ा का तीन बार गोशाला आना हुआ। उन्होंने देश की आदर्श गोशाला मानकर यहाँ अपने जीवदया अधिकारियों का प्रशिक्षण गोशाला प्रांगण में करवाया और माडल गोशाला मानकर पाँच लाख रुपये की विशेष सहायता दी।

केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री यशवन्त सिन्हा ने गोशाला की नई चेतना एवं बदली हुई परिस्थिति को समझा और कृषि मंत्री के विचारों को मूर्त रूप देने के लिए सहयोग करने का आश्वासन दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम सूरजभानजी ने गोशाला देखकर उद्‌गार व्यक्त किये कि यह गोशाला सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण है। ऐसी गोशालाएँ पूरे देश में होनी चाहिये।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह ने गोशाला के कार्यक्रम एवं व्यवस्था को देखकर गोशाला को समग्र विकास का केन्द्र बताते हुए कहा कि ऐसी योजनाएँ सभी गोशालाएँ क्रियान्वित करें। गोशाला के विकास के लिए १५ लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की और उत्तर प्रदेश गोसेवा आयोग गठित करने का ऐलान किया।

भारत सरकार के खादी ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष डॉ० महेश शर्मा का दो बार गोशाला में आगमन हुआ। उन्होंने गोशाला को ग्रामोद्योग का केन्द्र बतलाया और गोशाला के क्षेत्र में ग्रामोद्योग का संकुल खड़ा करने का निर्णय करके दो करोड़ रूपये की योजना बनायी।

गोरक्षा आन्दोलन में समर्पित वयोवृद्ध गोभक्त श्री राधाकृष्णजी बजाज ने गोशाला को गोरक्षा से ग्रामविकास का केन्द्र बतलाया और बैलचालित यंत्रों की निर्माणशाला सुरभि शोध संस्थान के सहयोग से स्थापित करने के लिए कामधेनु ट्रस्ट से चार लाख रुपये का सहयोग किया, जिससे बैलचालित पावर प्रोजेक्ट के दो माडल बने। बैलचालित ट्रैक्टर एवं चार पहिये की अधिक भारवाहक क्षमता की गाड़ियों का निर्माण प्रयोगात्मक स्तर पर चल रहा है।

विख्यात गाँधीवादी एवं समन्वय आश्रम, बोध गया के संचालक द्वारका सुन्दरानी इस अवधि में कई बार गोशाला आये और उन्होंने सबसे पिछड़ी जाति मूसहर-बच्चों के विकास से सम्बन्धित छोटे कार्य को सराहा तथा विचार दिया कि इस क्षेत्र की पाँच-छः संस्थाएँ वनवासी सेवा आश्रम, गोविन्दपुरी (रेणुकूट) सोनभद्र, दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट-गोण्डा, सुरभि शोध संस्थान, वाराणसी, समन्वय आश्रम, बोध गया, वनवासी कल्याण आश्रम, घोरावल-मिर्जापुर, देवशिला वनवासी प्रकल्प, नौगढ़-चन्दौली, ज्ञयजगत सेवा संस्थान, वाराणसी मिलकर इस क्षेत्र के विकास को नया आयाम दे सकते हैं। जिसका केन्द्र रामेश्वर गोशाला हो सकती है।

सर्वोदय जगत के जाने-माने महानुभावों में प्रो० ठाकुरदास बंग, श्री नरेन्द्र दूबे, डॉ० रागिनी प्रेम, श्री कृष्णराज मेहता, श्री बालविजय, श्री के० वैद्यनाथन, डॉ० मेधा पाटकर, डॉ० गुरुशरण, आचार्य चन्द्रभूषण, डॉ० वी०के० राय, श्री जमनालाल जैन, श्री दिनेश सिंह आदि। रचनात्मक क्षेत्र के विशेषज्ञों में डॉ० कमल टावरी, श्री लक्ष्मीदासजी, श्री जगपत दूबे, श्री रामविलास पोरवाल, श्री शुकदेव शर्मा, श्री रुद्रभान, श्री बजरंगलाल अग्रवाल, श्री आर०एन० सिंह। शिक्षा जगत में प्रतिष्ठित चिन्तकों में डॉ० रामजी सिंह, प्रो० एस० रिम्पोछे, डॉ० दुर्ग सिंह चौहान, डॉ० जनार्दन पाण्डेय, डॉ० कुसुमलता केडिया, डॉ० चन्द्रकला पाडिया, 'संघ' परिचार के सरसंघ संयोजक प्रो० केलकरजी (रज्जू भैया), श्री सुदर्शनजी, श्री सुरेश राव, श्री केलकरजी, श्री मोरोपन्तजी, श्री पिंगलेजी, श्री भैयाजी जोशी, श्री कौशल किशोरजी, श्री अशोक सिंघलजी आदि।

वाराणसी के आयुक्त, जिलाधिकारी, पशुपालन अधिकारी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने गोशाला का निरीक्षण किया। उनमें योजना आयोग के सदस्य श्री दीनानाथ तिवारी उल्लेख्य हैं। इसी तरह देश-विदेश के विद्वानों, पत्रकारों ने भी गोशाला देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और अपना अभिमत लिखा कि वरुणा नदी के तट से सटी वाराणसी की पंचक्रोशी यात्रा के तीसरे पड़ाव पर स्थित रामेश्वर गोशाला देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। वैज्ञानिक तरीके से गायों के देखभाल के फलस्वरूप इस क्षेत्र को भी लाभ हुआ है। मैं गोशाला के प्रबन्धकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। (एल०वी० तिवारी, जिलाधिकारी, वाराणसी, १३.८.९८)

प्रकृति की गोद में जीवों (मुख्यतया गाय एवं साँड़) की सेवा एवं दया भाव एक अनूठा प्रयास जीवन में पहली बार देखने को प्राप्त हुआ। हर प्रकार से हर मामले में स्वावलम्बी रहने की पहल एवं कला अनुकरणीय एवं सराहनीय है। यदि फार्म के चारों तरफ और सघन वृक्षारोपण कर समुचित सुरक्षा प्रदान की जाय तो वास्तव में बनारस में यह एक शान्ति स्रोत साबित होगा और बरबस ही यह स्थल सबको आकर्षित करेगा। ऐसी मेरी अवधारणा है। (सु०पी० त्रिपाठी, प्रभागीय वन अधिकारी, वाराणसी)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From

The Belsund Sugar & Industries Limited

Manufacturers of

"HARABHARA" Fertiliser

Regd. Office

14, Netaji Subhas Road

CALCUTTA-700 001

Phone : 220-5194/9576/ 0848/0681

Gram : WELSUGAR, CALCUTTA

Fax : 033-220 3663

Telex : 021-7573 HWP IN

Factory

P.O. Riga (N.E. Rly.)

Distt. Sitamarhi (Bihar)

Phone : 06226-20385, 20205

Gram : MITHA, RIGA

Fax : 06226-20385

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From

SANGAM SAREES

Dealers in
Banarasi Sarees
&
All Kinds of Exports Quality Fabrics

D. 60/85-A, Choti Gaibi, VARANASI
Phone : 329545, 329567
Fax : 0542-391400

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी उत्सव '९८ सदर (गोलघर)

बाएँ से – विशिष्ट अतिथि श्री भरत झुनझुनवाला (प्रख्यात अर्थ विश्लेषक), मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश सिंह (सिंचाई एवं गन्ना विकास मंत्री, उ०प्र०), श्री राधेश्याम खेमका (अध्यक्ष, शासक मण्डल), श्री श्रीगोपाल गोयल (अध्यक्ष, प्रबन्धकारिणी समिति)।

गोपाष्टमी उत्सव '९८ सदर (गोलघर) में सहभागी जनसमुदाय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

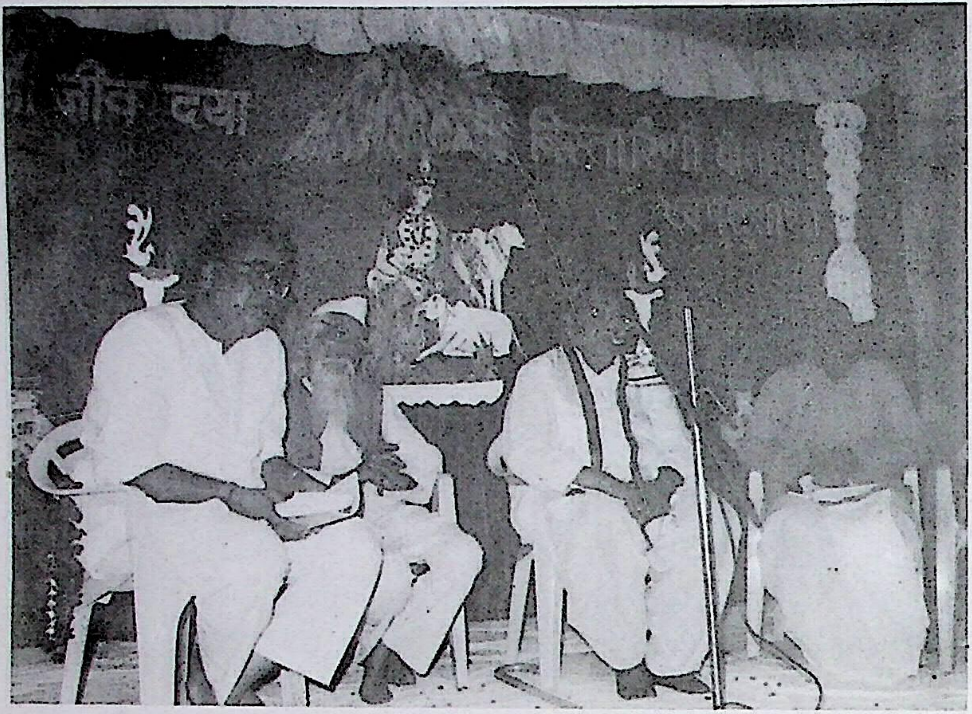

गोपाष्टमी उत्सव '९८ गोकुल (बावनबीघा)

बाएँ से – प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल गोयल, विशिष्ट अतिथि वयोवृद्ध पत्रकार ऋषिस्वरूप डॉ० भगवानदास अरोड़ा, मुख्य अतिथि माननीय गुमानमलजी लोढ़ा (पूर्व न्यायाधीश, पूर्व सांसद तथा अध्यक्ष जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड), शासक मण्डल के अध्यक्ष श्री राधेश्याम खेमका।

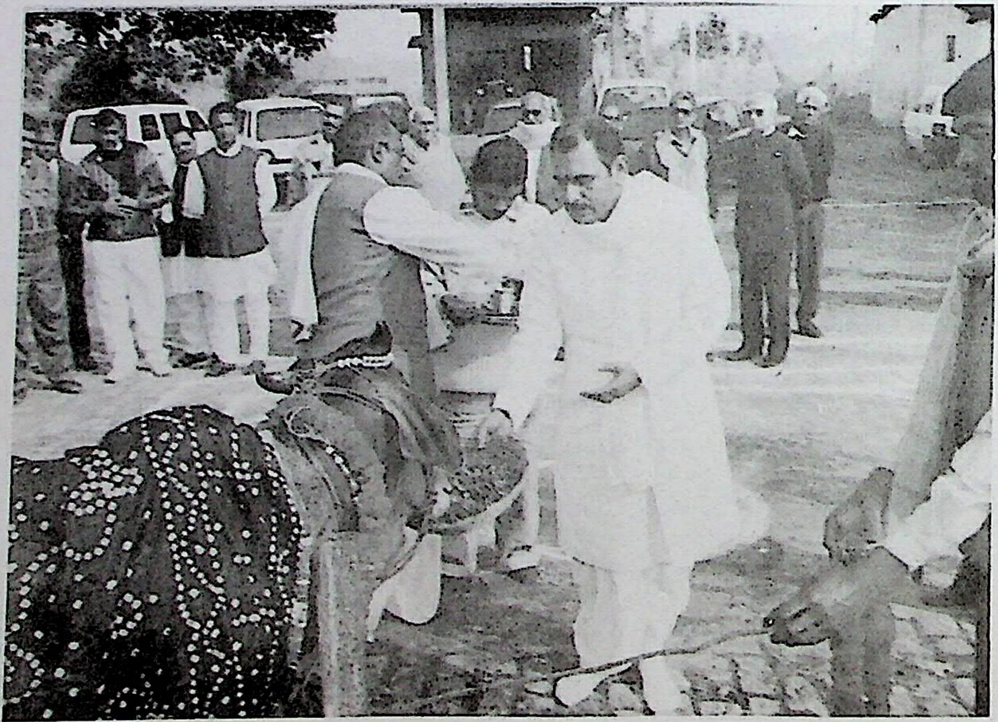

गोकुल (बावनबीघा) में गोउपासक आचार्य सुधांशुजी महाराज गो-ग्रास अर्पित करते हुए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

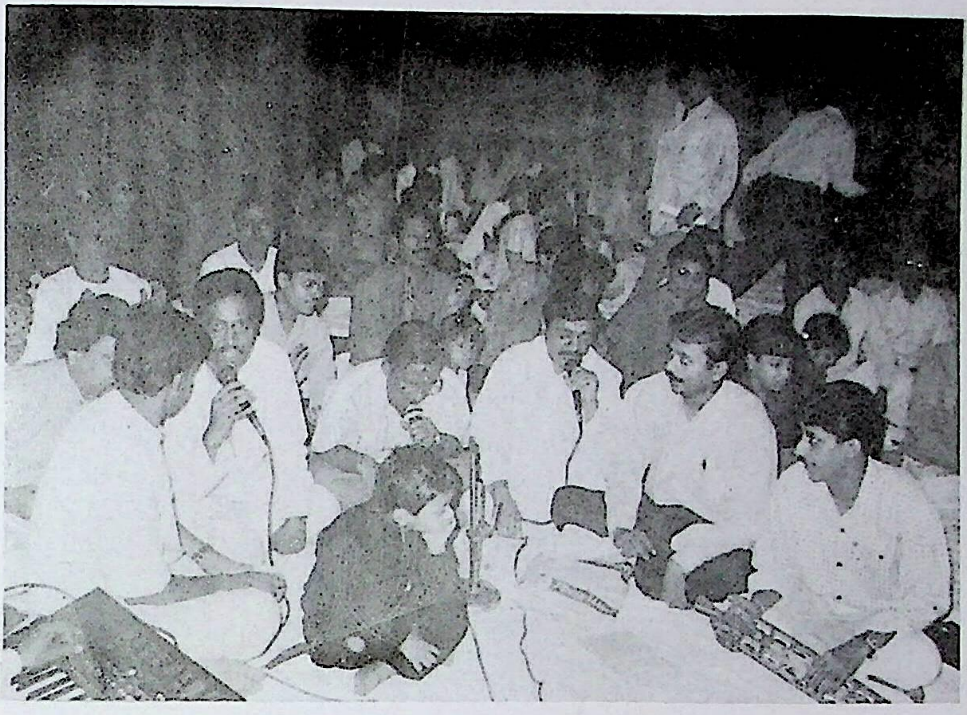

गोकुल (बावनबीघा) में श्री राणीसती श्याम भक्त मण्डल द्वारा गोपाल-गोविन्द का भजन।

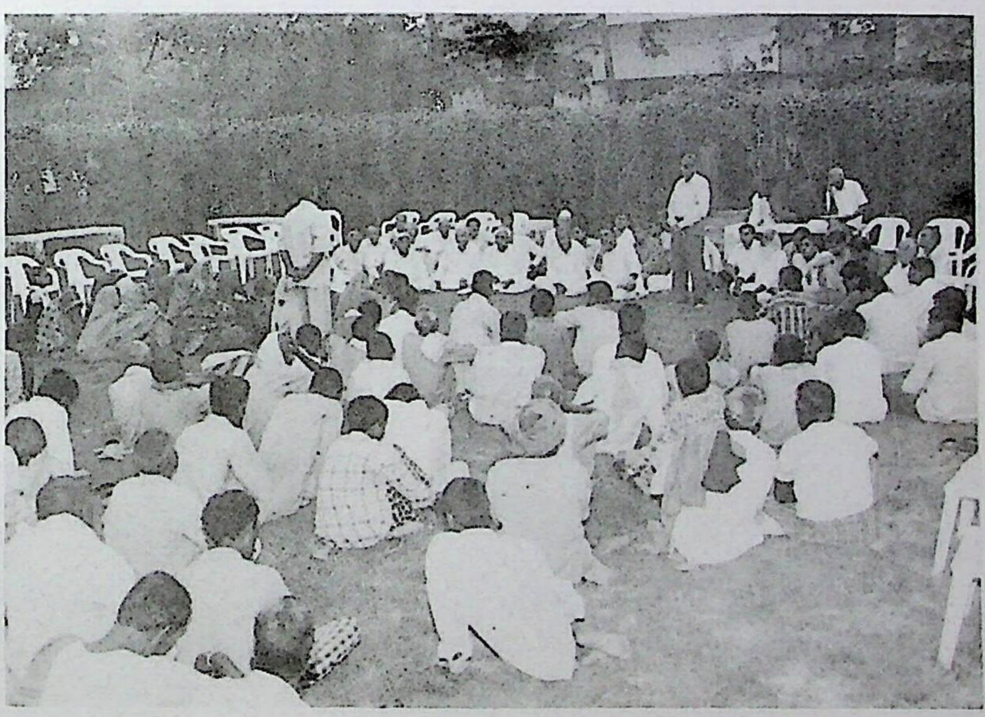

गोशाला-परिवार

शासक मण्डल, प्रबन्धकारिणी समिति, विकास समिति, प्रबन्धक एवं गोसेवकों की बैठक में सह-चिन्तन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामेश्वर गोशाला

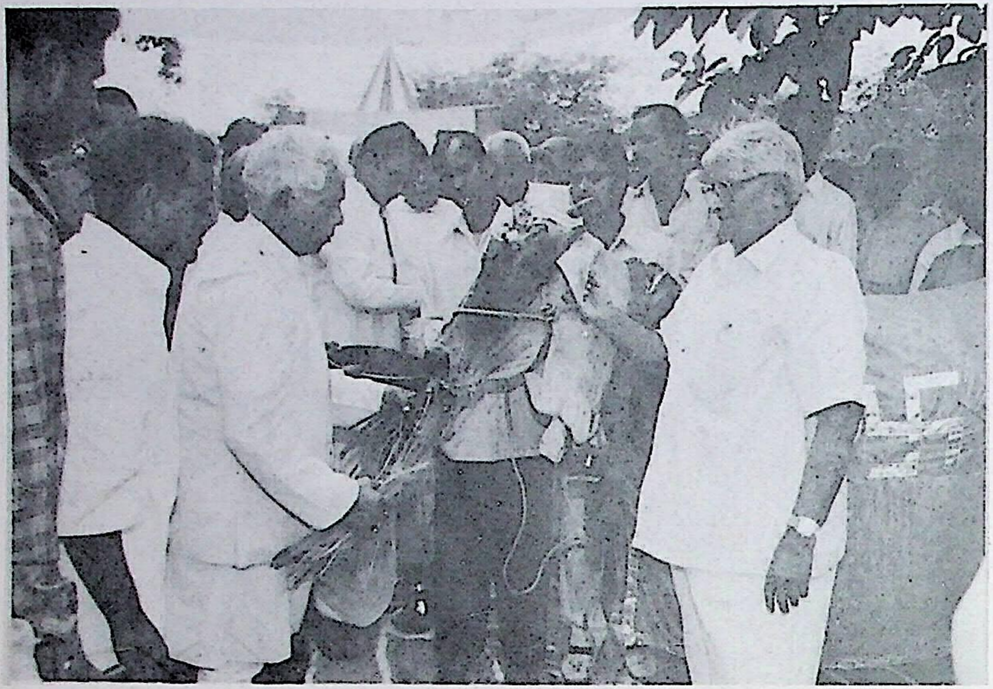

महामहिम सूरजभान (राज्यपाल, उत्तर प्रदेश) गोग्रास अर्पित करते हुए।

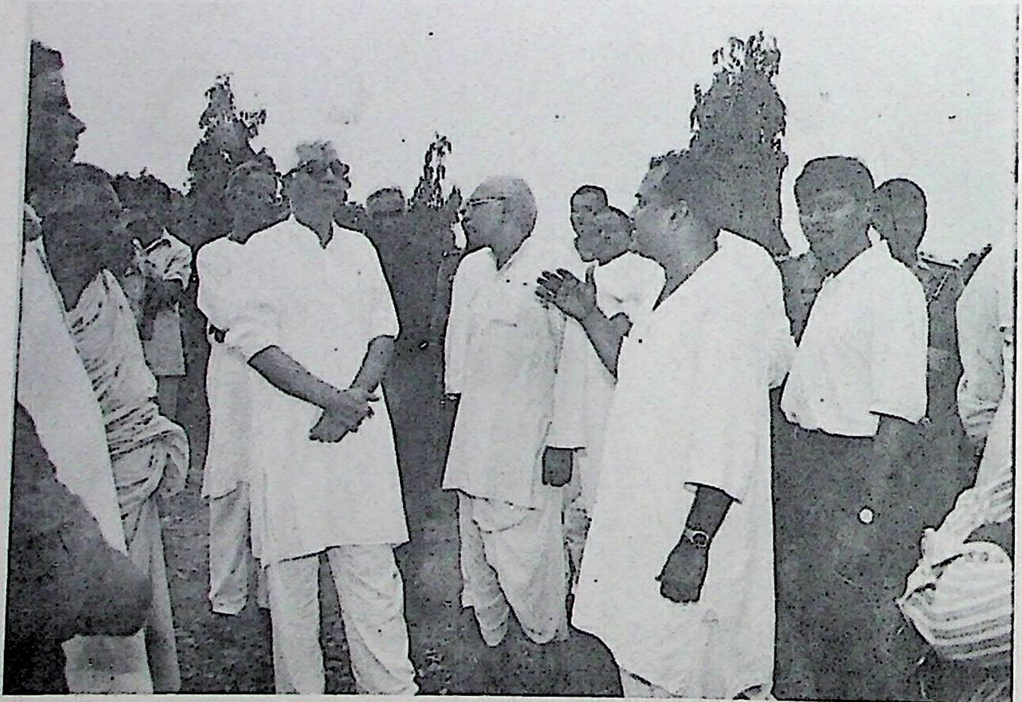

डॉ० सोमपाल शास्त्री (कृषि राज्यमंत्री, भारत सरकार) तथा श्री ओमप्रकाशजी (गोचिन्तक) को गोशाला के प्रकल्पों से अवगत करा रहे हैं श्री सूर्यकान्त जालान (कानू बाबू)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

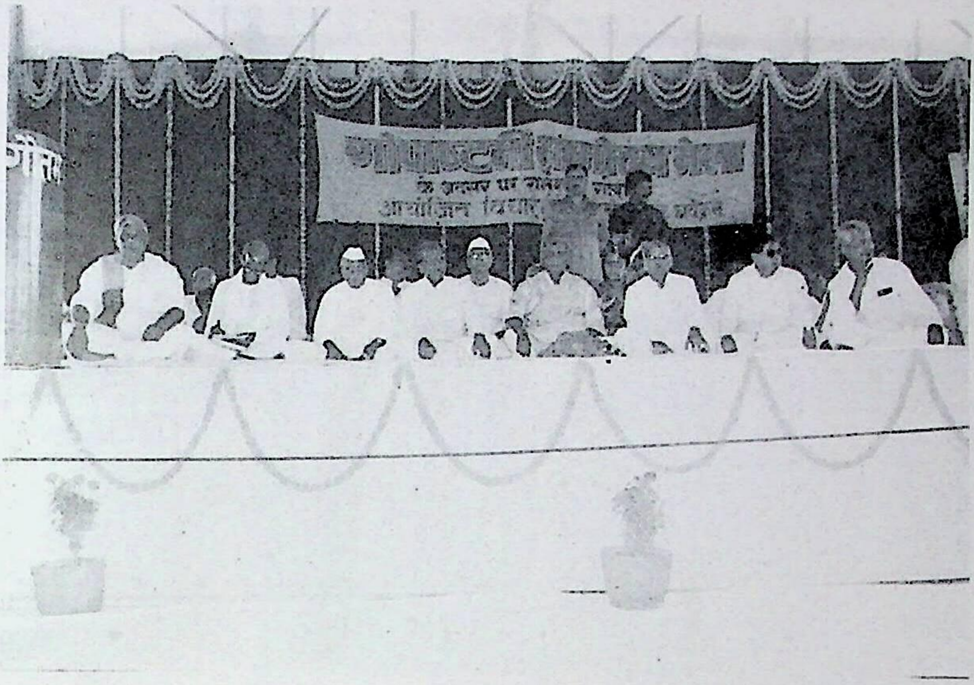

विचार सभा में मंच पर आसीन शासन के कर्णधार, जनप्रतिनिधि, गोचिन्तक तथा गोभक्त

विचार सभा में उपस्थित विशाल जनसमूह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

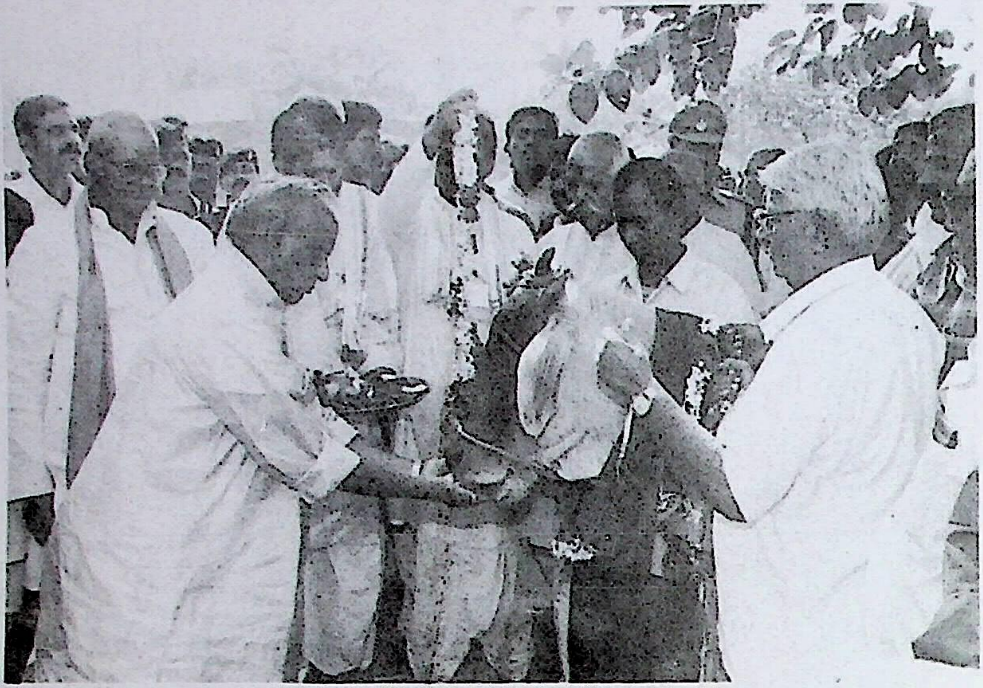

श्री कल्याण सिंह (मुख्यमंत्री उ०प्र०) अपने हाथों से गोमाता को गोग्रास खिलाते हुए।

कृषि-गो-विज्ञान अनुसन्धान केन्द्र की आवश्यकता और उपलब्धि पर चर्चा
बाएँ से – (माइक पर) श्री परमानन्द मित्तल, अध्यक्ष-उ०प्र० गोसेवा आयोग, (कुर्सी पर) श्री ओमप्रकाश सिंह, श्री राधेश्याम खेमका, श्री मोरोपन्तजी पिंगले, श्री कल्याण सिंह, श्री राधाकृष्ण बजाज।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

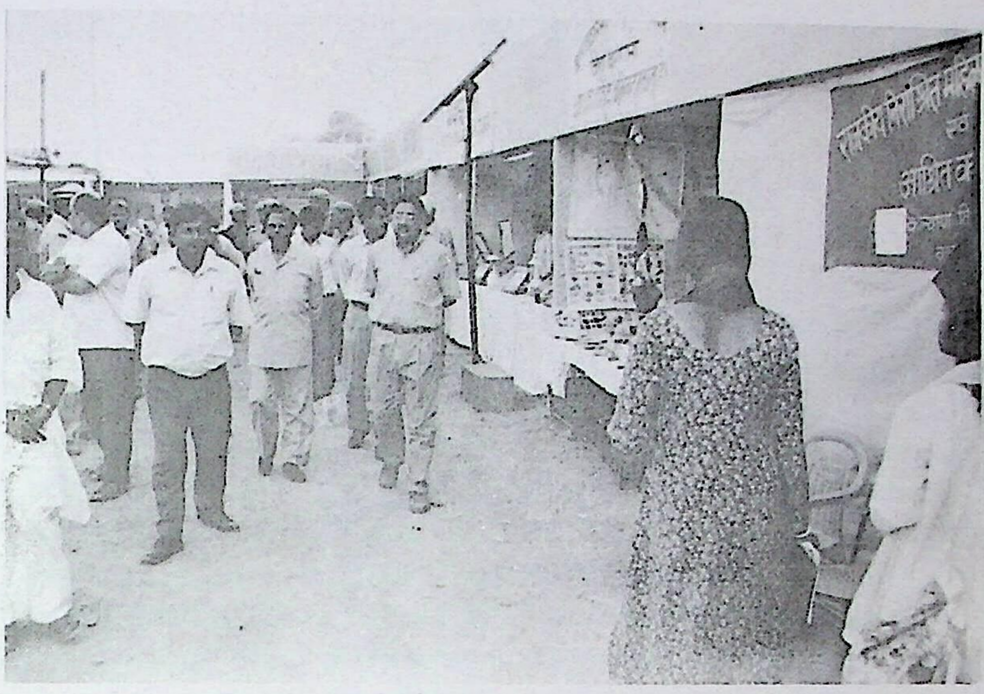

श्री सौरभचन्द्र (आयुक्त, वाराणसी) तथा श्री अविनाशचन्द्र अवस्थी (जिलाधीश, वाराणसी) मेले का निरीक्षण करते हुए।

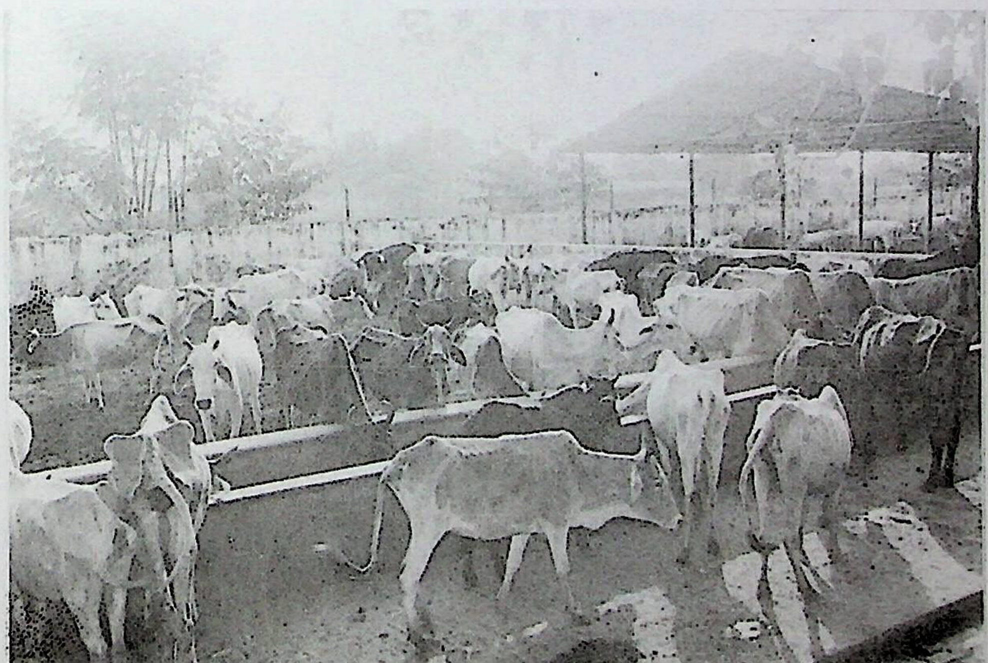

मरणासन्न, निराश्रित, अपाहिज तथा कसाइयों के हाथ से बचाए गए अनुपयोगी गोवंश का वृन्दावन (रामेश्वर) शाखा में संरक्षण, पोषण और सेवा द्वारा गोमाता को तृप्त करने का प्रयास होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री सूर्यकान्त जालान (कानू बाबू)

जिन्होंने तन-मन-धन से समर्पित होकर 'काशी गोशाला' की रामेश्वर शाखा में प्रयोग और व्यवहार से गो-सेवा के नये आयामों का दिग्दर्शन कराते हुए काशी गोशाला की राष्ट्रीय पहचान बनायी।

लोक आचार्य श्री शरदकुमार साधक

जिनके चिन्तन, कृतित्त्व और लेखनी-सहयोग से गाय के माध्यम से समग्र-ग्राम-विकास की कल्पना का साकार रूप विस्तार ले रहा है।

- उ०प्र० गो-सेवा आयोग के सदस्य
- राष्ट्रीय मंत्री-आयार्य कुल
- अध्यक्ष-जय जगत सेवा संस्थान
- विनोबा-जयप्रकाश के सहयोगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो-सेवा से भगवत-प्राप्ति

बाल व्यास पं० श्रीकान्त शर्मा

स्वार्थ या परमार्थ कोई वस्तु ऐसी नहीं है जो गो-सेवा से प्राप्त न की जा सके। भगवत् प्राप्ति के लिये अनेक साधन है जिसे साधक अपनी सामर्थ्यानुसार अंतर्निहित कर सफल होने की चेष्टा करता है। युग-युग से जन्म-जन्मान्तरों से जीव अपने बिछुड़े हुए प्रियतम परमात्मा से मिलने के लिये न जाने कहाँ-कहाँ भटकता है, किन्तु अब तक बहुतों को सफलता नहीं मिली। साधन का ठीक-ठीक ज्ञान न होने से लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब होना स्वाभाविक है। भगवत् प्राप्ति के अन्यतम साधनों में गो-सेवा भी एक ऐसा ही साधन है, जिससे भगवान शीघ्र ही सुलभ हो जाते हैं। भगवान् हमारे इष्ट देव हैं, परन्तु ये गोएँ उनकी भी इष्टदेवी है। वे इन्हीं की सेवा के लिये **गोप-शिरोमणि** बनकर इस भूतल पर अवतीर्ण होते हैं। भगवान भी जिनके सेवक हैं उनकी सेवा से भगवत् प्राप्ति में क्या सन्देह हो सकता है। हम घर में कामधेनु के होते हुए भी उसकी सेवा से मुँह मोड़ते और स्वार्थ एवं परमार्थ दोनों से वंचित रह जाते हैं।

गाय हमारे लिये दो तरह के सन्तानों को जन्म देती है बछड़ा और बछिया। बछड़ा होने पर धर्मशास्त्रीय विधि के अनुसार वृषोत्सर्ग करने से वह हमारे पितरों का उद्धार करेगा और दूसरे उससे गोवंश की वृद्धि—ये दोनों ही पुण्य कार्य है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने पर नियम पूर्वक यज्ञ और दान दिया जा सकता है।

गो-पालन से दो प्रकार के लाभ होते हैं—लौकिक और पारलौकिक—पारलौकिक लाभ होता है उसके दान से। लौकिक लाभ भी आगे चलकर पारलौकिक लाभ में परिणित हो जाता है। गाय हमारे घर पर रहेगी तो दूध देगी—यह लौकिक लाभ है। उस दूध का दो प्रकार से उपयोग हो सकता है—एक तो दही जमाकर या उसका विभिन्न प्रकार से खाद्य पदार्थ बनाकर घी और दुग्धान्न दोनों ही मानव जीवन के लिये अत्यन्त उपयोगी वस्तुएँ हैं। घी परम पवित्र एवं सात्विक वस्तु है। इसके सेवन से शरीर और मन दोनों शुद्ध होंगे। घी के द्वारा यज्ञ के धर्मोपार्जन किया जाता है। इस तरह गाय अनेक शाखाओं तथा परम्पराओं से हमें अर्थ और काम की प्राप्ति कराने के साथ ही धर्म के सम्पादन में भी अत्यधिक सहायता पहुँचाती है। गौ के समान मनुष्य मात्र की सच्ची हितकारिणी दूसरी कोई नहीं है, अतः हम लोगों को तन, मन, धन से गोमाता की सेवा और रक्षा में तत्पर रहना चाहिये।

■■

पूज्य बालव्यासजी की वेदना

हमारे देश में जितने भी गौ हत्यारे हैं वे एक होकर कार्य कर रहे हैं यही कारण है कि नित्य नये बूचड़खाने खुल रहे हैं, पर हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यहाँ के साधु-सन्त सत्कर्मी एक होकर कार्य नहीं कर रहे हैं।

महाराजश्री की मंगलकामना

मैं आभारी हूँ काशी गोशाला का जिसने इस बहकते समय में गोरक्षा का बीड़ा उठाया है। वे हाथ स्वर्णमय बनें जो राष्ट्र निर्माण में लगे हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोसेवा का नया प्रतिमान

पद्मभूषण डॉ० विद्यानिवास मिश्र

भारत की पहचान जिन तीन-चार चीजों से होती है उनमें गाय का स्थान सर्वोपरि है। 'गऊ' शब्द संस्कृत में एक साथ पृथ्वी, वाणी, इन्द्रिय, किरण और गाय का वाचक है और एक ओर सूर्य-लोक है, दूसरी ओर पृथ्वी में जहाँ गाय रहती है, वह स्थान है। गायों के रहने का स्थान, गायों के चरने का स्थान हमारी दृष्टि में पृथ्वी का सबसे पवित्र स्थान है। गाय का स्थान वही है जो गंगा का है। दोनों में पवित्र करने की क्षमता है। गाय का मल-मूत्र कुछ भी अपवित्र नहीं, उल्टे वह पवित्र करने वाली है। दूध दही की तो बात ही क्या है? वह तो प्रत्यक्ष अमृत है। पृथ्वी को जो पालता है उसके लिए पृथ्वी उर्वर हो जाती है। गाय की जो सेवा करता है उसके लिए गाय अमृत वर्षा हो जाती है। ऐसी गाय की उपेक्षा इससे मिलने वाले लाभ की ही उपेक्षा नहीं, संस्कृति और संस्कृति से मिलने वाले लाभ की उपेक्षा है।

काशी गोशाला ने महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया है कि जो गाय कसाई के यहाँ बेची जाने वाली होती है—शुद्ध तात्कालिक स्वार्थ के वश में, उन्हें गोशाला पालती है, सेवा करती है—दूध दे तो भी, न दे तो भी उनकी सेवा में कमी नहीं होती। ऐसे पुण्य कार्य के लिए उनको साधुवाद देना चाहिए। एक काम और काशी गोशाला करे तो नगर में उसकी कीर्ति बढ़ेगी। गाय सड़क पर छोड़ दी जाती है और सड़क पर इधर-उधर मुँह मारती हुई पोलिथिन की थैलियाँ खा जाती हैं। पोलिथिन पचता नहीं, नाना प्रकार के विकार खून में, दूध में पैदा करता है। यदि भगवान भरोसे छोड़ी गई गायों के लिए अच्छे चारागाहों की व्यवस्था करे और नगर प्रशासन सहयोग करे कि गाय सड़क पर नहीं, चारागाह में छोड़ी जाय, तो नगर में गोवंश तो बढ़ेगा ही, गोवंश को आदर देने वाली हिन्दू जाति का भी कल्याण होगा।

एक छोटा सुझाव है कि काशी के आसपास गोचर भूमि की व्यवस्था हो और काशी के छुट्टा पशुओं के मालिकों को प्रेरित करे कि चारागाह में गाय को छोड़ें। सड़कों पर फैले हुए कचड़े में मुँह डालने के लिए गाय को लाचार न करें। निश्चय ही इससे गो-सेवा का नया प्रतिमान स्थापित होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

केडिया साड़ीज़ प्रा० लि०

बनारसी साड़ी एवं फैन्सी पोत के
निर्माता एवं विक्रेता

चित्रा सिनेमा भवन, चौक, वाराणसी-२२१ ००१

फोन : (दुकान) ३५९२६८, ३५२९७५, (निवास) २२०३८७, २२०३८९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय का अर्थशास्त्र

श्री भरत झुनझुनवाला
प्रख्यात अर्थ-विश्लेषक

वर्तमान में गो माता संकट में हैं। गाय के महात्म्य को पुनः लिखने की आवश्यकता नहीं है। हमारे सामने मुख्य प्रश्न यह है कि किसान स्वयं गाय की संख्या कम क्यों कर रहा है। जब हमें रोग का कारण पता लग जाएगा तो शायद उपचार भी हो सके।

किसान की गाय में अरुचि के तीन कारण दिखते हैं, पहला यह कि पूर्व में गाय चराने के लिए भूमि बहुत उपलब्ध थी और जनसंख्या कम थी। हर गाँव में बड़े-बड़े सामूहिक चरागाह हुआ करते थे जिनमें किसान को चराने की छूट थी। चराई की समस्या नहीं थी। किसान जितनी चाहे उतनी गायों को पाल सकता था। समस्या गायों के रख-रखाव की थी न कि चरागाह की। उस समय किसान का प्रयास रहता था कि वह अधिक से अधिक संख्या में गाय को पाले। गोपालन और दूध का व्यापार उसकी समृद्धि का रास्ता था।

अब यह स्थिति बदल गई है। जनसंख्या के बढ़ते दबाव के चलते सर्वत्र चरागाहों पर अतिक्रमण हो गया है। गाँव में सार्वजनिक चरागाह तो बचे ही नहीं हैं। गोशालाओं की भूमि का भी अतिक्रमण हो चुका है। ऐसी स्थिति में किसान के लिए अधिक संख्या में गाय को पालना मुश्किल हो गया है। चरागाह नहीं है जहाँ वह उन्हें चरा सके। दूसरा कारण भूसे की उपलब्ध्ि का है। गर्मियों के मौसम में चरागाह अक्सर सूख जाते हैं। गायों का पेट भूसा डालकर भरना पड़ता है। अतः किसान उतनी ही गाय रख सकेगा जितना उसके पास भूसा उपलब्ध होगा।

वर्तमान में भूसे की मात्रा भी घट रही है। संकर फसलों के प्रचलन के पहले देसी गेहूँ, चावल उपजाए जाते थे। देसी पौधों की विशेषता यह होती है कि वे एक किलो गेहूँ के पीछे दो किलो भूसा देते हैं। उनके पौधे लम्बे होते थे। प्रति एकड़ गेहूँ की उपज भले कम हो, पर भूसे की उपज अधिक होती थी। संकर फसलों ने इसे बदल दिया है। अब दो किलो गेहूँ के पीछे एक किलो भूसा उपजता है। इन संकर फसलों को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। बढ़ती हुई जनसंख्या का पेट भरने के लिए आवश्यक था कि हम प्रति एकड़ उपज बढ़ाएँ। अतः प्रति फसल भूसे की उपज में भारी गिरावट आई है। सिंचाई के प्रसार से कहीं-कहीं अधिक फसलें अवश्य उपजाई जा रही है परन्तु फिर भी कुल भूसे की उपज में कमी आई है ऐसा दिखता है। इसलिए किसान के लिए बड़ी संख्या में गाय पालना मुश्किल हो गया है।

तीसरा कारण ट्रैक्टर तथा ट्यूबवेल का है। पूर्व में बैल का महत्त्व था। जुताई बैल से होती थी। सिंचाई भी रहट से होती थी। बड़े किसानों के घर १०-२० बैलों का होना सामान्य बात थी। सुबह सबकी ड्यूटी अलग-अलग रहट पर लग जाती थी। अब ट्रैक्टर, ट्यूबवेल ने यह सब बदल दिया है। एक ट्रैक्टर दिन भर में दसों जोड़ी बैलों का कार्य कर देता है। एक बटन दबाने से ट्यूबवेल पानी उगलने लगता है। इन कार्यों के लिए बैलों की आवश्यकता नहीं रह गई है। पहले किसान गाय इसलिए भी पालता था कि बछड़े मिलेंगे जो कि उसकी मदद करेंगे। अब बछड़े उसके लिए समस्या हो गए हैं। कसाई को वह बेचना नहीं चाहता। घर बैठा कर उन्हें खिला नहीं सकता। उनके लिए काम उसके पास है नहीं। ट्रैक्टर, ट्यूबवेल के सामने बैल मँहगे पड़ते हैं। कई गाँव में किसानों ने यह रास्ता निकाला कि बछड़े को बड़ा करके उसके माथे पर टीका लगाकर साँड़ के रूप में छोड़ दिया। परन्तु इसकी भी तो सीमा है। चूँकि किसान को बैल की आवश्यकता कम है इसलिए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय के प्रति रुचि भी कम है।

इन तीन कारणों से किसान वर्तमान में गाय के प्रति उदासीन दिखता है।

दूसरी तरफ लाभ भी है। गाय के दूध, गोमूत्र और गोबर के अनेक लाभ हैं। हल से उपजाए गए अनाज को भी गुणवान बताया जाता है। गाय के दूध को भैंस के दूध की तुलना में अधिक पौष्टिक बताया जाता है। कुछ अध्ययन भी उपलब्ध हैं परन्तु अधिकतर ये तकनीकी हैं। यानि यह अन्वेषण अवश्य हुआ है कि गोबर के साथ शहर के कचरे से खाद जल्दी बनती है या फिर गाय के दूध में कितने तत्त्व हैं। परन्तु इन लाभ का किसान की आर्थिक दृष्टि से मूल्यांकन हुआ हो ऐसा नहीं दिखता। यह नहीं देखा गया है कि गाय का दूध पीने वाले घर में एक वर्ष में कितना खर्च डाक्टर दवा पर किया जाता है और भैंस का दूध पीने वाले घर में कितना। नतीजा यह है कि हमें स्वयं नहीं मालूम है कि किसान के लिए अधिक संख्या में गाय रखने के लाभ क्या हैं और हानि क्या?

किसान ने तो अपना निर्णय दे दिया है। गाय रखने में उसकी रुचि घटती जा रही है। यह सम्भव है कि किसान का निर्णय गलत हो। वह गाय से होने वाले लाभ को समझ नहीं रहा हो और अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रहा हो। कभी-कभी अनजाने में आदमी अपने घर के हीरे को शीशा समझकर बेच देता है। इसी तरह वह अनजाने में ही गाय को समस्या समझ कर नकार रहा हो। परन्तु इस समस्या का निदान यह है कि उसे बताया जाय कि गोमूत्र के कितने लाभ हैं और उसके उपयोग से घर के डॉक्टरी खर्च में कितनी बचत होगी। यदि किसान को यह बात समझ में आ जाती है कि सब समस्याओं के बावजूद गाय लाभकारी है तो वह अवश्य गाय की संख्या में वृद्धि करेगा। अन्यथा मुश्किल है।

यह तो केवल आर्थिक पक्ष है। गाय के अध्यात्मिक लाभ भी हैं। गाय मुक्ति का साधन भी है। परन्तु तुलसीदासजी ने कहा भूखे मत भजन न होय कृपाला। अतः किसान की पहली जिम्मेदारी यह है कि वह अपने परिवार का पेट भरे। उसका अध्यात्मिक विकास तब ही होगा जब वह अपने इस धर्म का निर्वाह करेगा।

हमारे धर्मशास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम के समन्वय पर बल दिया गया है। इन प्रत्येक पुरुषार्थों को इस प्रकार सिद्ध करना चाहिए कि दूसरे पर आघात न हो। यह भी कहा गया है कि धर्म की पूर्ति के लिए अर्थ को त्याग दो; और अर्थ की पूर्ति के लिए काम को। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि किसान को धर्म के लिए अर्थ को त्याग देना चाहिए। चूँकि गाय धर्म की प्रतीक है इसलिए आर्थिक नुकसान हो तो भी गाय की संख्या अधिक रखनी चाहिए। परन्तु यह आपाद स्थिति है जब धर्म और अर्थ में समन्वय नहीं हो पा रहा हो और दोनों एक-दूसरे के विरोध में खड़े दिखते हों। किसान को मनुस्मृति में वैश्य बताया गया है। वह अर्थ प्रधान है। यह अपेक्षा करता है कि वह धर्म के लिए अर्थ का त्याग करेगा। आपाद स्थिति में तो हो सकता है परन्तु सामान्य स्थिति में नहीं।

गो प्रेमियों को समझना चाहिए कि गाय का प्रश्न न तो कानून से सुलझेगा न ही धन से। गाय के महत्त्व को स्थापित करने के लिए गोप्रेमियों को गाय के अर्थशास्त्र को समझना होगा। गाय से होने वाले लाभ-हानि का आर्थिक आंकलन करना होगा। प्रयास करने होंगे कि लाभ बढ़े और हानि कम हो। इस दिशा में तकनीकी अनुसंधान करना होगा। जब किसान के लिए अधिक संख्या में गाय रखना लाभकारी हो जाएगा तो वह स्वयं उसमें वृद्धि करने लगेगा। इसके अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं दिखता है।

■■

> गो का समस्त जीवन देश हितार्थ समर्पित है। अतः भारत में गोवध नहीं होना चाहिए।
>
> **माता आनन्दमयी माँ**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भावी विश्व-व्यवस्था में गोवंश की भूमिका

आचार्य शरदकुमार साधक
सदस्य, उ०प्र० गोसेवा आयोग, *मंत्री*, अ०भा० आचार्यकुल,
अध्यक्ष, जयजगत सेवा संस्थान

आज विश्व की आबादी ६ अरब है। उसमें एक अरब भारतीय हैं। सब जीना चाहते हैं। इस चाह के अनुरूप जीवन, जीविका, जगत् व्यवहार करने वाली योजना कहाँ है? कोई देश नवजात शिशुओं, किशोरों, महिलाओं, बीमारों, अपंगों, वृद्धों और जीविका में सहायक हो रहे मानवेतर प्राणियों की सुरक्षा पर उतना ध्यान नहीं देता, जितना सुरक्षा के नाम पर हथियारों की होड़ पर देता है। ३० लाख टन गेहूँ की कीमत पर एक विमान बनाते हैं। ४० हजार अस्पतालों से अधिक महत्त्व एक जेट का है। एक बमवर्षक के पीछे एक लाख टन चीनी कुर्बान की जाती है। बुनियादी आवश्यकताओं की अनदेखी कर कृत्रिम जरूरतों के पीछे भागते रहने से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पिछड़े व विकासशील देशों की धरती पर १२० युद्ध हुए, जिसमें दो करोड़ से अधिक निरपराध नागरिक मारे गये और ऐसी व्यवस्था अस्तित्त्व में आ गयी कि विश्व की जनसंख्या का ९०% भाग गरीबी के दलदल में फँस गया। गरीब अपने स्थानों से उजड़े और पुनर्स्थापित होने में इस कदर उलझे कि पिछले पाँच दशकों में लगभग पचास हजार किस्म की फसलें तथा चार हजार किस्म की मवेशी नस्लें विनष्ट हो गयीं। दुष्परिणामों ने विश्व को 'धरती बचाओ' आन्दोलन खड़ा करने को बाध्य कर दिया है। लेकिन अभी तदनुकूल विश्व व्यवस्था नहीं है।

विश्व में जितना पशुधन है, उसका पाँचवाँ भाग भारत में है, जो कि इस देश की आवश्यकता से बहुत कम है। पिछली पशु गणना के अनुसार देश में १९ करोड़ मवेशी, ७.४ करोड़ भैंस, १०.७ करोड़ बकरियाँ आदि हैं। उनकी जितनी वृद्धि होती है, उससे अधिक उन्हें मार दिया जाता है। २०वीं सदी की विदाई बेला आते-आते हर वर्ष एक करोड़ बड़े तथा ३ करोड़ छोटे पशु कत्लखानों में काटे जाने लगे हैं, जिनमें गाय बैल भी कम नहीं हैं।

विकसित देशों में प्रति १०० मनुष्यों के पीछे २६८ पशु हैं, वहाँ भारत में ३८ हैं, उनमें भी गायें मात्र ९ हैं, जबकि दूध के लिए कम से कम २० करोड़ गायें जरूरी हैं। परिवहन आदि कामों के लिए १३ करोड़ बैल चाहिये, किन्तु आधे भी नहीं है। नित्य कत्ल होती रहने से भारत को ६० अरब रुपये का दूध, ५० अरब रुपये का परिवहन, ३० अरब रुपये की जैविक खाद और २० करोड़ रुपये की गैस का नुकसान तो होगा ही, कमजोर तथा कम पूंजी वालों की जीविका छिन जायगी। अर्थव्यवस्था में भारतीय गोवंश के योगदान को समझना चाहिए। जहाँ अमेरिकी गाय ४% ऊर्जा देती है, वहाँ भारतीय गाय १७% ऊर्जा देती है। तीन करोड़ टन कोयले बराबर ऊर्जा तो उतने गोबर से ही मिल सकती है, जितना ईन्धन की भाँति जलाया जाता है। देश में उपलब्ध गोबर गोमूत्र का उपयोग करने की सुविचारित योजना हो, तो देश की आधी आबादी को पर्याप्त गैस, ढाई करोड़ नाइट्रोजन फास्फेट युक्त खाद और कीटनाशक दवाएँ मिल सकती हैं। गरीबी की रेखा से नीचे जी रहे एक करोड़ से अधिक परिवारों को गाँवों में पुनः स्थापित करने का यह सुयोग है।

विदेशी गायें दूध के लिए पालते हैं। जैसे ही दूध कम हुआ कि वे उन्हें काट कर खा जाते हैं, क्योंकि गाय की उपयोगिता का समग्र विचार उनके पास नहीं है। वे गाय को पालते हैं, जबकि भारत में गाय हमें पालती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसका दूध जीवन-शक्ति देता है। रोगों का उपचार करने में उससे मदद मिलती है। वृद्धों का वही सुपाच्य आहार है। गाय बैलों की मदद से अन्न वस्त्र की प्रचुरता हुई और गोधन से आजीविका के नये-नये क्षेत्र विकसित हुए। गोपाल कृष्ण ने हलधर के साथ मिलकर धरती को शस्य श्यामल बनाया। जल प्रबन्धन के लिए यमुना को प्रदूषण मुक्त किया। गोवर्धन गिरि की उपयोगिता समझासी एवं गोकुल की प्राणपोषक गाय को 'गो माता' की संज्ञा दी। गोवंश के प्रति अनन्य भाव दर्शाने वाले जैन तीर्थंकर ऋषभ 'वृषभ' से है। बैलों में उत्तम बैल को गौतम कहा गया, जो गौतम बुद्ध के कारण सारे बौद्ध जगत में पूज्यता पाया। न्याय भाष्पकार महर्षि गौतम ने गोवंश की उपयोगिता समझाने वाले सूत्र दिये। ४०० बीमार गायों को संवर्धित करने का भगीरथ कार्य कर सत्यकाम एक हजार गोवंश के साथ अपने आचार्य के पास उपस्थित हुआ तो उसे 'ब्रह्मज्ञानी' मान लिया गया। गोरक्षण, गोपालन, गोसंवर्धन के साथ गो उपासना जुड़ जाने से तीर्थंकर अरिष्टनेमि ने सर्वतोभद्र दर्शन प्रतिपादित किया, जिससे निरामिष भोजन, आहार-शुद्धि, विचार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि, व्यापार शुद्धि विषयक आचार संहिता बनी। गाय को खाने की जगह गाय को खिलाकर खेत, जंगल, पहाड़, नदी, वृक्ष, पशु-पक्षी .के प्रति सदय रहने वाली सृजनात्मक व्यवस्था भारतीय मनीषा की विश्व को महान् देन है। इसीलिए महाराज दिलीप से नन्दिनी नाम की एक गाय ने कहा था, 'न केवलानां पयसां प्रसूति मवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्' मुझे मात्र दूध देने वाला पशु मत समझो, मैं तो तुम्हारी (मानव जाति की) सारी कामनाएँ पूरी करने वाली कामधेनु हूँ।

या लक्ष्मी सर्वभूतानां सर्वदेवेष्ववस्थिता ।
धेनुरूपेण सा देवी सर्वपापं व्यपोहतु ॥

कामधेनु की तात्त्विक पृष्ठभूमि समझे बिना गोपालन करने से धरती संकट बढ़ा है, पर्यावरण दूषित हुआ है, परस्परालंबिता घटी है। प्रकृति का पोषण करने की जगह प्रकृति का शोषण करने वाली यांत्रिक व्यवस्था के चक्रव्यूह में फँसा विश्व मानव दिग्भ्रमित हो गया है। उसकी मारक मनोवृत्ति को तारक मनोवृत्ति में बदलने की चुनौती कौन स्वीकार करेगा? व्यष्टि के साथ समष्टि और अवस्था के साथ व्यवस्था बदलने वाले वैज्ञानिक आगे आयें।

विश्व-खाद्यान्न भण्डार भरा है। उसमें इतना संग्रह है कि हर व्यक्ति को तीन हजार कैलोरी ऊर्जा और ६५ ग्राम प्रोटीन सुलभ हो सकती है। लेकिन उद्योग, व्यापार, संसाधनों पर कब्जा रखने वाली संवैधानिक मान्यताओं के चलते हर पाँच में एक व्यक्ति कुपोषण का शिकार है। उनमें ज्यादा संख्या बालक-बालिकाओं की है। विश्व बैंक के अधिकारियों के अनुसार भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगला देश, भूटान, नेपाल, मालद्वीप, अफगानिस्तान, म्यांमार के ८ करोड़ ७० लाख बाल तथा पालकों के पौष्टिक आहार, प्राथमिक विद्यालय, स्वास्थ्य केन्द्र व पेयजल के लिए १२९ अरब डालर की जरूरत है, जो सन् २०१२ तक हर वर्ष रक्षा बजट में पाँच प्रतिशत कटौती करने से ही पूरी होगी। लेकिन क्या संबद्ध देशों की सरकारें वैसा करेंगी? आचार्य विनोबा ने यही बात दो दशक पूर्व कही और भारत से पहल करने का सुझाव दिया था, पर नेताओं ने नहीं माना। अब विश्व बैंक कह रहा है। सरकारी स्तर पर न हो तो असरकारी कार्य योजना बनाया जाय। इसमें भारतीय बालाएँ परिस्थिति परिवर्तन में अगुवाई कर सकती है, जिन्हें 'दुहिता' (दूध दुहने में कुशल) कहा जाता है। उनकी माताएं ब्रह्म मुहूर्त में उठती, प्रभाती गाते हुए दही बिलौती, मक्खन खिलाती थीं। दूध दही की कमी इसलिए हुई कि सरकारी विभागों ने गाय बैलों के चारागाह में चरने पर टैक्स लगा दिये। वन विभाग पशु पालकों का हित-विरोधी है। धरती और प्रकृति से जुड़ी जीवन-व्यवस्था को मुद्रा के वर्चस्व ने इतना विकृत कर दिया है कि अब मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी आये तो दंडकारण्य में झोपड़ी नहीं बना सकते, महाबली हनुमान फल नहीं खा सकते, कृष्ण गोचारण नहीं कर सकते। हलधर की जमीन अधिगृहीत कर सरकार उन उद्योगपतियों को देती है, जो खनिज तेल, कोयला आदि जीवाष्म ईन्धन जलाना,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कटिबंधीय वर्षा वन नष्ट करना, नदी जल-प्रदूषित करना, गैसों का घनत्व बढ़ाना और पर्यावरण को दूषित करना अपराध नहीं, अधिकार मानते हैं। इसलिए अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की सीमा रेखा पर खड़ी गाय निर्णायक दौर में पहुँच गयी हैं, जो जड़ के पीछे चेतन को गौण नहीं होने देती और अपने अमृतोपम दूध से गरीब, कमजोर, बीमार आदि को प्रोटीन सुलभ कराती है।

हर नागरिक को दूध मिले, तरकारी, फल, अनाज मिले—यह सभी चाहते हैं। बढ़ती जनसंख्या और दिन ब दिन कम पड़ती भूमि की चर्चा करने वाले नहीं जानते कि खेती के साथ गोपालन बढ़ाने से यह चाह पूरी हो सकती है। विश्व स्तर पर प्रति व्यक्ति आधा हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है, जो दुग्धाहार, शाकाहार करने वालों की जरूरत से दुगुनी है। भावी विश्व व्यवस्था में मांसाहार के लिए अवकाश नहीं रह सकता, क्योंकि मांसाहार योग्य पशु जितने वनस्पति खाद्य का उपयोग करते हैं, उतने से विश्व की आधी भोजन पा सकती है। अमेरिका में प्रति व्यक्ति १२० किलो मांस की खपत है। औसत ७० वर्षीय एक अमेरिकी २ करोड़ ६० लाख गेलन पानी, २१ हजार गैलन गैसोलीन (पेट्रोल) १० ह[illegible] पौंड मांस और २८ हजार पौंड दूध इस्तमाल करता है, जो अविकसित व विकासशील देशों के शोषण से ही प्राप्त होता है। इस लुटेरी मानसिकता को बदलना होगा। स्वामी दयानन्द का यह विचार हृदयंगम कराना होगा कि एक गाय की हत्या करने से केवल ८० व्यक्ति ही एक समय मांसाहार कर सकते हैं, जबकि उसे पालने से २५७४० व्यक्तियों को एक समय पर्याप्त दूध मिल सकता है।

'मृत्योर्मा अमृतं गमय'— मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ने वाले भारतीयों के लिए जीवन का अर्थ ही संयम है— 'संयमः खलु जीवनम्।' योजनाकार इस जीवन की अवज्ञा करते हैं और पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत ५०० करोड़ रुपयों का मांस निर्यात करना तय कर लेते हैं। विदेशी अपनी धरती का दबाव कम करने के लिए मांस आयात करते हैं। इससे गाय के विरुद्ध जबरदस्त वातावरण बना और सरकारी सहायता से आधुनिक यंत्र चालित कत्लखाने खुले, जिससे व्यथित होकर आचार्य विनोबा को कहना पड़ा कि कहीं अब वह दिन न आ जाय कि हम सारी गायों को पेट में डालकर उनकी संतति ही खत्म कर डालें। गाय हमारी माता है। गो हत्या मातृ हत्या है। गोहत्या बंदी भारतीय संस्कृति का आदेश है और भारतीय संविधान का यह संकल्प है। इसलिए गोवंश हत्या बंदी केन्द्रीय कानून बनाया जाय। मांस निर्यात बंद किया जाय। चमड़े का निर्यात भी रोका जाय। कानून बनाना सरकार की जिम्मेवारी है। जनता का काम है— गो विज्ञान सीखना और वैज्ञानिक ढंग से गाय की उपासना करना। गो उपासना का मतलब ही है कि हम स्वयं जीयें और दूसरे प्राणियों को अभय दें, जो अपने आसपास रहते हैं। गो विज्ञान द्वारा समस्त चेतन सृष्टि की रक्षा संभव है। यह बात वैश्वीकरण, बाजार व्यवस्था और उदारीकरण की वकालत करने वालों की समझ में आनी चाहिए।

विश्व व्यवस्था के सर्वतोभद्र दर्शन को व्यावहारिक बनाने वाले हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने जितनी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ प्रारम्भ कीं, उनके केन्द्र में गाय है। वे गाय के जरिये दुर्बल और निःसहायों की सहायता करना चाहते थे। यह सहायता जीवन मंडल में उपलब्ध जलवायु, और जीव जगत् में संतुलन बनाये रखने से हो सकती है। गोरक्षा मूलक, स्थानीय उद्योग प्रधान, लोक शिक्षण के प्रयोग व प्रशिक्षण प्रकल्पों द्वारा हम वही कोशिश कर रहे हैं, ताकि विश्व-व्यवस्था में निहित अन्तर्विरोध घटे और गो केन्द्रित अविरोधी व्यवस्था भावी विश्व के लिए अनुकरणीय हो।

■■

मनुष्य कार्बन डाईआक्साइड गैस छोड़ता है जो कि हानिकारक है जबकि गाय के द्वारा मिथेन गैस का रिसाव होता है। मिथेन गैस कार्बनडाईआक्साइड गैस के प्रदूषण को समाप्त कर देती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवंश की रक्षा : राष्ट्ररक्षा

डॉ० कपिलदेव पाण्डेय
पूर्व संस्कृत-विभागाध्यक्ष
आर्यमहिला डिग्री कालेज, वाराणसी

गीता गङ्गा च गायत्री गौर्गोविन्द इति स्मृताः।
एषु पञ्चगकारेषु स्थितो धर्मः सनातनः।

'ग' अक्षर से प्रारम्भ होने वाले पाँच तत्त्व—गीता (श्रीमद्भगवद्गीता) गङ्गा (भगवती भागीरथी), गायत्री (सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का सार गायत्री मन्त्र), गौ (गाय) और गोविन्द (गोपालक भगवान् श्रीकृष्ण) हमारी सनातन भारतीय संस्कृति के मूल हैं। इनके प्रति आस्था, इनकी रक्षा तथा इनका यथायोग्य सेवन प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है, क्योंकि इनके बिना भारत की कोई पहचान नहीं रह जायेगी। गीता साम्प्रदायिकता की संकीर्ण भावना से रहित मानवधर्म का प्रतिपादक एक अतुलनीय अनुपम ग्रन्थ है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को जीवन-युद्ध में निर्भय होकर प्रवृत्त होने का उपदेश दिया है। कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र तो है ही साथ ही कर्मक्षेत्र का प्रतीक भी है। 'धर्म' कर्त्तव्यबोधक शब्द है। गङ्गा इस भूलोक के मानव के द्वारा स्वर्गलोक से अवतरित की गई एक अमृतधारा है। ऐसी पीयूषस्यन्दिनी धारा भारतभूमि को भगीरथ प्रयत्न से प्राप्त हुई है। इसका एक-एक बिन्दुकण सञ्जीवनी प्रदान करने वाला है। गाय हमारी माता है, इससे प्राप्त होने वाले पञ्चगव्यों का महत्त्व सभी पुराणों, धर्मशास्त्रों, आयुर्वेद, ज्योतिष इत्यादि विज्ञानपरक शास्त्रों में भूरिशः वर्णित है। गोविन्द कहाँ यदि 'गो' नहीं। गोविन्द दशावतारों में सर्वातिशायी षोडशकलासम्पन्न साक्षात् परब्रह्म हैं।

प्रस्तुत प्रसंग में 'गोतत्त्व' का वर्णन ही अभिप्रेत है। गो के बिना गोविन्द नहीं, गोविन्द के बिना गीता नहीं। जैसे गीता सभी उपनिषदों का सार है, वैसे ही गायत्री सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का एकमन्त्रात्मक सूत्र है। तात्पर्यतः इन सबके मूल में गोतत्त्व ही अनुस्यूत है। वर्तमान परिवेश में सनातन संस्कृति के इन पाँचों तत्त्वों और उनमें भी विशेष रूप से गोतत्त्व की उपेक्षा होती जा रही है। यह युग का प्रभाव कहें या सांस्कृतिक ह्रास, हमारा ध्यान शाश्वतिक मूल्यों के प्रति शिथिल होता जा रहा है और अर्थपरता एवं कामपरता की ओर उन्मुख होता जा रहा है। निरन्तर हम गोवंश की हत्या में लगे हुए हैं। उससे दुग्ध प्राप्ति न होने पर, उसके बूढ़ी हो जाने पर, उसके चर्म और मांस बेचकर पैसा प्राप्त करते हैं। गङ्गा में कूड़ा-कचरा डाल-डाल कर उसके अमृतमय जल को विषमय करने में तत्पर हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को तो हम भूल ही बैठे हैं। हमारी लोकसंस्कृति से जुड़कर गोपालन करने वाले, आततायी सामन्तों का विनाश कर सामान्य जनजीवन को रम्यता प्रदान करने वाले लोकरक्षक भगवान् श्रीकृष्ण के लीलामय मंगलस्वरूप से मुँह मोड़कर हम अपने को प्रगतिशील मान रहे हैं। पूज्य सन्त विनोबा भावे ने इन पाँच भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों की रक्षा के लिये विपुल प्रयत्न किया और उनके अनुयायी सतत अध्यवसायरत हैं। इस प्रसङ्ग में मुझे आदरणीया बहिनजी स्व० डॉ० प्रेमलता शर्माजी के द्वारा रचित श्लोक याद आ रहा है—

गोघाते निरता वयं प्रतिदिनं गङ्गापि हा! दूषिता
गीता विस्मृतिगर्तगाऽनुदिवसं, गोविन्दचर्चा कुतः।
गायत्री न हि गीयते बत कथं त्रायेत घोरात् कलेः
लोपं हन्त गता गकारविततिः, पुण्या विनोबाऽऽद्रिता॥

'गो' शब्द गत्यर्थक 'गम्' धातु से निष्पन्न है। तात्पर्य है, कि गो अर्थात् गाय गतिशीलता का प्रतीक है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और गतिशीलता ही जीवन है तथा गतिहीनता ही मृत्यु। इस बात को ही ध्यान में रखकर हमारे प्राचीन तत्त्वदर्शी ऋषियों ने कहा था—'गावो मे अग्रतः सन्तु, गावो मे सन्तु पृष्ठतः।' गायें मेरे आगे हों, गायें मेरे पीछे हों, गायें मेरे चारों ओर हों। वस्तुतः यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से विचार करें, तो मालूम होगा, कि हमारे जीवन का प्रत्येक क्षेत्र गोत्व से ओतप्रोत एवं अनुप्राणित है।

यह 'गो' शब्द भी बड़ा विलक्षण है, इसके अनेक अर्थ हैं—पृथिवी, वाणी, इन्द्रिय, नौ संख्या (गणित में), माता, किरण इत्यादि। प्राचीन कवियों ने गाय का वर्णन करते समय पृथिवी से उसकी उपमा दी है और पृथिवी का वर्णन करते समय उसकी उपमा गाय से दी है—'जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्'। राजा दिलीप ने गाय चराते समय उसकी रक्षा वैसे ही की जैसे पृथिवी की रक्षा। दिलीप की गोसेवा का वृत्तान्त सभी जानते हैं। इस गोसेवा का प्रयोजन और फल भी सभी जानते हैं। जरूर दिलीप को कोई रोग रहा होगा, जिससे उन्हें सन्तान की प्राप्ति नहीं हो रही थी। गाय चराने से उन्हें रघु जैसा वीर यशस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसके नाम पर उनके वंश का नाम पड़ा 'रघुवंश'। ब्रह्म के पूर्णावतार श्रीकृष्ण ने अपने लिये यदि कोई काम चुना तो गाय चराना। इसी कारण स्थान का नाम पड़ा 'गोकुल'। 'व्रज' का पूरा नाम 'गोव्रज' है। हम उसे सुविधा के लिये 'व्रज' कहते हैं। मृत्यु के लिये हम 'गोलोकवासी' हो गये, ऐसा मांगलिक शब्द का प्रयोग करते हैं। 'गोचर' चरागाह अर्थ में प्रयुक्त होता है, किन्तु जब हम उसमें दृष्टि शब्द जोड़ देते हैं, तो उससे उस सबका बोध होता है, जो दृष्टिगोचर होता है, हमें दिखाई पड़ता है।

गायें जब जंगल में चरते-चरते कहीं खो जाती थीं, तो उन्हें खोजते थे, उसे गवेषणा कहते थे। आज हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गवेषणा (Research) हो रही है। पहले शाम को गायें जंगल से घास चर करके नगर में घर लौटती थीं, तो उनके खुर से उठी हुई धूलि से आकाश भर जाता था, इसीलिये इस काल का नाम गोधूलि पड़ा। जो हमारे नित्य के जीवन में काम आता है, 'गोधूम' (गेहूँ) वह गोशब्द से बना हे। पहले हमारी खिड़कियों का आकार गाय की बड़ी-बड़ी आँखों के तुल्य होता था, अतः उन्हें गवाक्ष कहते थे। आज उसके अर्थ का विस्तार होने के कारण किसी भी आकार की खिड़की को गवाक्ष कहते हैं। नगर के प्रवेशद्वार या विशाल भवन के मुख्य द्वार को गोपुर कहते हैं। दो कोस की दूरी को गव्यूति और हल में बैल को नाधने के उपकरण को 'गोयूति', कहते हैं। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि, 'गो' शब्द दोनों लिङ्गों में प्रयुक्त होता है—पुंलिङ्ग में 'गो' का अर्थ 'बैल' या साँड़ होता है, और स्त्रीलिंग में गाय होता है। 'गोमायु' का अर्थ होता है, शृगाल। माघ ने शिशुपालवध में इस शब्द का प्रयोग किया है—'अनुहुंकुरुते घनध्वनिं न च गोमायुरुतानि केसरी।' (सिंह मेघगर्जन को सुनकर चिंघाड़ता है, शृगाल के 'हुआँ' हुँआ सुनकर नहीं।)

संगीतज्ञ लोग अच्छी तरह परिचित हैं कि 'गोमुख' एक वाद्ययन्त्र का नाम है। 'गोमुखी' एक थैली होती है, जिसमें हाथ डालकर माला जपते हैं। न्यायशास्त्र के प्रवर्तक का नाम 'गोतम' है। अहिल्या जिसके शाप से पत्थर हो गई थी, उस ऋषि का नाम 'गोतम' है, यह कथा सबको विदित है। पहुँचे हुये साधु-सन्तों को हम गोस्वामी कहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास को कौन नहीं जानता। गो (बैल) इतना सीधा होता है, कि सीधे और अज्ञ व्यक्ति को लोग गोमूढ कहते हैं। शास्त्रों में गोदान का विशेष महत्त्व है। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये उसके नाम से गोदान का विधान है। परन्तु रघुवंश में—'तथास्य गोदानविधेरनन्तरम्' में प्रयुक्त गोदान शब्द का तथा उत्तररामचरित में (कृतगोदानमङ्गलाः) प्रयुक्त गोदान शब्द का टीकाकारों ने 'गो' का अर्थ केश मानकर तथा 'दान' शब्द को 'दोऽवखण्डने' धातु से निष्पन्न मानकर केशान्तसंस्कार अर्थ किया है। 'गो' शब्द का अर्थ गाय के साथ-साथ इन्द्रिय भी होता है। इन दोनों अर्थों का प्रयोग करते हुए यमकालंकार द्वारा गोपियाँ बालकृष्ण की माखन-चोरी के प्रसंग में एक चुटीला व्यंग्य करती हैं—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

''गोरस चाखत फिरत हौ गोरस चाहत नाहिं।'' यह सुधीजन-संवेद्य और स्पष्ट है। 'गोमेद' बहुमूल्य रत्न होता है, जो हिमालय पर्वत तथा सिन्धु नदी से प्राप्त होता है और सफेद, पीला, लाल और गहरे नीले रंग का होता है। इसी प्रकार 'गोरोचन' सुगन्धित पदार्थ होता है, जिसकी उत्पत्ति गोमूत्र या गोपित्त से मानी जाती है और जो मांगलिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त होता है। मथुरा के निकट वृन्दावन में स्थित एक पहाड़ है, जिसका नाम 'गोवर्द्धन' है, जिसके बारे में यह सर्वविदित है कि, ग्वालों एवं गोवंश पर कोप करके इन्द्र के द्वारा मूसलधार वर्षा करने पर कृष्ण ने इसे उँगली पर उठाकर उनकी रक्षा की थी। गोकर्ण मालावार में स्थित एक पवित्र तीर्थ है, जो शिव को बहुत प्रिय है। गोमती उत्तरभारत की और गोदावरी दक्षिण भारत की एक नदी है।

अब इसी सन्दर्भ में 'गव्य' की चर्चा प्रसंगप्राप्त है। भारतीय दर्शन की शब्दावली के अनुसार प्रकृति उसे कहते हैं, जिससे कुछ उत्पन्न होता है, और जो प्रकृति से उत्पन्न होता है, उसे विकृति कहते हैं जैसे मृत्तिका (मिट्टी) प्रकृति है और उससे उत्पन्न 'घट' विकृति है, सुवर्ण (सोना) प्रकृति हैं और वलय, कुण्डल आदि सुवर्णाभूषण विकृति है। इसी प्रकार 'गो' प्रकृति है और उससे उत्पन्न 'गव्य' विकृति है। गव्य पाँच हैं—गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र एवं गोमय (गोबर)। इसीलिये ये सामूहिक रूप से पंचगव्य कहलाते हैं। ये पाँचों बहुत पवित्र माने गये हैं। श्रावणी पूर्णिमा के दिन ब्राह्मणों के उपाकर्म संस्कार के अवसर पर पंचगव्य-स्नान का विधान है। आयुर्वेद में इन पाँचों के औषधीय गुण बताये गये हैं। मैं कहाँ तक गिनाऊँ। हमारा सम्पूर्ण जीवन एवं व्यवहार 'गो' (गाय) एवं गोतत्त्व से परिव्याप्त है। वेदों, पुराणों एवं विभिन्न शास्त्रों में यदि किसी पशु के महत्त्व का अतिशय श्रद्धा के साथ वर्णन किया गया है, तो 'गो' का। 'गो' से यहाँ दोनों अभिप्रेत हैं—गाय और बैल।

यहाँ मैं निदर्शन के रूप में विष्णुधर्मोत्तर पुराण में वर्णित गाय के महत्त्व, उसकी शुश्रूषा, गोचिकित्सा इत्यादि विषयों का संक्षेप में उल्लेख करना प्रासंगिक समझता हूँ। तृतीय खण्ड में मार्कण्डेय-वज्रसंवाद के प्रसङ्ग में कहा गया है—

गावःपवित्रा मङ्गल्या गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः।
यथा देवा यथा वेदा ब्राह्मणाश्च यथा द्विजाः॥
तथा गावो विनिर्दिष्टाः सर्वलोकसुखावहाः।
विप्रेषु मन्त्रास्तिष्ठन्ति गोषु संतिष्ठते हविः।
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिश्च पञ्चमम्।
पवित्रमेतन्निर्दिष्टं नराणां शोधनं परम्॥

अध्याय २९१

अर्थात् गायें पवित्र एवं मांगलिक बताई गईं हैं। सभी लोक गायों में ही प्रतिष्ठित हैं। देवों, वेदों एवं ब्राह्मणों के समान गायें भी सभी लोकों को सुख प्रदान करने वाली हैं। गायें ब्राह्मणों के समान यज्ञों में उपकारक होती हैं, क्योंकि जैसे ब्राह्मणों में मन्त्र अधिष्ठित हैं, वैसे ही गायों में हविष्य (आहुति)। गाय का मूत्र, पुरीष (गोबर), दूध, दही एवं घी पवित्र तथा मनुष्यों का शोधन करने वाला बताया गया है।

गोमती विद्या का उल्लेख करते हुए बताया गया है, कि गायों के स्थान पर गङ्गा निवास करती हैं, उससे उठी हुई धूलि से पुष्टि प्राप्त होती है, उसके करीष में (सूखे गोबर में) लक्ष्मी का निवास है और गाय को प्रणाम करने से धर्म होता है—

गवां हि तीर्थे वसतीह गङ्गा पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्मस्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात्॥

विष्णुधर्मोत्तरपुराण, द्वितीय खण्ड, ४२वाँ अध्याय

अन्त में, निष्कर्ष के रूप में सबसे, विशेषतः भारतीयों से मेरा अति विनम्र अनुरोध है, कि गोपालन तथा गोसेवा करें। गाय को अपनी माता के समान पूज्य एवं आदरणीय मानें। गोघात करने वालों को रोकें क्योंकि 'गो' का एक नाम 'अघ्न्या' भी होता है, जिसका अर्थ है 'अहन्तव्या' अर्थात् न मारने योग्य, तभी भारत देश का कल्याण होगा।

'नान्यःपन्था विद्यतेऽयनाया।'

■■

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोरक्षा पर राष्ट्रपिता बापू के चिंतन

(महात्मा गाँधी ने गो-प्रश्नपर बहुत अधिक विचार किया है और लिखा है। उनके लेखों में से जहाँ-तहाँ से संग्रह करके उनके कुछ विचार यहाँ उद्धृत किये जाते हैं। सं० एकलव्य)

मेरे आँसू

गोरक्षा आज जिस ढंग से रही है, उसे देखकर मेरा हृदय एकान्त में रोता है। रोना मुझे पसन्द नहीं। कोई रुदन करता है तो मुझे दुःख होता है। क्योंकि हमें भारी बलिदान करना है, और भारी बलिदान करने वाले रोयें क्यों? तो भी मेरा हृदय आजकलकी गोरक्षा के अनर्थ से रोता है।

गोरक्षा का मर्म

चम्पारण में एक स्थान में गोरक्षा के विषय में अपना विचार प्रकट करते समय मैंने कहा था कि जिन्हें गोरक्षा करनी है, वे इस बात को भूल जायँ कि गोरक्षा उन्हें मुसलमानों या ईसाइयों से करानी है। हम आज ऐसा समझने लगे हैं कि दूसरे धर्म के लोग गोमांस अथवा गोवध छोड़ें तो उसमें गोरक्षा की पूर्ति हो जायगी। मुझे इस बात में कोई तत्त्व नहीं दिखलायी पड़ता।

परन्तु मेरे ऐसा कहने से यह नहीं समझना चाहिए कि कोई गोवध करता है तो वह मुझे पसंद है, अथवा गोवध को मैं सहन कर सकता हूँ। गोवध से किसी की आत्मा को मुझसे अधिक दुःख होता है, इस बात को मैं स्वीकार नहीं करता। मुझे ऐसा नहीं लगता कि दूसरे किसी भी हिन्दू को गोवध से मेरी अपेक्षा अधिक सख्त चोट पहुँचती हो। लेकिन मैं करूँ क्या? अपने धर्मका पालन मैं स्वयं करूँ या दूसरे से कराऊँ? मैं दूसरे को ब्रह्मचर्य का उपदेश दूँ और खुद व्यभिचार करूँ तो मेरे उपदेश का क्या अर्थ होगा? मैं गोमांस-भक्षण करूँ और उससे मुसलमान को रोकूँ तो यह काम कैसे बने? परन्तु मैं गोवध नहीं करता हूँ, तो भी मुसलमान को गोवध से जबर्दस्ती रोकना मेरा धर्म नहीं। मुसलमानों को जबर्दस्ती गो-वध करने से रोकना उन्हें जबर्दस्ती हिंदू बनाने के समान है।

गोरक्षा मेरे मन से कोई परिमित चीज नहीं। मैं गोरक्षा की प्रतिज्ञा करता हूँ, इसका अर्थ यह नहीं कि मैं हिंदुस्थान की ही गायों को बचाऊँ। मैं तो सारे जगत् में गाय की रक्षा करवाने का व्रत करता हूँ। मेरा धर्म यह सिखलाता है कि मैं अपने आचार से बतला दूँ कि गोवध अथवा गो-भक्षण करना पाप है और इसे छोड़ना ही चाहिये। समूची पृथ्वी के लोग गायकी रक्षा करने लगें, इतनी बड़ी मेरी मनःकामना है; परन्तु इसके लिये तो प्रथम मुझे अपना घर अच्छी तरह साफ करना चाहिए।

दूसरे प्रान्तों की बात जाने दीजिए. गुजरात की ही बात करूँ तो कह सकता हूँ कि गुजरात में भी हिन्दू के हाथ से गोवध होता है। तुम कदाचित् इसे न मानो; परन्तु तुम्हें खबर न होगी कि गुजरात में बैलों को गाड़ी में जोत कर गाड़ीपर अच्छी तरह बोझ लादकर बैलों को अङ्कुश मारते हैं और उससे लोहू की धारा बह निकलती है। तुम कहोगे कि इसे गोवध नहीं कह सकते, बैल-वध कह सकते हैं। मैं तो इसे गोवध ही कहता हूँ, क्योंकि बैल गाय की ही प्रजा है। शायद तुम यह कहोगे कि काड़न को वध नहीं करते; परन्तु हिंसा की व्याख्या दूसरों को दुःख देना—पीड़ा पहुँचाना है। यदि बैल को वाणी होती तो वह जरूर कहता कि तुम मुझे रोज-रोज अङ्कुश भोंकर पीड़ा देते हो; इससे तो अच्छा होता कि एक बार छूरी चलाकर मुझे कतल कर देते। इसलिये इस प्रकार बैल के ऊपर जुल्म करने को मैं गाय की हिंसा समझता हूँ। एक सिंधी मुझे कलकत्ते में मिले थे, वे मुझसे वहाँ हमेशा गाय के ऊपर होने वाली हिंसा की बातें करते थे। एक बात उन्होंने मुझसे ग्वाले के मकान पर चलकर फूँका देकर दूध निकालने की क्रिया देखने को कहा। यह खूनी दृश्य मैंने स्वयं देथा। यह आज भी चालू है, ऐसा मुझे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वास है। ऐसा करने वाले हिन्दू है। अपने यहाँ गाय-बैल जैसे बेहाल हैं, वैसे दुनिया के किसी भी स्थान में नहीं हैं। हमारे बैलों के ऊपर हाड़-चाम के सिवा दूसरा कुछ नहीं होता। फिर भी हम उनके द्वारा बेहद बोझा उठवाते हैं। जबतक यह चल रहा है, तबतक गोवध बंद करने की माँग हम किसी से कैसे कर सकते हैं ?

भागवत में हम पढ़ते हैं कि भारतवर्ष का नाश कैसे हुआ। उसमें अनेक कारणों में एक कारण यह भी बताया गया है कि हमने गोरक्षा छोड़ दी। गोरक्षा करने की असमर्थता का हिन्दुस्थान की गरीबी के साथ निकट सम्बन्ध है। हम-तुम जो शहरों के रहने वाले हों, उनको गरीबों की स्थिति का ख्याल नहीं हो सकता। करोड़ों को एक वक्त पूरा खाना नहीं मिलता। करोड़ों सड़े चावल, आटा, मिरचा और नमक खाकर गुजर करते हैं। ऐसे आदमी गाय की किस प्रकार रक्षा करें? हिन्दुस्थान में अनेकों पिंजरापोल जैनियों के हाथ में हैं। इन पिंजरापोलों में बीमार जानवर रक्खे जाते हैं। वहाँ की व्यवस्था या सुविधा जैसी होनी चाहिए, वैसी नहीं होती। हमारे पास पिंजरापोल ही नहीं, पर सुन्दर डेरी होनी चाहिये। बड़े-बड़े शहरों में स्वच्छ दूध बालकों के लिये भी नहीं मिलता। गरीब मजदूरों की स्त्रियाँ बालकों के लिये दूध के बदले आटा और पानी पाती हैं। तेईस करोड़ हिन्दुओं की बस्तीवाले हिन्दुस्थान में स्वच्छ दूध न मिले, इसका यह स्पष्ट अर्थ है कि हमने गोरक्षा का त्याग कर दिया है।

यदि गोरक्षा के विषय में मुझसे पाठ लेना हो तो मेरा पहला पाठ यह है कि मुसलमानों और ईसाइयों को भूल जाओ और अपना धर्म पालन करो। भाई शौकतअली से मैं साफ कहता आया हूँ कि खिलाफत की गाय मैं बचाऊँ, तभी मेरी गाय बचेगी। मैंने मुसलमानों के हाथ में अपनी गरदन क्यों दी है ? गाय की रक्षा के लिए। मुसलमानों से गाय को बचाने की माँग करता हूँ, इसका अर्थ यह है कि मुसलमानों के हृदय पर असर करके मैं उनकी रक्षा करने की माँग करता हूँ। हिन्दू भाईयों के लिए उन्हें गो-वध नहीं करना चाहिये—ऐसी समझ जबतक उनमें नहीं आती, तबतक मैं धैर्य रक्खूँगा। अपने कृत्य से, अपनी गोरक्षा से और गो-भक्ति से मैं उनके हृदय को बदल सकूँगा।

मेरे विचार से गोवध और मनुष्य वध दोनों एक ही वस्तु हैं। इन दोनों को रोकने के लिए यही उपाय है कि हम अहिंसा की शिक्षा का प्रचार करें, मारने वाले को प्रेम से अपना लें। प्रेम की परीक्षा तपश्चर्या में है। तपश्चर्या अर्थात् दुःख सहन करना। मैं मुसलमानों के लिए जितने अंश में दुःख सहन हो, उतने अंश में दुःख सहन करने के लिए तैयार हो गया, इसका कारण स्वराज्य की प्राप्ति—यह छोटी बात तो थी ही, परन्तु गाय को बचाने की बड़ी बात भी उसमें थी। मेरी समझ के अनुसार कुरानशरीफ में यह लिखा है कि किसी भी प्राणी का नाहक प्राण लेना पाप है। मुसलमानों को यह समझाने की शक्ति प्राप्त करने की मैं इच्छा करता हूँ कि हिन्दुस्थान में हिन्दुओं के साथ रहकर गोवध करना हिन्दुओं का खून करने के बराबर है; क्योंकि कुरान कहता है कि खुदा ने, निर्दोष पड़ोसी का खून करने वाले के लिए जन्नत नहीं है—ऐसा निश्चय किया है। इसीलिए आज मैं मुसलमानों का साथ देता हूँ, उनको दुःख न हो—ऐसा बर्ताव करता हूँ, उनकी खुशामद करता हूँ और यह इसलिए कि इस उपाय से उनकी धर्मवृत्ति जाग्रत् हो।

आज यहाँ से अंग्रेजों और मुसलमानों को मारकर या हटाकर गाय को बचाने से मुझे क्या सन्तोष होगा ? मुझे तो तभी सन्तोष हो, जब सारी दुनिया में सभी गाय को बचाने वाले बन जायँ, और यह काम शुद्ध अहिंसा के पालन से हो सकता है।

अब गोरक्षा का मेरा अर्थ समझ में आया होगा। गोरक्षा स्थूल अर्थ अपनी स्थूल गाय की रक्षा करना है। सूक्ष्म आध्यात्मिक अर्थ यह है कि प्राणिमात्र की रक्षा की जाय।

ऋषियों ने कहा कि गो-रक्षा हिन्दू का परम कर्तव्य है, क्योंकि उससे मोक्ष मिलता है। मैं नहीं मानता कि केवल स्थूल गाय की रक्षा करने से मोक्ष मिल जाता है, क्योंकि मोक्ष पाने के लिए तो राग-द्वेष छोड़ना जरूरी है। इसलिए गोरक्षा का जो हम सामान्य अर्थ करते हैं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उससे विशाल अर्थ होना चाहिए। यदि गोरक्षा से मुक्ति मिलती हो तो गोरक्षा केवल गाय की रक्षा नहीं, बल्कि प्राणिमात्र की रक्षा होनी चाहिए। मतलब यह कि चाहे जिसकी हिंसा—कटुवाक्य से स्त्री-भाई-बन्धुको मनमाना दुःख देना, जिस किसी प्राणी को दुःख देना—यह गोरक्षा-धर्म का उल्लंघन है। हिन्दू धर्म में गाय की रक्षा का उपदेश है, इसका अर्थ क्या यही है कि गाय को न मारना और बकरी को मारना? अथवा गाय को बचाने में मुसलमान को मारना? गाय का संकुचित अर्थ करने से ऐसे बहुत-से अनर्थ सम्भव हैं। गोरक्षा करने वाले बहुतेरे हिन्दू दूसरे प्राणियों का मांस खाते हैं। वे गोरक्षा का दावा नहीं कर सकते, यह बात मेरी अल्पमति में आती है।

किसका दोष?

हिन्दुस्थान जैसे मुल्क में जहाँ जीवदया-धर्म का पालन करने वाले असंख्य मनुष्य बसते हैं, जहाँ करोड़ों मनुष्य गाय को माता के समान मानते हैं, वहाँ ही गाय की यह दुर्दशा? वहाँ ही गाय के दूध का अभाव? वहाँ ही गाय के दूध में मिलावट? वहाँ ही गरीबों के लिये दूध का टोटा? इसमें तो मुसलमानों को दोष दिया जा सकता है और न अंग्रेजी सत्ता को ही। यदि किसी का दोष है तो वह हिन्दुओं का है। वह दोष भी नीयत से—जान-बूझकर नहीं हो रहा है, बल्कि अपने आज्ञान से हो रहा है।

अच्छी कसौटी

जिस वस्तुसे निरन्तर आर्थिक हानि ही हो, उस वस्तु को इस जगत् में कोई भी मनुष्य आजतक निभा नहीं सका। इसी कारण मैंने अनेक बार बतलाया है कि जहाँ धर्म और अर्थ—ये दोनों साथ नहीं चल सकते, वहाँ या तो धर्म में कमी है अथवा अर्थ केवल स्वार्थ है—सार्वजनिक नहीं। शुद्ध धर्म में शुद्ध अर्थ हमेशा समया रहता है। अपूर्ण मनुष्य के लिये धर्म-परीक्षा की यह एक सुन्दर कसौटी है। गाय-भैंस बड़े शहरों में सार्वजनिक अर्थ की दृष्टि से बोझरूप हो गयी हैं; इसी से उनका वध बढ़ता जा रहा है। और यदि बड़े शहरों में गाय-भैंसों का सदुपयोग करना हमें नहीं आया तो किसी भी उपाय से इनका बचाव नहीं हो सकता; इसमें किसी को शङ्का नहीं होनी चाहिए।

गो-संस्थाएँ क्या करें?

१. ऐसी हर-एक संस्था बस्ती से खूब दूर खुली जगह में होनी चाहिए, जहाँ घास हो और पशुओं के घूमने लायक हजारों एकड़ जमीन हो। यदि सभी गोशालाएँ मेरे हाथ में हो तो गायों के आयात के काम के लिये जितनी उपयोगी हों, उनको छोड़कर बाकी सभी गोशालाओं को मैं अच्छी कीमत में बेच डालूँ और पड़ोस में ऊपर लिखे अनुसार खुली जमीन मोल ले लूँ।

२. प्रत्येक गोशाला को आदर्श दुग्धालय और आदर्श चर्मालय बना डालना चाहिए। एक-एक मरे पशु को फेंकना नहीं, बल्कि रखना चाहिए, और उसके ऊपर सारी शास्त्रीय क्रिया करके उसके चमड़े, हड्डियों, अँतड़ियाँ इत्यादि सभी वस्तुओं को अधिकाधिक उपयोगी बनाना चाहिए। मैं तो वध किये हुए पशु के चमड़े की बनी हुई वस्तुओं के मुकाबले मरे पशु के चमड़े को पवित्र और उम्दा बनाकर उपयोग करने लायक समझता हूँ। वध किये हुए पशुओं के हाड़चाम से बनी वस्तुओं को तो मनुष्य को, छोटे-से-छोटे हिन्दू को भी 'अग्राह्य' ही समझना चाहिए।

३. अनेक गोशालाओं में गोबर और गोमूत्र फेंक दिये जाते हैं। इस दुरुपयोग को मैं बड़ा भारी गुनाह समझता हूँ।

४. प्रत्येक गोशाला की व्यवस्था इस विषय के शास्त्रीय ज्ञान रखने वाले मनुष्यों की देख-रेख में तथा सलाह से चलानी चाहिए।

५. प्रत्येक गोशाला स्वावलम्बी होनी चाहिए; और अच्छी व्यवस्था हो तो ऐसा हो ही सकता है। दान के पैसों का उपयोग गोशालाओं के विकास में करना चाहिए। इन संस्थाओं को कमाई करने का विभाग कभी नहीं बनने देना चाहिए। बल्कि जो कुछ कमाई हो, वह सब लूले-लँगड़े, अंगहीन, बूढ़े इत्यादि पशुओं को खरीदने में और कसाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाने जानेवाले अधिकांश पशुओं को खुले बाजार में खरीदने में खर्च करना चाहिये। यह कल्पना गोरक्षा की योजना के मूल में निहित है।

६. अब तो हमारी गोशालाएँ भैंस, बकरे आदि को पालने लगे तो उपर्युक्त उद्देश्यों का पूरा होना कठिन हो जायेगा।

गो-उद्धार कैसे ?

१. गाय के दूध के उपयोग पर जोर देना और दूसरे प्रकार का दूध बंद करना।

२. गाय के मृत शरीर के सभी भाग उपयोग में आयें, वे बेकार न जायँ—ऐसा प्रयत्न करना तथा इसका प्रचार करना।

३. गाय की औलाद सुधारने का प्रयत्न करना।

४. गाय को अधिक दुधारू बनाना इत्यादि।

गो-सेवक क्या करें ?

१. जब-जब दूध और दूध से बने हुए पदार्थों के उपयोग करने का अवसर हो, तब-तब जहाँ तक हो सके गाय के दूध का ही उपयोग करें।

२. जहाँ-जहाँ अपने शरीर के लिये चमड़े की वस्तुओं का उपयोग करना पड़े, वहाँ-वहाँ स्वाभाविक रीति से मरे हुए पशु के चमड़े का ही उपयोग करें, वध किये गये गाय-बैल के चमड़ों का उपयोग कभी न करें। दूसरे चमड़े की चीजों में भी, मरे हुए पशु के ही चमड़े की उपयोग करें।

३. गो-सेवक दूध के लिए पशु पाले तो गाय को ही पाले, भैंस कदापि न रक्खें। जहाँ कहीं दूध के लिए भैंस रक्खी जाती हो, वहाँ गाय पालने की सिफारिश करे और इसके महत्त्व को समझाये।

४. जहाँ कहीं पिंजरापोल अथवा गोशाला या इसी उद्देश्य से कोई दूसरी संस्था चलती हो, वहाँ गो-सेवा के सिद्धान्त को समझायें।

५. जो गो-सेवक दुग्धालय चलाकर नफा करता हो, उसे चाहिये कि जबतक हिन्दुस्थान में सन्तोषप्रद गो पालन न हो जाय, तबतक अपनी आजीविका के उपरान्त बचे हुए नफेको गोरक्षा में ही लगाने का निश्चय करे।

६. जो लोग साधनसम्पन्न हैं, उनको दया-धर्म के निमित्त दुग्धालय और चर्मालय के धंधे को अपनाने की बात समझाये।

७. चर्मालय और दुग्धालय के उद्योग-धंधे के लिये पूरा ज्ञान मिल सके—इसके लिए प्रयत्न करे, और इस धंधे से आजीविका चल जाय तो इसके द्वारा गो-सेवा के लिए जीवन अर्पण कर सके तो करे।

गो-रक्षा कैसे हो ?

गाय बारहमासी फूल के समान सदा दूध नहीं दे सकती। वह विसुक जाती है और कुछ निश्चय आयु में ही बेकाम हो जाती है। पीछे वह न तो बछड़े दे सकती है और न दूध दे सकती है। ऐसी स्थिति में गाय की रक्षा करना मनुष्य का धर्म है। यह रक्षा कम-से-कम खर्च में और अत्यन्त स्वाभाविक रीति से कैसे की जाय? यह मनुष्य की जानकारी का प्रश्न है। इसके पीछे उसे अपनी तमाम बुद्धि-शक्ति और योजना-शक्ति लगानी चाहिए। गायकी सन्तति पुष्ट हो। उसका दूध बढ़े और वह कसदार हो। उसके बाखड़ी होने पर कम-से-कम खर्च में उसका निर्वाह हो; और उसके बेकाम होने के बाद स्वाभाविक रीति से अपनी मौत मरने के समय तक के बुढ़ापे के काल में भी गाय को किसी धंधे में लगा रखना चाहिए। गाय जब तक जीये, तबतक इसके मलमूत्र का भी अधिक-से-अधिक पूरा-पूरा उपयोग किया जाय। यह स्वाभाविक मौत से मर जाय तब इसके चमड़े, हड्डियाँ, अँतड़ियाँ आदि के द्वारा अधिक-से-अधिक उपज की जाय। और इतना करने के पश्चात् जिस अंश तक गाय परावलम्बी रहे, उतने अंश तक उसके जिलाने का भार दूसरे दूध के धंधे पर ही पड़े; ऐसी व्यवस्था की जाय तभी गोरक्षा हो सकती है। जो गाय अपना जीवन धारण करती हुई अपने मालिक को भी जिलाती है और पैसे वाला बनाती है, वह गाय अपनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाति के असहाय, अपंग, बूढ़े प्राणियों को भी सहज ही जिला सकती है। केवल मनुष्यों को अपना लोभ उस दर्जेतक सीमित करना पड़ेगा।

गोरक्षा मुझे अति प्रिय है। यदि कोई मुझसे पूछे कि हिन्दू-धर्म का बड़े-से-बड़े बाह्य स्वरूप क्या है तो मैं 'गोरक्षा' को बतलाऊँ। इस धर्म को हमलोग भूल गये हैं, यह बात वर्षों पहले मेरी दृष्टि में आयी थी। दुनियाँ में ऐसा देश मैंने नहीं देखा, जहाँ गो-वंश हिन्दुस्थान के समान लागर हो। प्रमाण में, हम हिन्दुस्थान में पशुओं की हड्डी-पसली जितनी निकली देखते हैं उतनी दूसरी किसी जगह देखने में नहीं आती। अंग्रेज लोग गो-मांस खाते हैं फिर भी इंग्लैंड में लागर पशु मैंने नहीं देखे।

जैसे हमारे पशु दुबले हैं, वैले ही हम हैं। जहाँ पशु भूखों मरते हैं; वहाँ तीन करोड़ मनुष्य भूखों मरें—इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

अपने पिंजरापोलों की दशा देखो। व्यवस्थापकों की उदारता के लिए मेरे हृदय में आदर है, परन्तु उनकी व्यवस्था के लिये बहुत ही कम आदर है। पिंजरापोल गाय और उसके वंश की रक्षा करते हैं, यह मैं नहीं मानता। पिंजरापोल कुछ लागर पशुओं के रखने और उनको सुख-पूर्वक मरने देने का स्थान नहीं होना चाहिये। पिंजरापोल में मैं आदर्श गाय-बैलों को देखने की आशा करता हूँ। पिंजरापोल शहरों के मध्य में न होकर बड़े-बड़े खेतों के बीच होनें चाहिए; और उनमें बेशुमार पैसा खर्च करने के बदले बेशुमार पैसा पैदा होना चाहिए।

हिन्दुस्थान के पशुओं को हिन्दू किस तरह रखते हैं? उनके बदन में तीखी बरछी कौन चुभाता है? उनके ऊपर असह्य भार कौन लादता है? उनको कम खुराक कौन देता है? उनके द्वारा जरूरत से ज्यादे काम कौन लेता हैं?

मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि हिन्दू का पहला काम अपने ही घर को साफ करना है। मुझमें शक्ति हो और समय मिले तो मैं पिंजरापोलों के सुधारने में, पशुओं की देख-रेख का शास्त्रीय ज्ञान प्रजा को प्रदान करने में, निर्दय हिन्दुओं को अपने पशुओं के ऊपर दया करना सिखाने में, तथा स्वच्छ दूध गरीब-से-गरीब बालक को और रोगी को पहुँचाने में गोरक्षा मण्डलियों को लगाऊँ। इन मण्डलियों की व्यवस्था का सबसे बड़ा काम मैं प्रथम हिन्दुओं के द्वारा ही लूँ।

पीछे अंग्रेजों से गोमांस का त्याग करने की प्रार्थना करूँ। हमारे हिन्दू राजा लोग अंग्रेज अतिथियों की आवभगत करते समय अपने खास धर्म को भूल जाते हैं और गोमांस देने से भी नहीं हिचकिचाते। उनको इस अधर्माचरण से मुक्त होने की प्रार्थना करूँ और शरमाऊँ।

इतना करने पर ही मुझे अपने मुसलमान भाइयों से गो-वध बंद करने के लिए कहने का हक प्राप्त होता है। ऐसा अपना धर्म स्पष्ट दीख पड़ता है। तथापि हम अन्त में करने योग्य काम को पहले ही करने चले हैं। मुसलमान के हाथ से भलाई से या बलात्कार से ही गाय को छुड़वाने में हमारे मन गोरक्षा की समाप्ति हो जाती है। परिणाम वह हो रहा है कि हिन्दू-मुसलमान के बीच बैर-भाव बढ़ गया, झगड़े का कारण खड़ा हो गया, और इस प्रवृत्ति के फल-स्वरूप बहुत से पशुओं का वध हुआ, क्योंकि मुसलमान भाई जिद्द चढ़ गये। गाय के बचाने में स्वयं मरना ही परम धर्म है। मेरे अभिप्राय के अनुसार गोरक्षा के प्रश्न का अर्थशास्त्र ठीक-ठाक समझा जाय और पाला जाय तो उसमें से धर्म के नाजुक प्रश्न का अपने-आप हल हो जायेगा। गोवध आर्थिक रीति से अशक्त होना चाहिए, और वह अशक्य बनाया जा सकता है। दुर्भाग्य से संसार में हिन्दुस्थान ही ऐसा देश है, जहाँ हिन्दुओं के पवित्र माने हुए पशु का भी वध सस्ते-से-सस्ता हो गया है; इसलिए मैं नीचे लिखे उपायों को बतलाता हूँ—

राज्य का कर्त्तव्य

- राज्य बाजार में बिकने आने वाली तमाम गायों को अधिक-से-अधिक कीमत देकर खरीद ले।
- राज्य अपने सभी मुख्य शहरों में दुग्धालय चलाकर सस्ता दूध बेचे।
- राज्य चर्मालय की स्थापना करे, और वहाँ अपनी मिल्कियत के तमाम पशुओं की हड्डी और चमड़े का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपयोग करे, और प्रजा की मिल्कियत के पशुओं में से भी मरे हुए तमाम पशुओं को खरीद ले।

● राज्य आदर्श पशुशालाएँ रक्खे तथा पशुओं को पाले, और उनके पालन-पोषण की कला का ज्ञान लोगों को प्रदान करे।

● सरकार विस्तृत गोचरभूमिकी व्यवस्था करे तथा गोरक्षा का शास्त्र लोगों को समझाने के लिए श्रेष्ठ विशेषज्ञों की सेवा प्राप्त करे।

● इसके लिए एक खास विभाग खोले, और उसमें नफा करने का बिल्कुल ही विचार न रखकर यह उद्देश्य रक्खे कि पशुओं की विभिन्न नस्लों और उनकी रक्षा आदि के हर एक विषय में समय-समय पर जो सुधार हों, उनसे लोग पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

इस योजना में यह बात तो आ ही जाती है कि तमाम बूढ़े, लूले-लँगड़े और रोगी पशुओं की रक्षा राज्य को ही करनी चाहिए। निश्चय ही इसमें भारी बोझ है; परन्तु यह बोझ ऐसा है कि इसे हर एक राज्य को और खासकर हर-एक हिन्दू राज्य को उठाना ही चाहिए। इस प्रश्न के ऊपर विचार करने पर मेरी यह दृढ़ धारणा हो गयी है कि शास्त्रीय रीति से दुग्धालय और चर्मालय चलाये जायँ तो राज्य उनके खादकी प्राप्ति के अतिरिक्त, आर्थिक दृष्टि से जो पशु निकम्मे हो गये हैं उनका निर्वाह भी कर सकता है; यही नहीं बल्कि बाजार भाव से चमड़ा, चमड़े का सामान, दूध और घी-मक्खन इत्यादि तथा मरे हुए पशुओं से उत्पन्न होने वाली खाद को भी बेच सकता है। शास्त्रीय ज्ञान के अभाव और झूठी भावना के कारण ये सभी वस्तुएँ प्राय: व्यर्थ नष्ट हो जाती है और इनसे अधिक-से-अधिक लाभ नहीं उठाया जाता।

यह ऐसी हानि है कि इसको कोई व्यक्ति या संस्था नहीं रोक सकती। यह बात मुख्यत: सरकार के ही हाथ की है। इसमें लोगों को पशु पालना, दुग्धालय चलाना और साँड़ चुनने की शिक्षा देना जरूरी है। मेरे नम्र विचार के अनुसार सारी प्रजा के साथ दृढ़ता से और ज्ञानपूर्वक काम करते हुए गोधन की रक्षा करना राज्य का कर्त्तव्य है। राज्य के बालकों और लोगों को नीरोग और सस्ता दूध मिल सके—ऐसी व्यवस्था करना राज्य के प्रथम कर्त्तव्यों में से एक कर्त्तव्य है, ऐसा मैं मानता हूँ। ब्लेचफर्ड का कहना है कि 'जिस प्रकार पोस्टेज के टिकटों की कीमत सर्वत्र एक-सी होती है, उसी प्रकार दूध की कीमत और जाति का प्रमाण सर्वत्र एक-सा चालू कराना चाहिए।' इसमें मेरी पूर्ण सम्मति है।

प्रस्तुति : श्री श्री गोपाल गोयल
अध्यक्ष,
काशी गोशाला प्रबन्धकारिणी समिति

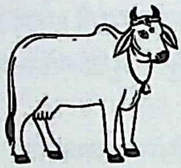

गाय का दूध *कैसे बढ़ाएँ?*

१. प्रसव के तीसरे दिन उड़द का दलिया ५०० ग्राम, नमक ५० ग्राम, हल्दी २५ ग्राम और पीपल का चूर्ण ५० ग्राम, इन सबको मिलाकर पानी में पका लें और फिर २५० ग्राम गुड़ में मिलाकर संध्या के समय गाय को खिलाएँ। इससे दूध बहुत बढ़ता है।

२. बाँस की पत्ती २५ ग्राम उबालकर उसमें थोड़ी-सी अजवाइन और गुड़ मिलाकर खिलाने से दूध बढ़ता है।

३. गाय के दूध बढ़ाने का सर्वोत्तम तरीका यह है कि गाय को उसी साँड से बर्धाया जाये जिसकी माँ बहुत ज्यादा दूध देने वाली रही हो।

प्रस्तुति— श्री आनन्द ड्रोलिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत की राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा के लिये पूर्ण गोहत्या-बंदी आवश्यक

श्री राधेश्याम खेमका

अध्यक्ष, शासक मंडल, काशी गोशाला

परमपिता प्रभुकी इस सृष्टि में 'गौ' एक अद्भुत प्राणी है। कलिकाल के प्रभाव से संसार में प्रायः सभी वस्तुओं का अलौकिक प्रभाव लुप्त-सा हो गया है, किन्तु गोमाता का दिव्य प्रभाव आज भी अक्षुण्ण है। गो-सेवा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चारों पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं। शास्त्र तो इसका समर्थन करते ही हैं, अनुभव से भी इसकी सत्यता प्रमाणित हो चुकी है। शास्त्रों में कल्पवृक्ष, चिन्तामणि तथा कामधेनु—इन तीनों को अखिल कामनाओं का प्रदाता माना गया है। इनमें भी कामधेनु का महत्त्व अधिक है। कल्पवृक्ष कोई एक ही वृक्ष है, सभी वृक्ष कल्पवृक्ष नहीं हो सकते। इसी प्रकार सब प्रकार की मणियों में चिन्तामणिका गुण नहीं आ सकता है, परन्तु गौएँ सभी कामधेनु हैं। कामधेनु की संतानें भी कामधेनु ही हैं। किसी भी गौ की भक्ति पूर्वक सेवा की जाय, वह अपने भक्त की समस्त कामनाएँ पूर्ण करने में समर्थ है। राजा दिलीप ने नन्दिनी की सेवा से अभीष्ट मनोरथ प्राप्त किया था। आज भी कितने ही सद्गृहस्थ गो-सेवा से सब तरह का लाभ उठा चुके हैं और उठा रहे हैं। कल्पवृक्ष और चिन्तामणि यद्यपि कामनापूरक माने गये हैं, तथापि वे मोक्ष या भगवत्प्राप्ति नहीं करा सकते। उनसे केवल लौकिक कामनाओं की ही पूर्ति हो सकती है। इतने पर भी वे सबको सुलभ नहीं हैं, किन्तु गौएँ घर-घर सुलभ हो सकती हैं। इनसे केवल लौकिक कामनाओं की ही नहीं, समस्त पुरुषार्थों की—मोक्ष एवं भगवान् की प्राप्ति तक होती है। इसीलिये भगवान् के इस कामधेनु को अपनी दिव्य विभूतियों में परिगणित किया है। गीता में भगवान् ने कहा है—**'धेनूनामस्मि कामधुक्'**—दूध देने वाले समस्त पशुओं में मैं कामधेनु हूँ।

अपने शास्त्रों के अनुसार गाय में तैंतीस कोटि देवताओं का निवास है; अर्थात् सम्पूर्ण देवी-देवताओं की आराधना केवल गौ माता की सेवा से हो सकती है। भगवत्प्राप्ति के अन्यतम साधनों में गौ की सेवा भी एक ऐसा ही साधन है, जिससे भगवान् शीघ्र ही सुलभ हो जाते हैं। भगवान् हमारे इष्टदेव हैं, परन्तु गौएँ उनकी भी इष्टदेवी हैं। वे इन्हीं की सेवा के लिये 'गोपाल'-शिरोमणि बनकर इस भूतल पर अवतीर्ण होते हैं। भगवान् भी जिनके सेवक हैं, उनकी सेवा से भगवत्प्राप्ति में क्या सन्देह हो सकता है। यह तो है गो-सेवा का पारमार्थिक लाभ, परन्तु गौ से जो लौकिक लाभ मिलते हैं, उनकी तो गणना ही नहीं की जा सकती। संसार में ऐसा कोई जीव नहीं, जिसका मल-मूत्र भी लोकोपकारी और पवित्र हो। गाय का मल—गोबर और मूत्र भी मनुष्य के लिये अत्यधिक उपयोगी है और उसके स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं आर्थिक जीवन-सम्बन्धी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ये खेतों के लिये खाद एवं अन्य जलावन आदि साधनों में उपयोगी होते हैं। गायों के बछड़े बैल के रूप में खेती के लिये सहायक होते हैं।

कहते हैं कि माँ के दूध के बाद गो-दुग्ध ही मानव-शिशु का पेट भरता है और उसका पोषण करता है। कुछ समय के बाद माँ के दूध की जगह भी यह उसका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वोत्तम खाद्य बन जाता है। गाय के दूध में जो तत्त्व प्राप्त होते हैं, वे अन्य किसी के दूध में नहीं प्राप्त होते। इसीलिये आयुर्वेद में गो-दुग्ध, गो-दधि तथा गो-नवनीत (मक्खन)-को बाल, वृद्ध, युवा एवं रोगी सबके लिये हितकारी तथा अमृत के समान उपयोगी बताया गया है—

जरासमस्तरोगाणां शान्तिकृत् सेविनं सदा ।
तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ॥

पर ये सभी वस्तुएँ धीरे-धीरे आँखों से ओझल होती जा रही हैं। ऐसा लगता है कि कुछ समय बाद सम्भवतः इनके दर्शन भी दुर्लभ हो जायँगे। वस्तुतः गाय एक साधारण पशु के समान नहीं है। यह मनुष्य के उपयोग के लिये दिव्य पावनत्व से परिपूर्ण है। इसकी दिव्यता इसी विचित्र और अद्भुत बात से सिद्ध हो जाती है कि यह जीवितावस्था में तो सर्व प्रकार से लोकोपकारिणी है ही, मृत्यु के पश्चात् भी गाय का चमड़ा, पूँछ, खुर आदि प्रत्येक वस्तु लोकोपयोगी होती है। इस तरह यह संसार का सर्वाधिक उपयोगी जीव है। इसीलिये इस देश के ऋषि-महर्षि और शास्त्रों ने 'गौ' को माँ की संज्ञा दी है।

भारतीय संस्कृति में गङ्गा, गौ और गीता—इन तीनों को 'माता' शब्द से सम्बोधित किया गया है। इसका कारण यह है कि यहाँ 'माँ' को सर्वोपरि श्रद्धा का केन्द्र माना जाता है। यहाँ के मनीषियों की यह मान्यता है कि जीवनपर्यन्त 'माँ' की सेवा करने पर भी व्यक्ति माता के ऋण से उऋण नहीं हो सकता। माता अपने सभी पुत्रों का समान भाव से हित करती है। वहाँ छोटा-बड़ा ऊँच-नीच आदि का कोई भेद नहीं रहता। इसीलिये भगवान् का अवतार होता है। संत गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने लिखा है—

गो द्विज धेनु देव हितकारी ।
कृपासिंध मानुस तनु धारी ॥

यह गङ्गावत् सब की कल्याणकारिणी है—

'सुरसरि सम सबकर हित होई।' सुरसरि—भगवती गङ्गा सबका हित समान रूप से करती हैं। वहाँ जाति-पाँति, वर्ण और आश्रम आदि का कोई भेद नहीं होता। जो भी वहाँ जाता है, गङ्गा जल से लाभान्वित होता है। इसी प्रकार गौ की भी महिमा है। गौ माता भी अपने सभी पुत्रों का समान रूप से उपकार करती हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी—किसी भी जातिका कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, गौमाता का दूध तथा अन्य सभी सामग्रियाँ समान रूप से बिना किसी भेद-भाव के उन्हें प्राप्त होती हैं और समान भाव से ही उनका लाभ उन्हें लिता है, अतः गाय राष्ट्र की निधि है। इसे राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिये।

पर यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि भारतवर्ष की इस पवित्र भूमि पर पूर्ण रूप से गोहत्या आज तक बन्द नहीं हो सकी। इस देश का दर्शन, धर्म, सम्प्रदाय, तन्त्र और मजहब सबने एक स्वर से गो-हत्या का विरोध किया—हिन्दू, सिख, ईसाई, इस्लाम किसी ने भी गो-वध का समर्थन नहीं किया है। इतिहासकारों का कहना है कि हिन्दू-शासन काल में तो इस देश में गो-हत्या का प्रश्न ही नहीं था, मुगल शासन काल में भी गोहत्या कानून से बंद थी। सर्वप्रथम अंग्रेजों के शासन-काल में ही कसाईखाने में गायों का काटना प्रारम्भ हुआ। अंग्रेज सर्वप्रथम भारतीय संस्कृति को छिन्न-भिन्न करना चाहते थे। इसलिये उन्होंने देश में गोहत्या प्रारम्भ की। उन दिनों हम पराधीन थे। यह देश गुलामी की जंजीरों से बँधा था। देशवासियों के सामने एक ही लक्ष्य था कि आजादी कैसे प्राप्त की जाय। वे यह समझते थे कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद गो-हत्या जैसा काला कलङ्क तो स्वतः ही दूर हो जायगा। पर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद तत्कालीन सरकार ने गोहत्या बंदी का कोई सुदृढ़ कानून नहीं बनाया। तब देश की जनता ने सत्याग्रह किया, आन्दोलन किये। संतों-महात्माओं ने उपवास किया। जिसके फलस्वरूप प्रदेशीय स्तर पर कुछ राज्यों में गो-हत्या-बंदी के कानून बनाये गये। पर ये कानून प्रायः अधूरे हैं। इनसे पूर्णतया गो-हत्या बंद नहीं हो सकी है। आज भी कलकत्ता, बम्बई, केरल, मेघालय, अरुणाचल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदि प्रदेशों के कई स्थानों पर धड़ल्ले से कसाईखानों में गौएँ काटी जाती हैं। जिन प्रदेशों में गोहत्या बन्द है, वहाँ से भी गौएँ चालान कर इन स्थानों के कसाईखाने में भेजी जाती हैं। यह सब एक महान् कलङ्क है इस देश के लिये और यहाँ की जनता के लिये।

आज देश में हत्याओं का दौर चल रहा है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की जीवन लीला को बिना कारण क्षणभर में समाप्त कर देता है; सब लोग स्तब्ध हैं, अशान्त हैं। कोई जानता नहीं कि किस क्षण किस पर यह आघात हो जायगा। एक रोग की चिकित्सा होती है तो दूसरा रोग उत्पन्न होने लगता है। हमारी दृष्टि में भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण की इस पवित्र धरा पर, जहाँ बुद्ध और गाँधी जैसे संतों ने सत्य और अहिंसा का दीप जलाया, जब तक गौमाता के रक्त की एक बूँद भी गिरती रहेगी, तब तक हम इस महान् पाप से मुक्त नहीं हो सकते तथा इन समस्याओं का स्थायी समाधान प्राप्त नहीं किया जा सकता।

आज सर्वाधिक आवश्यकता है—पूर्णतया गोहत्या बंद करने के लिये एक सुदृढ़ केन्द्रीय कानून की आवश्यकता है कि देशवासी सद्भावनापूर्वक पूर्ण स्नेह और सौहार्द के साथ सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करें; देश के लाखों और करोड़ों लोगों के द्वारा उनके पास पत्र लिखे जायँ कि हम भारत वर्ष में प्रभावी केन्द्रीय कानून द्वारा पूर्ण रूप से गो-वंश की हत्या बंद कराना चाहते हैं; पूर्ण गो-हत्या बंदी का शीघ्र केन्द्रीय कानून बनाया जाय। इस आशय के पत्र अपनी-अपनी भाषा में संक्षेप या विस्तार—किसी भी रूप में सब लोगों को स्वयं भी भेजना चाहिये तथा अपने इष्ट-मित्रों और बन्धु-बान्धवों को भी भेजने के लिये प्रेरित-उत्साहित करना चाहिये। साथ ही हस्ताक्षर-अभियान भी चलाये जायँ। गोवंश की हत्या कानून से बंद कराने का प्रस्ताव लिखकर उस पर अपने गाँवों और मुहल्लों से हजारों लोगों के हस्ताक्षर कराये जायँ और उसे प्रधानमंत्री, भारत सरकार, पो०-नयी दिल्ली—इस पते पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जाय। यह तब तक अनवरत भेजा जाय, जब तक इस पर केन्द्रीय (भारत) सरकार द्वारा गोहत्या-बन्दी का कानून नहीं बन जाता।

इस देश को तथा यहाँ की संस्कृति को जीवित रखने के लिये आज नहीं तो कल इस देश से गोहत्या का काला कलङ्क समाप्त होकर ही रहेगा। पर हम सब लोगों को निमत्ति बनकर पुण्य का भागी बनना चाहिये। भगवान् श्रीकृष्ण ने अकेले ही गोवर्धन पर्वत उठाया, पर ग्वाल-बाल सब ने अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार सहयोग दिया। संत-महात्माओं की इस पुण्य भूमि में गोहत्या-जैसा जघन्य पाप सहन नहीं हो सकता, अतः अपनी राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा के लिये गोरक्षा परम आवश्यक कर्त्तव्य है।

■■

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

गोरधनदास लक्ष्मीदास

लक्खी चौतरा, वाराणसी

फोन

(दुकान) ३३३२१२, ३३३४८७, (निवास) ३२१०१०८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय और गोपाष्टमी

श्री दीनानाथ झुनझुनवाला
पूर्व प्रधानमंत्री, काशी गोशाला

हमारे देश की पहचान गाय और गोवंश है। गाय हमारे धर्म, अर्थ एवं स्वास्थ्य से सीधे-सीधे जुड़ी है। कहते हैं गाय में तैंतीस करोड़ देवताओं का वास है। गाय का नन्दी भगवान शंकर की सवारी है और गाय के बछड़े जहाँ उछल-कूद करते हैं, वही वृन्दावन है।

गाय और गोवंश हमारा राष्ट्रीय पशु-धन है। अगर गाय न होती तो बैल न होते और बैलों के अभाव में न तो खेती हो पाती और न माल ढोये जाते। इस प्रकार गोवंश हमारे देश के अर्थतन्त्र से सीधे-सीधे जुड़ा है।

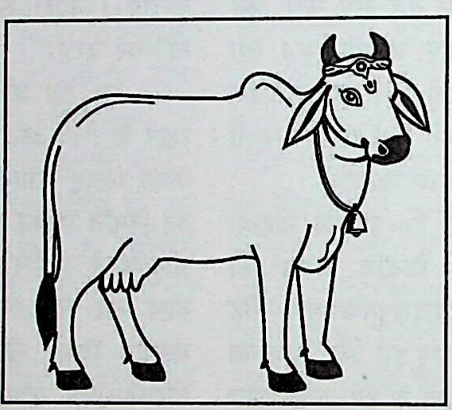

शास्त्रों में गोपाष्टमी का महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन भगवान कृष्ण ने गोचरण (गायों को चराने का कार्य) प्रारम्भ किया था। ऐसा भी वर्णन है कि गोचारण के समय भगवान कृष्ण की प्रेम और समर्पण की प्रतीक राधा से भेंट हुई। वृन्दावन में कहते हैं कि कन्हैया राधा बिना आधा है। कृष्ण और राधा का प्रेम विश्व इतिहास में अकेला और अनूठा है।

कृष्ण का दूसरा नाम गोपाल भी है। गायों को पालना, चराना तथा वंशी बजाकर रिझाना उनका स्वभाव था। इतिहास साक्षी है कि भगवान कृष्ण के समय हमारे देश में दूध, दही की नदियाँ बहती थी। यानि देश में इतना दूध, दही, मक्खन, घी आदि था कि सर्व सुलभ था। दूध, दही की सर्व सुलभता राष्ट्र को बलिष्ठता एवं पौरुष प्रदान करती है, लेकिन आज दूध, दही के अभाव में बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। अब प्रश्न उठता है कि दूध, दही की सर्व सुलभता कैसे बढ़े? इसका एकमात्र उपाय गोशालाओं को मजबूत एवं उपयोगी बनाना होगा। देशवासियों को मन से यह भ्रान्ति निकाल देनी होगी कि गोशालाएँ केवल अपंग एवं बूढ़ी गायों का आश्रय स्थल है। गोशाला का जितना उद्देश्य ठूँठ एवं अपंग गायों के सेवन का है उससे ज्यादा दूध उत्पादन की जिम्मेदारी इस पर है। गोशालाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिए एक कार्य योजना बनानी चाहिए ताकि उपलब्ध जमीन में हरा चारा हो, ठूँठ गायों का पालन हो एवं दुधारू गायों की सेवा से दूध का उत्पादन बढ़े एवं नस्ल सुधार का कार्यक्रम भी साथ-साथ चले। आज आर्थिक कठिनाई तो है लेकिन उससे बड़ी कठिनाई कार्यकर्ताओं की है। समाज में सेवा कार्य करने वालों को पहचानना होगा।

हमें गाय को पूजा की वस्तु के साथ उपयोगिता की दृष्टि से देखना चाहिए। इतना परोपकारी जीव दुनिया में मिलना सम्भव नहीं है। मनुष्य जिन चीजों का उपयोग नहीं करता उनके सेवन से अमृत तुल्य दूध देने वाली गाय से बढ़कर उपयोगी कौन होगा? गेहूँ, चावल हम खाते हैं उसका भूसा गाय, तेल हम खाते हैं उसकी खली गाय। दाल हम खाते हैं लेकिन उसका छिल्का चूनी गाय खाती है। आटा हम खाते हैं लेकिन गाय चोकर। माता का दूध एक दो साल हम पीते हैं लेकिन गाय के दूध का सेवन हम जीवनपर्यन्त करते हैं। दुनिया में सबसे बड़ा परोपकारी वही है जो समाज से लेता कम है और देता ज्यादा है। गाय से बड़ा परोपकारी जीव कहाँ देखने को मिलेगा जिसने ऐसी चीजों का सेवन किया जिसे मनुष्य ने त्याग दिया और ऐसा अमृत सरीखा दूध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिया जिसका हम जीवन भर सेवन करते हैं एवं पुष्ट होते हैं। गाय का गोबर भी पवित्र है। भूमि पूजन में गोबर का लेप भूमि को पवित्रता प्रदान करता है। वैज्ञानिकों ने कहा है कि मिट्टी के दीवार में गोबर लेपन के उपरान्त रेडियोएक्टिव किरणों का भेदन रुक गया।

आयुर्वेद के अनुसार पंचगव्य का नियमित सेवन स्वास्थ्य को निश्चित रूप से ठीक करता है। पंचगव्य में पाँच चीजें हैं—गोबर, गोमूत्र, गाय का दूध, दही एवं गाय का घी। वैज्ञानिकों ने गोबर का महत्त्व आज पहले से अधिक समझा, कारण रासायनिक खादों के लगातार प्रयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति कमजोर होती जा रही है। उसे पुनर्जीवित करने हेतु गोबर सर्वोत्तम है। गोमूत्र का छिड़काव फसल पर करने से कीड़े-मकोड़े नहीं लगते तथा यह हानिकारक भी नहीं है जबकि रासायनिक औषधियों का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। विदेशों में दो प्रकार की सब्जियों का विक्रय होता है—एक रासायनिक खाद एवं दवा से पैदा की जाती है तथा दूसरा बिना उसकी मदद से। बिना रासायनिक दवाओं के प्रयोग वाला साग-सब्जी डेढ़े दाम में ऊँचे भाव पर बिकती है।

आज विज्ञान बहुत तरक्की पर है लेकिन ऐसी मशीन बनाना उसके लिए सम्भव नहीं है कि एक तरफ से भूसा, खरी, चूनी डालें और दूसरी तरफ से दूध निकले। गाय का महत्त्व और उपयोगिता समझने की चीज है। जो वस्तु जितनी धार्मिक है वह उतनी ही उपयोगी है। तार्किक दृष्टि से भी गाय जीव-जगत में सबसे ज्यादा उपयोगी है। गोपाष्टमी पर हम संकल्प करें कि गोशालाओं को मजबूत करेंगे तथा देश में पुनः दूध, दही की नदी बहा देंगे। गाय की सेवा ही गाय की पूजा है।

लोकाचार में पूजा का अर्थ है रोली चन्दन लगाना, अक्षत पुष्प चढ़ाना, आरती उतारना एवं प्रसाद चढ़ाना। गोपाष्टमी पर गाय की पूजा करने हेतु निकले लोग थोड़ी हरी घास या जलेबी गाय को खिला देते हैं। शास्त्रों में गो-पूजा का चाहे जो विधान हो, गाय में चाहे कितने ही देवताओं का वास बताया हो लेकिन जब तक सेवा को पूजा मानने का अभ्यास विकसित नहीं होगा तब तक दूध, दही की नदियाँ बहाने का इरादा दिवा-स्वप्न होगा। जिन देशों ने गो-सेवा की, गो-पूजा नहीं की वे दूध, दही के उत्पादन में आत्मनिर्भर हैं तथा अपने देशवासियों को भरपेट दूध एवं दूध से उत्पादित वस्तुएँ जैसे दही, मक्खन, घी आदि सुलभ कराते है। हमारी पूजा को सेवा का स्वरूप प्रदान करना होगा तथा केवल गोपाष्टमी के बजाय इसे प्रत्येक दिन का अभ्यास बनाना होगा। हम पूजा करने का दम्भ करते हैं लेकिन हमारा सब्जी या अन्य पदार्थ गाय ने खा लिया तो डंडा मारने में भी संकोच नहीं करते।

गाय को छोड़कर अन्य किसी भी जीवमात्र की विष्ठा पवित्र नहीं मानी जाती। गोबर के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। जबकि केवल रासायनिक खाद से जमीनें ऊसर होती जा रही हैं। जमीन को ऊसर होने से बचाने के लिये गोबर का महत्त्व बढ़ गया है। आज गोबर से गैस बनाई जाती है और उस गैस से खाना बनता है एवं रोशनी भी प्राप्त की जाती है। आज देश में उत्पादित पूरे गोबर से गैस बनाई जाय तो उससे बिजली की खपत में बचत होगी। आज एक मेगावाट बिजली में लागत खर्च ४ करोड़ है और गोबर गैस का भरपूर प्रयोग हमें हमारे बिजली खर्च में अप्रत्याशित बचत करेगा।

गोमूत्र का सेवन भी सर्वविदित है। इसका पंचगव्य में तो प्रयोग होता ही है, इसके छिड़काव से साग-सब्जी कीटाणुमुक्त होती है तथा यह स्वास्थ्य पर किसी भी प्रकार का प्रतिकूल असर नहीं डालती।

हम गो-हत्या बन्द कराना चाहते हैं लेकिन यह बन्द नहीं हो पा रहा है। हम जैसे-जैसे गो-सेवा बढ़ायेंगे, गोशालाएँ अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम होंगी। हमारी गो-सेवा के माध्यम से गोरक्षा बढ़ेगी। केवल गो-पूजा से हमारा कल्याण नहीं होगा, हमारी समस्याएँ दूर नही होंगी। हमारा कल्याण होगा गो-सेवा से और हमारी समस्याएँ भी उसी सेवा से दूर होगी। गाय सेवा से तृप्त होगी और बदले में सेवा से अधिक अनेक समाधान सुलभ कराएगी।

■■

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय का शास्त्रीय विवेचन

डॉ० देवीप्रसाद द्विवेदी

आचार्य- श्रीकाशी विश्वनाथ मन्दिर, वाराणसी

गावो ममागृतो सन्तु, गावो मे सन्तु देवता ।
गावो मे हृदय सन्तु, गवाम् मध्ये वसाम्यह्य् ॥

परम ब्रह्म परमात्मा सृष्टि के संचालन हेतु ३३ कोटि संख्या में अवतरित होकर गाय में वास करते हैं, इसीलिए गाय पूज्य एवं अभिनन्दनीय है। गाय के ऊपर अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जो समाज में तरह-तरह उचित क्रियाकलापों से उपदेशित करती है तथा एक पुष्ट व्यवस्था का निर्धारण करती हैं। वैसे मुख्य रूप से गाय एवं मानव का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है, जैसे—गाय जिस स्थान पर रहती है वह स्थान पवित्र हो जाता है, उसके चारों तरफ का वातावरण शुद्ध एवं बाह्य बाधा मुक्त रहता है। गाय के गोबर एवं गोमूत्र अत्यन्त गुणकारी एवं रोग-व्याधि के शमन में सहायक होते हैं। आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थ चरक एवं सुश्रुत में अनेक रोगों की औषधि के रूप में गोबर एवं गोमूत्र का प्रयोग किया जाता है। विशिष्ट खाद्य-पदार्थ का निर्माण भी इन्हीं के द्वारा होता है। गाय के दूध में अनेक पौष्टिक तत्त्व एवं विटामिन पाए जाते हैं जो मानव के सर्वांगिण विकास में सहायक होते हैं। धर्मशास्त्र में गाय की व्यापक महिमा वर्णित है। जीव के साथ गाय की सत्ता अनादिकाल से चली आ रही है। परमात्मा अनेक लीलाएँ गाय के साथ कर एक सामाजिक व्यवस्था को दार्शनिक रूप से प्रकट करते हैं। गऊ का यौगिक अर्थ गतिशील है—'गच्छति इति गऊ'। जो चलती है—गतिशील है—वह गऊ है। सम्पूर्ण संसार गतिशील होने से गोरूप है। विश्व की आध्यात्म की एवं आधि दैवि की अभिव्यक्ति गऊ है। इसकी रक्षा से विश्व रक्षा और इसकी हत्या से विश्व हत्या सुनिश्चित है। गोरस आदि से विश्व का पोषण करने वाली गऊ से जहाँ लौकिक उपयोगिता है, वहाँ गऊ सेवा, गोदान और गोरक्षा आदि के फलस्वरूप गोलोक आदि देने वाली गऊ की पारिलौकिक उपयोगिता भी शास्त्रसिद्ध है।

'एतद्वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपं' (अथर्ववेद सौनक संहिता (९-७-१-२५) के अनुसार—गऊ विश्वरूप-सर्वरूप है। उपनिषदों में त्रिगुण को धेनु, गोमय को विद्या, गोमूत्र को उपनिषद और वत्स को स्मृगी कहा गया है।

गोपद (वाक्) और वाग्देवी सरस्वती के अर्थ में भी विनियुक्त है। गोघृत एवं गोरस से वगिन्द्री का पोषण होता है। इस अर्थ में गाय की वागृपता सिद्ध है। ब्रह्मविद्या की अधिष्ठात्री होने से सरस्वती वाग्देवी हैं, ब्रह्माणी होने से सरस्वती बुद्धि की अधिष्ठात्री हैं इस प्रकार गाय की भारतीय वैदिक वाङ्मय में दार्शनिक परिभाषा अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण एवं विलक्षण है।

भविष्यपुराण के अनुसार गाय के प्रत्येक अंग में अलग-अलग देवत्व निवास करते हैं। इनके निवास का भी अपना विलक्षण महत्त्व है जैसे—गाय के सींग की जड़ में ब्रह्मा, विष्णु तथा अग्रभाग में सभी चराचर एवं समस्त तीर्थ प्रतिष्ठित हैं। गऊ के ललाट में गौरी, नासिका में कार्त्तिकेय और नासिका के दोनों कटों में कम्बल और अश्वतर ये दो नाग वास करते हैं, दोनों कानों में अश्वनीकुमार, नेत्रों में चन्द्र तथा सूर्य, दाँतो में आठों वसुगण, जिह्वा में वरुण, कूहर में सरस्वती, गण्डस्थल में यम और यक्ष, ओष्ठो में दोनों सन्धयाएँ, ग्रीवा में इन्द्र, जंघा में चारों चरण से धर्म सदा विराजमान रहता है। खुरों के मध्य में गन्धर्व, अग्रभाग में सर्प, गाय के पृष्ठ देश में एकादश स्वरूप स्रोणितट (कमर) में पितर, कपोलों में मानव तथा अपान में स्वाहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूप अलंकार को आश्रितकर श्री अवस्थित है, आदि।

व्यक्ति की भावनाओं एवं कर्म के अनुसार कलिकाल में मानव की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए ईश्वर गाय में प्रत्यक्षरूप से प्रकट होते हैं। गाय की सेवा सद्यः फलवती होती है। गाय, भूमि एवं विद्या-इन तीन वस्तुओं द्वारा चतुर्थ पुरुषार्थ की सिद्धि होती है।

'गावो विश्वस्य मातरः' गाय विश्व की माता है। सबको सुख देने वाली धर्मशास्त्र के अनुसार अपने कल्याण एवं विकास के लिए गाय को दाहिने तरफ करके चलना चाहिए, गायों के बीच से होकर नहीं निकलना चाहिए, तथा कभी भी गाय को पैर से नहीं मारना चाहिए। व्यक्ति यदि आर्थिक संकट से ग्रस्त हो तो उसे गाय को हरा चारा खिलाना चाहिए। हरा चारा खिलाने से व्यक्ति का दारिद्रय दूर होता है, यदि मानसिक संताप से ग्रस्त है तो उसे प्यासी गाय को जल पिलाना चाहिए। उच्चपद प्राप्त करने के लिए गाय को गुड़ (मिष्ठान) का रस पिलाना श्रेयष्कर है। गाय हर दृष्टि से शुभप्रद है। यदि गाय स्वप्न में दिखलाई पड़े तो भी अवश्य मंगल होता है, प्रत्यक्ष की तो बात ही क्या भगवा धनवन्तरी आचार्य सुश्रुत से कहते हैं कि गौवें पवित्र व मंगलमयी है, गाय सदा सुरभिरूपणी हैं। मानव जीवन में लक्ष्यसिद्धि के लिए गाय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

तुल्यनामानि देयानि त्रीणि तुल्य फलानि च।
सर्वकामफलानीह गावः पृथिवी सरस्वती॥

(महाभारत, अनु०, ६९-४)

अर्थात् गाय, भूमि और सरस्वती ये तीनों समान नामवाली है। इन तीनों के दान का फल भी समान ही है। ये तीनों वस्तुएँ मानव की सम्पूर्ण मनोकामना को पूर्ण कर पापों का क्षय करती है।

गोमूत्र, गोबर, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि और कूशोदक, इनमें से प्रत्येक वस्तुओं का क्रमशः तीन-तीन दिन भक्षण करके रहा जाय तो उसे महाशान्तपन-व्रत कहते हैं। यह व्रत सम्पूर्ण मनोकामनाओं को सिद्ध करने वाला और समस्त पापों का विनाश करने वाला है, केवल गोदूध पीकर २१ दिन रहने से 'तृक्षातिकृच्छ-व्रत' होता है। इस व्रत के करने से अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति एवं पापमुक्त होकर स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। तीन दिन गरम गोमूत्र, तीन दिन गरम घृत, तीन दिन गरम दूध और तीन दिन केवल गरम वायु पीकर रहे यह 'तत्पकृच्छ-व्रत' कहलाता है जो समस्त पापों को नाश कर ब्रह्मलोक प्राप्ति में संभव है। यदि इन वस्तुओं की इसी क्रम से शीतल करके पिया जाए तो ब्रह्मा जी द्वारा कार्यत 'शीतकृच्छ-व्रत' होता है जो ब्रह्मलोक के समान है। एक माह तक गोव्रती होकर गोमूत्र से प्रतिदिन स्नान करो, गोदुग्ध से जीवन यापन करें, गौवों का अनुगमन करे और गौवों को भोजन कराने के बाद अपने भोजन करे तो मनुष्य के समस्त पाप इसी जन्म में नष्ट हो जाते हैं और अन्त में गोलोक की प्राप्ति होती है। गृहस्थ-जीवन में प्रतिदिन प्रातः गऊदर्शन एवं भोजन के पूर्व गऊ-ग्रास निकालने से व्यक्ति आर्थिक समस्याओं से मुक्त हो जाता है। विष्णु पुराण के अनुसार गोग्रास दान करने से महान पुण्य की प्राप्ति, गौवों को चराकर जलाशय पर जल पिलाने से वर्षों तक स्वर्गलोक का सुख, गौवों के प्रचारण के लिए गोचर भूमि की व्यवस्था करने से निःसन्देह अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है। गौवों के निवास हेतु गोशाला एवं व्यवस्था करने वाला व्यक्ति राजपुरुष कोटि का हो जाता है, गाय को नमक खिलाने से जन्मकुण्डली में सौभाग्य-अनिष्ट का शमन होता है अर्थात् सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

गवाम् मङ्गेषु तृष्ठंति भुवनानि चतुर्दश।
सस्मात्-तस्मात् छिवम्मेस्यात् दिइलो के परत्र च॥

■■

`भारत की गोशालाओं की सूची के लिए
काशी गोशाला स्मारिका गोपाष्टमी
सं० २०५५ (२८ अक्टूबर, १९९८)
का अवलोकन करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भगवान बुद्ध का गौ प्रेम

डॉ० प्रेमनारायण सोमानी, विपश्यनाचार्य

२६०० वर्ष पूर्व बुद्ध काल में भारतवर्ष कृषि प्रधान देश था। छोटे राज्य एवं जनपद थे। खेती बैलों से हल चलवा कर ही होती थी। जिसके जितनी अधिक गायें, वह उतना ही समृद्ध समझा जाता था। अतएव गायों का पालन समृद्धि का प्रतीक था। हर राज्य की सीमा के बाहर अरण्य थे। ऐसे स्थान, जिनका कोई मालिक नहीं था। वह सार्वजनिक थे। यहाँ पर पशुधन को चराने की सुविधा थी।

भगवान बुद्ध तो प्राणी मात्र की हत्या के विरोधी थे। उनके द्वारा बताये गये पंचशीलों में प्रथम शील ही— 'प्राणविपाता वेर मणी' (प्राणीयों की हत्या से विरत रहना) है। लगता है उन दिनों सारे देश में यज्ञ-मार्गी लोगों में यह धारणा पुष्ट हो चुकी थी कि ये हिंसक यज्ञ पुण्य फल देने वाले होते हैं। इसलिये उन दिनों धार्मिक यज्ञ में सैकड़ों गाय, बैलों, बछड़े और बाछियों और भेड़ बकरियों की बलि दी जाती थी। इसे रोकने हेतु जनता एवं ब्राह्मण को उन्होंने समझाया कि हिंसक यज्ञ करने वाला व्यक्ति तीन प्रकार के दुष्कर्म करता है। पहला मानसिक दुष्कर्म, जब वह इतने पशुओं की हत्या करने का मानसिक संकल्प करता है। दूसरे वाचिक दुष्कर्म, जब वह निरीह पशुओं पर शस्त्र चलाने के लिये वाणी से आदेश देता है। तीसरा शारीरिक दुष्कर्म, जब वह यज्ञ के लिये लाये प्रथम पशु की स्वयं हत्या करता है। इस प्रकार वह पुण्य के स्थान पर पाप कमाता है। शुभ कर्म करने के स्थान पर अशुभ कर्म करता है। स्वर्ग का मार्ग खोजने के स्थान पर नरक के मार्ग पर आरुढ़ हो जाता है। सामान्यतः मांस भक्षण ब्राह्मणों के लिए बड़ी लज्जा की बात होती थी। परन्तु उनके द्वारा यहाँ के देव उच्छिष्ट मांस को प्रसाद के रूप में खया जाना बुरा नहीं माना जाता था। धर्म के नाम पर जब हत्या आरम्भ हुई तो घोर अनर्थ हुआ। इसे रुकवाना भगवान बुद्ध को अभीष्ट था। जहाँ अवसर मिला, भगवान ने हिंसा विहीन मुक्त यज्ञ की विधि बतायी, जो आज तक प्रचलित है। ब्राह्मणों को हिंसा से विरत करते हुए भगवान बुद्ध ने गायों की उपादेयता बताई। गाय के प्रति अपना प्यार प्रदर्शित करते हुए उन्होंने कहा है—माता, पिता, भाई तथा अन्य बन्धुओं सदृश्य गायें हमारी परम मित्र हैं। उनसे (उनके गोबर की खाद से और बछड़ों द्वारा हल जोतने से) वनस्पति तथा औषधियाँ उत्पन्न होती हैं। वे अन्न, बल, वर्ण तथा सुख देने वाली है।

यथा माता पिता भाता, अञ्ञे वापि च ञातका।
गावो नो परमा मित्ता, यासु जायन्ति ओसधा॥
अन्नदा, बलदा, चेता, वण्णदा सुखदा तथा।
एतमत्थवसं ञत्वा नास्सु गावो हनिंसु ते॥

भगवान बुद्ध ने गौ के प्रति स्नेह जताते हुए बताया है— गाय किसी की हिंसा नहीं करती है, न पाँव से, न सींग से न अन्य किसी अंग से। वे गायें भेंड जैसी निरीह होती है, भोली होती है। दुहने से घड़े भर दूध देनेवाली होती है। ऐसा समझ गायों का वध नहीं करना चाहिए। एक प्रसंग में भगवान बुद्ध ने बताया कि गो घातक की कैसी दुर्गति होती है। एक सत्व इसी राजगृह में गो हत्या करने वाला था। वह इस कर्म के विपाक से लाखों वर्षों तक नरक में पचता-पकता रहा और उस कर्म के विपाक के कारण ही ऐसे दुःखद जीवन जी रहा है। भगवान बुद्ध करुणा के सागर थे। उनकी करुणा लोगों पर भी उमड़ी, जो धर्म के नाम पर कितना कड़ा अधर्म कर रहे थे। जो इन दुष्कर्मों के कारण कितना बड़ा दुष्फल भुगतने वाले थे। इसी करुणा विगलित हृदय से उन्होंने सभी प्रकार की हिंसा का भरपूर विरोध किया और गो संवर्धन पर जोर दिया। आज भी हमारे उद्योग मिश्रित अर्थशास्त्र में गायों की २६०० वर्षों पूर्व की तरह ही महत्ता है। हमें बुद्ध वाणी से शिक्षा लेनी चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिक्ख-पंथ और गोभक्ति

सरदार जसवन्त सिंह
अध्यक्ष, श्री गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, वाराणसी

एक बार जब दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी पुष्कर-तीर्थकी यात्रा पर गये थे तो वहाँ पण्डित पृथ्वीराज ने उनसे पूछा था कि उनके जीवनका ध्येय क्या है और वह खालसा पंथ क्यों चला रहे हैं?

इस पर गुरु महाराज ने उत्तर दिया था—'पण्डित जी! यह खालसा पंथ आर्य धर्म, गौ-ब्राह्मण, साधु-गरीब तथा दीन-दुखियों की रक्षा के लिये है। यही सेवा मैं कर रहा हूँ और मेरा खालसा सदा करता रहेगा।' (जन्मासाखी)

दशमेश जी के हृदय में गो-रक्षा के लिये कैसे भाव थे यह उपर्युक्त वार्ता से स्पष्ट है। इसके अलावा नीचे लिखी पंक्तियाँ भी इस विषय में द्रष्टव्य हैं।

मार्कण्डेय पुराणके देवीमाहात्म्य दुर्गासप्तशतीके आधार पर गुरु जी ने 'चण्डी दी वार' की रचना की है। वीर रस से भरपूर इस रचना में अनेक जगह आपने माता दुर्गा भवानी से गोरक्षा की माँग की है—

यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊँ ।
गऊ घातका दोष जग सिउ मिटाऊँ ॥
सकल हिन्द सिउ तुर्क दुष्टां बिदारहु ।
धरम की ध्वजा कउ जगत् में झुला रहु ॥
सकल जगत महि खालसा पंथ गाजै ।
जगै धर्म हिन्दुन सकल धुंध भाजै ॥

दशमेशने देश, धर्म और जाति की रक्षा के लिये कोटनयना देवी के पर्वत पर संवत् १७५६ वि० में काशी के पण्डित केशवदत्त नामक पुरोहित की देख-रेख में महाचण्डी यज्ञ किया था। यह यज्ञ एक वर्ष तक चला। महान् सिक्ख इतिहासकार महाकवि भाई संतोखसिंह चूडामणि ने अपनी बृहत्काय कृति 'सूरजप्रकाश' के पृष्ठ ४९६० पर लिखा है कि श्रीरामनवमी के दिन रविवारको जबकि डेढ़ पहर दिन वाकी था, आठ भुजाओं वाली माँ दुर्गा भवानी ने प्रकट होकर गुरुजी से कहा—'पुत्र! मैं तुम्हारी श्रद्धा-भक्ति से प्रसन्न हूँ। तुम अपना मनचाहा वर माँगो।'

तब गुरु जी हाथ जोड़कर खड़े हो गये और बोले—

मांस मांस सब एक हैं, मुर्गी, हिरणी, गाय ।
आँखि देखी नर खात हैं, ते नर नरक हीं जाय ॥
क्या बकरी क्या गाय है क्या अपनो जाया ।
सबको लहू एक है, यह साहब फरमाया ॥
देओ वर माता पंथ उपावहुं ।
तुर्क-राजको तेज खपावहुं ॥
हिन्दू धर्म नित हो रहा विनाशा ।
जेह बचाए पुनः करूं प्रकाशा ॥

सारांश कि गुरुजी ने मुसलमानों से हिन्दू-धर्म को बचाने के लिये खालसा पंथ को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। माता दुर्गा जी ने अपने हाथ से गुरु जी को एक तलवार भेंट की।

तत्पश्चात् लंकुड़िये (हनुमान्‌जी) ने दशमेशजीको कच्छा भेंट किया तथा कहा कि इसे वह अपने सिंहों को दे देवें जिसे वे युद्ध के समय धारण करें। वह (हनुमान्‌जी) पंथ के बल में वृद्धि करते रहेंगे। तथा युद्ध-क्षेत्र में उनकी सहायता के लिये सदा उपस्थित रहेंगे। (सूरजप्रकाश, १९६५ का संस्करण)

महाचण्डी-यज्ञ के बाद इसी वर्ष वैशाखी के दिन गुरु गोविन्द सिंहजी ने खालसा पंथ का सृजन किया था। इन्हीं केशधारी वीरों ने बाद में गो-रक्षा के लिये अनगिनत बलिदान दिये। इसी शृंखला में सन् १८७१ ई० के नामधारी वीरों का गौरक्षार्थ बलिदान क्या कभी भुलाया जा सकता है? इन कूका वीरों (नामधारियों का ही एक अन्य नाम) ने पंजाब में अनेकों जगह अंग्रेजों की शह पर स्थापित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बूचड़खानों को तोड़कर गोहत्यारों को मार डाला था। इस मामले में अंग्रेजों ने ६५ नामधारी वीरों को तोपों से उड़वा दिया था। अनेकों को काले पानी की सजा दी तथा नामधारी पंथ के गुरु सतगुरु रामसिंह जी को रंगून निर्वासित कर दिया, जहाँ बाद में उनका निधन हुआ। जब आर्य समाज ने गोरक्षा का आन्दोलन छेड़ा तो सिक्खों ने बहुत अधिक उत्साह दिखाया था। सरदार इन्द्रसिंह अमृतसर वाले ने घोषणा की थी कि गो-रक्षा-आन्दोलन में हिन्दुओं को जरा भी खतरा महसूस हुआ तो दस लाख सिक्ख अपनी कुर्बानी देने को तैयार खड़े हैं। (बाबा बन्दाबहादुरजी का जीवन-चरित्र पृ० १९)

गुरु गोविन्दसिंहजी के पूर्व के गुरुगण न केवल गौ अपितु सबी जीवों की हत्या के खिलाफ थे—

पीर-पैगम्बर औलिया सब मरने आया ।
नाहक जीव न मारिये, पोषण को काया ॥
जो रत लागे कापड़े, जामा होए पलीत ।
जे रत पीवे मानुखा, तिन, क्यों निर्मल चित ॥

■■

जिसने हमारी गाय बनाई

मौलवी मुहम्मद इस्माईल

रब का शुक्र अदा कर भाई, जिसने हमारी गाय बनाई।
उस मालिक को क्यों न पुकारें, जिसने पिलाई दूध की धारे।
ख़ाक को उस ने सब्ज़ा बनाया, सब्ज़े को फिर गाय ने खाया।
कल जो घांस चरी थी वन में, दूध बनी वह गाय के थन में।
सुब्हान अल्ला दूध है कैसा, ताज़ा गरम सफ़ेद और मीठा।
दूध में भींगी रोटी मेरी, उसके करम ने बख़्शी मेरी।
दुध दही और मट्ठा मसका, दे न खुदा तो किस के बसका।
गाय को दी क्या अच्छी सूरत, खूबी की है गोया मूरत।
दाना, दुनका, भूसी, चोकर, खा लेती है सब खुश होकर।
खाकर तिनके और ठठेरे, दूध है देती शाम सबेरे।
क्या ही ग़रीब और कैसी प्यारी, सुबह हुई जंगल को सिधारी।
सब्ज़े से मैदान हरा है, झील में पानी साफ़ भरा है।
पानी मौजें मार रहा है, चरवाहा चुमकार रहा है।
पानी पीकर चारा चरकर, शाम को आई अपने घर पर।
दूरी में जो दिन है काटा, बच्चे को किस प्यार से चाटा।
गाय हमारे हक़ में है नेमत, दूध है देती खाके बनस्पति।
बछड़े उसके बैल बनाय, जो खेती के काम में आये।
रब की हम्द सना कर भाई,
जिस ने ऐसी गाय बनाई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीय कृषि का आधार गाय

डॉ० मणिशंकर उपाध्याय

'भारत कृषि प्रधान देश है।' 'यहाँ की ७५ प्रतिशत जनता गाँवों में बसती है।' 'गाय भारत का एक महत्वपूर्ण पशु है।' ये वो ब्रह्म वाक्य हैं, जो आपने दर्जनों पुस्तकों में पढ़े होंगे, सैकड़ों प्रवचनकर्ताओं, नेताओं, वैज्ञानिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के भाषणों में सुने होंगे। किन्तु वास्तविकता में ये वाक्य मात्र थोथे शब्दों का समूह बनकर रह गए हैं। इनमें कोई वजन नहीं, इनका कोई महत्त्व नहीं। कथनी व करनी के बीच भारी अंतर है।

गाँवों की सही तस्वीर देखनी हो तो किसी भी शहर से २५-३० किलोमीटर दूर चले जाइये-रोशनी दूर चले जाइये-रोशनी के लिए बिजली, ट्रैक्टर चलाने के लिए डीजल, रासायनिक उर्वरकों कीटनाशक, रोगनाशक, खरपतवारनाशक दवाइयों के लिए कारखानों, बीज के लिए बीज उत्पादक कम्पनियों पर निर्भरता देखने को मिलेगी। और दूर के गाँव, यानी सड़क नहीं पानी नहीं, चिकित्सा सुविधा नहीं। वहाँ के लोगों का जीवन कठिन और कष्ट साध्य है। दो तीन दशक पहले तक गाँवों में पशुओं के समूह देखने को मिल जाते थे। गोधूली बेला हुआ करती थी, शाम के समय चरागाहों से लौटती गाय-बैलों के झुंड के पावों से उड़ती धूल 'गोधूली' एक सार्थक शब्द था, अब तो शब्दकोश में ही रह जाएगा। गाँवों में गाय-बैलों की संख्या में गिरावट आती जा रही है। मानव की और अधिक लिप्सा ने भूमि के दोहन के बजाय उसका शोषण शुरू कर दिया है। पनघट रीत गए हैं, रहट की जगह धरती की छाती को छेद कर नलकूपों ने ले ली है। स्वावलम्बी खेती, निर्भरता का रूप लेती जा रही है। नलकूप से पानी निकालने के लिये बिजली, थ्रेशर चलाने जा रही है।

भारत में लगभग साढ़े छत्तीस करोड़ पशु हैं, इनमें से साठ प्रतिशत गोपद पशु हैं। इनसे प्रति पशु १७५ लीटर दूध प्रतिवर्ष मिलता है। जो औसतन आधा लीटर प्रति पशु प्रतिदिन गोपद पशु हैं।

गाय और गोपद पशुओं का महत्त्व अभी भी कम नहीं है। भारतीय प्रबन्ध संस्थान बंगलौर द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार करोड़ बीस लाख बैलगाड़ियाँ गाँवों में और तीस लाख बैलगाड़ियाँ शहरों में वजन ढोने के काम में लाई जा रही हैं। ग्रामीण सड़कों पर प्रति गाड़ी की ढुलाई क्षमता आधा टन (पाँच क्विंटल) और शहरी सड़कों पर पौन टन (साढ़े सात क्विंटल) पाई गई। औसतन ग्रामीण क्षेत्रों में ये १० व शहरी क्षेत्रों में २० किलोमीटर तक वजन ढोती है। इसी सर्वे के अनुसार प्रतिवर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में ५२ दिन और शहरी क्षेत्रों में २६० दिवस तक काम करती है। अमेरिकी कृषि विशेषज्ञ इकलसन की पुस्तक दुधारू पशु उत्पादन के अनुसार गायों के गोबर और मूत्र से तीन करोड़ रुपए प्रतिदिन से अधिक की खाद प्राप्त हो सकती है। विश्व में कम्पोस्ट बनाने की इंदौर विधि को ख्यात बनाने वाले सर अलबर्ट हावर्ड ने अपनी पुस्तक एग्रीकल्चरल टेस्टामेंट में लिखा है कि रासायनिक खाद, कृषि योग्य भूमि को जीवांश (ह्यूमस) प्रदान नहीं करती। गोबर की खाद और कम्पोस्ट ही एक ऐसी खाद है, जिसमें असंख्य लाभदायक जीवाणु, पाए जाते हैं जो भूमि को उर्वर बनाने में सहायक होते हैं।

आगे लिखा है, देश के गाय, बैल आदि बिना ईंधन के लगभग पाँच करोड़ हार्सपावर के बराबर ऊर्जा प्रदान करते हैं। यद्यपि हम बैल रहित कृषि की ओर बढ़ रहे हैं पर इससे भविष्य में अनेक गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न होना सम्भावित है, जैसे—गोबर की खाद और जीवांश खादों की उपलब्धता में कमी आना।

खेतों की जोत का आकार छोटा होने से ट्रैक्टरों द्वारा कृषि कार्य प्रति इकाई क्षेत्र और प्रति इकाई समय महँगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पड़ना। खड़ी फसलों में डोरा, कोलपा, गुड़ाई आदि कार्य (जो बैल चलित यंत्रों से किए जाते हैं।) न होने के कारण उपज में कमी आना। फसलों से प्राप्त भूसा जैसे उप उत्पादों (बाय प्रोडक्ट्स) का सार्थक उपयोग न हो सकना एक मजबूरी बन गई है।

कम रकबे वाले छोटे व सीमांत किसानों का ट्रैक्टर खरीदने की क्षमता न होने के कारण। अपने कृषि कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना और अंततः समय पर खेत की जुताई, समय पर बोवनी आदि न किए जा सकने के कारण फसलों की उपज में कमी आना।

ट्रैक्टरों के अधिक और अक्षम (इन इफिसिएंट) उपयोग से डीजल की अधिक खपत होना और इसको खरीदे जाने के लिए देश की विदेशी मुद्रा पर दबाव बढ़ना। ग्रामीण क्षेत्र (जो अभी तक प्रदूषण रहित हैं) वहाँ ट्रैक्टरों के अधिक और अक्षम प्रयोग से वातावरण प्रदूषित होना आदि।

कृषि के साथ-साथ गाय पालन से कृषकों को लगातार आय होती रहती है। गाय पालन में उपलब्ध श्रम और पूँजी का साल भर एक-सा वितरण होने वे लगातार आय बनी रहने से कृषक के जीवन स्तर में सुधार आता है। गाय अपने जीवन भर दूध, गोबर और बछड़े देती रहती है और मृत्यु होने पर चमड़ा, हड्डी और सींग प्राप्त होते हैं। कृषि और गोपालन एक-दूसरे के पूरक हैं।

नन्हे कदम गोमाता के नाम पर

'जिस गोमाता ने मेरी जान बचाई है, मैं उनकी जान बचाऊँगी।' इस घोष वाक्य के साथ गत ११ जनवरी को गोवंश की रक्षा के लिए मुजफ्फरपुर (बिहार) से मुम्बई तक की ६००० किमी० की पदयात्रा पर निकली १० वर्षीया

शालिनी जब विभिन्न शहरों का भ्रमण करती हुई गत १९ अप्रैल को दिल्ली पहुँची। शालिनी ने बताया कि पदयात्रा शुरू करते समय उसे उम्मीद नहीं थी कि लोग उसकी इतनी सहायता करेंगे, उसकी बातों को सुनने के लिए इकट्ठे होंगे। उसने कहा हम जहाँ भी गए हिन्दू समाज ने हमारी भरपूर सहायता की। रहने से लेकर खाने-पीने तक की व्यवस्था इन लोगों ने की। कुछ खट्टे-मीठे अनुभवों के बारे में पूछने पर वह बताती है कि उत्तर प्रदेश के जसवन्त नगर में कुछ मुसलमानों ने हमारे रथ पर पथराव किया, किन्तु पुलिस की सहायता से हमलोग सुरक्षित निकल गए। पदयात्रा के क्रम में शालिनी के ये शब्द लोगों को बरबस आकर्षित कर लेते हैं—

नई सदी का शंख बज गया, अपना धर्म निभाना हे।
गोपालन, संवर्धन करके, उन्नत राष्ट्र बनाना है।

दिल्ली के बाद यह शालिनी पदयात्रा करके उ०प्र०, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात होते हुए महाराष्ट्र में प्रवेश करके मुम्बई के देवनार में ११ जनवरी २००० ई० को सम्पन्न होगी। उल्लेखनीय है कि देवनार ही भारत का वह स्थान है जहाँ सबसे अधिक गोहत्या होती है।

प्रस्तुति : **श्री भरत लढ़िया**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घर-घर, गाँव-गाँव गोपालन की सुलभ योजना
गोरस भण्डार

श्री राधाकृष्ण बजाज
अध्यक्ष, कृषि गोसेवा-संघ, वर्धा

गोसेवा के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किये जा रहे हैं। ऐसा भी प्रयोग सभी गौशालाओं में चल रहा है कि दूधवाली कुछ गायें रखकर उनकी आमदनी से गौशाला का खर्च चलाया जाय। ऐसा प्रयोग वाले विदेशी संकर गायें ही रखते हैं। साधारणतया गौशालाओं में नौकर-चाकर का, खाने-खुराक का इतना खर्च लग जाता है कि आमदनी के मुकाबले खर्चा ही अधिक हो जाता है। जहाँ गौशालाएँ रहेंगी, वहाँ कुछ दूधवाली और कुछ बिना दूधवाली दोनों तरह की गायें रहेंगी ही।

इन सबका बोझ उदार जनता के दान पर ही चल सकता है। संकर जाति की डेरी रखने में बहुत बड़ा नुकसान या बहुत बड़ी कुसेवा यह होती है कि संकर जाति के बछड़े साधारणतया खेती में कम चलते हैं और कतलखाने में अधिक जाते हैं। उन गायों के पालन में गोसेवा के मुकाबले गोहत्या का पाप ही अधिक लगता है। संकर जाति की बुराई आजकल यह भी ध्यान में आयी है कि देशी गाय का गोबर-गोमूत्र, खाद, दवाइयों के रूप में जितना गुणकारी है, उतना गुणकारी संकर जाति की गायों का गोबर-गोमूत्र नहीं है। देशी गायें गरमी सह सकती हैं, इस कारण वे निरोगी रहती हैं। विदेशी गायों में कड़ी धूप सहने की शक्ति नहीं होती, उनमें बीमारी अधिक रहती है, दवा चलती ही रहती है, उन गायों का दूध और उनका गोबर गोमूत्र देशी गाय के बराबर लाभदायी नहीं होता। साधारण तौर से गौशालाओं को चाहिये कि वे देशी गायों का ही पालन करें। संकर जाति की गायों को पालने वालों की कमी नहीं है। दूधवाली गायें गौशाला में रखकर दूध देने में खर्चा काफी हो जाता है। इसलिये इन वर्षों के अनुभव से गोरस भण्डार की एक पद्धति निकाली है। ऐसे बड़े गोरस भण्डार वर्धा, जयपुर और वाराणसी तीन स्थानों पर तो हमारी सलाह से शुरू हुए हैं। काफी अच्छे चल रहे हैं। किसी में नुकसान नहीं है। गोरस भण्डार भी लाभ में है, और गोपालक भी लाभ में है। वैसे आम जनता की ओर देखा जाय तो गोरस भण्डार कोई नई पद्धति नहीं है। देहात से दूध खरीदना और शहर में बेचना यह कार्य सभी जगह से आमतौर पर चल रहा है।

गोरस भण्डार की विशेषता क्या है? बिचौलियों का खर्च कम-से-कम लिया जाता है। व्यक्तिगत व्यापारी या सरकारी डेरियों में बिचौलियों का खर्च २५ से ३३ प्रतिशत ले लेते हैं। गोरस भण्डार वालों का खर्चा १०-१५ प्रतिशत से अधिक नहीं लेते हैं, जैसे वर्धा में दूध का बिक्री भाव साढ़े बारह रुपये लेते हैं, और गोपालक को देते हैं ग्यारह रुपये। इसी प्रकार जयपुर और वाराणसी में भी होगा। सरकारी डेरीवाले बारह रुपये में दूध बेचते हैं, और गोपालक को गोदूध के केवल ८ रुपये देते हैं, यानि ३३% बिचोलिया खर्च काट लेते हैं। गोरस भण्डार की खूबी यही है कि बिचौलिया खर्च कम होने से गोपालक को १०-२०% दूध के भाव अधिक मिल जाते हैं, और गोपालक खुशहाल हो जाता है।

गोरस भण्डार की व्यवस्था में गोपालक को यह भी लाभ होता है कि उसे दाना ॲडव्हांस मिल जाता है, ताकि गाय की खुराक बराबर बनी रहती है, और गाय का दूध कम नहीं होता। एक बात यह भी होती है कि घर के मुख्य मालिक को ग्राहक ढूँढने में और पैसा वसूल करने में समय नहीं देना पड़ता, इसलिये वह गायों की सार-संभाल पर अधिक ध्यान दे सकता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गायों को सम्भालने में गौशाला में नौकरों का भारी खर्च लगता है। आजके जमाने में चोरी, भ्रष्टाचार भी हो जाता है। घर-घर में गायें बाल-बच्चे संभाल लेते हैं। इसलिये गोपालक को गाय महँगी नहीं पड़ती। दूधवाली गायों का पालन करोड़ों की तादाद में करना हो तो वह गौशालाओं में होना असंभव है। करोड़ों गायें किसानों के घर ही पल सकती हैं।

इन दिनों एक नई बात ध्यान में आयी है कि रासायनिक खाद और कीटनाशकों के कारण भूमि की उपजाऊ शक्ति घटती जा रही है। अन्न-जल में जहर आ रहा है। इन बुराइयों से बचने के लिये देशी गाय के गोबर-गोमूत्र का उत्तम खाद और उत्तम कीटनाशक बनाया जा सकता है। गोबर-गोमूत्र के उपयोग के कारण बूढ़ी गायें भी उपयोगी हो गई हैं। गोबर-गोमूत्र के खाद से भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है, और अन्न जल भी शुद्ध रहता है और गोबर-गोमूत्र का खर्चा रासायनिक खाद के मुकाबले १/३ या १/४ हो जाता है। इससे किसान बरसात में कर्ज लेने से बच जाता है।

इस प्रकार शास्त्रीय ढंग से गोपालन किया जायेगा तो करोड़ों गायों का पालन बहुत आसानी से किसान के घर हो सकेगा। इसमें यह होने के लिये राष्ट्रीय नीति भी अनुकूल होनी चाहिए। देशकी भलाई के लिये उत्तम पोषण के लिये गाय-बैलोंकी आवश्यकता हो, और सरकार उनकी कत्ल करके मांस बेचना चाहती हो तो देश कैसे बचेगा? देश में रोजी-रोटी भरपूर तब ही मिलेगी, जब गोपालन, गोसंवर्धन होगा। रासायनिक खाद और कीटनाशकों का बहिष्कार होगा। घर-घर गोपालन होगा, और किसान के उत्पादन को पूरा मूल्य मिलेगा।

आज तो किसान को पैदावार अधिक होती है तो शहर वाले अनाज के भाव घटा देते हैं और किसान की अधिक पैदावार उसी पैसों में ले लेते हैं। व्यापारियों ने एक ऐसा जादूमंत्र बना रखा है, जिसके जरिये अनाज पैदा करता है, किसान और वह सारा अनाज शहरों में आ जाता है, और किसान को अपनी भूख मिटाने के लिये भी शहर वालों से माँगना पड़ता है। इस मायाजाल को भी तोड़ना होगा, तभी मानव जीवन सुखी हो सकेगा।

खुशी की बात है कि श्री काशी जीवदया विस्तारणी गौशाला की रामेश्वर गौशाला में बहुत ही उत्तम तरीके से गोपालन होता है। गोपालन के विस्तार का चिन्तन करने वाले कार्यकर्त्ताओं द्वारा एक प्रकल्प के रूप में वाराणसी में गोरस-भण्डार की योजना चलाई गई। इससे आसपास में गोपालन बढ़ा है। चारों ओर का क्षेत्र हराभरा हो गया है। वे सभी धन्यवाद के पात्र है।

■■

Comparative Chart of Milk Value

(Value in grams per 100 gm.)

By : **Dr. Rakesh Mazumdar,** M.B.B.S.

Milk	Water	Protein	Fat	Thiamine	Lactose	Calcium
Mother Milk (Human)	88.0	1.1	3.4	0.02	7.4	65
Cow	87.5	3.2	4.1	0.03	4.4	67
Goat	86.8	3.3	4.5	0.05	4.6	72
Buffallo	81.0	4.3	8.8	0.04	5.1	117

This chart proves that the Cow Milk is just nearer to the Mother Milk

(Source : J.E. Parks : Preventive & Social Medicine)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृपया जर्सी गाय न पालें

श्री वेदव्यास गौशाला समिति, राउरकेला (उड़ीसा)

प्रथम कारण : इनका रखरखाव अत्यधिक खर्चीला है, इन्हें जाड़े में ठण्ड से, गर्मी में गरम से और बारिश में भीगने से बचाना होगा।

द्वितीय कारण : इनके द्वारा दिये गये बछड़े हमारे लिए पूर्णरूपेण अनुपयोगी हैं, वे खेतीबाड़ी में, हल जोतने में और बैलगाड़ी खींचकर चलाने में असमर्थ होते हैं।

तृतीय कारण : यदि उन्हें विशिष्ट रूप से उपजाई घास और आहार खाद्य पदार्थ नहीं दिया जाए तो इनका दूध देसी गायों के दूध से भी पतला होता है।

चतुर्थ कारण : इनके दूध में वैसी पौष्टिकता और गुण नहीं होता है जो अपनी स्वदेशी नस्ल की गायों में होता है

पंचम कारण : मातृत्व की वह स्वाभाविक ममता इन गायों में अपने द्वारा उत्पन्न बाछा-बाछियों के प्रति नहीं होती। वह वात्सल्य भी नहीं होता जो स्वदेशी गायों में होता है एवं ये अपने पालकों को भी पहचानने और कभी न भूलने वाली क्षमता नहीं रखती हैं।

छठा कारण : ये सभी गायें विदेशियों द्वारा तैयार की गई नस्ल की गायें हैं, जो दूध देने की मशीन जैसी हैं, क्योंकि विदेशों में बाछी हुई तो उसे गाय बना लेते हैं और बाछा हुआ और दुधारू गायों की उपयोगिता न रही तो उन्हें मांसाहार के रूप में प्रयोग कर लेते हैं। उन्हें बेचकर व्यवसाय कर लेते हैं जबकि हमारे धार्मिक ग्रन्थों रामायण, महाभारत में गोवंश की हत्या को महापाप माना गया है, पर वर्तमान में ये दुर्भाग्य है कि देश में गोधन का ध्वंस कर, उसे विदेशी मुद्रा प्राप्त करने का जरिया बनाकर बड़े-बड़े कत्लखाने खोले जा रहे हैं।

जर्सी गाय रखने पर आपको ऐसा लगेगा कि गोपालन नहीं कर रहे बल्कि एक बीमारी पाल लिए हैं, इससे आप हमेशा पशु चिकित्सकों पर निर्भर रहेंगे।

अतः यदि आप हमारी उपरोक्त बातों से सहमत हैं तो कृपया........

● यदि आपके पास अभी पूर्णरूपेण जर्सी गाय अथवा मिश्रित गाय है तो उसे छोड़ें नहीं और उसे जर्सी ए० आई० (आर्टिफिसियल इंजेक्सन) द्वारा गर्भ धारण न करायें और स्वस्थ देसी नस्ल के सांड द्वारा ही पाल खिलायें, क्योंकि ऐसा करने पर हम गोधन को प्राकृतिक और स्वाभाविक शारीरिक सुख से भी वंचित नहीं करेंगे-स्वदेशी सांड जैसे गिर, कोक्रेच और नागौर इत्यादि।

● जितना खर्च जर्सी गायों की देखरेख में होता है उसका २५ प्रतिशत भी देसी नस्ल की गायों की देखरेख में खर्च करेंगे तो आपकी देसी गाय 'कामधेनु' बन जायेगी।

● जर्सी गायों के विक्रेता आपको अधिकाधिक बीस से तीस लीटर प्रतिदिन दूध देने का लालच दिखाकर अपनी गायें बेच जाते हैं, जो तीन-चार दिन बीतते ही घटकर दस से बारह लीटर रह जाता है। इंजेक्सन लगाकर दूध वृद्धि करना इसका प्रमुख कारण है, जो पच्चीस-तीस पैसे में बाजार में मिल जाते हैं। अधिकतर, गौ, भैंसे पालक अपने मुनाफे के लिए इन इंजेक्सनों का उपयोग करते हैं। इसे इंजेक्सन आक्सीटोनि कहते हैं।

इसी प्रकार आजकल बाछे-बछियों के प्रति क्रूर रवैया चल रहा है, इनके प्राकृतिक रक्षा कवच और सुन्दरता को नष्ट किया जा रहा है, यह काम बचपन में ही इनके कोमल सींग काट कर किया जाता है जिसे 'डिहर्निंग' कहते हैं सींग तो गोधन की शोभा है, इनका सौंदर्य है। इनके सींग विभिन्न आकार-प्रकार के होते हैं। भय से डरपोक बनाने का यह काम उनमें हीन भावना भर देता है, सींग तो इनकी सुरक्षा का अस्त्र होता है। सींग काटे जाने को प्रोत्साहित न करें। एक ओर तो हम इनकी रक्षा करने में असफल हो रहे हैं, वहीं इन्हे स्वयं अपनी रक्षा करने से वंचित कर दे रहे हैं। इसे अमानवीय और क्रूरता ही कहा जायेगा।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि स्वदेशी गायें पालें, उनके द्वारा मिलने वाला दूध 'अमृत' माना गया है।

■■

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विदेशी नस्ल से देसी नस्लों का संकरीकरण हानिकारक

श्री परमानन्द मित्तल

अध्यक्ष, उ० प्र० गो-सेवा आयोग

गोवंश की देसी नस्लों के ह्रास के कारणों की ओर ध्यान न देते हुए भारत सरकार ने गोवंश की नस्ल सुधार के लिये विदेशी नस्ल के साँड़ों का आयात कर उनके माध्यम से अनामित (NON-DESCRIPT) देसी नस्लों के विकास हेतु नस्लों के संकरीकरण की योजना लगभग ४० वर्ष पूर्व आरम्भ की। कालान्तर में यह योजना केवल अनामित देसी नस्लों के लिये नहीं बल्कि व्यवहार में सभी नस्लों के लिये प्रचलित हो गयी। परिणामस्वरूप भारतीय गोवंश की ६ नस्लें आलम्बादी, विंडर, खटियाली, पुलीकोलन, वरगुर, रामचुरी लुप्त हो चुकी हैं। यहाँ तक कि आज हरियाणा में शुद्ध हरियाणा नस्ल की गाय मिलना कठिन हो रहा है।

गोवंश को विदेशी नस्लें होस्ट्रियन, फ्रिजियन व जर्सी अपने साथ कई ऐसी बीमारियाँ लाई हैं जो भारत में कभी देखी और सुनी नहीं गयी। जैसे गर्भ का परिपक्व होने से पहले ही गिर जाना। अकस्मात लाल रंग का पेशाब करना और मृत्यु हो जाना। विदेशी गोवंश देशी नस्ल के गोवंश की अपेक्षा लगभग दुगुना खाता है, बीमार होने पर भी खाता रहता है और बीमारी अधिक बढ़ जाने पर उसकी मृत्यु हो जाती है। विदेशी नस्ल में देसी नस्ल की अपेक्षा मृत्यु दर कहीं ज्यादा है। रोगों का प्रतिरोध करने की शक्ति उनमें बहुत कम है। विदेशी नस्ल के बछिया-बछड़े गर्मी सहन नहीं कर पाते। मई-जून की तेज गर्मी में प्रायः उनकी मृत्यु हो जाती है। विदेशी नस्ल के बछड़े के कन्धा न होने के कारण वह कृषि कार्य और परिवहन भली प्रकार नहीं कर पाता, थोड़ा ही परिश्रम करके हाँफ जाता है। गोवंश के विकास के नाम पर उसका संकरीकरण वास्तव में उसका विनाश है। विदेशी नस्ल की गाय के दूध में वह पौष्टिकता, सात्विकता एवं स्वाद नहीं होता जो देशी नस्ल की गाय के दूध में होता है। उनकी आवाज भी कर्कश होती है। भारतीय गोवंश में उपलब्ध अनेक दिव्य गुण विदेशी नस्ल के गोवंश में नहीं पाये जाते। यहाँ तक कि देसी नस्लों के गाय के गोबर व गोमूत्र में जो मलशोधक एवं औषधीय गुण पाये जाते हैं वे विदेशी नस्ल की गाय के गोबर व गोमूत्र में उपलब्ध नहीं हैं। देसी नस्ल की गाय के दूध, दही, घी, गोबर व गोमूत्र से बनाया गया पंचगव्य ही ग्रहण करने योग्य है।

ब्रीडर्स क्लब

हमारे देश में अति प्राचीन काल से उन्नत गाय के सबसे अच्छे बछड़े को साँड़ के रूप में छोड़ने तथा सभी घरों से उसे खिलाने पिलाने की प्रथा चली आ रही है। किन्तु वर्तमान में वह विकृत हो गयी है। देसी नस्ल की उन्नत गाय, अब अपवाद के रूप में ही कहीं-कहीं मिल पाती हैं। अब जैसी-तैसी गाय का बछड़ा पुण्यार्जन के लिये लोग छोड़ते भी हैं तो उसको खिलाने पिलाने वाले कम हैं, प्रताड़ित करने वाले अधिक हैं। वर्तमान युग में लोक-कल्याण की भावना कम हो गयी है। हर कार्य में व्यावसायिकता आती जा रही है। यह प्रवृत्ति भारत में बाहर से आयी है। विदेशों में उन्नत साँड़ तैयार करने तथा उपलब्ध कराने के लिये 'ब्रीड़र्स क्लब' हैं जो व्यावसायिक आधार पर साँड़ उपलब्ध कराते हैं। उन्नत साँड़ उपलब्ध न होने से तो अच्छा है कि व्यावसायिक आधार पर ही उन्नत साँड़ उपलब्ध हो जायें। इसलिये इस कार्य को व्यावसायिक आधार पर आरम्भ करने की भी आवश्यकता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत सरकार की राष्ट्रीय देसी साँड़ उत्पादन योजना

देर से ही क्यों न सही भारत सरकार ने कुछ व्यवस्थित गोशालाओं का चयन कर उन्हें अपनी देसी साँड़ योजना में सम्मिलित किया है और देसी नस्ल के उन्नत साँड़ तैयार करने के लिये ऐसी चयनित प्रत्येक गोशाला को १२ लाख रुपये का अनुदान देना स्वीकार किया है जिसमें से रुपये ८ लाख गत वर्ष दिया जा चुका है तथा शेष रुपये ४ लाख इस वर्ष दिया जायेगा।

■■

प्रत्यक्षस्य किं प्रमाणम्?

मेरा पौत्र प्रतीककुमार को ५ वर्ष की अवस्था में प्रत्येक २२ दिन पर बुखार उल्टी शुरू हो जाती थी। एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक दोनों पद्धतियों के प्रतिष्ठित अनुभवी चिकित्सकों द्वारा बहुत इलाज कराया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। उसका हीमोग्लोबिन ४ प्रतिशत हो गया था जबकि सामान्य स्थिति में एक बच्चे का हीमोग्लोबिन लगभग १२ प्रतिशत होना चाहिए। बच्चा इतना कमजोर हो गया था कि वह अपने से चल-फिर नहीं पाता था। एक साल तक बहुत परेशान रहे, कोई सुधार नहीं हुआ। एक वैद्यजी ने परामर्श दिया कि यदि आप बच्चे को काली गाय की पहिली बियान की बछिया का चार चम्मच मूत्र रोज सुबह पिलाने को आप तैयार हों तो मैं उसके साथ अपनी दवा दे सकता हूँ, आपका बच्चा ठीक हो जाएगा। मैंने उनके परामर्श से गोमूत्र पिलाना और दवा देना शुरू किया। गोमाता की ऐसी कृपा हुई कि कुछ दिन बाद उसके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हुआ और वह पूर्णतया स्वस्थ हो गया। इस समय उसकी उम्र करीब १० वर्ष है।

माताप्रसाद जायसवाल

रामागंज, कतुआपुरा, (बीकानेर बैंक के पास)
वाराणसी

गोमूत्र का चमत्कार

हमारे सत्संग में एक सज्जन बड़ी श्रद्धा से प्रतिदिन आते हैं। कुछ दिन पहले मैंने देखा वे सज्जन बीच सत्संग में से कई बार उठकर बाहर निकल जाते, थोड़ी देर बाद फिर वापस आकर अपनी जगह पर बैठ जाते। मुझे उनका यह बार-बार उठना अच्छा नहीं लगता था। आखिर एक दिन सत्संग की समाप्ति के बाद मैंने उनसे प्रेमपूर्वक कहा—'महाशय! मैं देखता हूँ कि आप सत्संग की बातें बड़े प्रेम से सुनते हैं, किन्तु बार-बार बीच में से उठ जाते हैं, ऐसा क्यों?' वे सज्जन नम्रता से बोले—'महाराज! मैं क्या करूँ? मजबूर हूँ, मुझे बार-बार खाँसी का वेग आता है, उसे मैं रोक नहीं पाता; इसलिये बाहर निकल जाता हूँ, जिससे सत्संग में विघ्न न पड़े। बहुत-सी देशी-विदेशी दवाएँ की हैं, परन्तु खाँसी नहीं जाती, मुझे क्षमा करे।'

मैंने कहा—'भाई! खाँसी की एक अति उत्तम दवा है, परन्तु कुछ महँगी है।'

सज्जन ने कहा—'जितना भी खर्च लगे, मैं करने को तैयार हूँ, खाँसी ने मुझे बहुत परेशान किया है।'

मैंने कहा—'पैसा नहीं, उस दवा के लिये श्रद्धा और विश्वास चाहिये।'

सज्जन ने कहा—'महाराज! आप जहर भी देंगे तो मैं दवा समझकर पी जाऊँगा।'

उनका इतना विश्वास देखकर मैंने कहा—'वह दवा है (भारतीय नस्ल की गाय का)—गोमूत्र। आप श्रद्धा-विश्वास के साथ प्रातः-सायं दो समय गोमाता का दर्शन कर प्रणाम करके आधा कप या उससे भी कम जितना आप ले सकें, कपड़े से छानकर लें, गोमाता की कृपा से आप स्वस्थ हो जायेंगे।' उन्होंने वैसा ही किया। भगवत्कृपा से उनके अनेक रोग नष्ट हो गये। भूख अच्छी लगती, पेट साफ रहने लगा, खाँसी का तो नाम ही नहीं रहा। अब वे आराम से सत्संग में आते हैं और प्रेम से सत्संग की बातें सुनते हैं।

श्री परसुराम हंस

गुरुनानाक गोशाला ट्रस्ट
केवट नगर, जलगाँव (महाराष्ट्र)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो विकास की चुनौतियाँ

श्री भवानीशंकर सिंह
गो-कृषि विशेषज्ञ

वर्तमान स्थिति

भारत में गोवंश एवं गोपालन की वर्तमान स्थिति कुल मिलाकर अच्छी नहीं है। विदेशी नस्लों के आगमन तथा संकर नस्लों की उपादेयता संदिग्ध है। इसके कई कारण हैं। हमारे देश के अधिकांश क्षेत्र की जलवायु विदेशी नस्लों के लिये उपयुक्त नहीं है, इसलिये इन नस्लों के लिये ऐसी शालाओं की आवश्यकता होती है जहाँ गर्मी के मौसम में तापमान को नियंत्रित रखा जा सके। ऐसी व्यवस्था करना सामान्य गोपालक के लिये कठिन है। अधिकांश क्षेत्रों में बिजली की सुविधा न होने अथवा अनियमित आपूर्ति के कारण भी कठिनाई है। दूसरा कारण अधिकांश गोपालकों में तकनीकी ज्ञान का अभाव है, सरकार द्वारा प्रदत्त तकनीकी एवं प्रचार सेवायें अक्षम एवं अपर्याप्त हैं। देसी नस्लों की अपेक्षा विदेशी एवं संकर नस्लों में बीमारियों का प्रकोप अधिक होता है, जिनके उपचार पर अधिक व्यय आता है तथा मृत्यु दर भी अधिक होती है। चूँकि संकर गायें अधिक मूल्य की होती हैं इसलिये उनके बीमार होने या मृत्यु हो जाने पर गरीब गोपालक की कमर टूट जाती है। अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण सामान्य गोपालक महँगी संकर गायों के क्रय करने, उनके लिये उपयुक्त शाल्य का निर्माण करने, खिलायी-पिलायी तथा रोग नियंत्रण की व्यवस्था करने में सक्षम नहीं हैं। गोपालन के लिये सामान्य गोपालक को उचित ब्याज दर पर आसानी से ऋण भी उपलब्ध नहीं होता है। अधिकतर क्षेत्रों में उत्पादित दूध के विपणन की सुदृढ़ व्यवस्था नहीं है, जिसके कारण उत्पादकों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। संकर नस्ल के बछड़े कृषि कार्य हेतु किसानों द्वारा पसन्द नहीं किये जाते हैं। सभी संकर बछड़ों का उपयोग साँड़ के रूप में नहीं किया जा सकता। गोपालक इन बछड़ों के पालन का भार वहन नहीं कर सकते।

हमारे देश में अच्छी देसी नस्लें भी रही हैं जो यहाँ की परिस्थिति एवं मिश्रित कृषि व्यवस्था के अनुकूल रही हैं। देश के विभाजन के कारण साहीवाल, सिन्धी जैसी कुछ अच्छी नस्लों के आधारिक क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये। गो विकास की ठोस नीति एवं कार्यक्रम के अभाव में बची खुची नस्लों का भी लगातार ह्रास हो रहा है।

गोधन की अवनति तथा विकास में बाधक अन्य कारण हैं, जैसे जनसंख्या के दबाव, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के कारण सिमटते तथा नष्ट होते गोचर, अनेक क्षेत्रों में बाढ़ एवं सूखे के कारण चारे एवं पेयजल का अभाव, जलाशयों का विनाश तथा जल का प्रदूषण, कृषि के क्षेत्र में मशीनों एवं रासायनिक पदार्थों के वैज्ञानिक उपयोग का अन्धानुकरण, सुविधा भोगी सामाजिक मानसिकता, जन शिक्षा एवं चेतना जागृति की कमी, भैंस से प्रतिस्पर्धा, अनेक राज्यों में गोवध पर प्रतिबन्ध का न होना, आदि।

कई प्रान्तों में गोसेवा आयोग गठित हुए हैं, जिलों में गो विकास परिषदें भी बनी हैं। देशभर में गोशालाएँ तो हैं ही। सब मिलकर परिणामकारी कार्य योजना बनावें तभी गो विकास संभव है, जिनमें निम्नलिखित पहलुओं को सम्मिलित किया जा सकता है—

(१) दूध के विपणन की शोषणयुक्त सुदृढ़ व्यवस्था। (२) जलाशयों का पुनरुद्धार एवं संरक्षण तथा पशुओं के लिये प्रदूषण मुक्त जल की व्यवस्था। (३) गोचर भूमि का विकास। (४) गोबर तथा गोमूत्र के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैज्ञानिक उपयोग एवं गोबर गैस प्लान्ट लगाने के कार्यक्रम का विस्तार। (५) बैलों से संचालित गाड़ी तथा कृषि यंत्रो को अधिक उपादेय बनाने हेतु नयी तकनीक का विकास। (६) वृद्ध पशुओं के लिये प्रत्येक विकास खण्ड तथा जिले में मेंगो सदन की व्यवस्था। मृत पशुओं के शव के वैज्ञानिक उपयोग हेतु प्रत्येक विकास खंड में चर्म प्रसंस्करण एवं शव उपयोग केन्द्रों की स्थापना। (८) गोपालन के लिये पालकों को उचित ब्याज दर पर ऋण प्राप्त करने की सुविधा। (९) पेट्रोलियम पदार्थों तथा रासायनिक उर्वरकों पर दी जाने वाली सबसिडी को क्रमशः घटाते हुए बचत से प्राप्त धन को गो विकास कार्यक्रमों हेतु उपलब्ध कराना। (१०) मूल्यवान पशुओं के लिये उचित प्रीमियम पर सुविधाजनक बीमा की व्यवस्था।

■■

गाय, प्यारे राष्ट्र का जीवन रही हैं

श्रीवास्तव 'सुधाकर'

वेद ने इसकी महा महिमा बखानी
वत्स वृषभों ने कही कृषि की कहानी
'यज्ञ-होता' ने इसे सर्वस्व माना
'गोपती' के मन्त्र ने वर्चस्व माना

विस्व मे बन कर धरा का घन रही है,
गाय, प्यारे राष्ट्र का जीवन रही है।।

कृष्ण ने ब्रज में अनेकों वन बसाये
नाम रख 'गोपाल' गो वर्द्धन सा जाये
गाय रक्षण हित रहे वन, में विचरते
ले लकुटि-कम्बल कछारों में विहरते

'नन्द' के आनन्द का वर्द्धन रही है,
गाय, प्यारे राष्ट्र का जीवन रही हैं।

नर 'दिलीपों' ने अनेकों प्राण बारे
'दक्षिणा' सी नारियों ने पद पखारे
सिक्ख गुरुओं ने सदय हो शिर झुकाये
कौन है जिसने न गौरव गीत गाये

आर्य संस्कृति का विमल दर्शन रहीं है,
गाय, प्यारे राष्ट्र का जीवन रही है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पशुओं को हरा चारा क्यों?

श्री एस०एन० सिंह, कृषि विशेषज्ञ

पशु शरीर में होने वाले सभी कार्यो के लिये शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त उनके बदन से ताप भी सदा बाहर निकलता रहता है, इनकी भी निरन्तर आपूर्ति होती रहनी चाहिए। पशु 'मांस एवं दूध' का उत्पादन भी करते हैं। इन समस्त कार्यों के सम्पादन के लिए भोजन आवश्यक है जिसे वह चारे एवं दाने के रूप में प्राप्त करते हैं।

पशु शरीर में भोजन मुख्य रूप से निम्न कार्य करता है।

(अ) यह शरीर में ईंधन की भाँति गलकर उष्मा प्रदान करता है। यही उष्मा पशु शरीर में कार्य करने हेतु शक्ति प्रदान करती है एवं तापक्रम में निरन्तरता लाती है।

(ब) शरीर की ऊतको को बनाने एवं उसकी वृद्धि में काम करती है। जिसके कारण पशु का विकास होता है।

(स) टूटे हुए ऊतकों की मरम्मत में सहायक होता है तथा नष्ट हुए ऊतको का निर्माण करता है।

(द) इसके द्वारा दुग्ध उत्पादन होता है।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त भोजन में कुछ ऐसे भी तत्व होते हैं जो रोगरोधक का कार्य करते हैं। परिणामतः पशु स्वस्थ रहता है।

पशुओं का आहार ऐसे पोषक तत्वों का बना होना चाहिए जिससे पशु को आवश्यक मात्रा में पोषण प्राप्त उपलब्ध हो सके। इसलिए पशु आहार में वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइट्रेट, खनिज तथा विटामिन का होना जरूरी है। इसके साथ यह भी जरूरी है कि इसकी मात्रा संतुलित हो अन्यथा इनके घट, बढ़ से पशु के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा साथ ही अनावश्यक व्यय भी बढ़ेगा।

ऐसा भोजन जो प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज एवं विटामिन को इस अनुपात एवं मात्रा में उपलब्ध कराता है जो पशु को २४ घंटे तक आवश्यक शक्ति प्रदान करे संतुलित आहार कहलाता है। जानवरों को यदि संतुलित आहार दाना एवं चारे के माध्यम से दिया जाता है।

इनका वर्गीकरण चारे में उपलब्ध जल की मात्रा के आधार पर किया जाता हैं। जिन चारों में आर्द्रता बीस प्रतिशत से कम होती है सूखा चारा कहलाता है। इससे अधिक आर्द्रता पर हरा चारा कहते हैं। सामान्यतया सूखे चारे में नमी दस प्रतिशत के लगभग होती है। हरे चारे के अन्तर्गत नमी अस्सी से नब्बे प्रतिशत होती है।

हरे चारे के अभाव में पशुओं के संतुलित आहार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। क्योंकि इसके अन्तर्गत ही जैविक रूप में पाचन शक्ति खनिज एंव विटामिन उपलब्ध रहता है। जो अन्यत्र दुर्लभ है। संक्षेप में हरे चारे के अन्तर्गत निम्न विशेषताएँ होती हैं जिसके कारण भोजन में इसका होना अपरिहार्य है।

(अ) हरा होने के कारण प्रचुर मात्रा में पानी की उपलब्धता इसे रुचिकर एवं सुपाच्य बना देती है।

(ब) आसानी से उपलब्ध होता है और अपेक्षाकृत अन्य भोज्य से सस्ता होता है।

(स) भोजन के सभी भोज्य पदार्थ अर्थात् जल, प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज एवं विटामिन इससे प्राप्त होते है।

(द) भोजन तत्वों का पाचन, प्रवाह, उपापचयन शोषण पशु शरीर में सुगम हो जाता है।

(य) सम्पूर्ण भोजन के कारण इससे बछियों का विकास द्रुतगति से होता है और वह शीघ्र ही गाय में परिवर्तित हो जाती है।

(र) गाएँ समय से गाभिन हो जाती है। दुधारू गाएँ जिनके शरीर में खनिज की कमी के कारण बाँझपन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकसित होने लगता है, दूर हो जाता है।

(र) बहुत सी बीमारियों से बचने हेतु शरीर में प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है और खनिजों अथवा विटामिन की कमी से जो बीमारियाँ होती है, नहीं होती।

(ल) दूध की मात्रा बढ़ जाती है। वैज्ञानिकों के अनुसार प्रति बीस किलो वरसीम देने पर एक किलो दाना कम कर दिया जाता है।

(व) चार लीटर तक दूध देने वाली गायों को यदि वरसीम या अन्य पौष्टिक चारा दिया जावे तो दाना देने की आवश्यकता नहीं रहती।

उपरोक्त कारणों से जानवरों को विशेष रूप से दुधारू जानवरों को हरा चारा अनिवार्य रूप से देना चाहिए।

■■

दूध की शुद्धता परखने की सरल विधि

बनावटी या सिंथेटिक दूध का पता लगाने के लिए एक ऐसी विधि विकसित की गयी है, जिसमें दो मिनट में दूध की शुद्धता का परीक्षण हो सकता है। हिसार के चौधरी चरण सिंह हरियाणा विश्वविद्यालय के एक वैज्ञानिक ने बनावटी या सिंथेटिक दूध की परख करने के लिये एक परीक्षण विधि विकसित की है जो उपयोग में बहुत ही सरल है।

विश्वविद्यालय के पशु स्वास्थ्य एवं संक्रामक रोग विज्ञान विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ० गुलशन नारंग ने बताया कि यह परीक्षण जितना सरल है उतना ही विश्वसनीय भी है। श्री नारंग ने बताया कि उन्होंने एक परीक्षण घोल तैयार किया है, जिसमें दूध के बनावटी होने का साफ पता चल जायेगा। इस घोल की एक बूँद फिल्टर पेपर पर डाली जाती है और फिर उसके ऊपर दूध की एक बूँद डाली जाती है, यदि दूध बनावटी या सिंथेटिक हुआ तो बूँद के इर्द-ग़िर्द नीले रंग का छल्ला बन जायेगा। इस परीक्षण विधि को विकसित करने में डॉ० नारंग को करीब छह माह का समय लगा। उन्होंने बताया कि सामान्य दूध में यूरिया की मात्रा ०.०७ प्रतिशत मिलीलीटर से कम होती है, जबकि बनावटी दूध में इसका प्रतिशत एक से ज्यादा होता है। परीक्षण विधि के लिये तैयार घोल दूध में ०.४ प्रतिशत यूरिया को मापने की क्षमता रखता है और इसके कारण दूध के सिंथेटिक होने का प्रमाण उसी समय मिल जाता है। इस परीक्षण से जनसाधारण बहुत आसानी से सिंथेटिक दूध का पता लगा सकता है और इसके सेवन से मुक्ति पा सकता है।

उल्लेखनीय है कि सिंथेटिक दूध का सेवन स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ० बी०एल० जलाली और अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ० डी०एन० गर्ग के अनुसार बनावटी या सिंथेटिक दूध यूरिया, डिटर्जेंट, कास्टिक सोडा, वनस्पति तेल, सोडियम सल्फेट, फारमलीन एवं सफेद पेंट के मिश्रण से बनाया जाता है। इसमें यूरिया ही मुख्य अवयव होता है। इस दूध के सेवन से जिगर, गुर्दों तथा दिल को नुकसान पहुँचा सकता है। डॉ० जलाली और डॉ० गर्ग ने बताया कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा राज्यों में विशेषकर गर्मी के मौसम में जब दूध का उत्पादन घट जाता है तो लोग सिंथेटिक दूध बनाकर बाजार में बेचने लगते हैं।

पिछले वर्ष हरियाणा में दूध की जाँच के लिये गये नमूनों में दूध की जाँच के लिए लिये गये नमूनों में से ५० प्रतिशत नमूने बनावटी दूध के पाये गये थे। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में सिंथेटिक दूध की खुलेआम बिक्री की शिकायतों के बाद हाल में ही इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इसे गम्भीर मामला मानते हुए कल्याण सरकार को निर्देश दिया है कि वह सिंथेटिक दूध बेचने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डेयरी प्रदूषण उन्मूलक नया खमीर

पंजाब स्थित बायोटेक्नालोजिस्टों ने डेयरी बहि:स्त्रावों से तीन नई यीस्ट (खमीर) नस्लों की पहचान की है जो प्रभाव ढंग से डेयरी उद्योग द्वारा उत्पन्न प्रदूषण को कम कर सकती हैं। डेयरी उद्योग, उपयोग में लाई गई तकनीक और निर्मित उत्पाद के आधार पर प्रति लीटर प्रोसैस्ड दूध से ६ से १० लीटर बहि:स्त्राव उत्पन्न करता है।

बायोटेक्नॉलोजी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला से एस०एस० मारवाह की अध्यक्षता में एक दल ने डेयरी बहि:स्त्रावों से १५ यीस्ट नस्लों को पृथक किया था जिनमें से प्रत्येक का इनकी प्रदूषण घटाने के लिये योग्यता का परीक्षण किया गया। इस दल ने 'प्रदूषण अनुसंधान' रिपोर्ट में प्रदूषण का निर्धारण करने के लिये तीन नस्लों— 'कैंडिडा पारापसिलोसिस', 'कैंडिडा हेमुलोनिट' और 'कैंडिडा वर्सिटिटिस' की पहचान की है जो ८० प्रतिशत से अधिक बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड (बी०ओ०डी०) और कैमिकल ऑक्सीजन डिमांड (सी०ओ०डी०) दो प्रमुख पैरामीटर–दोनों में कमी कर सकती हैं।

डेयरी बहि:स्त्रावों में डिडर्जेटस और सैनीटाईजर्स— जिनका उपयोग वाशिंग के लिये किया जाता है— के अलावा बहुत बड़ी मात्रा में दूध अंश–केसीन, लैक्टोज, फैट और इन ऑरगैनिक साल्ट मिले होते हैं। ये बायोडिग्रडेबल ऑरगैनिक मैटर बी०ओ०डी० और सी०ओ०डी० की सीमाओं में वृद्धि कर देते हैं जो कि अनुमित स्तरों से अधिक होती हैं। अनुसंधानकर्ताओं ने लुधियाना में कम्पोजिट मिल्क प्लांट से बहि:स्त्राव नमूने एकत्रित किये जिनकी बी०ओ०डी० वैल्यू १७५ मिलीग्राम प्रति लीटर (एम०जी०/एल०) और ५८० मिलीग्राम (एम०जी०/एल०) के बीच थी।

रिपोर्ट में बताया गया है कि सभी तीन नस्लों के साथ बहि:स्त्राव नमूनों के २४ घंटों के व्यवहार से यह पता चला कि 'कैंडिडा पारापसिलोसि' प्रदूषण तत्त्व हटाने में सबसे अधिक प्रभावी है, जो बी०ओ०डी० को ८५ प्रतिशत तक घटा देता है और सी०ओ०डी० को ८७ प्रतिशत तक घटा देता है तो 'कैंडिडा हेमुलोनिट' जबकि बी०ओ०डी० को ८५ प्रतिशत घटाता है तो 'कैंडिडा वर्सिटीटिस' बी०ओ०डी० को ८१ प्रतिशत घटाता है और सी०ओ०डी० को ८४ प्रतिशत घटाता है।

तीन नस्लें, जो बहि:स्त्राव के साथ व्यवहार करने के लिये बेहतर क्षमता रखती हैं, वे अव्यवहारिक अवशेष पानी के विसर्जन द्वारा उत्पन्न समस्या को समाप्त करने में सहायता कर सकती हैं।

प्रस्तुति : श्री मातादीन अग्रवाल

पशुओं की सबसे कम संख्या भारत में

भारत गायों के लिए विश्वभर में कितना खोटा प्रचार हुआ। दु:ख तो इस बात का है कि भारत में गोवंश का पालन नहीं किया, विश्व में ३११ करोड़ की मनुष्य की संख्या में विश्व में पशु संख्या ३०८ करोड़ की है। लगभग मनुष्य दीड एक पशु भारत में ९८ करोड़ की जनसंख्या में मात्र ३५ करोड़ ३३ लाख ४० हजार पशु है। इसमें गाय–बैल, भैंस, बैल, पाडा भेड, बकरा, ऊँट, घोड़े, खच्चर, टट्टु, भूंड आदि है। (इण्डियन एग्रीकल्चर इन, ब्रीफ १८वीं आवृत्ति प्रकाशक केन्द्र सरकार के अन्न मंत्रालय) दूसरे देशों की कुल पशु संख्या के सामने अपनी पशु संख्या मनुष्य से ५० प्रतिशत कम है।

प्रति सौ मनुष्य पर गायों की संख्या

अमेरिका (यू०एस०ए०)	५५
केनेडा	५९
डेनमार्क	७२
अर्जेंटिना	२३४
न्यूजीलैंड	२६२
उरुग्वे	५२०
आस्ट्रेलिया	१८०

भारत में सौ मनुष्य के पीछे मात्र ८ गाय है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कीट उन्मूलन के घरेलू नुस्खे

श्री इमान्युएल वांगिबे

अपने छोटे से खेत में खड़ी एमेरेन्सिया बड़ी नजाकत से एक पौधे पर से एक लम्बा, भूरे रंग का कीड़ा उठा कहती है, ''यह है वह डंठलों में छेद करने वाला कीड़ा।'' वैज्ञानिकों की भाषा में 'कोलियोप्टेरा' नामक यह कीड़ा मिट्टी में जन्मता है और मक्का के पौधे पर एक बार उसका हमला हो जाने पर पौधे की वृद्धि रुक और पैदावार घट जाती है।

किसानों के लिए यह परभक्षी कीड़ा शत्रु जैसा है क्योंकि वह अक्सर पौधे में जब नजर आता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। बाहर से स्वस्थ दिखने वाले मक्का के डंठल को तोड़ते ही उसके अन्दर से छेद करने वाला कीड़ा रेंग कर बाहर आ जाता है। अफ्रीकी देश केमरून में मक्का, बाजरे या जुवार की पैदावार कम होना समूची किसान बिरादरी के लिए तबाही ला सकती है। इसलिए शायद कोई भी इन गरीब किसानों को किसी कीटनाशक का इस्तेमाल करने की सलाह दे सकता है लेकिन केमरून के उत्तर पश्चिमी प्रान्त में किसान इस कीड़े से निजात पाने के लिए धान का भूसा जलाते हैं। वे इस भूसे की राख को मानसून के पूर्व सद्यः रोपित मक्का के पौधों के आसपास छिड़क देते हैं और इस राख के क्षार वर्षाजल के साथ मिट्टी में पैठ कर कीड़े को नष्ट कर देते हैं।

कीड़े को नष्ट करने के अन्य घरेलू तरीके भी हैं। एक अन्य गाँव में किसान तम्बाकू की पत्तियाँ जलाते हैं। लेकिन वे खेती तम्बाकू के बजाय फलों और सब्जियों की करते हैं और तम्बाकू जलाकर टमाटर और पत्तागोभी के पौधों से कीड़ों को नष्ट किया जाता है। इसके लिए वे पहले तम्बाकू की पत्तियों को रातभर पानी में भिंगो कर रखते हैं और उस पानी में तीखी मिर्च का पाउडर मिला, उस घोल को पौधों पर छिड़क देते हैं। मात्र चौबीस घंटों में समूचे खेत के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

अफ्रीका सहित अन्य विकासशील देशों के भी लाखों गरीब किसानों को इसी तरह से प्रतिदिन अपने खेतों में कीटों के खिलाफ जो जंग लड़नी पड़ रही है उसमें उनके हथियार उनके सदियों से आजमाए हुए फसल संरक्षण और कीट-उन्मूलन के उक्त देसी नुस्खे ही हैं।

केमरून में देशी नुस्खों का इस्तेमाल केवल खाद्य-फसलों के संरक्षण या कीट-उन्मूलन तक ही सीमित नहीं है। इनकी जरूरत उन देहाती दूध-उत्पादकों को भी पड़ती है जिन्हें अपना दूध दूर-दूर के शहरों-कस्बों तब बेचने जाना पड़ता है। उनकी समस्या यह है कि उनका दूध बाजार में पहुँचने तक ताजा नहीं रह पाता। उबला हुआ दूध ज्यादा से ज्यादा ४८ घंटे तक ही रखा जा सकता है क्योंकि उनके गाँवों में बिजली, शीतलन तथा पाश्चराइजेशन की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है और उन्हें दूध को इससे ज्यादा अवधि तक सुरक्षित रखना होता है। इस समस्या को वहाँ के खानाबदोश चरवाहों की फुलानी बिरादरी ने अपने पुरातन ज्ञान से हल किया है। उन्हें सिर्फ करना यह होता है कि वे स्थानीय रूप से उगने वाली एक झाड़ी 'बबाहो' के कुछ डंठल दूध को उबालते वक्त उसमें डाल देते हैं और वह दूध सात दिनों तक खट्टा नहीं होता।

कटाई के बाद खलिहान में सूख रही मक्का को सबसे ज्यादा खतरा घुन से होता है। इससे बचाव के लिए यहाँ के किसान मक्का के पौधों को सुखाते समय उनके बीच यूकेलिप्टस की पत्तियाँ रख देते हैं और धूप में निकले उसके तेल से सारे घुन नष्ट हो जाते हैं। कुछ किसान एक और तरीका आजमाते हैं। वे अपनी मक्का की फसल बाँस की छत वाली झोपड़ियों में सुखाते हैं। इस झोपड़ी में साइप्रस और एक अन्य स्थानीय पौधे 'नाचा चोर' की पत्तियाँ जलाकर उसके दरवाजे-खिड़कियाँ बन्द कर देते हैं। जलती पत्तियों का धुआं, जैसे ही छत में से बाहर निकलता है उससे घुन अपने-आप नष्ट हो जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोबर और गोमूत्र से खाद बनाना सीखें

श्री महेन्द्र बम, अध्यक्ष
म०प्र० गौ सेवा आयोग/सचिव अ० भा० कृषि गौ सेवा संघ
गौपुरी-वर्धा (मध्य प्रदेश)

खेत में जब बुवाई करनी हो उसके पूर्व चार किलो दही की छाछ, २०० लीटर पानी में मिलाकर नली के द्वारा एक एकड़ ज़मीन में छोड़ी जाए। छाछ को ताँबे के बर्तन में दस दिन तक रखें, उसका रंग हरा हो जाने पर ही पानी में मिलाकर काम में लेवें।

बोनी के एक दिन पूर्व ३५ ग्राम गाय सींग खाद १३ लीटर पानी में एक घण्टे तक आपस में मिलावें तथा जमीन पर झाड़ू से स्प्रे कर देवें। पहले २५० ग्राम घी दस किलोग्राम गोबर में अच्छी तरह से मिलाएँ, बाद में उसी मिलावट में ५०० ग्राम शहद मिलाएँ। अच्छी तरह से मिलाने के बाद यह दो सौ लीटर पानी में मिलाएँ। जो घोल तैयार होगा वही अमृत पानी स्प्रे होगा।

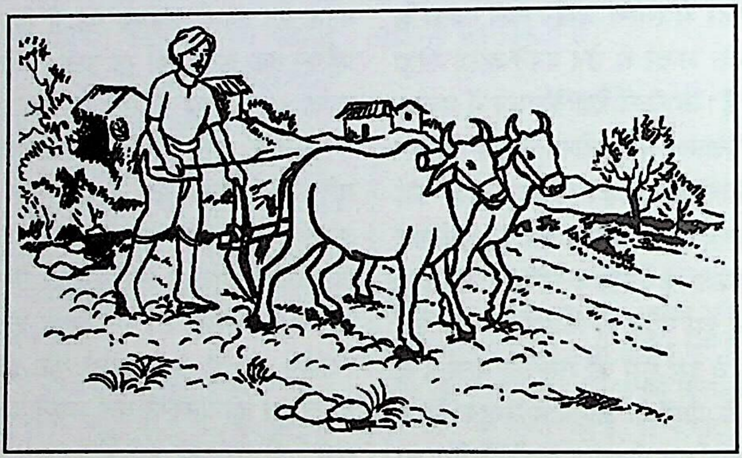

बीज संस्कार हेतु बड़ पेड़ के नीचे की मिट्टी भरना (अंगारा) एक किलो लेना उसमें अमृत पानी मिलाकर लोंदा (पेस्ट) हो जाये तो बीज पर लोंदा लगाने के बाद छाँव में सुखायें और फिर बोने में इस्तेमाल करें।

अंकुर आने के पन्द्रह दिन बाद नीचे लिखी पद्धति से गोबर का घोल क्यारी में छोड़ना चाहिए।

१५ किलो देशी गाय का ताजा गोबर, १५ किलो ताजा गोमूत्र तथा १५ किलोग्राम पानी मिट्टी के घड़े में घोलकर रखें। उसमें आधा किलोग्राम गुड़ पानी में घोलकर गोमूत्र मिला दिया जाना चाहिए। इस घोल की मिट्टी के बर्तन में ऊपर से कपड़ा या टाट से पैक कर रख दें। चौथे या पाँचवें दिन इस घोल में २०० लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ जमीन में नली द्वारा गोबर और गोमूत्र, झाड़, फल, सब्जी, अन्न वाले क्षेत्र में पहुँचा दें तो उसको यूरिया की कोई जरूरत नहीं रहेगी। क्योंकि गोमूत्र में नाइट्रोजन, पोटाश, फास्फेट, लवण, यूरिया, यूरिक एसिड होते हैं। इसलिए फसल के उत्पादन में ४० प्रतिशत की वृद्धि होगी। इसका प्रयोग कृषि विद्यापीठ परभणी ने किया। जब यूरिया देने का समय आवे तब इस गोबर गोमूत्र, गुड़ पानी मिश्रित घोल का उपयोग करें। इससे कीट भी फसल पर नहीं लगेंगे। मान लो कीट लग गए हैं तो पेस्टीसाइड के स्थान पर निम्नलिखित गोमूत्र औषधि का प्रयोग करें।

१० लीटर देशी गाय का गोमूत्र लेकर ताँबे के बर्तन में डाल दें और उसमें एक किलोग्राम नीम के पत्ते डाल दें। १५ दिन तक उसको बर्तन में पड़ा रहने दें। १५ दिन बाद गोमूत्र व पत्तों को ताँबे के बर्तन में ही भट्टी पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चढ़ाकर आँच दें। ५० प्रतिशत गौ मूत्र कम हो जाने पर या जल जाने पर उसको नीचे उतार लें और उसमें सौ गुणा पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। यानि १ लीटर गोमूत्र रह जाने पर १०० लीटर पानी मिलाकर प्रति २० दिन में ५ बार स्प्रे करना चाहिए। कीटनाशक औषघि तेज करनी हो तो जब भट्टी पर गोमूत्र चढ़ावें तब उसमें ५० ग्राम लहसुन कूटकर डाल दें क्योंकि वह भी उसको शक्ति बढ़ा देगी। घोल का उपयोग बंजर वाले क्षेत्र में करने से अच्छे परिणाम आयेंगे। गर्म हो जाने पर कपड़े से छानकर बाल्टी भर लें।

जिस प्रकार शराब मनुष्य के शरीर को हानि पहुँचाती है, धीरे-धीरे मनुष्य का शरीर नष्ट करने में सहायक होती है। उसी प्रकार रासायनिक उर्वरक भी हमारी भूमि को नष्ट कर रहा है। गोबर व गोमूत्र के लिए गोवंश की रक्षा किसान को ही करना पड़ेगी। गाय किसान पालेगा तब ही गाय बचेगी। वास्तव में किसानों को समझाने हेतु किसान सम्मेलन बुलाना जरूरी है।

यदि किसानों के मन में भय हो कि यूरिया के बगैर फसल नहीं बढ़ेगी और उत्पादन नहीं होगा, तो यह भ्रम मात्र है क्योंकि महाराष्ट्र में रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों को बहुत से किसानों ने छोड़ दिया है। हजारों किसान बगैर रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक का बिना उपयोग करे, पहले से ज्यादा उत्पादन गोबर-गोमूत्र के उपयोग से प्राप्त कर रहे हैं।

रासायनिक उर्वरक से जो उत्पादन होता था, बगैर रासायनिक उर्वरक के तुलनात्मक रूप से अधिक उत्पादन अभी भी हो रहा है। किसानों को विधि समझाने हेतु हम स्वयं आ सकते है। गोमूत्र द्वारा निर्मित औषधि तथा यूरिया के स्थान पर देशी गाय के गोबर का घोल उपयोग में लाने हेतु मार्गदर्शन करने को भी हम तैयार हैं।

गाय, गोबर और गोमूत्र के गुणों के कारण ही बचाई जा सकती है। गोमूत्र चिकित्सा से असाध्य रोग निवारण हो रहे हैं।

■■

ट्रैक्टर और पर्यावरण

डॉ० सुशील नायर

एक वैज्ञानिक अनुमान के अनुसार एक ट्रैक्टर दस हजार किलोमीटर चलने पर २९०० किलोग्राम आक्सीजन का उपयोग कर लेता है। इस दौरान उससे २१६६ किलोग्राम कार्बन-डाईआक्साइड, ३५३ किलोग्राम कार्बन मोनो आक्साइड, ४२ किलोग्राम नाइट्रोजन डाइआक्साइड गैस वातावरण में छोडी जाती है। आप जानते हैं ऑक्सीजन वह प्राणवायु है जिसे हम साँस द्वारा अन्दर लेते हैं कार्बन डाइआक्साइड साँस द्वारा छोड़ी जाने वाली गैस है। कार्बनमोनो आक्साइड नाइट्रोजनडाई आक्साइड व हाइड्रोकार्बन, जहरीली और हानिकारक गैसें व पदार्थ हैं जो वातावरण में मिलकर मानव स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते हैं। बापू भी रासायनिक उर्वरक के विरोधी थे। बापूजी रासायनिक उर्वरक के सर्वथा विरोधी थे, सेंद्रिय खाद से जमीन की शक्ति बढ़ती है और रासायनिक उर्वरक से खत्म होती है, ऐसा उनका विश्वास था और आज वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि गोबर आदि से जमीन की शक्ति बढ़ती है। हमें रासायनिक खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बन्द कर देना चाहिए ताकि हमारी जमीन की ताकत बनी रहे। गाँधी का यह हमेशा कहना था कि जमीन कहती है कि जो तुमको मुझसे लेना हो लो और जो तुमको नहीं चाहिए वह मुझे वापिस दे दो। खाने-पीने का कचरा, फल-सब्जी के छिलके, गोबर, मल-मूत्र आदि सब अच्छी खाद का काम करते हैं। गोबर गैस प्लांट को तो आज वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। वह बहुत कीमती प्रयोग है। उससे हमें एक तो गैस मिलती है जो रोशनी व पकाने के काम आती है। दूसरा उसकी स्लरी (घोल) से अच्छी खाद जमीन को मिल जाती है और तीसरा उसके परिणामस्वरूप स्वच्छता एवं स्वास्थ्य रक्षा मे मदद मिलती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूध में रसायनों की मिलावट
एक जघन्य अपराध

डॉ० राकेश अग्रवाल

दूध में घातक रसायनों की मिलावट ने मानवीय मूल्यों में गिरावट के सारे मान-दण्ड तोड़ दिये हैं। आज सिंथेटिक दूध सरकार, सामाजिक संगठनों और उपभोक्ता सबकी चिन्ता का विषय बन गया है। फिर भी सिंथेटिक दूध रूपी जहर के सौदागर सरकार द्वारा सख्त कानूनी कदम उठाने पर हड़ताल का रास्ता अपना कर 'चोरी और सीना जोरी' की कहावत को चरितार्थ करते हैं। कुछ स्वार्थी लोग इस मुद्दे को भी राजनीतिक रंग देने की कोशिश कर जन-स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वालों को संरक्षण देते हैं।

> आज नैतिक मूल्यों का इतना पतन हुआ है कि अन्य **खाद्य** पदार्थों के साथ दूध जैसे जीवनोपयोगी पदार्थ में भी रसायनों की मिलावट की जाती है। आज के आर्थिक युग में अधिक-से-अधिक धन अर्जित करने के लिए व्यक्ति निकृष्ट-से-निकृष्ट कार्य करने के लिये भी तत्पर रहते हैं। आज तक दूध में पानी की मिलावट होती थी सो होती ही थी, अब तो-यूरिया, डिटर्जेन्ट, सफेद कैस्टर ऑयल, तरल ग्लूकोज, हाइड्रोजन ऑक्साइड तथा फार्मोलिन आदि रसायनों को मिला कर कृत्रिम दूध तैयार किया जाता है। यह दूध देखने तथा स्वाद में बिल्कुल सामान्य दूध जैसा लगता है, किन्तु यह कृत्रिम दूध हल्के विष के रूप में लोक-स्वास्थ्य के लिये खतरनाक है। इससे जिगर, आंत तथा गुर्दों को क्षति पहुँचती है।

दूध पौष्टिक आहार का महत्त्वपूर्ण अंग है। स्वास्थ्य-विज्ञान में दूध को स्वास्थ्यकारक तथा शक्तिवर्धक माना गया है। इसमें समुचित मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, कैल्शियम, फास्फोरस आदि पोषक तत्त्व होते हैं। स्वास्थ्य-विशेषज्ञ दूध को पूर्ण आहार मानते हैं। शुद्ध दूध से पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा प्राप्त होती है।

आज तक दूध में पानी की मिलावट होती थी सो होती ही थी, अब तो यूरिया, डिटर्जेन्ट, सफेद कैस्टर ऑयल, तरल ग्लूकोज, हाइड्रोजन ऑक्साइड तथा फार्मोलिन आदि रसायनों को मिला कर कृत्रिम दूध तैयार किया जाता है। यह दूध देखने तथा स्वाद में बिल्कुल सामान्य दूध जैसा लगता है, किन्तु यह कृत्रिम दूध हल्के विष के रूप में लोक-स्वास्थ्य के लिये खतरनाक है। इससे जिगर, आंत तथा गुर्दों को क्षति पहुँचती है।

दूध के बड़े व्यापारी सिंथेटिक दूध बनाने के साथ-साथ प्राकृतिक दूध को अधिक समय तक संरक्षित रखने के लिए भी यूरिया, कास्टिक, रीठा पाउडर, पैराफिन आदि रसायनों का प्रयोग करते हैं। इससे दूध काफी समय तक फटता नहीं है।

मनुष्य को दूध में मिलावट से ही संतोष नहीं होता, बल्कि वह दुग्ध-उत्पादों— जैसे, मक्खन, घी, दही, खोया, दुग्ध-पाउडर आदि में भी मिलावट करता है। घी और मक्खन में वनस्पति तेल, पशु चर्बी, तथा रंग आदि मिलाया जाता है। खोये में से वसा निकालकर स्टार्च की मात्रा बढ़ा दी जाती है। मिल्क पाउडर में भी स्टार्च की मिलावट की जाती है। ये मिलावट-युक्त दुग्ध-उत्पाद भी पेट के रोगों के कारण बनते हैं।

खाद्य अपमिश्रण-निवारण-अधिनियम, १९५४ भी दूध में यूरिया, कास्टिक तथा पोस्टर कलर आदि खतरनाक रसायनों की मिलावट रोकने में सक्षम नहीं है। नियमों के अन्तर्गत अनेक प्रकार के दूध, जैसे-फ्लेवर्ड मिल्क, मिक्स्ड मिल्क, स्टैंडर्डाइज्ड मिल्क, टोंड मिल्क, स्किम्ड मिल्क, फुल क्रीम मिल्क के सम्बन्ध में मानक निर्धारित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। लेकिन दूध में मिलावट के मामले में कानूनी मानक दूध में फैट और सॉलिड नान-फैट की जाँच से आगे नहीं जाते हैं। इस दृष्टि से कानून में व्यापक संशोधन की आवश्यकता है।

कुछ लोग कहते हैं कि दूध में प्राकृतिक रूप से यूरिया होता है, किन्तु इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक मानते हैं कि इस यूरिया की मात्रा इतनी कम होती है, जिसका पता सामान्य परीक्षण से नहीं चलता, जबकि अपमिश्रित यूरिया का पता सामान्य परीक्षण से चल जाता है।

भावी पीढ़ियों के स्वास्थ्य के लिए समाज में मिलावट-रहित, शुद्ध दूध की उपलब्धता जरूरी है।

■■

ऋषि-कृषि का मूल आधार अमृतपानी

डॉ० ओ०एन० सोलंकी

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के प्रगतिशील किसान मोहन शंकर देशपांडे ने प्राचीन भारतीय साहित्य यथा कृषि पाराशर, चाणक्य, गीता व अन्य ग्रन्थों का अध्ययन किया। अध्ययन कर उन्होंने एक ऋषि-कृषि का नाम दिया गया। इस कृषि का मूल आधार उनके द्वारा विकसित अमृत पानी है जिसका उपयोग वे स्वयं तो कर ही रहे हैं, अपने सहयोगी किसान भाइयों को भी उसका उपयोग करने की प्रेरणा दे रहे हैं।

अमृत पानी बनाने के लिये देशी गाय का २५० ग्राम घी, शहद ५०० ग्राम तथा गाय के १० किलो ताजे गोबर की आवश्यकता होती है। अमृत पानी बनाने की विधि इस प्रकार है। पहले गाय के २५० ग्राम घी को १० किग्रा० गोबर में अच्छी तरह मिलायें, फिर इसमें आधा किलो शहद भी अच्छी तरह मिलायें। इस मिश्रण को २०० लीटर पानी में मिलाकर अच्छी तरह से घोल लें। बस एक एकड़ के लिये पर्याप्त अमृत पानी तैयार है।

प्रयोग विधि—गन्ना, हल्दी, अदरक आदि को अमृत पानी में भिंगोकर लगायें। अन्य बीजों को उपचार करने के बाद बोयें।

बीज उपचार की विधि—वटवृक्ष के नीचे की एक किलो ग्राम मिट्टी में अमृत पानी मिलाकर उसका घोल तैयार करें। बीज को एक सूप में रखकर उसमें उपरोक्त घोल को डालकर बीजों को भिगायें। उन्हें भिंगाकर छाँव में सुखा लें। बीज का छिलका यदि मोटा हो तो उपरोक्त घोल गाढ़ा बनायें जैसे कि मक्का, गेहूँ, भिंडी आदि। यदि बीज का खोल पतला हो तो घोल पतला बनायें जैसे मूँगफली, सोयाबीन, तुवर आदि। अतः ऋषि-कृषि या मोहन देशपांडे की कृषि पद्धति से खेती करने के लिये निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं—

(१) एक एकड़ में १५ किलो बड़ के नीचे की मिट्टी बिखेरें।

(२) अमृत पानी से बीज का उपचार करें।

(३) खरीफ में अमृत पानी खेत में डालें तथा रबी में अमृत पानी को सिंचाई के पानी में मिलाकर खेत में दें।

श्री मोहन देशपांडे के अनुसार इस तरह से खेती की जाने पर रासायनिक जैविक खाद की आवश्यकता नहीं पड़ती है। जमीन के अन्दर के सूक्ष्म जीवाणु एवं गिंडोले आदि सक्रिय होकर भूमि उपजाऊ बनाते हैं। एक फसल में एक से अधिक बार भी अमृत पानी का उपयोग किया जा सकती है। जमीन की शक्ति के अनुसार अमृत पानी के उपयोग से पौधे स्वस्थ होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोबर एवं गोमूत्र के विविध उपयोग

कामधेनु खाद (सूखा)

गोबर को नेडप कम्पोस्ट विधि से वनस्पति के फालतू पत्ते, शाखाएँ, जल डालकर सड़ाने से उत्तम सैन्द्रिय खाद तैयार हो जाती है। छोटे से गड्ढ़े में भी घर में तैयार हो सकती है। जिनके घर एक भी गाय है वहाँ उत्तम खाद तैयार हो जाती है।

उसे पैकेट के रूप में जल में घोलकर घर के तुलसी दल, फूलों व गमलों में व्यवहार कर अपने घरों में वातावरण शुद्ध करके प्रदूषण मुक्ति में सहायक हो सकते हैं। तुलसी दल व घर के फूलों के गमलों के लिए उत्तम खाद है। राजस्थान गोसेवा संघ, दुर्गापुरा से यह हर समय उपलब्ध है। प्रशिक्षण की व्यवस्था भी है।

स्प्रे के लिए कामधेनु खाद (तरल)

वृद्ध गाय, बैल तथा साँड़ के मूत्र में नाइट्रोजन की मात्रा अधिक होती है। १० किलो गौमूत्र में २.५ किलो नीम की पत्ती को पन्द्रह दिन सड़ाकर उसे छानकर कीटनाशक औषधि बनती है। १ किलो कीटनाशक औषधि को १०० किलो जल में मिलाकर पौधों पर छिड़का जाता है। इस छिड़काव से रासायनिक छिड़काव के जहर से बच सकते हैं और बहुत कम खर्च में आपके पौधों पर छिड़काव से कीटरक्षा हो जाती है।

गौमूत्र इल्लीनाशक स्प्रे

फसलों की इल्ली (अल्ली) लम्बा कीड़ा मारने के लिए।

गौमूत्र में निर्गुड़ी (नेगड़) (संभालु) के पत्ते, मंजरी, डंठल १०० ग्राम को सड़ाकर बीस दिन रखे। फिर मसलकर छानकर स्प्रे (छिड़काव) करने से, फसलों का इल्ली का रोग नष्ट हो जाता है। पहले ही छिड़काव किया जाए तो इल्ली का प्रकोप होगा ही नहीं।

प्रस्तुति : श्री लोकेन्द्र करवा

मांगलिक अवसरों पर

स्वास्थ्य एवं आयुर्वधक पेय

भारतीय समाज में विवाह, जन्मदिन तथा त्योहारों आदि मांगलिक अवसरों को हम हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। धार्मिक उत्सवों पर भी हम सहर्ष अपनी भावनायें इसी प्रकार व्यक्त करते हैं और अपने स्वजनों तथा मित्रों को आमन्त्रित करते हैं तथा उत्तम व्यंजनों और पेयों से उनका स्वागत करते हैं जिससे हमारे स्वजन और मित्र स्वस्थ एवं आयुस्मान हों। वे भी हमें शुभकामनाएँ और शुभ आशीर्वाद देते हैं।

इन मांगलिक अवसरों के लिए हम कुछ स्वास्थ्यवर्धक पेयों के बारे में आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। इन पेयों के बारे में बहुतों को जानकारी है, फिर भी हम उनका उल्लेख कर रहे हैं क्योंकि इन पेयों को लोग भूल रहे हैं।

१. ठंडई
२. आम का पन्ना
३. जलजीरा
४. लस्सी
५. छाछ
६. केशर दूध
७. बेल का शर्बत
८. नीबू की शिकंजी
९. फलों का शर्बत

१०. बाजार में बने बनाये पेय जो शर्बत रूप में यथा रुह आफजा, खस शर्बत, मिश्राम्बु (ठंडई) आदि अनेक प्रकार के शर्बत भी उपलब्ध हैं जिनसे स्वास्थ्यवर्धक पेयों का निर्माण हो सकता है।

११. शहद-पेय—गुनगुने पानी में शहद अथवा शहद और नीबू मिलाकर।

प्रस्तुति : श्री देवेन्द्र बजाज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोमाता

श्री जगदीश चन्द्र अरोड़ा
वरिष्ठ पत्रकार

परमात्मा की सृष्टि में सबसे उपयोगी जीव गाय है। मनुष्य से बहुत ज्यादा, क्योंकि मनुष्य स्वार्थी प्राणी है इसलिए उसकी उपयोगिता केवल उसके अपने निज तक सिमट कर रह गयी है। गाय का रोंया रोंया दूसरों के उपयोग में आता है। गाय के समान परोपकारी प्राणी कोई दूसरा नहीं है।

मानव समाज के प्रारम्भिक दिनों में जिस वस्तु से मानव को लाभ होता दिखाई देता था उसकी वह पूजा करने लग जाता था। प्रारम्भिक समाज का गठन माँ के इर्द-गिर्द हुआ था। पिता का ज्यादा महत्त्व नहीं था। अत: माँ सर्वाधिक पूज्यनीय, माननीय और प्रेमपात्र होती थी और मनुष्य को जिससे भी लाभ होता था उसे वह 'माँ' का दर्जा दे देता था। धरती से खाद्यान्न, उत्पन्न होता था, इसलिए धरती माँ बन गयी। नदी का जल जीवन का स्रोत था। पीने, नहाने, खेतों की सिंचाई के लिए नदी अत्यन्त उपयोगी और वन्दनीय थी इसलिए वह भी माँ कहलाई। पशुओं में आदमी ने सबसे पहले गाय को पालना सीखा और ज्यों-ज्यों आदमी गाय की उपयोगिता को जानता गया त्यों-त्यों उसके प्रति उसका प्यार, आस्था और सम्मान बढ़ता गया। घर के अन्दर परिवार में गाय माँ के समान ही माँ का दर्जा पा गई।

गाय का दूध बच्चों से लेकर बूढ़ों तक के लिए लाभप्रद है। जो रोगी और नवजात बच्चे भैंस का दूध नहीं पचा पाते उन्हें डॉक्टर गाय का दूध पिलाने को कहते हैं। माँ के दूध के समान ही बच्चों के लिए गाय का दूध होता है। गाय को अगर उचित, भरपूर पोषक खुराक दें तो उसका दूध माँ के दूध से भी अधिक लाभकारी है। गाय गोबर और गोमूत्र भी लाभकारी है। भारत के लाखों घरों, विशेषकर गाँवों में गोबर के उपले पाथ कर रसोईघर में जलावन के काम में आते हैं। यदि गाय के गोबर के उपले उपलब्ध न हों तो जलावन के लिए देश में न अब उतने पेड़ बचे हैं और न उतनी गैस ही उपलब्ध है।

गोबर से लाखों घरों में ड्योढी और आँगन रोज लीपे पोते जैते हैं। गोबर में मच्छर एवं किटाणु विरोधी गुण हैं। आश्चर्य है कि गाय चाहे जो कुछ भी खाये उसके गोबर से दुर्गन्ध नहीं है। हजारों औरते, बच्चे घूम-घूम कर गोबर बटोरने, उपले (गोहरी) बनाने में लगे हैं। उपले बेचे भी जाते हैं और बहुतों का यह रोजगार भी है।

आयुर्वेद ने गोमूत्र में अनेक चिकित्सीय गुण खोज निकाले हैं और अनेक आयुर्वेदिक दवाओं में गोमूत्र का प्रयोग होता है। कई आस्थावान गोमूत्र का सीधा सेवन भी करते हैं। उनका कहना है कि गोमूत्र बात् और पित्त रोगों के लिए संजीवनी है। अनेक गोशालाओं में गोबर और गोमूत्र का प्रयोग कर ऊसर जमीन को उपजाऊ बनाया जाता है। इस प्रयोग के उपयोग से बाँझ और बूढ़ी गायों को प्राणदान मिला है। उनकी उपयोगिता का भी रास्ता निकल आया है।

महात्मा गाँधी के सेवाग्राम आश्रम से टीक पहले गाय की उपयोगिता पर अनुसंधान कर रहे गाँधीजी के अनुयायियों ने खोज कर गाय के अवयवों से ३६ प्रकार के उद्योगों की सूचि बनाई है। गाँधी आश्रमों में मृत गाय के चमड़े से जूते, चप्पल, बैग आदि बनाने का उद्योग तो काफी बड़ा और प्रचलित है। मृत गाय के चमड़े से बने जूते, चप्पल बहुत ही नरम होते हैं, वेलवेट की तरह। पानी में भीगने से खराब नहीं होता यह चमड़ा।

गाय के सींग, गाय की हड्डियाँ, गाय की अतड़ियाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह सब किसी न किसी उद्योग में लाभ में आती हैं। औषधि उद्योग में अतड़ियों से निकला रसायन उपयोग किया जाता है। बैल के अपने अलग उपयोग हैं। हल चलाने, कूएं से रहट चलाकर पानी खींचने, बैलगाड़ी में जोतने में बैल के समान दूसरा उपयोगी पशु नहीं है।

पाखण्ड

परन्तु हमारे देश भारत में निष्ठा और आस्था पर पाखण्ड और राजनीति हावी है। गाय को माँ मानते हैं, पूजते भी हैं, उसकी पूंछ पकड़कर वैतरणी पार करने का नाटक भी रचते है, एक गाय को सैकड़ों बार दान कर नेका घोर पाप भी करते हैं, परन्तु जितनी घोर उपेक्षा हम गाय की करते हैं उतनी घर के पालतू कुत्ते की भी नहीं करते। पहले तो हम अधिक दूध की लालच में उसके बछड़े को पेटभर तो क्या मन भर भी माँ का दूध पीने नहीं देते, थन से मुँह छुआ कर हटा लेते हैं। खाने के लिए घर में साधारण भूसा देकर उसे सड़कों पर चरने के लिए छोड़ देते हैं जहाँ वह कूड़ा कचरा (पोलीथीन और अस्पतालों के गंदे कपड़े भी) खाती है।

फिर भी धन्य है गोमाता कि वह दूध ही देती है, थनों से सीवर पानी नहीं निकालती। इतना ही नहीं बुढ़ाने पर हम उसे कसाई के हाथ डेढ़ दो सौ रुपये की लालच में बेच देते हैं। गाय को माँ मानने वाले देश में ५०,००० गोवंश प्रतिदिन मांस के लिए कटता है। उनका कत्ल करने के लिए बिजली चालित बड़ी-बड़ी मशीने लगी हैं।

पिछले ५० वर्षों में गोवंश बंदी के लिए अनेक हिन्दूवादी पार्टियों ने आन्दोलन किये, आन्दोलन में करोड़ो रुपये खर्च किये, लेकिन गोवध नहीं रुकवा सके। आन्दोलनों में खर्च रकम, समय और ऊर्जा यदि गोवंश संवर्धन और गोशालाओं के निर्माण में लगाया गया होता तो गोवध बंद होने की दिशा में अधिक सफलता मिलती। परन्तु गोवध बंदी आन्दोलन आन्दोलनकारियों का असली उद्देश्य राजनीतिक होता है इसलिए उन्हें रचनात्मक कार्य पसन्द नहीं है। बम्बई के एक कसाई खाने के सामने २० साल से कुछ लोग बारी बारी धरना दे रहे हैं। धरना देने के बदले अगर वे किसी हिन्दूवादी पार्टी या गोशाला की तरफ से यह बैनर लगा कर बैठते कि 'यहाँ गाय मत बेचो। यहाँ से जितना मिलेगा उससे पाँच रुपया ज्यादा हम देंगे।' तो धरना सफल हो जाता। गाँधी के बाद देश में जितने भी गाँधीवादी (अहिंसक) आन्दोलन चले हैं सब पाखण्ड, दिखावे और राजनीति की भेंट चढ़ गये हैं।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ गाय को माता कहा जाता है एक भी गोवंश का कटना अत्यन्त दुःख और शर्म की बात है, परन्तु यह भी सत्य है कि ऐसा हो रहा है। देशी गायों की संख्या इतनी कम हो जाती है कि विलायत से जर्सी गाय लाई जा रही है जो यहाँ के जलवायु और वातावरण में पनप नहीं पातीं। चंद दिनों तक अधिक दूध देंगी फिर उनका दूध कम होना शुरू हो जाता है। जो खाना हम अपनी देशी गाय को खिलाकर दूध प्राप्त कर लेते हैं वह तो खैर जर्सी गाय खायेंगी ही नहीं। जो वह खाती है वह इस देश की ५० फीसदी जनता को भी नसीब नहीं है।

बैल भी कट रहे है। उनके मांस का निर्याथ हो रहा है, अरब देशों से पेट्रो डाल कमाने के लिए। बैलों की जगह ट्रैक्टर ले रहे हैं जो प्रदूषण भी फैाते है और धरती की उर्वरा शक्ति को क्षीण भी करते है। बैल हम जोतते समय जो गोबर और गोमूत्र धरती पर गिराते थे वह खाद और किटाणु नाशक रसायन का भी काम करते थे। ट्रैक्टर तो सिर्फ डीजल और धूंआ ही छोड़ता है।

भारत के हर शहर गांव में छोटी बड़ी गोशालाएं खोलने का वृहद आन्दोलन चलना चाहिए। फ्लैटों में रहने वालों को कहना तो व्यर्थ होगा परन्तु जो भी अपने घर में गाय पाल सकें, जरूर पाले। बायोगैस का एक प्लांट भी लगवाएँ और घर में ही छोटा स्वर्ग का निर्माण करे।

■■

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब्दुल मियां की गाय माता

मुसलमान बालक, अब्दुल जब छोटा था, उसकी माता संसार से चल बसी। अब प्रश्न था कि उस बच्चे का पालन-पोषण कैसे हो ? इस चिन्ता से छुटकारा पाने के लिए उस के पिता ने एक गाय खरीद ली। अब्दुल उस गाय से ऐसा हिल-मिल गया कि जैसे वे माँ-बेटे ही हों। उसी गाय का दूध पीकर अब्दुल पला गया। वह गाय भी उसे अपने बछड़े की तरह प्रेम करते हुए अक्सर अपनी जीभ से चाटा करती, जब अब्दुल गाय के पास बैठता। अब्दुल उसे पुचकारता तो वह उसकी तरफ मुँह उठाकर बड़े प्यार से उसे देखने लगती। एक बार जाड़े का दिन था, गाय धूप में आराम से बैठी थी, अब्दुल उसके पास ही धूप में खड़ा था। तभी मुहल्ले का एक कुत्ता, जो पागल हो गया था, उसके मकान में घुसा और सीधा अब्दुल की तरफ तेजी से झपटा। पर वह गाय फुर्ती से उठी और अब्दुल तथा उस पागल कुत्ते के बीच आ खड़ी हुई और गुस्से से बिफरती हुई अपने पैने सींगों से पागल कुत्ते पर प्रहार करने लगी। कुत्ता अधमरा हो गया और घर से बाहर भाग निकला। इसके पश्चात् वह गाय अब्दुल को बड़े प्रेम से चाटने लगी, क्योंकि डरके मारे अब्दुल रोने लगा था। उस रोज अब्दुल को उस गाय में मानो अपनी मां का ही रूप दिखाई दिया था। बड़े होकर अब्दुल मियां हमेशा अपनी उस गाय को मां या अम्मा ही कहा करते थे। कुत्ते वाली घटना के ५ वर्ष बीतने पर अब्दुल मियां की वह गाय माता बुरी तरह बीमार होकर चारा-दाना-पानी सब छोड़ बैठी। अब्दुल ने उसे बचाने के लिए बहुत दौड़-धूप की, पर वह ठीक न हुई और फिर अब्दुल के आँगन में एक दिन यह दुःखद दृश्य सामने था कि उनकी वह अम्मा, गाय माता अब्दुल की जांघ पर अपना सर रखे पड़ी थी और अब्दुल के चेहरे की तरफ अपलक ताकते हुए आँसू बहा रही थी—यह उसका अंतिम समय था। अब्दुल यानी अपने बेटे से अंतिम विदाई की बेला। एकाएक गाय माता ने एक बार अपना मुँह उठाकर अब्दुल का सार और मुँह चाटना शुरू ही किया था कि उनका सिर जमीन पर आ पड़ा। वह सदा के लिए अब्दुल को छोड़कर संसार से चली गई। मातृहीन अब्दुल को मां का प्यार और ममत्व देकर, अपना दूध पिलाकर जिसने पाला, बड़ा किया था उस अम्मा का निढाल, बेजान मुँह उठाकर अब्दुल फफक-फफक कर रोने लगा। मियां अब्दुल कहते थे, 'उसी रोज से मुझे गाय माता में विश्वास हो गया कि उनकी गिनती इन्सान से अलग पशुओं में करना जिहालत और नासमझी है। मैं जहाँ भी जाता, वहीं चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, सभी के बीच गाय की खिदमत करने और गाय को माँ मानकर उससे प्यार करने की नसीहत देता रहा।'

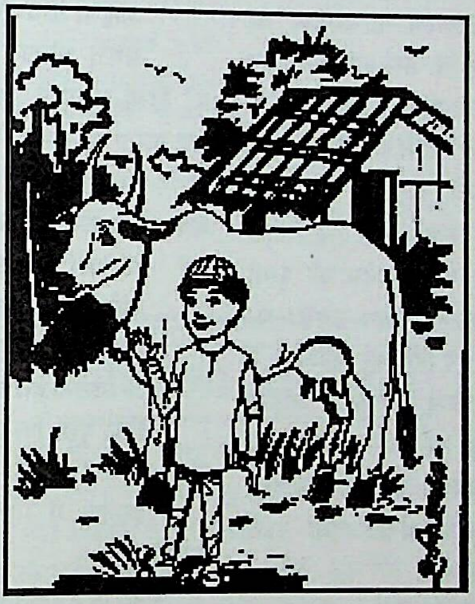

कहा भी गया है कि 'पशवो न गाव' अर्थात् 'गाय पशु नहीं है।' अब्दुल मियां ने कभी स्वयं लिखा था, 'गाय मेरी माँ'। जब वह गाय बीमार होती थी तो वह कहते थे, मेरी मां बीमार है। पता नहीं उसे क्या हो गया है? मैंने उसमें हमेशा मां का रूप ही देखा है।

प्रस्तुति : श्री मोहनलाल लढ़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहिंसा की भावना

श्री गुमानमल लोढ़ा (पूर्व न्यायाधीश, पूर्व सांसद)
अध्यक्ष, जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई

अहिंसा परमोधर्मः—यह प्रसिद्ध सूत्र है। अहिंसा साधना करने वाले सन्त तपस्या करते थे, स्वाध्याय करते थे और जनकल्याण का मार्ग समझाते थे। अहिंसा धर्म का सूत्र बाण शय्या पर पड़े भीष्म पितामह के मुँह से निकला। उनके जैसे महान् योद्धा के अन्त:करण के अहिंसा का विश्वास कैसे जगा, यह सोचता हूँ तो उस समय के जैन तीर्थंकर भगवान् नेमिनाथ का स्मरण होता है, जो जैनों के २२वें तीर्थंकर थे। उनसे पूर्व २१ तीर्थंकर हुए। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर २२वें तीर्थंकर का समय ५,८४,००० वर्ष के इतिहास का साक्षी है। उसे वैदिक काल माना जा सकता है। ऋग्वेद में ऋषभदेव को पृथ्वी का सूर्य कहा गया है। वे अहिंसा के प्रथम प्रवक्ता थे। उनकी विचारधारा को पुष्ट करते हुए तीर्थंकर नेमिनाथ ने जो कार्य किया, उसी से प्रभावित भीष्म पितामह ने अहिंसा को महत्त्व दिया। महाभारत युद्ध के कारण हिंसा की जि:सरिता सबने समझी। अत: अहिंसा को और व्यापाक बनाने का उपक्रम २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने किया।

चूंकि भगवान् महावीर अंतिम तीर्थकर थे। अत: आज का युग अहिंसा व भगवान् महावीर सबको पर्याय ही समझता है तथा वास्तव में महावीर ही अन्तिम कड़ी तीर्थकरों की हमारे युग में हैं, जिनसे यदि हम प्रेरणा लें तो वह उचित ही है।

महर्षि वेदव्यास ने कहा है—

''अष्टादश पुराणेषु, व्यासस्य वचनम् द्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीड़नम् ॥''

अर्थात् महर्षि वेदव्यास ने कहा है कि मैंने १८ पुराणों में दो बातें विशेष पाई हैं। (१) परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं हाता। (२) दूसरों को दु:ख देने से बढ़कर कोई पाप नहीं होता।

धम्मपद में अहिंसा के महान सिद्धान्त का यों महत्त्व दिया गया है—

न तेन अरियो होति, येन पाणानि हिंसति ।
अहिंसा सत्वपाणानं, अरियोति पवुज्जति ॥

अर्थात् भगवान् बुद्ध कहते हैं कि वह जो प्राणियों की हिंसा करता है, वह श्रेष्ठ पुरुष नहीं है। जो सब पर दया करता है, संसार में वही पुरुष श्रेष्ठ होता है।

गुरु नानक देव जी सिक्खों के महान् गुरु ही नहीं भारत में राष्ट्रीय महापुरुष रहे। उन्होंने कहा है—

जो गल काटे और का, अपना रहे कटाए ।
धीरे-धीरे नानका बदला कही न जाए ॥

नानक देव ने एक प्रश्न पूछा और कहा—

वेद कहवें कहो मत झूठे, वे झूठे जो न तियारे।

फिर पूछा कि जो सब में एक खुदा का वास होना कहते हो तो फिर मुर्गा-मुर्गी को क्यों मारते हो?

इस्लाम में मौलाना रूमी एक महान् संत हो गए उन्होंने कहा—

हजार कुंजे इबादत, हजार गंजे करम, हजार ताइत शवहा,
हजार बेदारी, हजार सिजदा व हर, सिसदा हजार नमाज।

अर्थात् यदि तुम हजारों के साथ प्रार्थना भी करो, हजारों धन कोष लुटा दो। यदि हजार रातें भक्ति करो। हजार जागरण करो। हजार बार शिजदा करो। हर शिजदे के साथ यदि हजार बार नवाज पढ़ो। यदि तुमने एक पत्ति को भी दु:ख दिया तो यह सब खुदा की दरगाह (दगाह) में स्वीकार न होगा।

विश्व के महान् संत कबीर कह गए—

अगर तेरे दिल में दया ही नहीं,
तो समझो तुझको दिल मिला ही नहीं।

मेरी व्यथा यह है कि भगवान महावीर बुद्ध, नानक,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गांधी, राम व कृष्ण के राष्ट्र की धरती आज एक ओर मानव रक्त से लहू-लुहान हो रही है तो दूसरी ओर प्रतिदिन लाखों मूक पशु काटे जा रहे हैं। पता नहीं कब हिंसा परायण लोगों को सुबुद्धि आये। अहिंसा का प्रभात कब देखने को मिलेगा?

अहिंसा सम्बन्धित मेरे अनुसंधान में राष्ट्रीय इन्टरनेट पर खोज करने पर महान् अहिंसावादियों के अहिंसा सम्बन्धी निम्नलिखित विचार व सूत्र मिले—

1. Ahimsa is not a religion. It is a way of life
—Claire Rosenfeld and Linda Segall
2. All things existing should be treated with Ahimsa. This is the pure unchanging law which the wise ones who knew the world have proclaimed.
—from Acharanga Sutra
3. All creatures on earth are sentient beings. "There is not an animal on earth, nor a bird that flies on its wings but they are communities like you."
—from the Holy Quran
4. This true heart of the Muslim faith is exmplified by many followers, from the classic sufi tradition to the growing community of....
—Islamic Vegetarians
5. Ahimsa is an active process that makes for a better world No effort is too small or too large, whether it comforts are suffering person rescues one abused animal or is part of the ecological, social and economic justice.
—Mother Teressa.
6. Non violence leads to the highest ethics, which is the goal of all evolutio. Until we stop harming all other living beings, we are still savages.
—Thomas Edison

गौशाला विशेषज्ञ

निम्नलिखित व्यक्ति गोबर से खाद बनाने या गोमूत्र का उपयोग दवाइयों में या फसल रक्षक या बायोगैस या बिजली बनाने में निपुण व विशेषज्ञ हैं। परामर्श एवं प्रशिक्षण के कार्य हेतु इनके परामर्श एवं अनुभव का उपयोग किया जा सकता है—

१. राजवैद्य रेवाशंकरजी- शर्मा रस्लाई, जिला-झालावाड, राजस्थान, **२. श्री नवीनेत देशमुख**, पोस्ट-मालेगाँव, जिला-नासिक (महाराष्ट्र), **३. श्री रमाकांत**, पोस्ट-आकोला, जिला-आकोला (महाराष्ट्र), **४. डॉ० रामपुरिया**, पोस्ट-अजमेर, जिला-अजमेर (राजस्थान), **५. श्री उदयलाजी नारोजी**, पोस्ट-नीमच, जिला-नीमच (मध्य प्रदेश), **६. श्री सोनीजी**, पोस्ट-शेमली आश्रम, जिला-शाजापुर (मध्य प्रदेश), **७. श्री केशरीचन्द मेहता**, पोस्ट-मालेगाँव, जिला-नासिक (महाराष्ट्र), **८. नेडेप काका प्रंढरी पाण्डे**, पोस्ट-पूसद, जिला-यवतमाल (महाराष्ट्र), **९. दर्शनश्री**, पोस्ट-रतलाम, जिला-रतलाम (मध्य प्रदेश), **१०. श्री महेन्द्रकुमार बम**, पोस्ट-बड़नगर, जिला-उज्जैन (मध्य प्रदेश), **११. श्री मोहन सिंह अहलुवालिया**, हरियाणा।

गाय से समग्र-ग्राम-विकास-मर्मज्ञ

१. **लोक आचार्य शरदकुमार साधक**, बी० ३८/१३-३० तुलसीपुर, नवोदित नगर एक्सटेंशन कालोनी, वाराणसी
२. **श्री जानकीवल्लभ करवा**, करवा उद्योग, गोपाल बाग, (मंडुवाडीह) पोस्ट० भुल्लनपुर, पी० ए० सी० वाराणसी, जिला-वाराणसी
३. **श्री सूर्यकान्त जालान (कानू बाबू)**, सुरभि शोध संस्थान, बी० २७/७५-डी, रविन्द्रपुरी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Phone : 4612684
Fax : 4612807

तार : जीवबंधु
GRAM : JIVABANDHU

भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड
(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय)
नं० ११, वेंकटरामन स्ट्रीट, श्रीनिवास एवेन्यू
आर०ए० पुरम्, चेन्नै-६०० ०२८

ANIMAL WELFARE BOARD OF INDIA
(Ministry of Environment and Forests, Govt. of India)
No. 11, Venkataraman Street, "Srinivas Avenue"
R.A. Puram, CHENNAI-600 028

अध्यक्ष
न्यायमूर्ति (अवकाशप्राप्त) गुमानमल लोढ़ा

अनुदान हेतु सम्पर्क करें

भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड ने वर्ष १९९९-२००० के लिए कार्यकारिणी की बैठक दिनांक १८ जून, '९९ व १७ जुलाई, '९९ में निम्नलिखित वित्तीय सहायता देने का निर्णय किया है। चूँकि भारत सरकार से अब तक बजट से आधी राशि मिली है, अत: प्रथम किश्त में १ लाख से अधिक अनुदान की राशि में केवल आधी दी जावेगी व बकाया अनुदान बजट राशि की दूसरी किश्त आने पर दी जावेगी। १ लाख के अनुदान की राशि औपचारिकता पूरी करने पर दी जा रही है। मुख्य कार्यालय चेन्नई के आदेश के अनुसार ही औपचारिकताएँ पूरी की जानी चाहिए।

निम्नलिखित सूची के अनुदान के अतिरिक्त बोर्ड ने गोबर, गोमूत्र, गोक्रान्ति योजना में विशेष अनुदान देने की योजना स्वीकृत की है जो निम्न प्रकार है—

(१) संस्था द्वारा उपलब्ध ७५ प्रतिशत गोबर या गोमूत्र खाद में परिवर्तित करने अथवा दवाईयाँ या बायोगैस या कीटनाशक या बिजली बनाने के उपयोग में लेने पर पूर्णत: प्रमाण प्रस्तुत करने पर इस वर्ष में १ लाख रुपया।

(२) उपरोक्त हेतु प्रशिक्षण १५ दिवस का १५ व्यक्तियों को तथा ७-७ दिन का ३० व्यक्तियों को देने के प्रमाण प्रस्तुत करने पर २५ हजार रुपये जो वर्ष में चार बार करने पर ज्यादा से ज्यादा १ लाख रुपये की राशि।

(३) अवैध हत्या से बचाकर गोवंश को कोर्ट की आज्ञा अथवा जिलाधीश के प्रमाण-पत्र रखने पर प्रतिदिन प्रति पशु तीन रुपये अधिक से अधिक एक संस्था को एक लाख रुपये इस हेतु बोर्ड की प्रश्नावली को उत्तर देकर बोर्ड के सदस्य या समिति के सदस्य या जिलाधीश से प्रमाणित कराना होगा।

उपरोक्त योजना की क्रियान्विति बोर्ड में बजट की उपलब्धि होने पर ही की जावेगी। बोर्ड का निर्णय अन्तिम होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोमाता की जय हो

डॉ० जितेन्द्र नाथ मिश्र
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दयानन्द महाविद्यालय, वाराणसी

रावण के अत्याचार से दैवी शक्तियाँ पददलित हो रही थीं। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची हुई थी। धरती भाराक्रांत होकर छटपटा रही थी। देवतागण 'पाहिमाम्' 'पाहिमाम्' की रट लगाते हुए जगत्पिता ब्रह्मा की शरण में पहुँचे। देवताओं के आगे-आगे पृथ्वी चल रही थी—गाय का रूप धारण करके। तुलसीदास इस दृश्य का करुण चित्र इन शब्दों में उपस्थित करते हैं—

सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्वा गे विरंचि के लोका ।
सँग गो तनु धारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सो अविनासी हमरेउ तोर सहाई ॥
धरनि धरहि मन धीर, कह विरंचि हरिपद सुमिरु ।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहिं दारुन विपति ॥

देवगण भी सामने थे किन्तु विधाता ने 'गोतनुधारी' भूमि को ही सम्बोधित किया और उसे लेकर जगत्राता भगवान विष्णु की शरण में पहुँचे। सबकी सम्मिलित प्रार्थना पर गोद्विजहितकारी प्रभु का रामावतार हुआ। भगवान के अवतार की पहली प्रतिज्ञा यही थी—

विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

इस प्रतिज्ञा में 'भूमि' या 'धरणी' शब्द का अलग से उल्लेख करने की आवश्यकता गोस्वामी जी ने नहीं समझी है क्योंकि विप्र, धेनु, सुर और संत के हित में धरती का सुख अपने आप समाहित हो जाता है। केवल 'गाय' का हित कह दिया जाता तो इसी में सबके हित की सिद्धि हो जाती। जिस देश में गाय रक्षित है, वहाँ यज्ञ रक्षित है। यज्ञ से वर्षा, वर्षा से अन्न, अन्न से प्रजा का जीवन और सुख-शांति यह कार्यकारण-शृंखला निर्विघ्न चलती रहती है। देश में यदि गाय का संरक्षण नहीं है तो यह अपने आप में इस बात का परिचायक है कि धरती नाना प्रकार के पाप-ताप से अनुतप्त एवं व्याकुल है।

इसीलिए गोमाता का संरक्षण भगवान् राम के अवतार की पहली प्रतिज्ञा है। भगवान के कृष्णावतार की कथा इससे भिन्न नहीं है। वहाँ भी पृथ्वी गाय का रूप धारण कर अश्रुपात करती हुई भगवान् के शरण में उपस्थित होती है और उसकी रक्षा के लिए भगवान् स्वयं 'गोपाल' के रूप में अवतरित होते हैं।

प्रश्न यह है कि प्रत्येक अवसर पर पृथ्वी गाय का ही रूप क्यों धारण करती है? उत्तर बिल्कुल सहज है। सृष्टि के समस्त जीवधारियों में गाय सबसे अधिक निर्दोष एवं निष्कलुष है। दैवी विभूतियों का सर्वोत्कृष्ट संपुंजन गाय के रूप में मूर्तिमान दिखलाई पड़ता है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, धर्मग्रंथों और साहित्य में गाय की महिमा का जिस प्रकार निर्वचन किया गया है, उसे क्षणभर के लिए अलग रख दिया जाय, तो भी गाय गाय ही है। 'गाय' शब्द के उच्चारण मात्र से मधुरता, कोमलता, पवित्रता और आन्तरिक ऊर्जा की अनुभूति होती है। 'गाय' शब्द के उच्चारण और श्रवण से वाणी, कान और मन बरबस पवित्र हो जाते हैं। कोई भी श्रद्धा के साथ कह सुनकर इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है।

नाम लेने मात्र से जो पवित्र बनाती है, उस गाय के शरीर में समस्त देवताओं का वास बतलाया गया है। गाय के मुख में समस्त अंगों सहित वेदों का, सींगों में भगवान शंकर और विष्णु, उदर में कार्तिकेय, मस्तक में ब्रह्मा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ललाट में महादेव, सीगों के अग्रभाग में इन्द्र, कानों में अश्विनी कुमार, नेत्रों में सूर्य-चन्द्र, दाँतों में गरुड़, जिह्वा में सरस्वती, गुदा में सम्पूर्ण तीर्थ, मूत्रस्थान में गंगा, रोमकूपों में ऋषिगण, पृष्ठभाग में यमराज, दक्षिणभाग में वरुण और कुबेर, वाम भाग में यक्ष, मुख के भीतर गंधर्व, नासिका में के अग्रभाग में सर्प, खुरों के पिछले भाग में अप्सराएँ, गोबर में लक्ष्मी, गोमूत्र में पार्वती, चरणों के अग्रभाग में आकाशचारी देवता, रँभाने की आवाज में प्रजापति और थनों में चारों समुद्र निवास करते हैं। पद्मपुराण (सृष्टि खंड ५७/१५७-६५) जैसा वर्णन महाभारत सहित समस्त पुराणों में थोड़ी बहुत भिन्नता के साथ उपलब्ध है। जिसने सर्वदेवमयी गाय की सेवा कर ली, उसने मानो समस्त देवताओं की सेवा कर ली। गाय के दूध, घी और दही की ही नहीं गोमय और गोमूत्र की भी बड़ी महिमा बतलाई गई है। गोमूत्र में गंगा तथा गोबर में लक्ष्मी के निवास की बात पौराणिक कथाकार की कपोल-कल्पना नहीं है। भारतीय आयुर्वेदशास्त्र और करोड़ों लोगों का प्रत्यक्ष अनुभव साक्ष्य के रूप में उपस्थित किया जा सकता है। धर्मविज्ञान के तीसरे खंड में भारतधर्म महामंडल के स्वामी दयानन्द ने इस साक्ष्य का सारांशत: उल्लेख किया है—

"आयुर्वेदशास्त्र में गोमूत्र और गोमय की शतमुख से प्रशंसा लिखी गई है। गोमय में बिजली के रोक देने की अद्भुत शक्ति है, इस कारण पर्वतीय लोग बरसात से पहिले अपने मकान को गोबर से लीप कर दरवाजे पर गोमय के यंत्र बनाये रखते हैं। ऐसा बंगादि देश के लोग भी करते हैं। पश्चिमी सायंस वालों ने यह बात निश्चय करके जान ली है कि बीमारियों के उत्पन्न न होने देने की शक्ति जितनी गोबर में है उतनी और किसी वस्तु में नहीं है। इसलिये घर को गोबर से लीपना और सब उपायों से अच्छा समझा गया है। पेट के समस्त रोग, सकल प्रकार के धातु रोग, नेत्र रोग तथा हृदय रोग में आराम देने की अद्भुत शक्ति गोमूत्र में विद्यमान है। नियमित गोमूत्रपान से दमे की बीमारी बिल्कुल अच्छी हो जाती है और नेत्र में ज्योति बहुत ही बढ़ जाया करती है। नन्दिनी के मूत्र को आँख में लगाकर रघुराज दिव्यनेत्र हो गये थे....... धातुदौर्बल्य, शुक्रतारल्य, प्रमेह, मधुमेह आदि समस्त रोग गोमूत्रपान से अच्छे होते हैं। अजीर्ण, तिल्ली तथा यकृत की खराबी, उदरामय, आँव आदि सभी उदर के रोग गोमूत्र पान से दूर हो जाते हैं। इन्हीं सब कारणों से आयुर्वेद में गोमूत्र द्वारा शोधन करके कितनी ही औषधियों के बनाने की विधि बतायी गयी है।"

"महाभारत के अनुशासन पर्व की कथा है कि अति प्रसन्नता के साथ गंगादेवी ने गोमूत्र में तथा लक्ष्मीदेवी ने गोमय में स्थान लिया है। इस कथा के द्वारा गोमहिमा की पराकाष्ठा तथा गोमूत्र और गोमय की परमोपकारिता बताई गई है। वास्तव में गोमूत्र में वे सब गुण हैं जो कि गंगाजल में पाये जाते हैं। गंगाजल की कीटनाशिनी शक्ति, गंगाजल की उदररोग विनाशिनी शक्ति, गंगाजल की पवित्रतादायिनी शक्ति, गंगाजल की मलिनतानाशिनी शक्ति, गंगाजल की दिव्य तेजदायिनी शक्ति—ये सभी शक्तियाँ गोमूत्र में पूर्णरूप से विराजमान हैं। प्रसूता स्नान स्त्री को जो गोमूत्रपान करने की आज्ञा धर्मशास्त्र में दी गई है, इसमें यही कारण है कि प्रसूता स्त्री के उदर में जमे हुए समस्त मल को गोमूत्र साफकर निकाल देता है और गर्भाशय को बिल्कुल शुद्ध बना देता है। अन्यथा प्रसूता को विषमज्वर, अम्लपित्त, कुक्षिजलन आदि कठिन-कठिन रोग उत्पन्न हो सकते हैं।"

"गोमाता में खास दो शक्तियाँ होती हैं— एक चेचक रोग नाश और दूसरा अपुत्र को पुत्र देने की शक्ति। भारत के किसी प्रान्त में भीषण महामारी रूप से चेचक फैल जाने के समय एक अंग्रेज ने अपनी आँखों से जाँच करके यह देखा था कि जिन-जिन ग्रामों में अहिर लोग बसते थे और गौ के थनों में हाथ लगाकर अपने हाथ दूध दुहा करते थे, उन ग्रामों में चेचक नहीं फैला। इसी अपूर्व तत्त्व के जान लेने के बाद ही गोबीज से टीका देकर चेचक रोग से बचने की प्रथा चल पड़ी। यह गोमाता में अपूर्व शक्ति है। उसमें दूसरी अपूर्व शक्ति सन्तान प्रदान करने की है। तन, मन, धन से गोसेवा करने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर बंध्या भी पुत्रवती होती है। अपुत्र भी पुत्ररत्न लाभ किया करता है।''

गोबर और गोमूत्र की महिमा के विषय में तपोपूत सन्त स्वामी दयानन्द का उपर्युक्त कथन अनेकानेक लोगों का अनुभवसिद्ध तथ्य है। इसकी वैज्ञानिकता की परीक्षा की जा सकती है। गाय के दूध, दही, घृत आदि की महिमा का तो कहना ही क्या है? सृष्टि के समस्त प्राणियों में एक गाय ही ऐसी है जो अपने बच्चे को भूखा रखकर भी मानव प्राणियों का पालन पोषण करती है तथा जो सर्वतोभावेन पवित्र एवं गुणमयी है। इसीलिए प्राचीन ऋषियों ने यह कामना की थी कि जीवन के अंतिम क्षण तक गाय हमारे आगे रहे, गाय हमारे पीछे रहे और हम सदैव गायों के मध्य निवास करें। हमारे यहाँ गाय की सेवा से बढ़कर कोई पुण्य माना ही नहीं गया है।

ऐसी स्थिति में गाय की दुर्दशा वस्तुत: देश की दुर्दशा का प्रतीक है, इस बात को समझने की जितनी आवश्यकता जनता जनार्दन को है, उतनी ही जननायकों को भी है। देश में गोहत्या पर पूरी पाबंदी हो तथा गोवंश का कोई भी सदस्य कसाईखानों तक न पहुँचाया जा सके, इसके लिए कड़ा से कड़ा कानून बनाने में सरकार को अब विलम्ब नहीं करना चाहिए। स्वतंत्रता के ५० वर्ष बीत चुके हैं और हम एक नयी शताब्दी के दरवाजे पर खड़े हैं। गोवंश की दुर्दशा वाली राजनीति का स्वाद हम चख चुके हैं। समाज और राजनीति की दशा-दिशा में परिवर्तन की बातें उठाई जा रही हैं। गोमाता का संरक्षण इस परिवर्तन का बुनियादी सूत्र बन सकता है। इस दिशा में ईमानदारी के साथ अग्रसर होकर हम गर्व के साथ सम्मिलित रूप में उद्घोष कर सकते हैं—'गोमाता की जय'। कहने की आवश्यकता नहीं कि गोमाता का यह जयघोष सामाजिक न्याय और समरसता की पृष्ठभूमि पर आधारित तथा किसानों और मजदूरों के श्रम की गरिमा पर अवलम्बित समन्वित भारतीय संस्कृति का जयघोष सिद्ध होगा। जिस दिन गोहत्या पूरी तरह बंद हो जायगी और गोमाता के संरक्षण के लिए चारागाह आदि की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित कर ली जायगी, उसी दिन से भारत में एक सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति का श्रीगणेश हो जायगा और यह देश अपने प्राचीन गौरव के मार्ग पर पुनः अग्रसर हो जायगा।

■■

Krishna Das Brijmohan Das
Dealers in
Artistic Banarasi Sarees
CK. 24/7, Kunjgali, Varanasi - 221001 (U.P.)
Phone : 322546, 3272487, 344379

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशालाओं की प्रासंगिकता

श्री सूर्यकान्त जालान 'कानू'
उपाध्यक्ष, उ० प्र० गो-सेवा आयोग

गोशालाओं की प्रासंगिकता बढ़ती हुई आबादी, घटती हुई हरियाली (कृषि, भूमि, वन, वृक्ष), सिमटते हुये नदी, नाले, तालाब, खनन एवं टूटते हुये पहाड़ों के कारण पर्यावरण असंतुलित हो गया है। यह मानव मात्र के लिये घातक है। इस विकराल समस्या से उबरने का प्रयास सम्पूर्ण विश्व खोज रहा है। ऐसी स्थिति में गोशालाओं की प्रासंगिकता बढ़ गयी है। देश में हजारों गोशालायें हैं जो इन समस्याओं का समाधान देने में सक्षम हैं। उत्तर प्रदेश में १७ करोड़ जनसंख्या के पीछे मात्र ३०० गोशालायें हैं जो कम हैं। उनकी संख्या में कम-से-कम छः गुनी वृद्धि होनी चाहिये। हर एक लाख व्यक्ति के पीछे कम-से-कम एक गोशाला होनी चाहिये। उ० प्र० सरकार ने इसी विचार को ध्यान में रखकर गोसेवा आयोग का गठन किया, जिससे कि इस लक्ष्य की पूर्ति हो। गायों की स्थिति में सुधार हो, संख्या में वृद्धि हो। गोरक्षा मूलक स्थानीय उद्योग-प्रधान लोक शिक्षण के आधार पर सबको रोजी-रोटी सुलभ हो। गोसेवा मात्र एक चौपाये पशु की सेवा नहीं बल्कि एक जीवन-पद्धति है। इसी प्रकार गोशालाओं का लक्ष्य केवल कुछ दूध का उत्पादन, कुछ कृषि या कुछ बूढ़ी बीमार गावों को रखना तक सीमित नहीं है। गोशालायें 'कृषि गोविज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र' बनकर एक नया आयाम दे सकती हैं। यह केन्द्र समग्र विकास की परिकल्पना के साथ चलेगा जो गोपालन, गोसंवर्धन, दुग्ध उत्पादन, कृषि, बागवानी, स्थानीय उपज एवं साधनों की सुलभता पर ग्रामोद्योग खड़ा करके लाखों हाथों को काम देने का माध्यम है। अतः गोशालाओं के संचालक जब गम्भीरता से विचार करके योजना पूर्वक गोशाला चलायेंगे तभी उसमें स्फूर्ति व सार्थकता बनी रहेगी। गोशालाओं को गोरक्षा, गोसंवर्धन, गोपालन एवं गो-संस्कृति के साथ-साथ तीन विषयों का पूरक भी बनना पड़ेगा—जहाँ वह लोगों के लिए गोपालन का प्रेरणा केन्द्र बने, प्रयोग केन्द्र बने एवं प्रशिक्षण केन्द्र बने। अतः गोशालाओं की प्रासंगिकता प्रेरणा, प्रयोग एवं प्रशिक्षण का केन्द्र के रूप में चलाने की रहेगी अन्यथा वह कुछ बूढ़ी, बीमार, असहाय गायों की मोक्षस्थली बनकर रह जायेगी।

गोशालाओं पर समाज की श्रद्धा है। उसी के आधार पर समाज ने यथोचित सहयोग किया है इसलिये उसकी भी समाज के प्रति जिम्मेदारी है। समाज को जवाब भी देना पड़ता है। आजकल गोसेवक जब भी किसी गोशाला में जाते हैं तो यह जिज्ञासा व प्रश्न अवश्य करते हैं कि आपके यहाँ कितने दिनों से गोसेवा हो रही है? कितनी गायें हैं। कौन सी नस्ल की हैं? और उससे प्रेरित होकर क्षेत्र में कितने लोग गोपालन में और जुड़े हैं? जुड़ने वाले लोगों की स्थिति में क्या बदलाव आया है? क्षेत्र में पर्यावरण कैसा है? शिक्षा में आपने क्या सहयोग किया? कितने ग्रामोद्योग लगाये? उससे कितने हाथों को काम मिल रहा है? बैलों के कार्य दिवस बढ़ाने के लिये गोशाला ने क्या काम किया? जैविक कृषि के लिये क्या काम हो रहा है? कीटनाशकों के प्रयोग कम करने के लिये क्या हुआ? आदि-आदि इन प्रश्नों को समुचित उत्तर देने और इन विषयों पर काम करना समय की माँग है।

लोक कल्याण या गोसेवा के कार्य समर्पण के बिना परिणामदायी नहीं होते इसलिये गोसेवकों को सेवा के प्रति समर्पित होना आवश्यक है। अतः गोशालाओं की प्रासंगकिता समयानुकूल परिवर्तन से ही सम्भव है।

अभी एक गोशाला सम्मेलन में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ जिसमें १०० गोशाला-गोरक्षिणी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्थाओं के लगभग २०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रश्न उठा कि ३० वर्ष से कम आयु के कितने लोग हैं। एक भी नहीं। चालीस से कम के कितने लोग हैं, तो फिर उत्तर मिला कि एक भी नहीं। पचास से कम के कितने लोग हैं, तो उत्तर आया सिर्फ ३-४, कहने का तात्पर्य है कि युवकों की रुचि गोसेवा में जागृत करने के लिये आवश्यक है कि गोशालाओं को समयानुकूल एवं प्रासंगिक बनाया जाये। गोशाला सम्मेलन ने व्यवस्था दी कि हर बुजुर्ग अनुभवी कार्यकर्त्ताओं के साथ कम-से-कम दस युवक कार्यकर्त्ता तैयार किये जायें। गोशाला ही नहीं, हर कार्यरत गतिशील संस्था के लिये आवश्यक है कि उसमें युवकों को कार्य करने के लिये आगे लाया जाये और अनुभवी एवं वरिष्ठ लोग उनका मार्गदर्शन करें। समग्र विकास का केन्द्र गोशाला जैसी सक्षम समर्थ संस्थाओं को तो इस विषय पर और अधिक ध्यान देना चाहिये। मेरा समाज के वरिष्ठ अनुभवी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने अनुभव से सामाजिक कार्य करने के लिये समाज शिल्पी कार्यकर्त्ता तैयार करें और युवक-युवतियों से आह्वान है कि वे बुजुर्गों के अनुभव से सीख कर गोरक्षा, गोसंवर्धन, गोपालन एवं गो-संस्कृति को मूर्त रूप देवें। गोपाष्टमी के पावन पर्व पर हम सब ऐसा संकल्प लें, यही गोमाता से प्रार्थना है।

■■

गोबर की राख से बर्तनों की सफाई क्यों?

भारत के गाँवों, कस्बों तथा शहरों में रहने वाले करोड़ों लोग भी अपने बर्तनों की सफाई गोबर की राख से करते हैं। यदि यह सफाई किसी क्लीनिंग-पाउडर से की जाय तो लाखों टन पाउडर लगेगा, जिसका मूल्य करोड़ों रुपये होगा। क्लीनिंग-पाउडर से की गयी सफाई में सफाई करने वाले के हाथों में चर्मरोग होने का अंदेशा रहता है। इसके अलावा थोड़ी मात्रा में जो पाउडर बर्तनों में लगा रह जाता है, वह मनुष्य के शरीर में जाकर नुकसान पहुँचाता है, साथ ही इससे पवित्रता नहीं आती. गोबर की राख बिना मूल्य के लोगों को मिल जाती है और किसी प्रकार से हानिकारक भी नहीं है। यह अत्यन्त पवित्र मानी जाती है।

प्रस्तुति : श्री रघुनाथ प्रसाद

कीटनाशकों का विष जल-स्रोतों तक पहुँच रहा है।

कीटनाशकों का विष भूमि में व्याप्त होकर अपना प्रभाव आने वाले कई वर्षों तक रखता है। यह विष पानी के साथ मिलकर पृथ्वी के तल के नीचे जल के स्रोतों तक पहुँच जाता है। फलस्वरूप हमको पेयजल भी जहरीला मिल रहा है। जल-संसाधन-मन्त्रालय ने १९८६ ई० के अपने परीक्षण में बताया कि लगभग सभी प्रान्तों में नाइट्रेट नाइट्राइट की मात्रा इतनी बढ़ गयी है कि पानी पशुओं के पीने योग्य भी नहीं रहा है। जल प्रदूषण की यह चेतावनी इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनका ने भी दी है।

प्रस्तुति : श्री रामजीलाल चांडक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृषक वन्दना

(गोपालन के आधार कृषक की वन्दना)

श्री अमिताभ

'गोविन्द' के बड़े भाई का नाम 'बलदाऊ' था। बलदाऊ को हलधर के नाम से भी जाना जाता है। 'राधा' वृषभान की बेटी थी। राधा-कृष्ण का प्रेम पूज्य-भाव से देखा जाता है। भगवान् की इस लीला का एक लाक्षणिक भाव यह भी निकलता है कि—गोविन्द ने 'गोपाल' बनने के लिये हलधर याने कृषक को बड़ा माना, उसकी तपश्चर्या को मान्य किया। वृषभान का अर्थ होता है बैलों में सूर्य के समान। बैल से ही खेती संभव है। जिसके सहयोग से खेती संभव हो उस परिवार की दुलारी के प्रति प्रेम का समर्पण किया गोविन्द ने। यह भावना जब मान्य हुई तो गोपालन को विस्तार मिला, गोविन्द गोपाल बनकर प्रतिष्ठित हुए। कृषक की तप-साधना की एक झलक इन शब्दों में अभिव्यक्त होती है—

भूतल तवा सा जल रहा,
ऊपर रवि अनल बरसा रहा,
तब भी देखो है, कृषक हल चला रहा।

आज यदि गोपालन के आधार को सुदृढ़ करना है तो कृषक की कठिन तपस्या को संवेदनशील होकर समझना होगा, समाज को उसे उसकी अनुकूलता को भी वरीयता देनी होगी। 'गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय' के साथ 'हलधर की जय-जय, वृषभान सुता की जय-जय' को जोड़ते हुए कृषक-वन्दना में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ अर्पित हैं—

हम राज्य लिए मरते हैं।
सच्चा राज्य परन्तु हमारे कर्षक ही करते हैं।
जिनके खेतों में है अन्न,
कौन अधिक उनसे सम्पन्न?
पत्नी सहित विचरते हैं वे,
भव वैभव भरते हैं,
हम राज्य लिए मरते हैं।

पंचगव्य : अमृत महौषधि के उपयोग का विधान कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को

भारतीय आयुर्वेद शास्त्र में पंचगव्य को अमृत तुल्य महौषधि की महत्ता प्राप्त है। शीतजनित रोगों के विरुद्ध इसे तुलसी की तरह ही प्रभावी 'एन्टीवायटिक' माना गया है। कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को अर्धरात्रि में पंचगव्य के सेवन का विधान वर्णित है। पंचगव्य तैयार करने की जो विधा आयुर्वेद में बतायी गयी है उसके अनुसार इस महौषधी में 'कपिला' गाय का मूत्र, कृष्णवर्णा गाय का गो-मय (गोबर), धवला गाय का दुग्ध, पीतवर्णा गाय के दूध की दही तथा कर्वर (चितकबरी) गाय के घृत के उपयोग का निर्देश है। इन पंच-गव्यों को छानकर डाब के रस में बना पंचगव्य न सिर्फ समस्त व्याधियों का नाश करता है अपितु शरीर में अपूर्व प्रतिरोधक क्षमता का विकास भी करता है। इसी चतुर्दशी की ही रात में जौ की रोटी का नौवेद्य के उपभोग को अद्‌भुत बल पौरुष का जनक तथा आरोग्यवर्धक बताया गया है।

प्रस्तुति : श्री शान्तीलाल जैन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रणाम तुम्हे गोमाता

श्री राजकुमार केजरीवाल

हम श्रद्धापूर्वक सब प्रणाम तुम्हें करते हैं गोमाता,
हम सबकी माँ हो तुम रक्षक, हम सबकी हो विधाता।

तुमने दूध पिलाके हमको इस जीवन का दान दिया.
बड़ा किया अपनी छाया में जीने का वरदान दिया।

तेरे दर्शन से ही माता सारे ताप हैं कटते,
तेरी सेवा करने से सारे संताप हैं मिटते।

तेरी आँखों में मैया दिखती प्रभुदर्शन की झाँकी,
धन्य हुए इन्सां वो जग में जिसने महिमा आँकी।

तेरे तन मन्दिर है माता, मन तेरा प्रभु का वास,
करोड़ों देवी देवता माता, करते हैं तुझमें निवास।

तेरे पावन अमृत से माँ, चल रही ये सृष्टि,
जन्मों तक कृतकृत होता वो, जिस पर पड़ती दृष्टि।

रूप तेरा धर के प्रभू जग में घूम रहे होके मौन,
नहीं मालूम है इन्सां को माता, आखिर तू है कौन।

तन मन धन से माता जो कर लेता तेरी सेवा,
तेरी कृपा से उस प्राणी पर खुश होते महादेवा।

तेरे खुरों में वास करते जग के सारे वेद-पुराण,
तेरी छाया से ही जग के जीवों का होता कल्याण।

हम सब हैं माता कसूरवार हमने फर्ज नहीं निभाया है,
हमने तो माता जी भर के तुमको खूब सताया है।

हो सके तो माता हमें अपने चरणों का आश्रय दो,
सेवा हम कर सकें तुम्हारी ऐसा हमें वर अक्षय दो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्था और आवश्यकता से जुड़े प्रश्नों के समाधान की तलाश

१. गाय को 'विश्व माता' की उपाधि से क्यों विभूषित किया गया है?

२. गाय के अर्न्तगत यानि उसके रोम-रोम में सभी देवी-देवताओं की उपस्थिति अनुभूति क्यों मानी जाती है? ऐसी मान्यता सृष्टि के अन्य किसी भी जीव-प्राणी के साथ नहीं जुड़ी है इसका क्या कारण समझा जाता है? इस आध्यात्मिक मान्यता के अलावा इसको क्या वैज्ञानिक दृष्टि से भी समझा जा सकता है।

३. गाय के खुरों से उड़ने वाली धूलि को गोधूलि की संज्ञा से अभिहित किया गया है। सायंकाल की पुण्य बेला को ही 'गोधूलि' की संज्ञा क्यों प्राप्त है? जबकि जब प्रातःकाल में गाये चरने के हेतु निकलती है तब भी उसके खुरों से धूलि उड़ती है, उसकाल को गोधूलि क्यों नहीं कहते? गोधूलि की बेला क्यों मांगलिक कार्यों के लिए वरेण्य मानी जाती है? क्या 'गोधूलि' की पवित्रता भी वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित की जा सकती है?

४. क्या 'भारतीय गाय' ही वस्तुतः गाय है? कृषि और मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से भारतीय गाय एवं विदेशी गाय की उपयोगिता में क्या-क्या अन्तर रेखांकित किया जा सकता है?

५. गाय के गोबर एवं गोमूत्र को परमपवित्र पंचगव्य का मूल घटक मानकर भारतीय शास्त्रों में उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है, यह सभी देव पूजन कार्य एवं पितृश्राद्ध कार्य एवं यज्ञ अनुष्ठान में अनिवार्य कहा जाता है जबकि सृष्टि के अन्य किसी भी प्राणी के इन घटकों को हेय दृष्टि से ही क्यों देखा जाता है?

६. गौ का स्पर्श यानि कि उसके शरीर को स्नेहिल हाथों से सहलाना एवं गोपुन्छ को अपने शरीर पर स्पर्श करने की क्रिया को क्यों सराहनीय माना गया है?

७. जिस खेत में गौ संचरण एवं वास करती है यानि जिसमें उसके गोबर एवं गोमूत्र की प्रचुर मात्रा गिरती है उन खेतों की पैदावार अच्छी एवं स्वास्थ्यप्रद होती है, इस भारतीय मान्यता को अमेरिकी वैज्ञानिकों ने अपने नवीन अनुसंधानों से प्रमाणित किया है, ऐसी विशिष्ट मान्यता गौ के साथ ही क्यों है?

८. गौ के दुग्ध का स्तनपान मुँह से करना अधिक लाभप्रद है। गौ को प्रेमपूर्वक स्पर्श सहलाते हुए जो दूध प्राप्त किया जाता है, वह दूध सबसे उत्तम होता है। ऐसी मान्यता जर्मनी में अत्यधिक विश्वास के साथ लोग अपने जीवन में क्यों चरितार्थ करते हैं?

९. जबकि भैस भी दूध अधिक मात्रा में देती है उसके दूध से दही और घी की मात्रा भी प्रचुरता से प्राप्त है, वह गाय से बलिष्ठ भी होती है, आर्थिक सम्पन्नता में भैंस को गाय से अधिक महत्त्व प्राप्त है, फिर भी गाय उसकी तुलना में अधिक श्रेष्ठ क्यों मानी जाती है?

१०. गौ-सेवा से संतान की प्राप्ति कैसे होती है? चक्रवर्ती सम्राट् स्वयं गौ क्यों चराते थे?

११. संस्कारमयी परम्परा गोग्रास को आज के परिवेश में जीवित रखने का विकल्प?

१२. चुस्त प्रबन्धन के लिए गोशाला-विशेषज्ञ प्रशासनिक-कर्मयोगियों की सुलभता कैसे बढ़े?

१३. स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त होने वाले गोवंश के चमड़े और हड्डियों के उपयोग का शास्त्र-सम्मत आधार?

१४. क्या गाय के सामाजिक सरोकार की विकास-यात्रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमें धार्मिक आस्था के पुण्य शिखर तक पहुँचाती है?

१५. बर्तनों की सफाई के लिए गोबर की राख सस्ती और चर्मरोग की दृष्टि से हानिरहित है। इसकी सुलभता कैसे हो? इससे वास-बेसिन तथा नालियों के जाम (चोक) होने की संभावना बनी रहती है, इसके निराकरण के उपाय?

१६. पोलोथीन के खाने के कारण गाय से प्राप्त दूध में नुकसानदेह तत्त्व बढ़ रहा है। पोलोथीन हजम नहीं होता है, गोबर के साथ उसका विसर्जन भी नहीं होता है, गोवंश के पेट में एकत्र होता रहता है। यह गोवंश के मरने का एक भयानक कारण बन रहा है। इस समस्या को कैसे हल किया जाए?

१७. मान्यता है कि देसी गाय में चारे को दुग्ध में परिवर्त्तन (Milk conversion power from food) करने की क्षमता जर्सी गाय से काफी कम है। देसी गाय की बछिया लगभग २६ माह में गाय बनती है जबकि जर्सी गाय की बछिया १२-२० माह में गाय बनकर दूध देने की स्थिति में आ जाती है। देसी गाय में निरोधक क्षमता जर्सी गाय से अधिक है। अतः देसी साड़ और जर्सी गाय के संयोग से शंकर नस्ल तैयार की जाए तो हमें जर्सी और देसी नस्ल दोनों के लाभ प्राप्त हो सकेंगे। इसके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष पर आपका अभिमत?

धर्माचार्यों, मनीषियों, समाज-गो-कृषि-वैज्ञानिकों, सिविल इंजीनियरों, चिकित्सकों, उद्योगपति-व्यवसायियों, गोभक्त एवं गोसेवकों के पास उपर्युक्त प्रश्न समाधान की तलाश में प्रेषित हैं। उनसे अनुरोध है कि अपने उपदेश, चर्चा-परिचर्चा तथा लेखनी के माध्यम से इनका समाधान देने की कृपा करें। गोशाला-प्रबन्ध-व्यवस्था से जुड़े लोगों से अनुरोध है कि इनके सैद्धान्तिक पक्ष का अनुसन्धान और प्रयोग के द्वारा जनता के समक्ष व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करें जिससे आस्था को भावना के धरातल के साथ-साथ तार्किक धरातल भी प्राप्त हो।

■■

Nand Lal Bhagwan Das
Jan Sewa Trust

Plot No. 73, Jawahar Nagar Extension
Bhelupura, Varanasi
Phone : 320113 (O), 311113 (R)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments on Gopastmi

RATHI
Marble Industries

Dealers in

Marble, Granite & Cota Stone

Office

B-38/1, Mahmoorganj Road, (Opp. Birla Upawan)
VARANASI-221010
Phone : (Office) 360024, (Resi.) 360242

Factory

B. 37/200, Birdopur, VARANASI-221010

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गायों के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

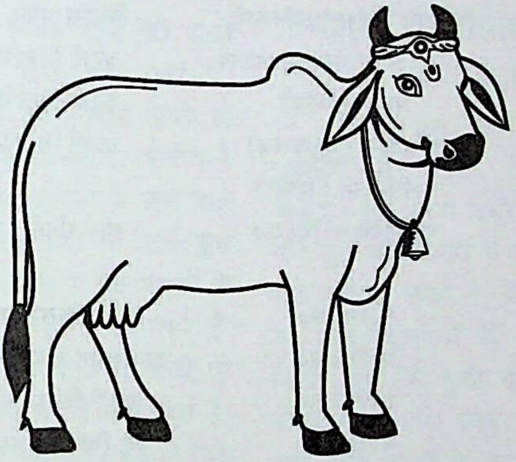

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाराणसी क्षेत्र में पशु-चिकित्सालाओं में कार्यरतअधिकारी व कर्मचारियों की सूची

वर्ष १९९९ दिनांक १६.११.९९

१.	डॉ० के०बी० राय	कार्यवाहक उ०प्र० वाराणसी मण्डल	काशी विद्यापीठ रोड	२२०८८१ कार्यालय
२.	डॉ० रमेश कपूर	मु०प०चि०अ०, वाराणसी	विकास भवन, कचहरी	३४०७८६ कार्यालय
३.	डॉ० सुरेशचन्द्र राम	कृत्रिम गर्भाधान अधिकारी	विकास भवन, कचहरी	३४०७८९ कार्यालय
४.	डॉ० के०के० वैश्य	प०चि०अ० (भेंड) मुख्यालय	काशी विद्यापीठ रोड	३५४७०७ निवास
५.	डॉ० पी०के० सिंह	मुख्य तकनीकी	काशी विद्यापीठ रोड	५१०७४५ निवास
६.	डॉ० पी०एन० पाण्डेय	अधिकारी (मुख्यालय) प०चि०अ० (सचल)	काशी विद्यापीठ रोड	२२०८८१ कार्यालय २२०५८५ निवास
७.	डॉ० रमेशचन्द्र श्रीवास्तव	मुख्यालय प०चि०अ०	वीर्य संग्रहीत रामनगर	२२०८८१ कार्यालय ३४१२३४ निवास
८.	डॉ० एल०वी० सिंह	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, हरहुआ	३८३६१९ निवास
९.	डॉ० रामविजय सिंह	प०चि०अ०	ग्राम समूह खण्ड, बी०एच०यू०	३८४०९५ निवास
१०.	डॉ० ए०के० सिंह	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, लढ़िया	३१७६१२ निवास
११.	डॉ० के०एस० सिंह	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, बड़ागाँव	३८६९७४ निवास
१२.	डॉ० कृष्णमोहन	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, चोलापुर	
१३.	डॉ० वीर बहादुर सिंह	प०चि०अ०	ग्राम समूह खण्ड अराजी लाइन्स	५१०२६१
१४.	डॉ० पद्माकर शुक्ला	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, जारखिरी	
१५.	डॉ० आर०पी० सिंह	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, विद्यापीठ	३७२६५७
१६.	डॉ० यू०पी० सिंह	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, रामनगर	
१७.	डॉ० एस०यन० सिंह	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, चौबेपुर	
१८.	डॉ० मुरारीलाल श्रीवास्तव	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, मोतीझील	
१९.	डॉ० देवेन्द्रकुमार गुप्ता	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, सेवापुरी	
२०.	डॉ० ओ०पी० शर्मा	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, राजातालाब	
२१.	डॉ० रामचन्द्र तिवारी	प०चि०अ०	पशु चिकित्सालय, पिण्ड्रा	
२२.	डॉ० ए०पी० सिंह	प०चि०अ०	नगर महापालिका, सेनपुर	२२१७०९
२३.	डॉ० पी०सी० श्रीवास्तव	मु०त०अ० (भेड़)	मकबूल आलमरोड	३११९५६ निवास
२४.	श्री परमानन्द सिंह	पशुधन प्रसार अधिकारी	ग्राम समूह खण्ड बी०एच०यू	
२५.	श्री विष्णुप्रसाद गुप्त	पशुधन प्रसार अधिकारी	काशी गौशाला	३६७२३९ निवास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गायों के रोग, उनके लक्षण और देसी चिकित्सा

पशुओं को भी रोग उतना ही कष्ट देते हैं, जितना कि मनुष्यों को। अन्तर इतना ही है कि हम मनुष्य विवेक-साधन तथा उपायों द्वारा किसी सीमातक रोग दूर करके कष्ट का निवारण कर लेते हैं; किन्तु बेचारे मूक, असहाय, विवश तथा केवल पूँछ हिलाने तक का उपाय कर सकने वाले पशु रोगग्रसित होकर कष्टों को सहते रहते हैं। पर मनुष्य-जाति की शोभा इसमें नहीं है। जिसने अपनी बुद्धि तथा सामर्थ्य का उपयोग अपने ही लिये किया, उसने क्या किया? मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि परिवार के प्राणी के समान एक ही घर में रहने वाले अपने पशुओं के भी दुःख को दूर करने के लिये कुछ उठा न रखे। सोचा जाय तो ऐसा करने में वह पशुओं के ऊपर कोई एहसान नहीं करेगा, यह उसका धर्म है; क्योंकि मनुष्य ने ही तो उन्हें प्रकृति की गोदी से छीनकर अपने काम के लिये अपने घर में बाँध रखा है। जंगली पशुओं की दवा करने कौन जाता है? प्रकृति माता स्वयं उनकी देख-भाल करती है। अतः यदि मनुष्य प्रकृति माता के इन पशुओं के दुःख-सुख की परवा नहीं करता तो यह उसकी कृतघ्नता है। और वह प्रकृति देवी का कोप-भाजन बनकर दण्ड का भागी होगा।

हमारे शास्त्रों में कहा हुआ है कि जब तक रोगिणी, भयभीत, (चकित), बाघ अथवा चोर आदि से सतायी हुई, ऊँचे स्थान से गिरी हुई, दलदल में फँसी हुई, सर्दी-गर्मी से पीड़ित तथा अन्य किसी प्रकार से दुःखित गौ का उद्धार न कर ले तब तक आर्य संतान कोई दूसरा कार्य न करे यथा—

आतुरां मार्गत्रस्तां वा चौरव्याघ्रादिभिर्भयैः ।
पतितां पङ्कलग्नां वा सर्वोपायैर्विमोचयेत् ॥
ऊष्मे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम् ।
न कुर्वीतात्मनस्त्राणं गोरकृत्वा तु शक्तितः ॥

तात्पर्य यह कि जिस प्रकार अपने किसी घरवाले को खाँसी-बुखार हो जाने पर हम वैद्य के पास दौड़ने लगते हैं, उसी प्रकार अपने पालित पशुओं के रोगों को दूर करने के लिए भी हमें सचेष्ट होना चाहिये।

पशुओं की रोगावस्था में पशुशाला का प्रबन्ध

किसी पशु के रोग-ग्रस्त हो जाने पर उसे पशुशाला से हटाकर किसी अलग स्थान में रखना चाहिये। इस प्रकार दूसरे नीरोग पशुओं की रक्षा होगी। यदि छूत की बीमारी न हो, तो भी रोगी पशु को अलग हटा देना ही ठीक है; क्योंकि प्रेम, द्वेष तथा सहानुभूति का भाव पशुओं में भी होता है। जब अन्य पशु अपने किसी साथी को दुखी या उदास देखेंगे तो वे भी उदास होकर खाना-पीना छोड़ सकते हैं। रोगी पशु का दाना-पानी दूसरे पशुओं के दाना-पानी में न मिलने पाये।

रोगी पशु की देख-भाल

रोगी पशु की देख-भाल बड़ी सावधानी से करनी चाहिये। उसको ऐसे स्थान पर रखना चाहिये, जहाँ हवा और प्रकाश अच्छी तरह आये-जाये; किन्तु पशु के ऊपर न हवा का झोंका सीधा लगे, न तो धूप लगे। मक्खी-मच्छरों से बचाने के लिये गूगल, गन्धक की धूप या साधारण धुआँ कर देना चाहिये। पशु को दवा आदि पिलाते समय उसके साथ बहुत जबर्दस्ती करके उसे अधिक कष्ट न दिया जाय। यदि पशु एक दिन से अधिक एक करवट पड़ा रहे तो उसे करवट बदलाने की चेष्टा करनी चाहिये। रोग की पहचान या निदान चिकित्सक से कराना चाहिये। अच्छे हो जाने पर उसे अन्य पशुओं के साथ मिलाने में बहुत जल्दी करना ठीक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं। कोई तेज या जहरीली दवा लगानी हो तो ध्यान रखना चाहिये कि इधर-उधर न लग जाय। मालिक को ऐसे पशु केवल नौकरोंके भरोसे पर ही न छोड़कर स्वयं भी देखने चाहिये।

रोग होने के सामान्य कारण

१. चारा-दाना आवश्यकता से कम मिलना, २. खुराक में आवश्यक पौष्टिक तत्त्वों का मेल न होना, ३. सड़ा-गला दाना-चारा खाना तथा गंदा पानी पीना, ४. गंदे स्थान, अधिक सर्दी-गर्मी और वर्षा से बचने का प्रबन्ध न होना तथा ५. छूत की बीमारियों से स्वस्थ पशुओं को बचाने के विषय में गोपालक की अनभिज्ञता।

रोगी पशु के लक्षण

१. दूध कम देना या न देना, २. उदास रहना, ३. झुंड से अलग रहने की इच्छा, ४. चारे-दाने का त्याग, ५. जुगाली न करना, ६. गोबर न करना या पतला करना, ७. बार-बार उठना-बैठना, ८. आँखोंका लाल हो जाना, ९. जल्दी-जल्दी साँस लेना, १०. मुख सूखना और ११. मुख तथा नाक से पानी गिरना।

स्वस्थ गाय, बैल और भैंस का तापमान प्रायः १०१° से १०४° तक होता है, नाड़ी की गति प्रति मिनट ४५ से ५० बार तक है और साँस प्रति मिनट में १०-१२ बार आती है। इससे विपरीत हो तो पशु को रोगी समझना चाहिये।

दवा की मात्रा

रोगी पशुओं के लिये आगे जो दवाओं की मात्रा लिखी गयी है, वह पूरे प्रौढ़ पशु के लिये है, जिसका वजन १० मन के लगभग हो। अवस्था तथा वजन के अनुसार इस मात्रा में अन्तर पड़ेगा।

जन्म से १ मास तक	१/१६	मात्रा
२ मास से ४ मास तक	१/८	
४ '' ६ ''	१/४	''
६ '' १२ ''	१/३ या १/२	''
१ साल से २ साल तक	१/२ या १/४	''
२ साल से ऊपर	पूरी मात्रा	

एक रोग की कई-कई दवाइयाँ आगे दी गयी हैं, उनमें से कोई एक करनी चाहिये। एक लाभ न करे तो दूसरी का प्रयोग करना चाहिये।

छोटे बच्चों के रोग और उनकी चिकित्सा

मनुष्य के बच्चों की भाँति गाय-भैंस के बच्चे भी मिट्टी चाटने में बड़े हातिम होते हैं। कभी-कभी वे इतनी मिट्टी चाट जाते हैं कि वह उनके पेट में सड़ जाती है और कीड़े पड़ जाते हैं। कीड़े पड़ते ही बच्चा निर्बल होकर प्रायः मर जाता है। पहली रोक तो यह है कि बच्चों के मुँह में मुसका (जाली) चढ़ा दें, जिससे वे मिट्टी न चाट सकें और यदि कीड़े पड़ गये हों तो आधी छटाँक कबीला पीसकर आध पाव दही में मिलाकर देने से लाभ होता है।

कभी-कभी बच्चों के पेट में दूध जम जाता है, जिससे पाचनशक्ति मर जाती है। इस रोग में मट्ठा एक पाव, सरसों का तेल आध पाव तथा नमक आधी छटाँक मिलाकर बच्चे को पिलाना चाहिये। इसमें एक छटाँक अमकली को पानी में भिगोकर और आध पाव सरसों के तेल में मिलाकर देना भी लाभकारी है।

यदि सड़ा-गला दाना-चारा खा लेने से अथवा गर्म और गंदा पानी पी लेने से बच्चे को पेचिश हो गयी हो और गोबर के साथ खून आता हो, तो आध पाव लिसोढ़ा के पत्तों को पानी में पीस-छानकर पिलाना चाहिये अथवा आधी छटाँक ईसबगोल एक छटाँक आँवले के पानी में देने से बहुत लाभ होता है।

जब बच्चे को खाँसी हो जाय तो केले के सूखे पत्तों को राख बना ले और एक पैसे से दो पैसे भर तक इस राख को आधी छटाँक घी में मिलाकर एक पाव कच्चे दूध के साथ बच्चे को पिलाना चाहिये।

मूत्र के साथ खून आने पर कलमी शोरा चौथाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छटाँक से आधी छटाँक तक एक पाव कच्चे दूध और इतने ही पानी के साथ पिला देना चहिये।

पेट में दर्द हो तो चौथाई से आधी छटाँक तक पीने का तमाकू-पानी में घोल-छानकर पिलाना ठीक है।

खुजली की भयंकर बीमारी भी बच्चों को प्राय: हो जाती है। इसके लिये निम्नलिखित पाँच प्रकार की दवाइयाँ हैं—

१. छटाँक भर लहसुनको आध पाव चने या जौ के आटे में मिलाकर पाँच दिन तक खिलाये।

२. सूखे नीम के पत्तों का चूरा नमक में डालकर चने या जौ के आटे के साथ मिलाकर देना चाहिये।

३. मसूर की दाल तथा सुपारी दोनों को जलाकर इनकी राख को नीम के तेल में डालकर शरीर में लेप करे।

४. पीली सरसों को कपड़े धोने वाले साबुन में मिलाकर शरीर में लेप कर दे और ४-६ घंटे-पीछे फिनाइल के पानी से नहला देना चाहिये।

५. एक पाव कड़ुवे तेल में एक छटाँक गन्धक मिलाकर रख ले और शरीर पर लेप करता रहे।

यदि बच्चे के मसूढ़े फूल गये हों और उनमें घाव हो गये हों तो उन्हें माँ से अलग करके नीचे लिखी दवा करनी चाहिये—

एक पाव घी और एक छटाँक एप्सम साल्ट मिलाकर पिलाना चाहिये। घी न मिल सके तो कोई दूसरी जुलाब की दवा दे देनी चाहिये। बच्चे के मुँह को फिटरिरी के पानी से भली भाँति दिन में चार बार धोना चाहिये।

रोग साधारणत: तीन प्रकार के होते हैं—१. छूतवाले, २. बिना छूतवाले साधारण और ३. शरीर के ऊपर के साधारण रोग।

छूत के रोग

छूत वाले रोग बड़े भयंकर और बड़ी जल्दी फैलने वाले होते हैं। इनसे अपने पशुओं की सदा रक्षा करते रहना चाहिये। इन रोगों से पशुओं को बचाने के लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहिये।

१. जिस इलाके में छूत की बीमारी हो गयी हो वहाँ अपने पशु न जाने दे, न वहाँ के पशु अपने गाँव में आने दे।

२. अपने पशुओं की देख-भाल ठीक से करे तथा उन्हें सड़ा-गला चारा-दाना न खिलाये।

३. जहाँ सब पशु पानी पीते हों उस तालाब या नदी में पानी न पिलाकर अपने पशुओं को कुएँ से पानी खींचकर पिलाये।

४. छूत की बीमारी से मरे हुए पशु को गाड़ देना चाहिये।

५. पशु-डॉक्टर से अपने पशुओं को टीका लगवा ले।

१. माता (Rinderpest)

इसके कई नाम हैं, पर इसके मुख्य लक्षण हैं—आँखों से पानी और मुँह से लार गिरना, शरीर काँपना, कमर का टेढ़ी हो जाना, मुँह में छाले पड़ना और अत्यन्त बदबूदार पतला गोबर होना तथा उसमें कुछ खून आना।

इसकी सर्वश्रेष्ठ दवा टीका लगवाना है। अच्छे जानवरों को 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड' (Goat virus or serum simultaneous method) से रिंडरपेस्टका टीका लगवा देने पर फिर यह बीमारी नहीं आती। रोग हो गया हो तो उसकी दवाइयाँ ये हैं—

१. रातको मिट्टी के बर्तन में एक पाव आँवला भिगोकर सबेरे छान ले, फिर उस पानी में एक पाव दही, एक छटाँक ईसबगोल और आध पाव शक्कर डालकर दिन में दो बार खिलाये। आँवला न मिले तो धनिया का पानी काम में लाये।

२. बाँसी घास के बीज १ सेर बारीक पिसवाकर रख ले और आधा पाव सबेरे तथा आधा पाव शाम को दही या मट्ठा के साथ देने से बड़ा लाभ होता है।

२. जहरी बुखार अथवा गड़ी या सूत (Anthrax)

यह रोग रक्त के विकार से होता है। पशु को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बेचैनी होती है, आँखें बाहर निकल-सी पड़ती हैं, ज्वर बहुत हो जाता है और गोबर काले रक्त से सना हुआ होता है। रोग होने पर पशु चिकित्सक को शीघ्र बुलाना चाहिये और तब तक नीचे लिखी दवाइयों में से कोई पिलानी चाहिये—

१. तारपीन का तेल आधी छटाँक।

२. फिनाइल आधी छटाँक।

३. अलसी का तेल आधी छटाँक।

४. गरम पानी आध सेर।

३. गलघोंटू (Haemorrhagic Septicaemia)

यह रोग क्या है मानो मृत्यु की सूचना है। इसमें गले में सूजन हो जाती है और पशु का गला घुटने लगता है। प्राय: यह आश्विन के महीने में होता है। यह रोग रक्त-दोष से होता है। नाक-मुँह से लार टपकती है। मुँह से दुर्गन्ध और जीभ पर घाव हो जाता है। गोबर-मूत्र बंद हो जाता है। इसकी दो-तीन दवाइयाँ हैं, सम्भव है लाभ कर जायँ।

१. दो सेर घी, १ सेर एप्सम साल्ट, १ पाव काली मिर्च और १ पाव काला जीरा मिलाकर पिला दे।

२. जमालगोटेका तेल ३० बूँद, मीठा तेल ५ छटाँक और अलसीका तेल ५ छटाँक पिलाये तथा फिटकिरी के पानी से मुँह धोये।

३. गन्धकका चूर्ण २ तोले तथा सोंठ का चूर्ण १ तोला आध सेर भात के या तीसी के माँड़* के साथ मिलाकर खिलाना चाहिये। इससे दस्त होकर रोग मिट जाता है।

४. फेफड़ेका बुखार या छूतका निमोनिया
(Contagious pleuro-pneumonia)

यह रोग रोगी पशु से छू जाने, उसके फोड़ा-फुंसी की मवाद लगने या उसके मुँह के सामने साँस लेने से होता है। इससे फेफड़े पर असर होता है। पशु की भूख कम हो जाती है, दूध घट जाता है, हल्का ज्वर सदा बना रहता है। धीरे-धीरे पशु अशक्त होकर पैर पीटने लगता है।

बुखार की दवा ही इसमें देनी चाहिये। नीम, सफेदा मरुआ के पत्ते या तारपीन का तेल पानी में डालकर उबालिये और उसकी भाप में पशु को साँस लेने दीजिये। १ हिस्सा तारपीनका तेल १० हिस्सा तिल के तेल में मिलाकर छाती पर मालिश करनी चाहिये।

ऐसे रोगी पशु का दूध नहीं पीना चाहिये। बहुत लाचारी हो तो खूब उबाल लेना चाहिये।

५. खुर तथा मुँह का पकना
(Foot and mouth disease)

इस रोग में पशु के मुँह तथा खुर में घाव हो जाते हैं। जिससे पशु चारा-पानी छोड़ देता है और निर्बल हो जाता है। यह रोग हवा के द्वारा भी फैलता है। एक पशु को होते ही बहुतों को हो जाता है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित उपायों से लाभ होता है।

१. अमकली आधा पाव, कटेली पीली का फूल १ छटाँक—इन दोनों को औटाकर काढ़ा बनाकर पिलाये।

२. पुराना गुड़ १ सेर तथा सौंफ १ पाव १ सेर पानी में औटाकर पिलाये।

३. आधा सेर एप्सम साल्ट गर्म पानी में डालकर पिलाना चाहिये।

उपर्युक्त दस्तावर दवाइयाँ पेट साफ करने के लिये हैं। इसके बाद और दवा भी करनी चाहिये—

१. आँवले के पानी, बबूल की छाल-उबाले हुए पानी, फिटकिरी या सुहागे के पानी अथवा तूतिया के पानी से मुँह और पैर धोये। आँवले का पानी पिलाये। नीम का तेल या कोलतार पैरों के घाव पर लगाये।

२. खड़ियामिट्टी २ छटाँक, कोयला आधी छटाँक,

* पाँच सेर जल में डेढ़ पाव तीसी डालकर नरम आँच से घंटा भर उबाले। उबालते समय बराबर हिलाते रहना चाहिये, नहीं तो जल जायगी। फिर पतले कपड़े से छान ले। बस, यही तीसी का माँड़ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिटकिरी आधी छटाँक, तूतिया (नीलाथोथा) चौथाई छटाँक—इसके चूरन को घाव पर लगाना चाहिये।

३. कपूर, तारपीन का तेल, नीलाथोथा और पत्थर का कोयला मिलाकर घाव पर लगाना चाहिये।

४. बेर के पत्तों को उबालकर उस जल से खुरों को धोना चाहिये। खाने के लिये सुखी घास, चोकर या सहज पचने वाली चीज देनी चाहिये।

६. छूत से गर्भ गिरना

(Contagious Abortion)

समय से पहले गाय-भैंसोंका बच्चा फेंक देना साधारण बात है, किन्तु यह भयानक रोग है। आगे चलकर यह अन्य पशुओं में भी फैल जाता है। तेज भागने से, छलाँग मारने से, मर्मस्थल पर चोट लग जाने से, तोप के शब्द से तथा किसी विषैली चीज के खाने से गर्भपात हो जाता है।

सबसे पहले, गिरे हुए बच्चे को अलग कर देना चाहिये। मरा बच्चा हो तो दूर गड्ढे में दबवा देना चाहिये। गरम पानी में पोटाश, फिनाइल अथवा नीम के पत्ते डालकर पशु के गर्भस्थान को पिचकारी द्वारा धो देना चाहिये। ८ बूँद कार्बोलिक एसिड गरम पानी में डालकर पशु को पिलाना चाहिये। पीने को गरम पानी दीजिये। पशु को १ महीने तक साँड़ के पास न जाने दीजिये। गर्भपात के साथ पशु ने जेर न फेंका हो तो निम्नलिखित दवाओं से उसे अवश्य निकालने का प्रयत्न करना चाहिये—

१. पुराना गुड़ या साफ शीरा २ सेर, अजवाइन २ छटाँक, सोंठ २ छटाँक, पीपल १ छटाँक और पीपलामूल आधी छटाँक—सबका काढ़ा बनाकर गर्मी में केवल रात को और सर्दी में दो बार देना चाहिये।

२. जंगली तरोई १ पाव, नमक आधा पाव, अजवाइन आधा पाव तथा गरम पानी आधा सेर दिन में दो बार देना उपयोगी माना गया है।

३. एक सेर मिश्री के टुकड़े-टुकड़े करके गाय को खिला दे, इसके पीछे बहुत-सा पानी पिलाने से जेर अवश्य निकल जाता है।

४. दो सेर छिलके सहित धान खिलाने से भी जेर गिर जाता है।

५. दो सेर तिल खिलाना भी लाभदायक है।

७. खूनी पेशाब (Red Water)

यह रोग भी कीटाणुओं द्वारा खून में विकार पैदा होने से होता है। बीमार पशु को काटकर मच्छर जब अच्छे पशु को काटता है, तब उसे भी हो जाता है। पशु को तेज बुखार हो जाता है, आँखें पीली पड़ जाती हैं और पेशाब में खून आता है।

इस रोग में एक नीली दवा का—जिसे 'ट्रिपनब्लू' (Trypen blue) कहते हैं—इंजेक्शन दिया जाता है।

८. दूध का ज्वर (Milk-Fever)

इस रोग में पशु की आँखें चढ़ जाती हैं, वह खड़ा नहीं रह सकता, पैर पेट के नीचे सिकोड़ लेता है और सिर एक ओर मोड़ लेता है। गर्दन सीधी करने पर फिर वैसा ही कर लेता है। थन सूज जाते हैं और पशु घबराता है।

रस कपूर की उड़द के बराबर डली हरे केले को चीरकर उसके बीच में रख दे और पशु को खिला दे। थोड़े कपूर युक्त या सादे तेल की मालिश करनी चाहिये।

९. माता या चेचक (Cow-Pox)

यह रोग मनुष्यों की भाँति पशुओं के लिये उतना कष्टप्रद नहीं है, फिर भी सावधान रहना चाहिये; क्योंकि रोग रोग ही है। इस रोग में शरीर में दर्द होता है, गाय सोना चाहती है कुछ खाती नहीं, उसे निगलने में कष्ट होता है। कभी-कभी पेशाब और गोबर रुक जाता है। थन या शरीर पर छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलती हैं और १०-१५ दिन बाद सूख जाती हैं। ऐसे पशु को अलग रखकर उसको खाना-पानी देना या दुहना सफाई के साथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करना चाहिये। पशु को कोई जुलाब की दवा या १ सेर एप्सम साल्ट गरम पानी में मिलाकर पिला देना चाहिये। ऐसी गाय का दूध निकाल फेंक देना चाहिये या खूब उबालकर दही, घी बनाकर काम में लाना चाहिये।

माता पकने से ही पहले सेमल-रूई के बीज खिला देने से बड़ा लाभ होता है। पहले दिन तीन बार में ५० (२५, १८, ७), दूसरे दिन दो बार में २५ (१५, १०) और तीसरे दिन एक बार केवल १०। बहुत कमजोर पशु हो या छोटी उम्र हो तो कम खिलाना चाहिये।

१०. गजचर्म (Mange)

यह एक प्रकार की भयंकर खुजली है जो पहले थुई और पूँछ पर होती है, फिर धीरे-धीरे सारे शरीर में फैल जाती है। पशु खुजलाते-खुजलाते घाव कर लेता है, चमड़ी मोटी पड़ जाती है।

जहाँ पर खाज हो, वहाँ के बाल काटकर गरम पानी और साबुन से साफ कर देना चाहिये, फिर गोबर और सरसों का तेल मिलाकर पशु को धूप में खड़ा करके १०-१५ मिनट तक मालिश करनी चाहिये। मालिश का तेल इस प्रकार बना ले तो और भी अच्छा है। गन्धक १ भाग, घी या तिल का तेल ८ भाग और नीम का तेल चौथाई भाग। गन्धक को महीन पीस कर सब चीजें मिला लीजिये और आग में भली भाँति गरम करके मालिश कीजिये। खाने की दवा भी देने से जल्दी लाभ होगा।

खाने का नमक १ छटाँक, महीन पिसी हुई गन्धक आधा तोला आध सेर पानी में घोलकर पिला देना चाहिये या रोटी में रखकर खिला देना चाहिये।

खुजली और दाद भी ऐसे ही रोग हैं, पर गजचर्म से कम भयंकर हैं। इनकी भी दवा प्राय: वही है।

११. कीड़ों में दुंबल या मनिया फूटना

(Warble Flies)

जिन पशुओं को खरहरा नहीं होता या मल-मलकर जो नहलाये नहीं जाते, उनको यह रोग हो जाता है। वर्षा के अन्त में इस रोग के कीड़े शरीर पर आ जाते हैं और गर्मी के आरम्भ में अच्छी तरह बढ़ जाते हैं। इस रोग से पशु को कोई विशेष कष्ट तो नहीं होता, किन्तु उसकी खाल रद्दी हो जाती है। अत: इस रोग से पशु की रक्षा करनी चाहिये।

चूने और तमाकू के गर्म पानी से पहले पीडित स्थान को धो देना चाहिये, फिर सेर पानी में एक छटाँक ताजा चूना मिलाकर उसमें एक पाव महीन पीसी हुई तमाकू खूब मिलाकर घोल लेना चाहिये। २४ घंटे रखने के बाद पतले कपड़े से छान लेना चाहिये। और तब चूना पोतने वाली मूँज की कूँची बनाकर उससे यह दवा अच्छी तरह उस स्थान पर लगानी चाहिये। ध्यान रखना चाहिये कि दवा छेदों से भीतर पहुँच जाय। यह दवा तैयार न हो तो नीम का तेल लगा देना चाहिये। २ तोला खारी नमक और आधा तोला गन्धक एक पाव गुनगुने पानी में घोलकर पशु को एक सप्ताह तक पिलाना चाहिये। कब्ज करने वाली खुराक कम देनी चाहिये।

१२. जूँ (Lice)

यह रोग भी स्पर्श मात्र से एक पशु से दूसरे पशु को लग जाता है, किन्तु यह उतना हानिकारक नहीं होता। यह प्राय: बच्चों को होता है। १ भाग तमाकू और २ भाग हाथ-मुँह धोने का साबुन ४० भाग पानी में डालकर उबाल लें, फिर ठंडा हो जाने पर १ भाग मिट्टी का तेल मिलाकर मालिश करें।

१३. किलनी (Ticks) लग जाना

थन, पूँछ, कान तथा अन्य स्थानों में किलनी चिपट जाने से पशु को बड़ा कष्ट होता है और उसका दूध कम हो जाता है। पशुओं को किलनियों के कष्ट से बचाना आवश्यक है।

१. एक भाग नील, २ भाग गन्धक या वैसलीन या कडुआ तेल ८ भाग मिलाकर लगाने से किलनी मर जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२. नमक ४ भाग, मिट्टी का तेल १ भाग और कड़ुआ तेल ४ भाग मिलाकर लगाने से भी किलनियों का नाश होता है।

बिना छूत के साधारण रोग

यद्यपि बिना छूत के रोग उतने भयंकर नहीं होते जितने कि छूतवाले, फिर भी इनमें से कोई-कोई ऐसा हो जाता है, जो आगे चलकर बढ़ जाता है और पशुको उससे बचाना कठिन हो जाता है। रोगके समय दवाकी अपेक्षा पशु के रहन-सहन तथा खाने-पीने की सुन्दर व्यवस्था होनी चाहिये। दवा तो केवल रोगको थामने अथवा पशु को असली हालत में जल्दी लाने में सहायक मात्र है, वास्तव में उचित देखभाल से ही अधिकांश रोग नष्ट हो जाते हैं। पशु के रहने का स्थान साफ रखना, उसे हल्का, सहज में पच जानेवाला और स्वादिष्ट भोजन तथा कुएँ का स्वच्छ जल पीने को देना एवं उसे अलग रखकर अधिक सर्दी-गर्मी से बचाना ही उसकी देखभाल करना है। यह जानवर है, इसका रोग यों ही अच्छा हो जायगा—ऐसा न सोचकर उसके रोग की उचित चिकित्सा करनी चाहिये।

१. अपच

कभी सर्दी-गर्मी लगने से या कम-ज्यादा खा लेने से पशु को अपच हो जाता है। ऐसी दशा में पशु पूरा खाना नहीं खाता, ठीक से जुगाली नहीं करता और सुस्त रहता है। ऐसी स्थिति में—

खारा नमक आधा सेर और २ तोला सोंठ को कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में घोलकर पिला देना चाहिये। इससे दस्त होने लगेंगे। दस्त न हो तो आधी खुराक फिर देनी चाहिये।

दस्त होने के अगले दिन से सोंठ १ तोला, राई १ तोला, अजवाइन २ तोला, सेंधा या साँभर नमक सवा तोला कूट-पीसकर पाव भर गरम पानी के साथ कुछ दिन तक सुबह पिलाना चाहिये। यह दवा पिलाने के २ घंटे बाद तक पशु को पानी नहीं पिलाना चाहिये।

२. अफरा या पेट फूलना

यह रोग अधिक चरने से या बहुत चारा-दाना खा जाने से होता है। पशु का पेट फूलकर ढोल की तरह हो जाता है। बायीं ओर सूजन हो जाती है। इसमें नीचे लिखी कोई दवा पिलानी चाहिये।

१. आशा सेर एप्सम साल्ट या १ सेर नमक सरसों या रेंड़ी के तेल में मिलाकर।

२. आम का अचार आध पाव और उसका तेल आधा पाव।

३. गाजर की काँजी १ सेर।

४. आध पाव राई पीसकर गरम पानी के साथ।

५. सोंठ १ छटाँक, हींग ४ माशे, काला नमक १ छटाँक, लाहौरी नमक १ छटाँक, सोंचल नमक १ छटाँक—सबको पीसकर गरम पानी के साथ।

३. पेट में कीड़े पड़ जाना (Tape Worms)

कभी-कभी पशुओं के पेट में केंचुए (कीड़े) पड़ जाते हैं, जिससे वह दुर्बल हो जाता है। ये कीड़े गोबर के साथ निकलते हैं। गोबर में कीड़े दीख पड़ें तो इस प्रकार दवा करनी चाहिये।

१. सुपारी का चूर्ण ४ तोला १ सेर दूध में मिलाकर दिन में दो बार ३ दिन तक दीजिये।

२. आधी छटाँक तारपीन का तेल और आध सेर अलसी का तेल हर आठवें दिन महीने भर तक पिलाइये।

४. पेचिश या आँव पड़ना (Dysentery)

जब पशु बार-बार रक्त तथा आँव-मिला हुआ गोबर करे, तब समझना चाहिये कि उसे पेचिश का रोग हो गया है। इसमें—

पहले आधा सेर एप्सम साल्ट गरम पानी के साथ दे या सरसों, रेंड़ी, अलसी और तिलमें से—किसी का आध सेर तेल १ छटाँक सौंफ के साथ पिला दे; फिर एक छटाँक बेलगिरी और एक छटाँक ईसबगोल के छिलके को एक सेर चावल के माँड़ में मिलाकर पिलाना चाहिये या सूखा आँवला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२ तोला, सोंठ १ तोला और शक्कर या बताशा २ तोला आध सेर पानी में पीस-छानकर दे अथवा जस्ता दो आना भर खड़िया मिट्टी का चूर्ण ढाई तोले और अफीम चार आना भर भात के गाढ़े माँड़ के साथ दिन में दो बार दे। बछड़े-बछड़ी के लिये खड़िया मिट्टी सवा तोला, अफीम दो आना भर और रेवाचीनी १२ आना भर चूर्ण करके तीसी के माँड़ के साथ देना चाहिये।

५. पेट चलना या दस्त लगना (Diarrhoea)

इस रोग वाला पशु पतला गोबर करता है। यह अजीर्ण का चिह्न है। जल्दी दवा न करने से रोग बढ़ जाने से पशु मर जाता है। इसके बचाव के लिये—

१. आधी छटाँक पीसा हुआ काला नमक और एक तोला हीरा कसीस मिलाकर जौ के आटे में चार दिन तक देना गुणकारी है।

२. सौंफ एक तोला, अजवाइन एक तोला, इलायची बड़ी एक तोला तथा चिरायता तीन तोला कूटकर आध सेर जौ के आटे में चार दिनतक खिलाये।

३. चार आने भर पीसा हुआ नीला थोथा आध सेर गरम पानी में घोलकर पिलाना चाहिये।

४. एक छटाँक सूखा या हरा बेल का गूदा तथा खड़िया मिट्टी सवा तोला आध सेर गौ के मट्ठे में मिलाकर सबेरे-शाम पिलाये।

५. कत्था आधा छटाँक, ईसबगोल एक छटाँक, खड़िया मिट्टी एक छटाँक, अफीम २ माशा, बेलगिरी एक छटाँक और रसौत दो माशे—इन सबको कूट-पीसकर दिन में दो बार देना चाहिये।

६. पलास का गोंद सवा तोला, चिरायता पौन तोला, खड़िया मिट्टी ६ आना भर, अफीम १ आना भर भात के माँड़ के साथ खिलाना चाहिये।

६. गले में कुछ अटकना (Throat-Choking)

कभी-कभी कोई कड़ी या गोल चीज पशु के गले में अटक जाती है, जिससे पशु खाना-पीना छोड़ देता है। उसका गला घुटने लगता है। यदि शीघ्र ही अटकी हुई चीज निकालने का प्रयत्न न किया गया तो पशु की मृत्यु हो जाती है। इसके लिये—

पहले मुँह में हाथ डालकर चीज बाहर निकालने की चेष्टा करनी चाहिये। बाहर न निकले तो लंबी-पतली और चिकनी लकड़ी से धक्का देकर उसे भीतर ठेल देना चाहिये। गले में बैसलीन या तेल की मालिश करे और आधा सेर कड़ुआ तेल पशु को पिला दे या थोड़े तिल के तेल में थोड़ा सुहागा मिलाकर पिला देना चाहिये।

७. पित्ती उछलना

मनुष्यों की भाँति पशुओं को भी कभी-कभी पित्ती उछल आती है। शरीर में बड़े-बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं और खाज होने लगती है। ऐसे पशु को जुलाब की दवाई देकर कम्बल या झूल उढ़ा देना चाहिये फिर नीचे लिखे में से कोई एक दवा पिलानी चाहिये।

१. आध पाव गेरू और आध पाव शहद पाव भर गरम शीशम के पत्ते ३ तोला—इन सबको आध सेर पानी में उबाल ले, जब डेढ़ पाव रह जाय तब ठंडा करके पिला दे।

८. खाँसी (Bronchitis)

पशुओं के समस्त रोगों में यह बहुत बुरा रोग है। इस रोग के अधिक बढ़ जाने से गाभिन पशु कभी-कभी बच्चा फेंक देता है। इस रोग की चिकित्सा तुरन्त करनी चाहिये—

१. नौसादर, सोंठ तथा अजवाइन एक-एक तोला लेकर पावभर गरम पानी के साथ पिलाने चाहिये।

२. एक छटाँक नमक की डली लेकर कुछ आक के पत्तों में लपेट कर रात में भून लीजिये। सबेरे नमक को पावभर गरम पानी के साथ लगातार ३ दिन तक पिलाये।

३. एक छटाँक सूखे अनार के छिलके को पीसकर एक छटाँक मक्खन के साथ खिलाइये।

४. केले के सूखे पत्तों की राख २ तोला, मक्खन ४ तोला तथा कच्चा दूध १० तोला ३ दिन तक दीजिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. आध सेर अलसी के तेल के साथ १ तोला तारपीन का तेल पिलाना भी लाभदायक है।

६. कपूर छः माशा, कलमी शोरा एक तोला, अजवाइन २ तोला, सोंठ २ तोला, नौसादर १ तोला, अलसी पीसी हुई १ छटाँक—इन सबको कूट-पीसकर गुड़ के साथ दिन में तीन बार खिलाना चाहिये।

९. निमोनिया (Pneumonia)

बहुधा यह रोग शीतकाल में होता है। सर्दी लग जाने से पशु को ज्वर आ जाता है। नाक से पानी बहता है और खाँसी भी कुछ-कुछ आने लगती है। इस स्थिति में पशु को गरम स्थान में रखना चाहिये और पीठ पर कम्बल या झूल डाल देना चाहिये। औषधियाँ नीचे लिखी हैं—

१. सोंठ २ छटाँक, अजवाइन २ छटाँक तथा चाय की पत्ती आधी छटाँक, मेथी २ छटाँक तथा गुड़ या शीरा आध सेर औटाकर दिन में २ बार पिलाना चाहिये।

२. आध सेर पीसा हुआ नमक और एक छटाँक अजवाइन लेकर दो बलवान् पुरुषों से मालिश करा दे।

३. कपूर ४ माशा तथा लहसुन एक पाव—दोनों को मिलाकर खिला दीजिये।

४. खाने को प्याज दे और उसका पानी निकालकर तथा नमक डालकर पिलाये।

५. आधा सेर अलसी और एक सेर चावल दोनों को उबालकर गरम पानी में मिलाकर खिलाये।

१०. पेशाब में खून आना

बीमारी, चोट लगने या अधिक गर्मी से यह रोग हो जाता है। इस रोग में बबूल के पत्ते ४ छटाँक और हल्दी २ तोला पीसकर सुबह-शाम पिलाये अथवा आध सेर दूध में बारीक पीसी हुई फिटकिरी १ तोला मिलाकर कई दिन तक पिलाये।

११. पेशाब न होना

यह रोग पुट्ठे की कमजोरी या पथरी हो जाने से होता है। सूखा चारा खिलाने और कम पानी पिलाने के कारण भी हो जाता है। इसमें शोरा १ तोला, धनिया २ तोला और कपूर ३ माशा घोट-पीसकर ठंडे पानी में घोलकर पिलाना चाहिये। नीम के पत्ते उबालकर और नमक मिलाकर मूत्र-स्थान पर लगाइये।

१२. पेशाब टपकते रहना

यह रोग भी प्रायः पथरी हो जाने से होता है। अतः पशुओं के डॉक्टर से ऑपरेशन द्वारा पथरी निकलवा डालनी चाहिये। दवा नीचे लिखी है—

१. मक्का की बाल २ छटाँक तथा काली मिर्च एक तोला पीस कर सबेरे-शाम पिलाइये।

२. मक्का की बाल न मिले तो खरबूजे के छिलके एक पाव एक तोला काली मिर्च के साथ पीसकर पिलाइये।

१३. फोतों का सूजना

कभी चोट से, कभी बादी से या कभी रोग के कीटाणुओं से फोते सूज जाते हैं। पशु को बड़ा कष्ट होता है, वह पिछले पैर फैलाकर चलता है। निम्न उपचार करने चाहिये—

१. गीले कपड़े से बार-बार ठंडा पानी फोतों पर डालकर ठंडक पहुँचाइये।

२. हल्दी, चूना, फिटकिरी—सबको बारीक पीसकर कड़ुआ तेल में मिलाकर गरम कर ले और फोतों पर सुहाता हुआ लेप करे।

३. इमली के पत्ते और नमक पीसकर गरम कर ले और फोतों पर लगा दे।

यदि बादी से सूज गये हों तो रेंड़ी का तेल ३ छटाँक और त्रिफला का पानी पावभर मिलाकर पिलाइये तथा तमाकूके पत्ते गरम करके बाँधिये।

१४. मिरगी (Apoplexy)

यह रोग प्रायः बच्चों को होता है या किसी कारण से सिरकी ओर रक्त का बहाव हो जाने से बड़े

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पशुओं को भी हो जाता है। पशु सहसा काँपने लगता है, गिर जाता है, नेत्र लाल हो जाते हैं। इसके लिये—

रोगी को दिन में चार बार ठंडे जल से स्नान कराना चाहिये। दवाएँ नीचे लिखी हैं—

१. बबूल और बेर के आध-आध पाव कोमल पत्ते पीसकर आध सेर ठंडे पानी में पिलाइये।

२. ढाक के बीज एक तोला, अनार की छाल एक तोला, सौंफ एक तोला, अमलतास १ तोला—इन सबको आध सेर पानी में पकाये, जब पानी पावभर रह जाय तब गुनगुना पानी पिला देना चाहिये। इसके बाद मीठा सरसों या अलसी का आध सेर तेल तथा आधी छटाँक तारपीनका तेल पिलाये। बेहोशी की दशा में रीठेका छिलका पीसकर सुँघावे या क्रंडे की राख में आक का दूध मिलाकर सुँघाये।

१५. ज्वर (Fever)

खाने-पीने की गड़बड़ी से, मौसम बदलने से या मच्छर काटने से पशु को ज्वर हो जाता है। इसमें निम्न उपचार करे—

१. आठ औंस एप्सम साल्ट में ४ माशा कुनैन मिलाकर गरम पानी में घोल ले, फिर ४ माशा कपूर और ८ माशा शोरा मिलाकर दिन में ३ बार पिलाये।

२. गोमा घास के फूल एक छटाँक और काली मिर्च एक तोला आध सेर पानी में गरम करके पिलाये।

३. शोरा सवा तोला, नमक ढाई तोला तथा चिरायता ढाई तोला आध पाव राब या गुड़ में मिलाकर खिला दीजिये।

१६. बिल्ल या सफेद झागवाला कीड़ा

घास में एक प्रकार का कीड़ा होता है, जिसको खा जाने से पशुका शरीर अकड़ जाता है, हाथ-पैर न हिलाकर वह चुपचाप पड़ा रहता है। ऐसी दशा में उसे आराम से पड़े रहने देना चाहिये। उसके ऊपर कम्बल डालकर ऊपर छाया भी कर देनी चाहिये। इसके लिये निम्न उपचार का प्रयोग कर सकते हैं।

१. एक सेर प्याज खिलाकर थोड़ी देर के लिये उसका मुँह बाँध दीजिये।

२. आध पाव सज्जी पानी में घोलकर पिलाइये।

३. एक तोला पिसी हुई काली मिर्च पावभर घी में मिलाकर और गरम करके पिला दीजिये।

१७. ताव या घामड़ा (Sunstroke)

कड़ी गरमी में लू लगने से या धूप में अधिक समय तक काम करने से यह रोग हो जाता है। पशु छाया या पानी में बार-बार बैठता है, कम खाता है और दुबला होता जाता है। इसके लिये नीचे लिखे उपचार का प्रयोग करे।

१. कच्चे आम का पना सबेरे-शाम पिलाइये।

२. पावभर सफेद तिल रात को भिगो दीजिये और सबेरे पीसकर सात दिन तक पिलाइये।

३. शीतकाल में यह रोग हुआ हो तो पुरानी मूँज १ पाव काटकर उसे एक सेर गुड़ में डालकर अच्छी तरह औटाना चाहिये और दिन में दो बार ४ दिन तक देना चाहिये या पशु की पूँछ में थोड़ा नश्तर लगाकर २ रत्ती अफीम भर दे और पट्टी बाँध दे।

४. यदि ग्रीष्म-ऋतु हो तो आध सेर मसूर की दाल उबालकर और ४ तोला नमक डालकर ४ दिन तक खिलाये।

५. शीशम, लिसोड़ा और बबूल—तीनों की आध-आध पाव पत्तियाँ लेकर २४ घंटे पानी में पड़ी रहने दे, फिर निकालकर आध पाव सूखे आँवले और एक पाव कच्ची खाँड़ डालकर पिला दे।

६. पशु की साँस तेज चलती हो तो थोड़ी-सी कपास कड़ुवे तेल में भिगोकर खिलाना लाभदायक है।

१८. विष खा जाना (Poisoning)

कभी-कभी कोई पशु चारे के साथ कोई घोर विषैला कीड़ा खा जाता है या कोई दुष्ट मनुष्य विष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खिला देता है, ऐसी दशा में नीचे लिखी दवाइयाँ करनी चाहिये—

१. डेढ़ सेर घी में एक सेर एप्सम मिलाकर पिलाना चाहिये।

२. कोई जुलाब की दवा दे देनी चाहिये।

३. एक सेर गरम दूध में आधी छटाँक तारपीन का तेल अच्छी तरह मिलाकर पिलाइये और फिर केले की जड़ का रस एक पाव तथा एक तोला कपूर मिलाकर पिलाना चाहिये।

१९. चरी द्वारा विष खा जाना

(Corn-Stalk)

वर्षा के दिनों में जब पानी पड़ना बन्द हो जाता है और चरी छोटी हो जाती है, तब उसमें एक प्रकारका विष उत्पन्न हो जाता है। वही चरी खा लेने से पशु को विष चढ़ जाता है और वह तत्काल गिर पड़ता है। दाँत-जीभ काले पड़ जाते हैं। इस स्थिति में—

पशु को शीघ्र किसी तालाब या नदी में डाल दे। यह सम्भव न हो तो उसके ऊपर खूब पानी छोड़े। गीले जगह से कीचड़ लेकर सारे शरीर पर पोत दे। जुलाब की कोई औषधि दे।

१. आध सेर सज्जी २ सेर पानी में घोलकर पिलाये।

२. एक सेर कड़ुआ तेल पिलाये या एक सेर चूल्हे की (लकड़ी की) राख पानी में घोलकर पिलाये।

३. आध सेर घी और दो सेर दूध पिलाये या आध पाव कत्था एक सेर ठंडे पानी में घोलकर पिलाये।

४. काली मिर्च १ तोला, हींग १ तोला, सोंठ १ तोला, अजवाइन १ तोला, काला नमक २ तोला—सबको महीन पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये।

२०. लकवा (Paralysis)

इस रोग में पशु का आधा या सारा अङ्ग निर्जीव हो जाता है। उस स्थान पर सुई चुभोने से दर्द नहीं होता। इसके लिये निम्न उपचारों को काम में लाना चाहिये—

१. शरीर को गरम रखना और लकवा मारे हुए अङ्ग पर कपूर तथा मीठे तेल की मालिश करना।

२. कुचला ४ माशा, सोंठ ६ माशा, हीरा कसीस ६ माशा, नमक आधी छटाँक—सबको कूट-पीसकर आध सेर गरम पानी में घोलकर पिलाइये।

३. आधा छटाँक सरसों पीसकर पानी में लेप बना लीजिये और लकवे के स्थान पर लगाइये।

२१. गठिया या जोड़ का दर्द

(Rheumatism)

सर्दी से, वर्षा में भीगने से या रक्त-विकार से यह रोग हो जाता है। पैरों के जोड़ों पर सूजन आ जाती है। इसमें निम्न उपचारों का प्रयोग कर सकते हैं—

१. दो सेर सूखी या ३ सेर हरी गोमाबूटी (मलडोडा) को कतरकर ५ सेर पानी में औटाये, १ सेर रह जाने पर बूटी निकाल कर फेंक दे। दो छटाँक पिसी हुई काली मिर्च और एक पाव काला नमक डालकर ७-८ दिनतक पिलाये।

२. एक सेर कडुई तरोई ५ सेर पानी में उबाले, जब पानी एक सेर रह जाय, तब उसे छानकर आध पाव काली मिर्च तथा पावभर काला नमक डालकर दो भाग कर ले और सबेरे-शाम पिलाये।

३. एक सेर पिसी हुई मेथी में आध सेर गुड़ और एक छटाँक अजवाइन मिलाकर १५ दिन तक खिलाये।

४. दो घुँघची (सोना तौलने वाली रत्ती) पीसकर आध सेर गुड़ में ४ दिन तक खिलाना चाहिये।

५. एक तोला कपूर, एक छटाँक तारपीन का तेल तथा एक पाव तिल के तेल को खूब मिलाकर मालिश करना चाहिये।

६. एक पाव लहसुन कुचलकर आध सेर तिल के तेल में पकाये और फिर तेल छानकर मालिश करे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२. प्रसूत का ज्वर

यह रोग प्रसूत के दु:ख-दर्द से बच्चे की उतरी हुई झिल्ली भीतर रहकर सड़ जाने से अथवा ब्याते समय ग्वाले के मैले-कुचैले हाथ लगकर नाखूनों का विष चढ़ने से हो जाता है। इस स्थिति में पहले घी-मिली हुई दस्तावर दवा देनी चाहिये, फिर थोड़ी ग्लिसरीन और जरा-सा कार्बोलिक एसिड पानी में डालकर पिलाना चाहिये।

सोंठ, अलसी तथा काली मिर्च एक-एक तोला एवं नौसादर आधा तोला कूट-पीसकर एक पाव गुड़ में खिलाइये।

पीने के लिये एक तोला कलमी शोरा मिलाकर गुनगुना पानी दीजिये।

२३. थन सूजना (Udder Inflammation)

कभी-कभी बच्चे के जोर से मुँह मार देने से, दूसरे पशु के सींग मार देने से या दूध का अत्यधिक जोर होने पर थन सूज कर कड़े हो जाते हैं। इसमें—

१. एक छटाँक कलमी शोरा आध सेर गरम पानी में मिलाकर तीन दिन तक पिलाना चाहिये।

२. नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेंक करने के बाद गेरू और अजवाइन पानी में मिलाकर पकाये और फिर लेप कर दे।

२४. योनि में कीड़े पड़ना

नीम के पत्ते पानी में उबालकर उससे पिचकारी द्वारा धोइये, फिर तारपीन का तेल और मीठा तेल मिलाकर रुई के फाहे डुबोकर चिमटी से अंदर कर दीजिये। इस प्रकार सबेरे-शाम कई दिनों तक दवा लगानी चाहिये।

२५. बच्चेदानी का बाहर निकलना

बुढ़ापे या कमजोरी के कारण या जेर गिराते समय जोर लगाने के कारण बच्चादानी बाहर निकल आती है। जब ऐसा अवसर आये, तब उसे फिटकिरी के पानी से अच्छी तरह धोकर भीतर दवा दे और उस स्थानपर एक मुसका चढ़ा दे। साथ ही निम्न उपाय करे—

१. आध पाव फिटकिरी पानी में घोलकर पशु को पिलाये।

२. एक पाव सूखा कतीरा गोंद सबेरे-शाम खिलाकर आधी छटाँक रसौत २ सेर पानी में घोलकर पिलाये।

३. आधा तोला सोंठ और एक तोला कालीमिर्च पाव भर गरम घी में मिलाकर ३-४ दिन तक पिलाये। बच्चेदानी को भीतर करके पशु को ऐसा खड़ा करे कि पिछला भाग ऊँचा रहे।

२६. साडू रोग (Garget or Mammitis)

दूधवाले पशुओं के लिये यह बहुत बुरा रोग है। इसमें थन सूज जाते हैं। पशु थनों में हाथ नहीं लगाने देता। यह रोग कुसमय पर या बार-बार दूध निकालने से, थनों में चोट लगने से, गोबर करते समय पिछले पुट्ठों पर लाठी मारने से, दुहते समय थन जोर से खींचने से या धानका छिलका खा जाने से होता है इसमें—

१. रेंड़ी का तेल गरम करके थनों पर मले।

२. पोस्ता के एक डोंड़े को तथा नीम के पत्तों को सेरभर पानी में डालकर भाप से सेंक करे।

३. आध सेर दही और पावभर मीठा तेल ३ दिन तक शाम को देना चाहिये।

४. आध सेर सहजन की पत्ती घोंट-छानकर आधा छटाँक काली मिर्च और एक छटाँक नमक मिलाकर ३ दिन तक देना चाहिये।

५. आध सेर घी, एक छटाँक काली मिर्च और आध पाव नीबूका रस ३ दिन तक पिलाये।

६. जाड़े की ऋतु हो तो नमक, तेल और अजवाइन डालकर काँसी के बर्तन से पुट्ठे पर मालिश करे।

७. बीमारी अधिक बढ़ गयी हो तो १ सेर घी, ४ सेर गुड़ या शीरा, आध सेर काला जीरा तथा आध सेर काली मिर्च डालकर पिलाना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८. दूध निकालकर फेंक देना चाहिये। पीब पड़ गयी हो तो चिरवाना ठीक है।

२७. मुँहसड़ी या अँगियारी

यह भी थनों का रोग है और इसके भी वे ही कारण हैं, जो साडू रोग के हैं। थन के सोत के ऊपर एक छोटी पीली-सी पपड़ी जम जाती है और फिर फुंसी की तरह हो जाती है। इसके लिये—

१. रेंड़ी के तेल में थोड़ा नमक डालकर गर्म करे और दिन में ४-५ बार मालिश करे।

२. नीम के पत्ते गरम करके भाप से सेंके।

३. एक सेर पानी में एक पाव कत्था घोल-छानकर पिलाना चाहिये।

२८. चन्द्री

यह बहुत बुरा और हानिकारक रोग है। पहले थन के ऊपर छोटी-सी एक गिल्टी होती है, फिर थन सूज कर उसमें पीब पड़ जाती हैं। गिल्टी फूटकर थन में छेद हो जाय तो नीचे लिखी दवाइयाँ भर देनी चाहिये—

१. आक का दूध, साँप की केंचुल और लहसुन—इनको बराबर पीसकर घाव के ऊपर लगा दे और सावधानी से पट्टी बाँध दे।

२. नीम की कोंपलों को पीसकर एक टिकिया बनाये, उसे गाय के घी में लाल करे। फिर टिकिया फेंक कर उस घी को घाव में दिन में ४-५ बार लगाये।

२९. थन का मारा जाना (Blind Teats)

थन की किसी बीमारी से थन मारा जाता है और दूध नहीं निकलता। यह रोग है तो असाध्य, किन्तु सम्भव है नीचे लिखी दवाइयाँ लाभ कर जायँ।

जब थन मारी हुई गाय गाभिन हो जाय, तब एक पाव सरसों का तेल प्रत्येक शुक्ल पक्ष की दूज को बच्चा देने तक बराबर देते रहना चाहिये। बच्चा देने के कुछ घंटे पहले आधी छटाँक हींग चने या जौ की रोटी में खिला दे।

यदि किसी पशु का थन जल्दी ही दो-चार दिन से बन्द हुआ हो तो आध पाव काली जीरी और आध पाव काली मिर्च पीसकर आध सेर गरम पानी में मिलाकर दिन में दो बार ३ दिन तक देना चाहिये। अथवा ४-५ कागजी-नीबुओं का रस एक पाव घी में मिलाकर दोनों समय दीजिये।

३०. थनों का कट जाना (Sore Teats)

दूध पीते समय बच्चे का दाँत लगने से या ऊपरी चोट लगने से थन पर घाव हो जाता है, इसकी दवा शीघ्र कर लेनी चाहिये—

१. तवा गर्म करके थन के नीचे रखे और दूध की धार छोड़े। उसके भाप से लाभ होगा।

२. थोड़ा मक्खन या घी लेकर पिसी हुई हल्दी और थोड़ा नमक डालकर दूध दुहने के पीछे घाव के ऊपर लगा दे।

३१. बच्चा देने के पीछे दूध न उतरना या थोड़ा उतरना

गाभिन होने पर कोई-कोई लोग पशु को दुहना एक दम बन्द कर देते हैं, जिससे थनों में दूध सूख जाता है और रोग हो जाता है। अतः धीरे-धीरे दूध सुखाना चाहिये। साथ ही—

१. गरम घी और नमक से थनों और हवाने पर मालिश करना चाहिये तथा दूध थोड़ा-बहुत अवश्य निकालना चाहिये।

२. एक सेर सनके बीज का आटा १ सेर शीरे में मिलाकर ३ भाग करे और दिन में ३ बार आठ रोज तक दे तो पूरा दूध उतर आता है।

३. गाय का दूध २ सेर, गुड़ या शीरा १ सेर, गेहूँ का दलिया १ सेर, मोटा चावल १ सेर—इन सबको २ सेर पानी में औटाकर आधा सबेरे और आधा शाम को देने से अच्छी जाति के पशु का दूध अवश्य बढ़ जाता है।

३२. बाँझपन (Barrenness)

पैदा होते ही पूरा दूध न पाने पर, अच्छी खुराक न मिलने पर, समय पर साँड़ न मिलने पर या जुड़वाँ बच्चों में से एक नर तथा एक मादा होने पर उस मादा को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राय: बाँझपन का रोग होता है। इसमें—

१. आधी छटाँक फास्फेट सोडा गरम पानी में डालकर योनि को बराबर धोते रहना।

२. किसी निपुण चिकित्सक से गर्भाशय का मुँह खुलवा देना।

३. गाय को बराबर साँड़ के साथ रखना।

४. दो सेर सन के हरे पत्ते रोज खिलाना।

५. एक सेर सन के बीज का आटा आध सेर गुड़ में मिलाकर १५ दिनतक खिलाना।

७. दो सेर अङ्कुर निकले हुए गेहूँ या जौ १५ दिन तक खिलाना।

८. ढाई पाव मेथी महीन पीस कर पानी में लुगदी बनाकर ३-४ दिन तक सबेरे देना।

३३. गाय का बार-बार गर्भस्त्राव होना

यह रोग गरम खुराक या गाय की गर्भ-धारण की शक्ति कम हो जाने से होता है। गर्मी दूर करने के लिये गायको ठंडी खुराक देनी चाहिये। एक बार गाभिन होते ही पाव भर घी में आधा तोला पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर दीजिये। इसके बाद नीचे की दवा दें।

१. गाभिन होने के बाद दो सेर लिसोड़े के हरे पत्ते खिला दीजिये। जिस दिन गाभिन हो, उस दिन खाना न दीजिये और दें तो कम तथा ठंडा।

२. गाभिन होने के २-१ दिन पहले अंकुर निकले हुए ४ सेर गेहूँ या जौ खिला दीजिये। इसे ४-५ दिन तक खिलाइये।

३. पाव भर सफेद तिल रात में भिगो दें, सबेरे घोट-पीसकर गाभिन होने के दिन और २ दिन बाद तक पिला दें। सर्दी के दिनों में इसे नहीं देना चाहिये।

३४. सर्प का काटना

सर्प के काटने का विश्वास हो जाने पर ५ भाग परामाग्नेट् पोटाश ९५ भाग पानी में मिलाकर काटी जगह के भीतर पिचकारी से भर दे और काटी जगह के ऊपर रस्सी से कसकर बाँध दे।

३५. कुत्ते का काटना

पशु को कुत्ते के काटने से जो घाव हो जाय, उसको कास्टिक पोटाश से जला देना चाहिये। यह दवा न मिले तो लाल मिर्च के बीज घाव में भर देना चाहिये।

शरीर के ऊपर के साधारण रोग

पशु परस्पर लड़ते-भिड़ते रहते हैं, जिससे उनके किसी अङ्गपर चोट आ जाती है। चोट आदि न लगने पर भी कभी-कभी आँख, कान आदि में कोई विकार हो जाता है। रक्त के विकार से भी कहीं पर सूजन हो जाती है। इन सब रोगों को साधारण समझ कर उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। इनको अच्छा कर डालना ही ठीक है, नहीं तो आगे चलकर पशु को भारी कष्ट हो सकता है।

१. सूजन और दर्द

चोट, सर्दी, गर्मी या रक्त के विकार से शरीर के किसी भाग पर सूजन आ जाती है। चोट की सूजन हो तो नीम के पत्ते उबालकर उस पानी से सेंकना चाहिये, फिर सुहागा तवे पर फुलाकर तिल, घी, वैसलीन या मक्खन के साथ सूजन की जगह पर चुपड़ देना चाहिये।

यदि रक्त-विकार से सूजन हो गयी हो तो नीम के पत्ते उबालकर सेंके। फिर १ तोला गेरू, २ तोला मकोय के रस में मिलाकर लेप कर दे या हल्दी-चूना मिलाकर लेप करे।

भीतर के किसी भाग में दर्द हो तो पंद्रह मिनट से आधे घंटे तक फलानेल या कम्बल को गरम जल में डुबाकर निचोड़कर उसका सेंक करना चाहिये। फिर सूखे कपड़े से भली भाँति पोंछकर सरसों का तेल ४ भाग और तारपीन का तेल २ भाग खूब मिलाकर मालिश करनी चाहिये।

२. रसौली और मस्सा

कई बार खाल के नीचे से गेंद-सी बनकर सूजती या बढ़ती चली जाती है या काले-काले मस्से निकल आते हैं। इनसे पशु को किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं होता, पर उसकी खाल बिगड़ जाती है। इससे इनको हटाना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसौली में सूजन की भाँति सेंक करना चाहिये। इससे न दबे तो ३ हिस्सा पानी और १ हिस्सा कच्चे पपीते का दूध मिलाकर रख लीजिये और रुई के फाहे से दिन में कई बार लगाइये।

मस्से पर नाइट्रिक एसिड, पपीते के दूध में मिला हुआ पानी या चूना-सज्जी में थोड़ा पानी डालकर दिन में कई बार लगाइये। चूना-सज्जी किसी काँच के बर्तन में या सीपिया में रखे।

३. फोड़ा-फुंसी और घाव (Abscess)

किसी पशु को फोड़ा हो जाय तो उसे अच्छी तरह पक जाने दीजिये। फिर चीरकर उसकी पीब निकाल देना चाहिये। इसके बाद नीम के पत्तों को पानी में उबालकर उस पानी से घाव को धोइये और नीम का तेल लगा दीजिये अथवा सरसों का तेल, तारपीन का तेल और कपूर एक-एक छटाँक लेकर और उसमें चौथाई छटाँक फिनाइल डालकर घाव पर लगाते रहिये। अथवा पत्थर का कोयला, खड़िया मिट्टी, फिटकिरी और नीलाथोथा—चारों को बराबर लेकर उनका चूर्ण करके लगाइये। घाव बड़ा हो तो नीम का तेल और मोम मिलाकर लगाना चाहिये।

घाव को कभी खुला नहीं छोड़ना चाहिये, नहीं तो स्याइ नाम की मक्खी उस पर बैठती है और घाव में कीड़े पड़ जाते हैं। यदि कीड़े पड़ गये हों तो आड़ू या मरुए के पत्तों को पीसकर उसकी टिकिया घाव पर रख दीजिये और मुल्तानी मिट्टी से घाव के ऊपर लीप दीजिये, जिससे घाव को हवा न लगे ऐसा करने से कीड़े मर जायँगे, तब पीछे घावको अच्छा कर लीजिये। गहरे घाव में कपूर एक भाग, इसका चतुर्थांश तारपीन का तेल और इतना ही तीसी का तेल खूब मिलाकर लगाना चाहिये।

४. हड्डी-पसली की चोट

बहुधा लड़ने-भिड़ने से हड्डी में चोट पहुँच जाती है या हड्डी टूट जाती है। हड्डी टूट गयी हो या उतर गयी हो तो किसी जानकार से या पशुओं के डॉक्टर से उसे ठीक कराना चाहिये। किसी जानकार आदमी के मिलने के पहले नीचे लिखी दवाइयाँ करें—

१. पीपल की हरी छाल ५ सेर पानी में उबाले, जब पानी २ सेर रह जाय तो चोट पर सेंक करे।

२. भेड़ के दूध में पीली कटेरियाँ औटावे और चोट की जगह पर सेंक करे तथा लेप कर दे।

३. एक छटाँक फिटकिरी, आधी छटाँक हल्दी तथा १ सेर दूध पशु को तुरन्त पिला देना चाहिये।

५. खुर में कील-काँटों का चुभना

यदि खुर में कील-काँटा या कोई नुकीली चीज चुभ गयी हो, तो उसे निकाल कर कपूर और तारपीन-मिले हुए तिल के तेल में रुई का फाहा भिगोकर सावधानी से भीतर कर देना चाहिये और आस-पास भी तेल चुपड़ देना चाहिये। दो-चार रोज करने से आराम हो जायगा।

६. सींग टूटना या सड़ना

लड़ने-भिड़ने से या लाठीकी चोट से सींग टूट जाते हैं। सींग दो प्रकार से टूटते हैं—एक तो जड़ से निकल जाते हैं, दूसरे सींग के ऊपर का केवल खोल निकल जाता है।

जड़ से टूटने पर छोटी बेरी के पत्ते पीस कर घाव में भर दीजिये और ऊपर से कपड़ा बाँधकर नीम का तेल डालते रहिये। यदि खोल उतर गया हो तो उड़द की पीठी में आदमी के सिर के बाल सानकर सींग के ऊपर तोप दीजिये और कपड़ा बाँध कर नीम का तेल डालते रहिये। अथवा मुल्तानी मिट्टी को सींग पर लपेट कर ऊपर से बाल लपेट दे या सीमेंट अथवा चूना घाव में भरकर कपड़ा बाँध दे और नीम का तेल डालते रहे।

सींग टूटने से घाव सड़ गया हो तो कीड़े पड़ गये हों तो नीम के पानी से धोकर तारपीन के तेल में रुई का फाहा दिन में दो-तीन बार रखना चाहिये।

७. कान में मवाद पड़ना या घाव होना

कान में घाव हो गया हो तो उसे नीम के पानी से धोकर १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा सुहागा (भुना हुआ) और २० हिस्सा सरसों का तेल मिलाकर घाव पर लगाना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहिये। अथवा आक का तेल घाव पर लगाकर २-४ बूँदें कान में भी छोड़ दे।

८. आँख का रोग (Sore Eyes)

आँख का रोग बहुधा किसी जंगली जड़ी-बूटी के लगने से या लड़ने-भिड़ने से होता है। आँख के रोग में आँखों से पानी और कीचड़ बहता है। इसके लिये निम्न उपचार करे—

१. फिटकिरी पीसकर पानी में घोल-छान ले और इससे आँख धोये।

२. नमक और सहजन के पत्ते राम में भिगो दे। सबेरे घोट-छानकर उस पानी से धोये।

३. सहजन के बीज को रगड़ कर पानी में डाले और आँख धोये। कुछ दिन रोशनी से बचाये।

९. बैल का कंधा आना या फार लगना

कंधा आ जाने पर नमक-मिले गरम पानी से सेंक करना चाहिये।

हल जोतते समय बैल के उछलने से यदि फार लग जाय तो घाव पर तुरन्त मूत्र लगा देने चाहिये। ३-४ दिन करने से अच्छा हो जायगा।

१०. आग से जल जाना

पशु के जल जाने पर तुरन्त चूना या चूने के पानी को वैसलीन में मिलाकर लगाना चाहिये। १०० बार फेंटा हुआ गाय का घी भी बहुत लाभ करता है। चूने के पानी में तिल, रेंड़ी या नारियल का तेल मिलाकर फेंटने से एक मलहम बन जायगा, उसके लगाने से भी अच्छा होता है।

११. बाबनी अर्थात् पूँछ का घाव

पहले पूँछ की चौंरी के बाल खुजली से उड़ते हैं और धीरे-धीरे घाव होकर पूँछ गलने लगती है। इसके लिये सल्फ्यूरिक एसिड को चौड़े मुँह की बोतल में भरकर घाव वाले सिरे को ५ मिनट तक उसमें डाले रहें और फिर कपड़ा बाँध दे।

इस प्रकार अपने पशुओं की यथा सम्भव चिकित्सा करनी चाहिये। किसी योग्य अनुभवी चिकित्सक का परामर्श अवश्य लेना चाहिये। कभी-कभी ठीक अनुपात एवं प्रयोग का ज्ञान न होने से लाभ के बदले हानि होने की भी आशंका रहती है। गोशाला में यथासम्भव साधारण उपयोग में आने वाली औषधियाँ बराबर रखनी चाहिये, ताकि तात्कालिक चिकित्सा की जा सके। पशुओं के प्रति प्रेम-भाव रखते हुए उनके दुःख-दर्द की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

प्रस्तुति : डा० यू० एन० सिंह

अनजान में गोहत्या के भागीदार होने से बचें

भारत में प्रति वर्ष लगभग ३५ लाख गाय बछड़े आदि प्लास्टिक एवं पोलिथिन की थैलीयां निगल जाने के कारण मर जाते है। अत: आप सभी बहन, भाईयों से निवेदन है कि प्लास्टिक या पोलिथीन की थैलियां खाली या घर का बचा-खुचा भर कर सड़क पर या कचरें में ना फेंके बल्कि एक जगह इकट्ठा कर ले एवं कचरा चुनने वालें को दे दे।

इस प्रकार न केवल गाय एवं अन्य निरीह पशुओं की रक्षा होगी एवं प्लास्टिक चुनने वाले गरीब का भी उपकार होगा।

साथ ही आप पुण्य के भागी होंगे।

प्रस्तुति : श्री वीरेन्द्रकुमार भुरारिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सृष्टि-सन्तुलन और गाय

श्री नरेन्द्र दुबे
गो-विज्ञान-भारती, इन्दौर

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम जीवित संस्कृतियों में से एक है। भारत में विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ वेद, जो लगभग २० हजार वर्ष पुराने हैं, में गौ के लिए अनेक शब्द हैं। उनमें से एक है अघन्या, अर्थात् ऐसा प्राणी जिसका वध नहीं किया जा सकता। इससे यह जाहिर होता है कि भारत में गोवंश वैदिक काल से अवध्य रहा है, रक्षणीय रहा है। भारत में जितना प्रयत्न गोपालन, गोसंवर्द्धन और गोरक्षण के लिए किया है वह बेमिसाल है। इसके फलस्वरूप भारत में सुव्यवस्थित गोविज्ञान का विकास हुआ जो सारे विश्व में फैला। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी में गाय को काउ, जर्मन भाषा में कू और जापानी में ग्यू कहते हैं। ये सारे शब्द भी गौ के ही अपभ्रंश हैं। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि भारत ने सम्पूर्ण गोवंश और गौ-उत्पाद को उपयोगी बनाया है। जैसे दूध से दही, मक्खन, पनीर, घी, मावा, मिठाइयाँ आदि खाद्यान्न प्राप्त किया, गोबर गोमूत्र से खाद बनाया, कीट नियंत्रण किया और औषधियाँ बनाईं। गौ ऊर्जा से चलने वाले अनेक कृषि यंत्र, सिंचाई साधन, ग्रामोद्योग यंत्र और उपकरण, परिवहन साधन आदि बनाए अर्थात् एक सम्पूर्ण टेक्नॉलाजी का विकास किया और उसकी स्वाभाविक मृत्यु होने पर प्राप्त शव से चमड़ा, हड्डी, चरबी, बाल, सींग, खुर और माँस से अनेक ग्रामोद्योगों का भी विकास किया। दुनिया के अन्य देशों में गो-केन्द्रित ग्राम्य-संस्कृति और कृषि-ग्रामोद्योग आदि के अर्थतंत्र का ऐसा विकास नहीं हुआ जैसा भारत में हुआ था। यूरोप और मध्यपूर्व के देशों में गाय का उपयोग दूध के लिए, घोड़े का खेती के लिए और बछड़े का मांस के लिए किया गया। अरब-यूरोपीय संस्कृति में घोड़ा कृषिक पशु था इसीलिए वहाँ वह अवध्य रहा है।

भारत में बैल अपने औसतन २० वर्ष के जीवन काल में लगभग १७ वर्ष तक अनवरत अखण्ड सेवा देता रहता है। वह इतना उत्पादक था कि उसकी हत्या करना अकल्पनीय था। उसकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध थी। लेकिन गाय अपनी २० वर्ष की आयु के अन्तिम तीन-चार वर्षों तक न तो बछड़ा देती है और न दूध। वह गोबर-गोमूत्र ही देती है। भारतीय मनीषा ने उसकी रक्षा के लिए ही उसे मातृपद दिया। गौमाता का पद मिलने से वह सहज ही अवश्य हो गई। अरब में यद्यपि घोड़े की स्वामीभक्ति पर अनेक कहानियाँ और काव्य लिखे गए हैं। लेकिन लोकहृदय में इसे वैसा स्थान नहीं मिला जैसा भारत में गाय को मिला।

भारत की सांस्कृतिक परम्परा में गाय को जो स्थान मिला है वह इसके अनन्त उपकारों के बदले में भारतीयों ने कृतज्ञता ज्ञापन के लिए दिया। भारत के लिए यह अत्यन्त गौरवास्पद बात है कि मध्यपूर्व के धर्मों के अनुयायी बादशाहों ने भी इस भावना का आदर किया और कश्मीर जैसे राज्यों में कानून बनाकर भी सम्पूर्ण गोवंश की हत्या प्रतिबंधित रखी। सौभाग्य से यही परम्परा वहाँ आज भी जारी है।

भारत की गुलामी का आरम्भ पश्चिम के उद्योगवाद से उपजी बाजार-प्रधान संस्कृति से हुआ। इसकी शुरूआत ही बैल आधारित कृषि, खादी और ग्रामोद्योगों के नष्ट होने से हुई। जैसे-जैसे ग्रामोद्योग टूटते गए बैल बेरोजगार होते गए और उनके साथ ग्रामीणजन भी शहरों की ओर पलायन करने लगे। अंग्रेजी राज में गाय बैलों का बेतहाशा कत्ल शुरू हुआ और तोड़े से मांसाहारियों को सस्ता से सस्ता गोमांस मिलने लगा क्योंकि अधिसंख्य भारतीयों ने गोमांस को वर्जित माना था। अंग्रेज व्यापारी सस्ता कतली चमड़ा विदेशों में निर्यात करने लगे और यूरोप में बड़े-बड़े चर्मोद्योग खड़े हो गए। यहाँ तक कि जर्मनी ने मृत-चर्म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को नस्म बनाने की टेक्नालॉजी का विकास कर भारत से मृतचर्म भी खींच लिया।

इस प्रकार भारत में खादी ग्रामोद्योग के टूटने से और बड़े पैमाने पर गोहत्या होने से सृष्टि-संतुलन बिगड़ा, खेती खराब हुई, अकाल पड़े और गुलामी आई।

भारत में सृष्टि-संतुलन कायम रखने के लिए गम्भीर चिन्तन हुआ है। इसके लिए यहाँ यज्ञ, दान और तप ये तीन प्रक्रियाएँ चलाई गईं। मानव प्रकृति पर अवलम्बित है। वह अपने भोजन के लिए जंगल काटता है खेत बनाता है, जमीन से खनिज निकालता है, आग जलाकर प्राणवायु को क्षति पहुँचाता है। प्रकृति की ऐसी क्षतिपूर्ति के लिए भारत में यज्ञ परम्परा शुरू हुई। इन दिनों हवन को ही भूल या अज्ञानतावश यज्ञ मान लिया गया है जबकि यज्ञ का वास्तविक उद्देश्य प्रकृति को समृद्ध और सम्पन्न बनाने से और उसकी क्षतिपूर्ति से है। गाँधीजी ने अपने सूत्रयज्ञ से इस वैदिक परम्परा को पुनर्जीवित किया। सूत्रयज्ञ का आशय यही था कि हम प्रकृति और समाज से संयम पूर्वक लें और जितना लें उससे अधिक उसे वापस दे दें। इस प्रकार गाँधीजी ने अपने सूत्रयज्ञ से खादी-ग्रामोद्योग के द्वारा सृष्टि-संतुलन कायम करने का पुनरारम्भ किया। देश और दुनिया ने उनका यह चमत्कार देखा है।

मनुष्य अपनी आवश्यकताएँ समाज की मदद से पूरी करता है। माता-पिता, साथी, मित्र, सम्बन्धी, ग्रामवासी, देशवासी और दुनिया के लोग याने समाज विभिन्न सेवाएँ देकर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। समाज का संतुलन इसलिए बिगड़ता है कि कुछ लोग समाज से जितना लेते हैं उतना उसे वापस नहीं देते। ऐसा व्यवस्था-दोष से भी होता है। समाज में ऐसी चेतना उत्पन्न की जाए और वैसा शिक्षण दिया जाए कि हम जितना समाज से लें उससे ज्यादा उसे वापस करें तो मानव समाज सुखी और समृद्ध बन सकता है। इसके लिए भारत में दान-प्रक्रिया की खोज हुई है। आदि शंकराचार्य ने कहा—दानं संविभागः अर्थात् समाज में समानता के लिए, विषमता निवारण के लिए दान आवश्यक है। विनोबाजी ने अपने भूदानयज्ञ आन्दोलन से देश में इसी दान प्रक्रिया को पुनः स्थापित करने का कार्य किया। भूदान यज्ञ की प्रक्रिया से सृष्टि और समाज दोनों में अनेक कारणों से उत्पन्न विकृति और असंतुलन को दूर किया जा सकता है।

मानव अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए अपने शरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रियों और प्राणशक्ति का उपयोग करता है। ऐसे उपयोग से इनकी भी कुछ क्षति होती है। शरीर में थकावट, इन्द्रियों में दुर्बलता आदि का मुख्य कारण यही है कि काम में और उपभोग में, काम और विश्राम में संतुलन नहीं है। इसके लिए तप की प्रक्रिया की खोज हुई। उपवास, संयम और ब्रह्मचर्य आदि शरीर का तप है। इससे एक ओर शरीर निरोग बनेगा, पुष्ट बनेगा तो दूसरी ओर समाज और सृष्टि के साथ भी अच्छा संतुलन कायम होगा। इस प्रकार यज्ञ, दान और तप सृष्टि-संतुलन के अनिवार्य तत्त्व हैं। भारत सहित सारे विश्व में इन तत्त्वों का हमें उपयोग करना होगा।

विनोबा प्रेरित गोरक्षा-सत्याग्रह में यज्ञ, दान और तप तीनों का समावेश है। इस युग में गाय इस अभिनव विचारधारा की प्रतीक है। क्योंकि संस्कृत में गो का अर्थ गाय, पृथ्वी, माता और इन्द्रियाँ भी होता है। गाय का एक विश्वरूप है और उसका दूसरा पशुरूप है। वह सृष्टि संतुलन सुधारने में चौपाया पशुरूप में वह किस प्रकार अपना योगदान दे सकती है। यही इस आलेख की विषय वस्तु है।

अशांति का कारण है तेल आधारित उद्योगवाद

भारत सहित विश्व में आज जो भौतिक समृद्धि दिखाई देती है उसका मुख्य आधार जीवाश्म-ईधन तेल, पेट्रोल, डीजल, गैस आदि है। औद्योगिक क्रान्ति और उस पर आधारित औद्योगिक संस्कृति और सभ्यता जीवाश्म-ईधन से मिलने वाली ऊर्जा प्रणाली पर अत्यधिक निर्भर हो गई है। जिस तीव्र गति से जीवाश्म-ईंधन भण्डारों का विदोहन किया जा रहा है यदि वही गति भविष्य में भी जारी रही तो कुछ ही वर्षों में ये भण्डार समाप्त हो जाएँगे और सृष्टि का संतुलन खतरनाक बिन्दु तक असंतुलित हो जाएगा। विश्व का सबसे समृद्ध और विकसित देश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमेरिका इससे बेहद चिन्तित है कि उसकी अर्थव्यवस्था अरब देशों से प्राप्त तेल पर आश्रित है। यद्यपि अमेरिका और ब्रिटेन के पास पर्याप्त खनिज तेल भण्डार है। लेकिन वे इस बात से भी चिन्तित है कि इनके उपयोग से आकाश, जल, वायु और मिट्टी में जो प्रदूषण बढ़ रहा है वह महाविनाश को निकट ला रहा है।

भारत की हालत तो निरन्तर बदतर हो रही है भारत के पास विश्व में उपलब्ध खनिज तेल भण्डार क्षमता की मात्रा ०.३ प्रतिशत है जबकि दुनिया की १६ प्रतिशत आबादी भारत में वास करती है। अब हम अपनी जरूरत का लगभग ७० प्रतिशत डीजल, पेट्रोल, गैस अरब देशों से आयात कर रहे हैं। जिस पर १९९७-९८ में लगभग ३२००० करोड़ की विदेशी मुद्रा का व्यय हुआ है। भारत के विदेश व्यापार घाटे का प्रधान कारण पेट्रोल बिल ही है।

शांति के लिए चाहिए बैल संस्कृति

भारत के पास १० करोड़ भारवाहक पशु है। इनसे आज भी ४० हजार मेगावाट ऊर्जा मिलती है। जितनी ऊर्जा हमारे सारे विद्युत गृह संचारण-हानि के पश्चात मिलकर देते हैं। इतनी ऊर्जा देने के साथ-साथ ये पशु गोबर-गोमूत्र की सजीव खाद भी देते हैं। इनसे ऐसी ऊर्जा मिलती है जिसे किसान जमीन जोतने, सिंचाई, सामान ढोने आदि में अर्थात् अनेक प्रकार से उपयोग में ला सकता है और जो पशु को चारा भूसा आदि खिलाने भर से मिल जाती है। ऐसी ऊर्जा न तो प्रदूषण करती है और न इसके लिए विदेशी मुद्रा का ही व्यय होता है। हम उपर्युक्त नस्ल सुधार से संख्यावृद्धि करके, पशुचालित साधनों में संशोधन और सुधार से तथा कृषि उपकरणों में और भी सुधार करके पशु ऊर्जा की आपूर्ति भी बढ़ा सकते है और उपयोगिता भी। इसके लिए गाँव-गाँव में प्रशिक्षित गोपालक, पशुपालक मौजूद है। जिनके शिक्षण पर अलग से खर्च करने की जरूरत भी नहीं है। जरूरत है सही दृष्टिकोण और वैज्ञानिक नितियों की।

गोबर से पर्यावरण सुरक्षा

गोबर-गामूत्र का जैसा उपयोग भारत में किया जाता है वह उसकी अपनी विशेषता ही है। गोबर-गोमूत्र पर जितना संशोधन भारत में हुआ है वह अन्य किसी देश में नहीं हुआ है। बिगड़े हुए पर्यावरण और सृष्टि संतुलन को पुनः सुधारने में गोबर, गोमूत्र अहम भूमिका निभा सकते हैं। संशोधन से यह ज्ञात हुआ है कि गोबर में करोड़ों ऐसे पोषक जीवाणु हैं जो रोगाणुओं और विषाणुओं को समाप्त कर सकते हैं। बम्बई में एक्सेल इंडस्ट्रीज ने गोबर जीवाणुओं के कल्चर का सभी प्रकार के जैविक कचरे पर उपयोग कर उसे उत्तम सजीव खाद में बदलने का विशाल कारखाना ही खड़ा किया है। नेडप काका, नारायणराव पांडरीपांडे, ने तीन गाय-बैलों के गोबर से ही दो सौ टन खाद प्राप्त करने की प्रक्रिया निकाली है। इस पद्धति से उपलब्ध केवल ५० प्रतिशत यानी ४० करोड़ टन गोबर, १०० करोड़ टन खरपतवार-कचरा और डेढ़ करोड़ टन शहरी कचरे से हमें साढ़े छह करोड़ टन सजीव खाद मिल सकती है जिसमें ६० लाख टन नाइट्रोजन, २५ लाख टन फास्फोरस और ४५ लाख टन पोटाश मिलेगा। यह हमारे देश की सारी जमीन के लिए पर्याप्त होगा। जबकि आज हम करोड़ों रुपयों का रासायनिक खाद आयात कर अपनी दुर्लभ विदेशी मुद्रा का व्यय कर रहे हैं और जल, जमीन, वायुमंडल सभी को खतरनाक स्तर तक प्रदूषित भी कर रहे हैं।

ट्रैक्टर खेती अवैज्ञानिक है

इन दिनों अपने देश में रेडियो, टी० वी०, समाचार पत्रों आदि में ट्रैक्टरों और हार्वेस्टरों का जोर-शोर से प्रचार चल रहा है। सरकारें इनकी खरीद पर अनुदान दे रही हैं और बैंक आसान शर्तों पर ऋण दे रहे हैं। सन् १९६० में देश में मात्र ६०० ट्रैक्टर बनते थे और अब दो लाख प्रतिवर्ष बनते हैं। एक ट्रैक्टर औसतन १२ बैलों का काम ले लेता है याने १२ बैलों को बेरोजगार कर देता है। यद्यपि आज भी देश की ६०-६५ प्रतिशत खेती बैलों से ही होती है लेकिन यह हालत तेजी से बदल रही है।

अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि खाद, बीज, सिंचाई आदि अन्य बातों को छोड़ दे तो भी बैल खेती, बैल जुताई, ट्रैक्टर खेती से ज्यादा पैदावार होती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। सामान्यत: बैल खेती से १५ प्रतिशत ज्यादा उत्पादन प्राप्त होता है और यह भी सिद्ध हुआ है कि ट्रैक्टर खेती में बैल खेती से तीन गुणा ज्यादा ऊर्जा खपत है। यह भी सिद्ध हुआ है कि ट्रैक्टर के वजन से जमीन सख्त होती जाती है और उसकी उर्वराशक्ति सतत घटती जाती है। उसमें सिंचाई में ज्यादा पानी लगता है और बरसात के दिनों में ट्रैक्टर निकम्मा साबित होता है। देश में ट्रैक्टरों और हार्वेस्टरों के प्रसार से बैलों के रोजगार के दिन घटकर ५०-६० रह गए हैं। साल में ३०० दिन बिना काम के खिलाना किसी भी लखपति के लिए असंभव है। इसीलिए बैल कतलखानों में भेजे जा रहे है और उनका मांस निर्यात किया जा रहा है, हड्डियाँ जिलेटिन कारखानों में, खून दवा उद्योग में और चमड़ा बड़े-बड़े कारखानों में भेजा जा रहा है। इससे ग्रामीण भारत का समस्त सृष्टि संतुलन और अर्थतंत्र बिगड़ गया है। ग्रामीण खेत-मजदूर शहर की गंदी बस्तियों में शरणस्थल बनाकर रह रहे हैं और वहाँ का पर्यावरण बेहद प्रदूषित हो गया है।

सस्ता साधन बैलगाड़ी

इस समय देश में डेढ़ करोड़ गाड़ियाँ हैं। जो सालभर खेतों से घरों तक और गाँवों से शहरी मंडियों तक इतना माल ढोती है जितना भारत की रेले ढ़ोती है। बैलगाड़ियों में सुधार कर उनकी माल ढोने की क्षमता में सहज ही ३० प्रतिशत की वृद्धि की जा सकती है और जुए में सुधार करके भी बैलों की कार्यक्षमता बढ़ाई जा सकती है। लेकिन यह क्षेत्र पूरी तरह उपेक्षित है।

ट्रैक्टर-ट्रेलर सवारी बैठाने के लिए नहीं बनाए गए हैं और उनसे आए दिन एक्सीडेंट भी होते हैं। शायद उनमें सवारी लाना-लेजाना गैरकानूनी भी है लेकिन उसे कैसे रोका जाए। यह किसी की भी समझ में नहीं आ रहा है। जबकि इन ट्रेलरों को चार पहिए वाली बैलगाड़ी में सरलता से बदला जा सकता है जिसे दो बैलों की जोड़ी याने एक हार्स पावर से चलाया जा सकता है। जिसे आज तीस हार्स पावर का ट्रैक्टर खींचता है। देश में ऊर्जा अपव्यय का यह बड़ा उदाहरण है।

गो दुग्ध : सर्वोत्तम आहार

भारत में पश्चिमी देशों की तर्ज पर शहरों में दूध की आपूर्ति के लिए डेयरी की उद्योग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। पश्चिमी देशों में खेती के लिए अच्छा कद्दावर बैल चाहिए। यहाँ वस्तुत: बैलों के लिए गोपालन था। इसलिए यहाँ सर्वोत्तम ३० नस्लों में से २५ नस्लें बैल नस्लें हैं। गो दुग्ध नित्य उपयोग की चीज थी। उसकी बिक्री करना ही वर्जित था। किन्तु ब्रिटिश काल में दूध का धंधा चला। गाय के दूध में चिकनाई मात्रा ३ या ३.५ प्रतिशत रहती है जबकि भैंस के दूध में यह ६ से ७.५ प्रतिशत तक भी रहती है। सरकार ने दूध के लिए भैंस पालन को प्रोत्साहन देने की नीति बनाई। चिकनाई के आधार पर दूध की कीमतें तय कीं। भैंस का पाड़ा खेती में ज्यादा काम नहीं आता इसलिए उसे स्वयं भैस पालक किसी न किसी प्रकार से मार देते हैं। भारत में भैंस पालन यूरोप के गोपालन जैसा ही है। शहर की डेयरियों में जब गाय दूध नहीं देती तब उसे कतलखाने में बेचकर फिर ऐसी अच्छी नस्ल की नई गाएँ खरीद लेते हैं। वर्षों से यही क्रम सतत चल रहा है। इसके कारण भारत की सर्वोत्तम नस्ल की गाएँ समाप्त हो गई हैं और कम दूधवाली गायों की संख्या बेहद बढ़ गई है। इस कारण प्रति मवेशी दूध का औसत उत्पादन भी एकदम गिर गया है।

संकरण नीति विघातक

गायों की दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए विदेशी नस्ल के वीर्य से संकरण कराने का कार्यक्रम देश में चल रहा है। यद्यपि इससे दुग्ध-उत्पादन में वृद्धि होती है किन्तु संकरित बैलों की क्षमता गरमी के मौसम में और दिन में प्रात: १० बजे के बाद घट जाती है। इसलिए किसान उन्हें काम में लेना पसन्द नहीं करते और इसी कारण वे कतलखाने भेजे जाते हैं। देश में अनुपयोगी साँड़ों के कतल की कानूनन अनुमति होने से साँड़ों की संख्या बहुत घट गई है और उन्नत नस्ल के साँड़ों का सर्वथा अभाव हो गया है। इस कमी को दूर करने के लिए सरकार ने कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र कायम किए हैं। इन केन्द्रों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में देशी उन्नत नस्ल के साँड़ नहीं हैं, वीर्य संग्रह और वीर्य रक्षा के आधुनिक साधनों का अभाव है और सुप्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की भी कमी है। ऐसी हालत में बार-बार वीर्यदान के बाद भी और बहुत खर्च करने पर भी गर्भाधान नहीं होता। इसी कारण से गायें बांझ हो जाती है। प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ है कि यदि उन्नत नस्ल की देशी गायों की ठीक से देखभाल की जाय, उन्हें पौष्टिक खूराक दी जाय और पर्याप्त साफ पानी गिले तो उनकी उत्पादन क्षमता संकरित विदेशी गायों से कहीं ज्यादा है।

वास्तव में सृष्टि-संतुलन की दृष्टि से जैव विविधता का विशेष महत्त्व है। विभिन्न नस्लों की अपनी अपनी विशेषताएँ हैं। जैसे भैंस के दूध में जितनी और जैसी चिकनाई है वह मनुष्य के उपय़ोग के लिए उपयुक्त नहीं है। भैंस के दूध की चिकनाई दिल की बीमारी का कारण हो सकती है जबकि गाय का दूध माता के दूध जैसा ही है। उसमें आँखों के लिए आवश्यक केरोटीन और विटामिन ए की पर्याप्त मात्रा रहती है। यदि देश के बच्चों को पर्याप्त मात्रा में गोदुग्ध और छाछ मिल जाए तो अंधत्व निवारण में हम सफल हो सकते हैं।

इस समय अपने देश में सभी प्रकार का याने गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट आदि सभी का दूध उत्पादन ६ करोड़ टन प्रतिवर्ष अर्थात् प्रति व्यक्ति प्रतिदिन औसत १९५ ग्राम है। मेडिकल काउन्सिल के अनुसार देश में हर व्यक्ति को रोज कम से कम २७५ ग्राम दूध मिलना चाहिए। इस दृष्टि से हमारे देश में अन्य विकसित देशों की तुलना में बहुत कम दूध उपलब्ध है। जबकि हमारे यहाँ उन देशों की तुलना में दुधारू पशुओं की संख्या ज्यादा है। इजराइल में प्रति मवेशी ७ हजार किलो दूध उत्पन्न होता है और हमारे यहाँ यह मात्रा ५०० किलो है। इसका प्रधान कारण यही है कि हमारे देश में गोपालन, गोसंवर्द्धन की राष्ट्रीय नीति ही नहीं है।

पशु खाद्य का कृत्रिम अभाव

स्वराज्य के पश्चात भारत में अन्नोत्पादन में तीन गुना ज्यादा वृद्धि हुई है। इसी अनुपात में पशुखाद्य के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। किन्तु गेहूँ के भूसे का और घास का उपयोग कागज कारखानों में हो रहा है, खली निर्यात की जा रही है और हार्वेस्टर से इस प्रकार फसल कटाई होती है कि भूसा खराब ही होता है। गाँव में गोचर भूमि समाप्त हो गई है। जंगल भी या तो समाप्त हो गए हैं या आरक्षित घोषित हो गए हैं। ऐसे अनेक कारणों से गाँवों में पशुओं को खड़े रहने की भी जगह नहीं बची है। प्रकृति तो अपना स्वाभाविक संतुलन कायम रखने का पूरा प्रयास करती है। अति सूक्ष्म जीवाणुओं से लेकर हाथी जैसे विशाल प्राणी के लिए वह भोजन की व्यवस्था करती है। अन्न के एक पौधे में दाने मनुष्यों के लिए, तना और पत्तियाँ पशुओं के लिए और जड़ें भूमि के भीतर रहने वाले जीवाणुओं के लिए निर्धारित हैं। जब हम लोभवश इस संतुलन को बिगाड़ देते हैं तब समस्याएँ पैदा हो जाती है। यदि देश में इस प्राकृतिक संतुलन को कायम रखते हुए अपने पशुओं के लिए पर्याप्त स्वच्छ पानी और खाद्य की व्यवस्था कर दें तो वे हमें अच्छा दूध देंगे, ऊर्जा देंगे, सेन्द्रीय खाद देंगे और सारा देश चमन कर देंगे।

देश की बरबादी का प्रधान कारण : मांस का निर्यात

भारत में सृष्टि संतुलन बिगाड़ने के मुख्य दोषी बड़े-बड़े कारखाने और चमड़े के बड़े-बड़े कारखाने हैं। भारत सरकार कतलखानों को खाद्य प्रशोधन उद्योग मानकर मदद करती है। जो कतलखाने केवल निर्यात के उद्देश्य से लगाए जाते हैं उन्हें तो विशेष सहायता और भरपूर संरक्षण प्राप्त होता है। इन्हें बिजली, पानी, सड़क, टैक्स छूट आदि के साथ-साथ निर्यात के लिए दी जा रही सभी अन्य सुविधाएँ भी मिलती हैं। भारत में गाय-बैल कृषिक पशु हैं और इनका उपयोग मांस के लिए नहीं हो सकता जैसे अरब देशों में घोड़े का मांस खाने की परम्परा नहीं है। इसीलिए हमारे संविधान निर्माताओं ने राज्य के नीति निर्देशक सिद्धान्तों में धारा ४८ में गाय-बैलों के कतल को प्रतिबन्धित करने का प्रावधान किया है। किन्तु हमारी सरकार इसका पालन नहीं कर रही है। हमारे देश में मांसाहारी लोग भी सामान्यतः गोमांस नहीं खाते इसलिए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुनिया के अन्य देशों की तुलना में यहाँ गोमांस सस्ता है। ऐसे भाव फरक का लाभ उटाने के लिए अनेक उद्योगपति और व्यापारी सरकार के सहयोग से बड़े पैमाने पर मांस-निर्यात कर डालर-कमाने में लगे हैं। आज गोमांस निर्यात व्यापार में जितना मुनाफा है वह अन्य किसी व्यापार में नहीं है इसलिये बड़े पैमाने पर गाय-बैलों का संहार चल रहा है। यह चलता रहा तो देश का सारा पशु धन नष्ट हो जायगा और यहाँ का सृष्टि संतुलन इतना खराब हो जायगा जिसे सम्भालना, बचाना ही असंभव हो जायगा। यही हमारी चिन्ता का मुख्य विषय है।

शहरों में सड़कों पर घूमती हुई दुधारू और आवारा गायें एक बड़ी समस्या है। लेकिन यह समस्या भी इस कारण है कि शहरी-गोपालक, जिन्हें गोशोषक ही कहना ज्यादा उपयुक्त है, दूध निकालने के बाद इन्हें छोड़ जाते हैं। गायों की कतल कानूनन बन्द है इसलिये कसाई भी इन्हें नहीं लेते जबकि वे कतल के लिये बैल खरीद लेते हैं। शहरी आवारा गायों की समस्या का भी तभी समाधान होगा जब देश में व्यवस्थित गोपालन, गोसंवर्द्धन नीति बनेगी, गाय-बैल दोनों का कतल बन्द होगा, बैल-गाय की ऊर्जा का प्रशोधन उद्योग तथा परिवहन में समुचित उपयोग होगा गोबर-गोमूत्र की खाद को पर्याप्त महत्त्व दिया जायगा, गोदुग्ध को उचित मूल्य और सम्मान मिलेगा और गाँव-गाँव में मृतचर्म के उच्छे ग्रामोद्योग खड़े होंगे।

ग्रामीण चर्मोद्योग टूटने से प्रदूषण बढ़ा

शहरों में पंजीकृत कतलखाने खुल जाने से और दोषपूर्ण नीतियों के कारण गाँवों के अधिकांश पशु कतलखानों में ही जाते हैं। स्वाभाविक मौत से मरने वाले पशुओं की संख्या एकदम घट गई है। इस कारण ग्रामों का अत्यन्त उन्नत और विकसित चर्मोद्योग बिलकुल टूट गया है। देश में जो शहरी केन्द्रित चमड़ा उद्योग चल रहा है वह गंगा-जमुना, कावेरी-गोदावरी, कृष्णा जैसी नदियों के किनारों पर ही है जो इन सभी पवित्र नदियों को खतरनाक सीमा तक प्रदूषित कर रहा है। गाय-बैलों का कतल बन्द होने पर ही ग्रामीण चर्मोद्योग का पुनरुद्धार हो सकेगा।

यद्यपि समस्त मानवता का भविष्य गो-केन्द्रित समाज व्यवस्था विकसित करने पर निर्भर है किन्तु भारत के लिये तो यही एकमात्र मार्ग है। यदि भारत इस दिशा में पहल करेगा तो दुनिया भी उस और झुकेगी और अन्ततः ''गावोविश्वस्य मातरः'' मंत्र सिद्ध हो जायगा।

इस सारे विश्लेषण का निष्कर्ष यही है कि—

१. सारे देश में केन्द्रीय कानून बनाकर तत्काल सम्पूर्ण गोवंश का कतल प्रतिबन्धित कर देना चाहिये। और,

२. देश से मांस का निर्यात तत्काल प्रभाव से बन्द करना चाहिये।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश द्वारा कामधेनु की स्तुति

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्। त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे॥
शशिसूर्यारुणा यस्या ललाटे वृषभध्वजः। सरस्वती च हुंकारे सर्वे नागाश्च कम्बले॥
क्षुरपृष्ठे च गन्धर्वा वेताश्चत्वार एव च। मुखाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च॥

(स्कन्द०, ब्रह्म० धर्मारण्य० १०। १८-२०)

'हे निष्पापे! तुम सब देवताओं की माता, यज्ञ की कारणरूपा और सम्पूर्ण तीर्थों की तीर्थरूपा हो। हम तुम्हें सदा नमस्कार करते हैं। तुम्हारे ललाट में चन्द्रमा, सूर्य, अरुण, और वृषभध्वज शंकर हैं, हुंकार में सरस्वती, गलकम्बल में नागगण, खुरों में गन्धर्व और चारों वेद तथा मुखाग्र में चर एवं अचर सम्पूर्ण तीर्थ विराजमान हैं।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोग्रास का महत्त्व

गोग्रास-दान का अनन्त फल

डॉ० वामदेव मिश्र
अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

नमो गोभ्य: श्रीमतीभ्य: सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम:॥

सब प्रकार की पवित्रता एवं श्रीसम्पन्नता से युक्त ब्रह्मदेव की पुत्री तथा कामधेनु सुरभी की सन्तति गौओं को हम बार-बार प्रणाम करते हैं।

स्थावरजङ्गमात्मक इस सृष्टि में समस्त प्राणियों का उपकारक प्रतीक गौ है। यह मनुष्यों के अधीन रहकर भी उसका विशेष उपकार करती है। इसमें सभी देवता निवास करते हैं। अत: इसे विश्वरूप कहा जाता है।

पृथ्वी को भी गौ कहते हैं[3]। पूरी सृष्टि के पोषक तत्त्व, इस पर औषधियों तथा वनस्पतियों के रूप में विद्यमान हैं[4]। इनका उपयोग प्राय: पशुरूप गौ करती है एवं उनके गुणधर्म को और भी शुद्धतम तत्त्व, दूध, दही, घी आदि गव्य रूप में प्रदान करती है।

इन पदार्थों के सेवन से आधिभौतिक, आधिदैविक तथा अध्यात्मिक तीनों ही प्रकार की उन्नतियों में सहायता मिलती है। गव्य पदार्थों के उपयोग से तथा गौओं की सुश्रूषा से पारिवारिक जीवन का सम्पोषण, यागादि दिव्य फलदायिनी विधियों का सम्पादन एवं संरक्षण तथा सात्त्विक दिव्य व्यवहार से आध्यात्मिक समृद्धि प्राप्त होती है। इस प्रकार यह सांसारिक बन्धनमुक्ति तथा परमपुरुषार्थ का कारण है।

ऐसी समस्त अभीष्ट सम्पत्तिदायिनी महिमामयी[5] गोमाता की सपर्या एवं परिचर्या का ऐहिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है[6]। इनके विविध प्रकार हैं, जिनमें अन्यतम, गौओं को ग्रास (इनके लिए उपयोगी भोज्य पदार्थ) प्रदान करना है। इसके महत्त्व के सन्दर्भ में विविध दृष्टियों से वाङ्मय भरा पड़ा है। यहाँ दिग्दर्शन मात्र प्रस्तुत है—

महाभारत के अनुसार जो एक वर्ष तक प्रतिदिन स्वयं भोजन से पहले दूसरे की गौओं को एक मुट्ठी घास खिलाता है, उसका वह व्रत समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है[7]।

जो गोसेवा का व्रत लेकर प्रतिदिन भोजन से पहले गौओं को ग्रास अर्पण करता है तथा शान्त निर्लोभ होकर

१. सर्वे देवा: स्थिता देहे सर्व देवमयी ही गौ:।
२. (क) एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्। (*अथर्व०* ९/७/१/२५)
(ख) *बृहत्पाराशर स्मृति* (५/३४-४१)
(ग) *पद्मपुराण*, सृष्टिखण्ड (५७/१५६-१६५)
(घ) *भविष्यपुराण*, उत्तर पर्व (६९/२५-३७)
(ङ) *ब्रह्माण्डपुराण*, गोसावित्री स्तोत्र
(च) *स्कन्दपुराण*, रेवाखण्ड, अ० ८३।
(छ) *महाभारत*-आश्वमेधिक पर्व, अ० ९२।
(ज) *महाभारत*-आश्वमेधिक पर्व, ५१/२७-३४।
३. 'गो इति पृथिव्यानामधेयम्' निरुक्त २/२।
४. पृथ्वीसूक्त-*अथर्व० सं०।*

५. (क) *महाभारत*, अनुशासन पर्व, ५१/२६-३४।
(ख) *महाभारत*, अनुशासन पर्व, ६९।
(ग) *भविष्यपुराण*, उत्तरपर्व, अ० ६९।
(घ) *पद्मपुराण*, सृष्टिखण्ड, ५७/१५१-१५६।
(ङ) *अग्निपुराण*, २९२/१-२२।
(च) *बृहत्पाराशरस्मृति*, अ० ५।
६. (क) *विष्णुधर्मोत्तरपुराण*, ३/२९१।
(ख) *विष्णुधर्मोत्तरपुराण*, २/४२
७. 'घासमुष्टिं परगवे दद्यात् संवत्सरं तु य:।
अकृत्वा स्वयमाहारं व्रतं तत् सार्वकामिकम्॥'
महा० अनु० अ० ६९।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सदा सत्य का पालन करता है, वह सत्यशील पुरुष प्रतिवर्ष एक सहस्त्र गोदान का पुण्य प्राप्त करता है[१]।

जो एक महीने तक गौओं को जौ आदि के आहार से सन्तुष्ट करता है, वह जो कुछ भी अभिलषित पदार्थ हो उसे प्राप्त करता है[२]।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार, गौओं को ग्रास (भोजन) प्रदान करने से महान् पुण्य होता है[३]। वे गौवें सभी प्रकार से पूजनीय, कीर्तनीय एवं नमस्कार योग्य हैं। उन्हें सदा भोजन देना चाहिये और उनकी सेवा भी करनी चाहिये[४]। गौओं को भूसा खिलाने से व्यक्ति रूपवान होता है[५]।

अग्निपुराण के अनुसार, गौओं को ग्रास देने वाला व्यक्ति स्वर्ग को प्राप्त करता है[६]।

बृहत्पाराशर स्मृति के अनुसार जो गौओं को प्रतिदिन जल तृण सहित भोजन कराता है, उसे अश्वमेध यज्ञ करने से प्राप्त होने वाले फल के समान फल प्राप्त होता है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है[७]। ऐसे निर्देशों का बहुत बड़ा विस्तार है।

गोग्रास देने के विधि के सन्दर्भ में ज्ञातव्य है कि सामान्य परिचर्या क्रम में यथासमय गौओं को भोजन, चारा, पानी तो दिया ही जाता है। विशेष परिचर्या में गोपूजन-पूर्वक नीचे लिखे हुए श्लोकों का पाठ करते हुए गोग्रास को अपने हाथ से को खिलाना चाहिये। गोग्रास देते समय पाठ के श्लोक—

सौरभेय्यः सर्वहिताः
पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं
गावस्त्रैलोक्यमातरः॥[८]

[सुरभि की सन्तति, सबका हित करने वाली पवित्रा, पुण्य की राशि एवं तीनों लोकों की मातृरूपा गायें मेरे ग्रास को स्वीकार करें।]

सुरभी वैष्णवी माता
नित्यं विष्णुपदे स्थिता।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं
सुरभी मे प्रसीदतु॥[९]

[सुरभि, वैष्णवी, मातृरूपा तथा नित्य विष्णुपद में निवास करने वाली गौएँ मेरे ग्रास को स्वीकार करें तथा मुझ पर प्रसन्न होवें।]

गौओं को ग्रास देने के बाद उनकी परिक्रमा करते हुए पाठ करें—

गावो ममाग्रतो नित्यं
गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव
गवां मध्यो वासम्यहम्॥[१०]

[गायें सदा मेरे आगे रहें, गायें सदा मेरे पीछे रहें, गायें मेरे चारो ओर रहें और मैं गायों के बीच में निवास करूँ।]

और अन्ततः बोलें तथा और प्रणाम करें।

॥ ॐ गोभ्यो नमः॥

■■

---

१. 'योऽग्रं भक्तः किञ्चिदप्राश्य दद्यात् गोभ्यो नित्यं गोव्रती सत्यवादी।
शान्तोऽलुब्धो गोसहस्रस्यपुण्यं सम्वत्सरेणाप्नुयात् सत्यशीलः॥'
महा० अनु० अ० ७३/३०।

२. 'मासं यवसदानेनाभीष्टं च लभते ध्रुवम्।' *महा० अनु०*

३. 'गवां ग्रासप्रदानेन पुण्यं सुमहदश्नुते।'
विष्णुधर्मोत्तर पुराण २/४२।

४. 'पूज्यास्तातु नमस्कार्याः कीर्तनीयाश्च तास्तथा।'
तासामाहारदानं च कार्यं शुश्रूषणं तथा॥
विष्णुधर्मोत्तर, ३/२९१।

५. 'गवां यवसदानेन रूपवानभिजायते।' *विष्णुधर्मोत्तर, २/४२।*

६. (क) 'परगोग्रासदः स्वर्गी।'
(ख) 'गवां ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते।' *अग्निपुराण*

७. 'तृणोदकादि संयुक्तं यः प्रदद्याद्गवाह्निकम्।
सोऽश्वमेध समंपुण्यं लभते नात्र संशयः॥'
बृहत्पाराशरस्मृति अ० ५।

८. अह्निक कर्मसूत्राबलि
पञ्चमहायज्ञ विधि

९. नित्यकर्म विधि *बलि वैश्वदेव विधि*

१०. महा० अनु०। ८०/३।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो सेवा परमोधर्मः

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

दानदाताओं का विवरण सन् १९९८-९९

गोपाष्टमी संवत् २०५६

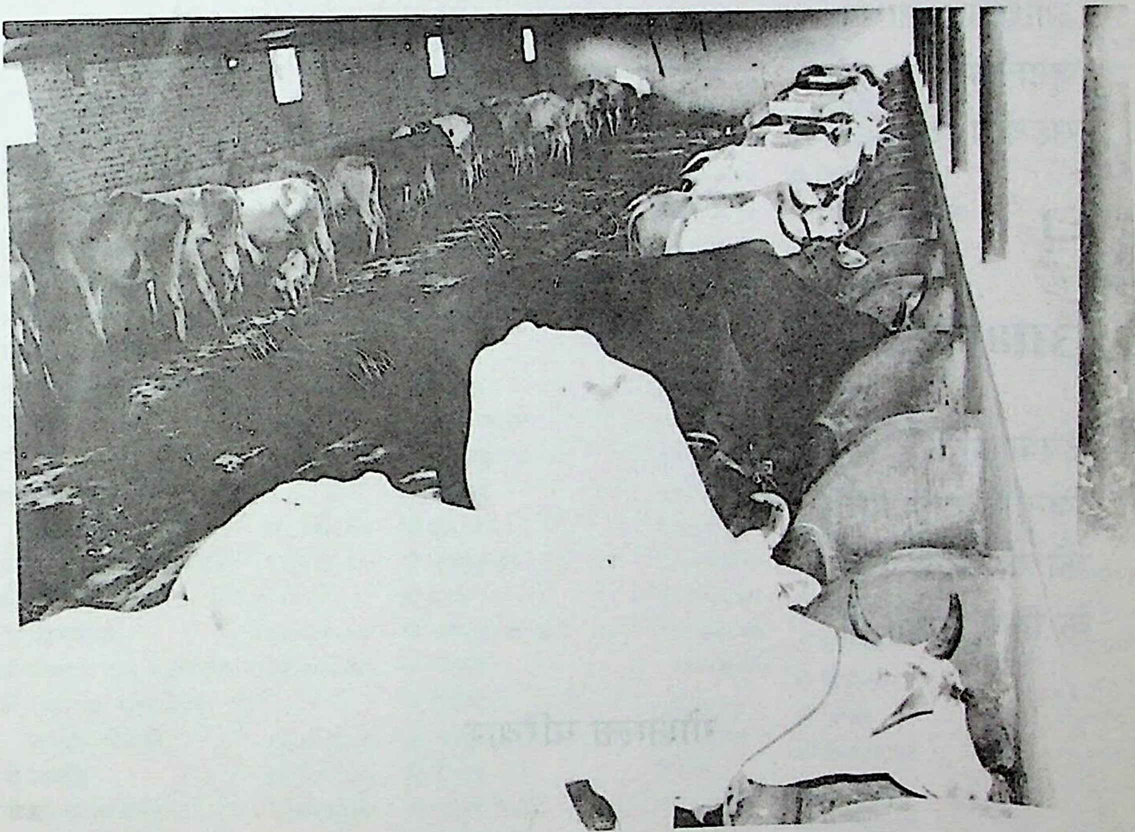

भक्तों द्वारा समर्पित गोअंश के माध्यम से सुलभ कराए गये
गोग्रास को ग्रहण करती हुईं गोमाताएँ

गवां ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते

गायों को नियमित ग्रास मात्र देने से मनुष्य स्वर्गलोक में सम्मानित होता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साधुवाद

जिन्होंने
गोग्रास तथा गोशाला के विविध कार्यों
के लिए
आर्थिक संसाधन
जुटाने में
सहयोग दिया

❑

आभार

उनके प्रति
जिन्होंने दाताओं
को गो-सेवा
के लिए प्रेरणा दी

गोशाला परिवार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

दानदाताओं का विवरण सन् १९९८-९९

गोपाष्टमी संवत् २०५६

गोशाला रामेश्वर शाखा

दानदाता	रुपया
श्री सेठ किशोरीलाल जालान सेवा ट्रस्ट	७,६४,०२२.००
श्री भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई	८,००,०००.००
श्री सुरभि शोध संस्थान	३,००,०००.००
श्री रामनारायन राठी, मुम्बई	५१,०००.००
श्री रामकुमार रूँगटा	२६,१००.००
श्रीमती स्व० गीतादेवी	२६,०००.००
श्रीमती गातीदेवी, कलकत्ता	१६,०००.००
श्रीमती रेनु जालान, कलकत्ता	१६,०००.००
श्री जितेन्द्र मोहन मोदी	१६,०००.००
श्री एस० एन० श्रीवास्तव लहरतारा, वाराणसी	१५,०००.००
श्री सुरेका पब्लिक चै० ट्र०	१४,०००.००
श्रीमती शकुन्तलादेवी कानोडिया	११,०००.००
श्री बैजनाथ दास भालोटिया	११,०००.००
श्री यूकीयाह, साफ्टवेयर सलुसन, दिल्ली	११,०००.००
श्री किशोर	११,०००.००
श्रीमती कृष्णा बर्मन	११,०००.००
श्री नन्दलाल मतादीन सेवा ट्रस्ट	११,०००.००
मुगलसराय जूनियर चेम्बर	११,०००.००
मे० रंग सेन्टर, भदोही	१०,२००.००
श्री धर्म संघ सहायक समिति, कलकत्ता	१०,०००.००
श्री रामकृष्ण	१०,०००.००

दानदाता	रुपया
श्री नन्दकिशोर	१०,०००.००
श्री डॉ० मोहन वर्मा	१०,०००.००
रेशमी धागा संघ	१०,०००.००
श्री श्याम कन्हैया	१०,०००.००
श्री वशिष्ठ	१०,०००.००
श्री हीरालाल	१०,०००.००
श्री नन्दकिशोर	१०,०००.००
श्री हेमन्त	१०,०००.००
श्री सन्तोष	१०,०००.००
श्री अशोककुमार	१०,०००.००
श्री विरेन्द्रकुमार	१०,०००.००
श्री प्रभाकर	१०,०००.००
श्री हरिओम	१०,०००.००
श्री कृष्णकुमार	१०,०००.००
श्री रमेश	१०,०००.००
श्री ओमप्रकाश डागा	१०,०००.००
श्री गोपाल	१०,०००.००
श्री जटाशंकर	१०,०००.००
श्री अमित	१०,०००.००
श्री विनोद	१०,०००.००
श्री कमल किशोर	१०,०००.००
श्री लल्लु साव	१०,०००.००
श्री नरसिंह दास	१०,०००.००
श्री मणिशंकर	१०,०००.००
श्री राजेन्द्र	१०,०००.००
श्री गौरी शंकर	१०,०००.००
श्री त्रिभुवन	१०,०००.००
श्री कपिल	१०,०००.००

दानदाता	रुपया
श्री सूर्यनाथ	१०,०००.००
श्री अखिलानन्द	१०,०००.००
श्री शिवानन्द	१०,०००.००
श्री मोहाव ग्राम, सुरवा	१०,०००.००
श्री शिवकुमार	१०,०००.००
श्री गोपाल बन्धु	९,८५०.००
श्री संजीवकुमार	९,५००.००
श्री विजय बहादुर	९,५००.००
श्री नागेश्वर	९,५००.००
श्री जमुना प्रसाद	९,५००.००
श्री राजू	९,५००.००
श्री पुरुषोत्तम	९,५००.००
श्री श्रीगोपाल करवा, कलकत्ता	९,०००.००
श्री मोतीलाल	९,०००.००
श्री रामकिशोर	९,०००,००
श्री राजकुमार	९,०००.००
श्री विश्वनाथ	९,०००,००
श्री दिनेश	९,०००.००
श्री विजयशंकर	९,०००,००
श्री बाबूलाल	८,५००.००
श्री समीरकुमार	८,५००.००
श्री प्रकाश	८,५००.००
श्री अनिल	८,५००.००
मे० झुनझुन वाला आयल मिल्स लि०	८,५८८.००
श्री प्रकाश	८,५००.००
श्री रामनाथ	८,५००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया
श्री छोटेलाल	८,५००.००	श्री बालचन्द	७,०००.००	मे० आर० आर० सलेक्शन	५,१००.००
श्री अजय	८,५००.००	श्री आशुतोष	७,०००.००	श्री रामकृष्ण शास्त्री	५,००१.००
श्री अनुराग	८,५००,००	श्री प्रमोद	७,०००.००	श्री सीतानन्द	५,०००.००
श्री मसानु	८,५००.००	श्री दशरथ	७,०००.००	श्री हरिहर	५,०००.००
श्री मंगलप्रसाद	८,५००.००	श्री दुक्खी यादव	७,०००.००	श्री दुक्खी यादव (डबल)	५,०००.००
श्री अशोक	८,५००.००	श्री राधेश्याम	६,५००.००	श्री सुशील राम	५,०००.००
नरसिंग चैरिट्रैबुल ट्रस्ट	८,०००.००	श्री दिनकर	६,५००.००	श्री सत्यनारायण धूत	५,०००.००
श्री विक्रम राजभर	८,०००.००	श्री महादेव	६,५००.००	श्री अवधेश	५,०००.००
श्री राधेश्याम यादव	८,०००.००	श्री राधेमोहन	६,५००.००	श्री रमेश जी	५,०००.००
श्री बुद्धदेव राजभर	८,०००.००	श्री लायन्स कल्ब (कृष्णा)	६,१००.००	श्री गोविन्द	५,०००.००
श्री विनोद सिंह	८,०००.००	श्रीमती उमा देवी अग्रवाल	६,०००.००	श्री राजेश	५,०००.००
श्री उमाकान्त	८,०००.००	मे० केशव नीलू स्टील्स		श्री लक्ष्मण	५,०००.००
श्री मधुसूदन	८,०००.००	प्रा० लि०	६,०००.००	श्री कृष्णकुमार	५,०००.००
श्री देवनाथ	८,०००.००	श्री राधेश्याम खेमका	६,०००.००	मे० कुशवाहा ब्रदर्स	५,०००.००
श्री जयराम दास	८,०००.००	श्रीमती राधादेवी कोठारी	६,०००.००	श्री रामेश्वरदास अग्रवाल	५,०००.००
श्री बसन्त	८,०००.००	श्री राजकुमार कोठारी	६,०००.००	श्री हरिदेव कृपा	५,०००.००
श्री सुरेन्द	८,०००.००	मे० रमश वस्त्रालय	६,०००.००	श्री सीताराम अग्रवाल	५,०००.००
श्री मुकेश	८,०००.००	श्री संजीव अग्रवाल	६,०००.००	श्री रघुनाथ प्रसाद केजरीवाल	५,०००.००
श्री कतवारू	८,०००.००	श्री राजकुमार सरावगी	६,०००.००	श्रीमती सविता मूंदड़ा, मुम्बई	५,०००.००
श्री विशम्भर	८,०००.००	श्री आत्माराम पोद्दार, शिवपुर	६,००१.००	मे० राजस्थान कार्पोरेशन	५,०००.००
श्री शिवमोहन	८,०००.००	श्रीमती अनीता अग्रवाल, शिवपुर	६,०००.००	श्रीमती मीना रानी	५,०००.००
श्री अवधेश	८,०००.००	श्री सुशील कुमार सोकानी	६,०००.००	श्री परमानन्द खेमका	४,५००.००
श्री प्रमोद	८,०००.००	मे० रस्तोगी बनारसी सिल्क	६,०००.००	श्री छोटू यादव	४,०००.००
श्री कन्हैयालाल	८,०००.००	श्रीमती सीतादेवी, शिवपुर	६,०००.००	श्री दुर्गा राजभट	४,०००.००
श्री अनूपकुमार	८,०००.००	श्री विशम्भर प्रसाद अग्रवाल	६,०००.००	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	
श्री पवन	८,०००.००	श्री पंकज राजगदिया	६,०००.००	दलहन विकास गोष्ठी के	
लायन्स क्लब (सूर्या)	८,०००.००	श्री देवीप्रसाद अग्रवाल	६,०००.००	तत्त्वावधान में	४,०००.००
श्री गोविन्द	७,५००.००	श्री रघुनाथ	६,०००.००	श्री राजेश यादव	३,५००.००
श्री राजबन्धु	७,५००.००	श्री नन्दराम भिवानीवाला		स्व० प्रयागनारायन झुनझुनवाला	३,१००.००
श्री देवानन्द	७,५००.००	चे० ट्र०	६,०००.००	सेठ नन्दलाल बाजोरिया चै० ट्र०	३,१००.००
श्री सुभाष	७,५००.००	श्री श्याम	६,०००.००	मे० जाफरी एण्ड सन्स	३,१००.००
श्री विवेक	७,५००.००	श्री हीराराम सुलतानियाँ	५,१००.००	मे० इकराम खान एण्ड सन्स	३,०००.००
श्री सुरेन्द्र	७,५००.००	श्री शैलेन्द्रकुमार अग्रवाल	५,१००.००	श्री श्यामलाल शाह	३,०००.००
श्री बच्चन राम (बेरवा)	७,५००.००	श्री संजीव कुमार अग्रवाल,		श्री मदनलाल जिन्दल	३,०००.००
श्री मेघराज झँवर	७,५००.००	शिवपुर	५,१००.००	रेशम खादी विकास समिति	२,५००.००
श्री राजनाथ (सजोइ)	७,२००.००	श्रीमती अमिता अग्रवाल	५,१००.००	श्री सुरेश राम	२,५००.००
श्री राजेश	७,०००.००	श्री नन्दलाल गाड़ोदिया	५,१००.००	श्री लायन्स क्लब	२,५००.००
श्री घनश्याम	७,०००.००	श्री यस० के० अग्रवाल	५,१००.००	श्री आर० सी० बूबना, जलगाँव	२,४००.००
श्री विजयकुमार	७,०००.००	श्री दीपक अग्रवाल	५,१००.००	मे० अनिरुद्ध फ्लावर मील्स	२,३३०.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दानदाता	रुपया
श्रीमती पूर्णिमा वागड़िया, कलकत्ता	२,१००.००
मे० सनमून फैब्रिक्स, भीलवाड़ा	२,१००.००
श्री बाबूलाल खेतान, कलकत्ता	२,१००.००
श्री रामअवतार खेमका	२,१००.००
मे० ए० के० साड़ी	२,१००.००
श्री लायन्स क्लब (चन्द्रा०)	२,१००.००
श्रीमती पुष्पा बेन	२,०४०.००
श्री पवनकुमार मोदी	२,०००.००
श्री शिवपूजन शाह	१,६००.००
श्रीमती पद्मादेवी विमानी	१,७४०.००
मे० वैभव	१,६५१.००
श्री अजीत सिंह	१,५००.००
श्री सुशीलकुमार एण्ड सन्स	१,५००.००
श्री व्रज रतन डागा (वीना सर)	१,२००.००
डॉ० ए० के० सिंह पशु चिकित्सा अधिकारी	१,६००.००
श्री शिव एण्ड दीपक	१,१००.००
श्रीमती विमलादेवी बहल	१,१७०.००
श्री तिवारी (कलकत्ता)	१,१००.००
श्री मधुसूदन जालान	१,१००.००
श्री अर्जुनलाल अग्रवाल	१,१००.००
श्री नन्दलाल भगवान दास जनसेवा ट्रस्ट	१,१००.००
श्रीमती कुसुम अग्रवाल	१,०००.००
श्री संजय कानोड़िया	१,०००.००

दानदाता	रुपया
श्री उमाशंकर गुप्ता	१,०००.००
श्री सुखलाल जी राठी	१,०००.००
श्री मण्डलीय	१,००१.००
मे० नालन्दा एण्ड कं०	१,०००.००
श्रीमती राजारानी	१,०००.००
श्री राजकुमार सोमानी	१,०५५.००
मे० कुसुम साड़ी केन्द्र	९४०.००
रविन्द्रपुरी कीर्तन मण्डल	७८०.००
श्री अनिलकुमार सारडा	७५०.००
श्री किशोर वाई जोशी	६५४.००
श्री मदन अग्रवाल	६२०.००
श्री रामकृष्ण जोशी	६००.००
श्री सुशील डिडवानियाँ	७००.००
श्री अजीतकुमार जैन	५७५.००
श्रीमती गीता सोंथोलिया	५५०.००
श्री किशन मोदी	५०१.००
श्री किशनचन्द्र सहगल	५००.००
मे० राजस्थान मार्बल्स	५०१.००
श्री राकेशकुमार तुलस्यान	५००.००
श्री के० डी० अग्रवाल	५००.००
श्री पुरुषोत्तमदास सिघानियाँ	५००.००
श्री हुकूमचन्द्र मल्होत्रा	५००.००
श्री रामकृपा	५०१.००
श्रीमती बीना मोदी	५००.००
श्री कामता प्रसाद एण्ड सन्स	५००.००
श्री ओमप्रकाश झँवर	५०१.००

दानदाता	रुपया
श्री राधेश्याम बागला	५००.००
श्री डॉ० अम्बेडकर सरस्वती विद्या मन्दिर (सोनभद्र)	५००.००
श्री गोकुल निकेतन	५००.००
श्री शीतल दास	५००.००
श्रीमती कमला देवी	५००.००
श्रीमती द्रोपदी बुबुना	५०१.००
श्री नन्दकुमार रुँगटा	५०१.००
श्रीमती बीना बाई	५००.००
श्री विजया	५००.००
श्रीमती रामरतीदेवी जद्दूमण्डी	५०१.००
श्री राय बहादूर लौटन शाह	५००.००
मे० इण्डिया स्टील कं०	५०१.००
श्री अनिल	५००.००
श्री राधेश्याम खेमका	५०१.००
श्री हरीवल्लभ नेभा	५००.००
श्री अनन्तराम पोद्दार	५००.००
श्री विजयन्तकुमार गुप्ता	५००.००
श्री ग्रामिण विकास समिति	५००.००
मे० इनूला फीडर मिल्स	५००.००
श्री गाँधी आश्रम सारनाथ	५००.००
श्रीमती शकुन्तला कानोडीया (डबल)	५००.००
श्री हरि ऑयल मिल्स	५०१.००
	३४,१५,२२८.००
फुटकर	४,१४,७३०.९७
योग	३८,२९,९५८.९७

गोशाला गोलघर (सदर)

दानदाता	रुपया
श्री सीताराम सेवा ट्रस्ट	७५०००.००
श्री नन्दरामका (भिवानी वाला) चैरि० ट्रस्ट	६७०००.००
श्री रामनारायण राठी, मुम्बई	५१०००.००
श्री नन्दलाल मातादीन सेवा ट्रस्ट	३६५००.००
श्री रामकुमार रूँगटा	३४४२६.००
श्री बृजमोहन मूंदड़ा	२६०००.००
श्री भरतकुमार सर्राफ	२५५००.००
मे० घनश्याम प्रिन्टर्स	२१०००.००

दानदाता	रुपया
श्री बनारसीदास अग्रवाल	२१,०००.००
श्रीमती रामजीवनीदेवी चै० ट्रस्ट	२१,०००.००
श्री वेङ्कटेश	२०,०००.००
मे० रीगा सुगर क० लि०	१५,५००.००
स्व० जानकीप्रसाद पोद्दार	१५,०००.००
मे० राधाकृष्ण विमलकुमार प्रा० लि०	१५,०००.००
मे० इन्डिया इम्पोरियम	१२,५००.००
मे० आई० के० सन्स	१२,५००.००

दानदाता	रुपया
मे० खेमका पेपर	१२,२००.००
श्री भरतलाल लडिया	११,२००.००
श्री शिवप्रसाद झुनझुनवाला	११,०००.००
श्री आर० पी० अग्रवाल	११,०००.००
श्री रघुनाथ लक्ष्मीनारायण	११,०००.००
मे० वी० एल० लड्ढा प्रा० लि०	११,०००.००
श्री वी० आर० अग्रवाल	११,०००.००
विशाल पाइप लि०	११,०००.००
मे० नन्दलाल भगवानदास	११,०००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ÇC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दानदाता	रुपया
स्व० पुष्पादेवी सरावगी	११,०००.००
श्री राजकुमार कोठारी	१०,०००.००
मे० पन्नी फूड प्रोडक्ट प्रा० लि०	७,१००.००
श्री सतीशकुमार गोयल	७,०००.००
श्री किशोरकुमार केजरीवाल	७,०००.००
श्री श्यामबिहारी अग्रवाल	६,१००.००
श्री मनोजकुमार सरावगी	६,०००.००
श्री अरुणकुमार आसर	६,०००.००
श्री विजयकुमार गोयल	५,५००.००
श्री वी० के० तनेजा	५,१००.००
मे० पूनम साड़ी	५,१००.००
मे० मेहता इण्डरनेशनल	५,१००.००
मे० सुशील ट्रेडर्स	५,१००.००
मे० बाबा साड़ीज	५,१००.००
मे० नवनीतदास मुकुन्ददास	५,१००.००
मे० यशवन्तीदेवी बलदेवदास	५,१००.००
मे० कला मन्दिर	५,१००.००
मे० ननदलाल मुकुन्दलाल	५,१००.००
मे० विश्वनाथप्रसाद मुकुन्दलाल	५,१००.००
मे० राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स	५,१००.००
श्री श्यामसुन्दर अग्रवाल	५,१००.००
मे० चौबे साड़ीज	५,१००.००
श्री हरनारायण सरोज राठी (गोला)	५,१००.००
मे० माँगीलाल कमलकिशोर	५,१००.००
मे० सिल्क इण्टरप्राइजेज	५,१००.००
मे० गणपति इण्टरप्राइजेज	५,१००.००
मे० संजय बाबू अग्रवाल	५,१००.००
मे० केशरी इण्टरप्राइजेज	५,१००.००
श्री हरीराम शाह, मुजफ्फरपुर	५,१००.००
मे० रोशन साड़ी प्रा० लि०	५,१००.००
मे० इण्डिया स्टील कं०	५,१००.००
श्री रामस्वरूप अग्रवाल	५,१००.००
मे० लक्ष्मी ट्यूब कं०	५,१००.००
मे० शक्ति स्टील ट्यूब्स	५,१००.००
श्रीमती इमरतिदेवी	५,१००.००
श्री श्यामसुन्दर सर्राफ	५,१००.००
श्री विजयशंकर सिंह	५,१००.००
श्री गोविन्ददास अग्रवाल	५,१००.००
श्री माँगीलाल सारडा	५,१००.००
मे० खेमका पेपर, श्रीमती राधादेवी	५,१००.००
श्री रघुनाथ अग्रवाल	५,१००.००
मे० अग्रवाल साड़ी निकेतन	५,०००.००
मे० अग्रवाल स्टोर्स	५,०००.००
मे० वेलफेयर एनिमल बोर्ड	५,०००.००
श्रीमती सविता मुन्दड़ा	५,०००.००
मे० मैसूर ऐजेन्सी, बंगलोर	५,०००.००
मे० शिव एण्ड दीपक	४,६००.००
मे० किशनलाल ऋषिकेश	४,५०१.००
श्री वासुदेव रूँगटा	४,१००.००
श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार स्मृति सेवा ट्रस्ट	४,१००.००
श्री आशाराम चाण्डक द्वारा श्री नारायण चोडक	४,१००.००
श्री सतीश चन्द्र गुप्ता	४,०००.००
श्री भगवानदास अग्रवाल (रविन्द्रपुरी)	३,८५०.००
श्रीमती दुर्गाबाई सांगनेरिया	३,६००.००
मे० ज्ञान साइन्टिफिक	३,४७५.००
श्री जोशी	३,४००.००
मे० परमेश्वरलाल राजकुमार	३,१००.००
श्री बजरंगलाल पसारी	३,१००.००
श्री अग्रवाल अर्नामेन्ट हाऊस	३,१००.००
श्री विन्ध्यवासिनी अग्रवाल	३,१००.००
श्री परमेश्वरलालजी, कलकत्ता	३,०००.००
मे० देवता सिल्क हाऊस	३,०००.००
भटनागर मेमोरियल ट्रस्ट	२,६९०.००
श्री प्रभुदास गुजराती	२,५००.००
मे० अग्रवाल सिल्क इम्पोरियम	२,२६६.००
मे० रमेशचन्द्र अरुणकुमार	२,२००.००
श्री के० पी० गुप्ता	२,१०१.००
मे० मोहनलाल जयनारायण	२,१००.००
श्रीमती गोमतीदेवी खेमका	२,१००.००
श्री राजेशकुमार मौर्य	२,१००.००
मे० सुमित कला केन्द्र	२,१००.००
श्री गोविन्ददास अग्रवाल	२,१००.००
श्री विष्णु पसारी	२,१००.००
श्री यस० ठाकुर	२,१००.००
श्री मथुरालाल कैलाश प्रसाद राठी	२,१००.००
मे० सुचित्रा साड़ी प्रा० लि०	२,१००.००
श्री धरमचन्द	२,१००.००
श्री माधव संस्कृत पाठशाला	२,००१.००
श्रीमती सावित्रीदेवी	२,०००.००
स्व० राजकुमार गोयल	२,०००.००
श्री पवनकुमार	२,०००.००
श्री सजनकुमार	२,०००.००
श्री राजकुमार	२,०००.००
श्री प्रवीणकुमार	२,०००.००
श्री अमरनाथ	२,०००.००
मे० बंगलोर सिल्क हाऊस	२,०००.००
श्री मोहनलाल लड्ढा	२,०००.००
श्री वासुदेव (कोल्हापुर)	१,६००.००
श्री चन्द्रकुमार गुप्ता	१,५००.००
श्री रविकुमार गुप्ता	१,५००.००
मे० जैन ट्यूब्स	१,५००.००
श्री जितेन्द्र मिश्रा	१,५००.००
श्री राणी सती श्याम भक्त मण्डल	१,३५१.००
श्री विशम्भरी	१,३५०.००
मे० वैष्णो यार्न ट्रेडर्स	१,३००.००
श्री त्रिलोकीनाथ	१,२८६.४०
स्व० रामदयाल लाखोटिया (गाजीयाबाद)	१,२५०.००
श्रीमती जानकीदेवी लाखोटिया (गाजीयाबाद)	१,२५०.००
स्व० वंशीदेवी लाखोटिया	१,२५०.००
श्री शिवरतन लाखोटिया	१,२५०.००
श्री भरत	१,२५०.००
श्री गोपाल	१,२५०.००
श्रीमती उर्मिला पाटोदिया	१,२२५.००
श्रीमती सत्यभामा बाई मुवालका	१,२००.००
श्रीमती किरनदेवी पोद्दार	१,२००.००
श्रीमती परमेश्वर बाई बूबना	१,२००.००
श्री रामचरन मिश्रा	१,२००.००
मे० सरस्वती किराना स्टोर्स	१,१११.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया
श्री लड्ढा हौजरी कम्पनी	१,१००.००	श्री महेन्द्रकुमार, आनन्द मदानी	१,००१.००	मे० पुसा रामजी	५०१.००
श्री पुरुषोत्तमदास धानुका	१,१००.००	श्री बिहारी	१,०००.००	श्री ओमप्रकाश	५०१.००
श्री ललित बिहारी सिंघल	१,१००.००	श्री सन्तोष श्रीवास्तव	१,०००.००	श्री सन्तोषकुमार	५०१.००
श्री लक्ष्मी निवास भुरारिया	१,१००.००	श्री चन्द्रा बजाज	१,०००.००	श्री प्यारेलाल	५०१.००
मे० दीपिका साड़ी	१,१००.००	श्रीमती गायत्रीदेवी बाजोरिया	१,०००.००	हाजनी नईमुद्दीन	५०१.००
श्री गोपाल (पूज्य दादाजी)	१,१००.००	श्री नागेन्द्र यादव	१,०००.००	श्री गोपालदास मनीकुमारी	५०१.००
श्री शरद लिल्हा	१,१००.००	श्री दिनेशकुमार	१,०००.००	मे० विंध्य मेडिकल	५०१.००
मे० एम० बी० साड़ी प्रा० लि०	१,१००.००	श्री सतीश चन्द्र	१,०००.००	मे० विश्वनाथ मेडिकल	५०१.००
मे० राधेश्याम पेपर स्टोर्स	१,१०१.००	श्री नन्दलाल भगवान दास	८१०.००	मे० अनुभव	५०१.००
श्री दोसी राम	१,१००.००	श्री अशोक पोद्दार	७५१.००	श्री रघुनाथप्रसाद प्रहलादका	५०१.००
मे० यार्न हाऊस	१,१००.००	श्री चन्द्रमोहन (पशुपतेश्वर)	७२१.००	मे० सुरेखा आर्टस	५०१.००
मे० विश्वनाथ ट्रेडर्स	१,१००.००	श्री नागेन्द्र यादव	६००.००	श्री शिवदास (बजरडीहा)	५०१.००
मे० जमुना साड़ी केन्द्र	१,१००.००	श्रीमती कमलादेवी दम्मानी	५९७.००	श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल	५०१.००
श्री मोहन लाल	१,१००.००	श्री गिरधारीलाल दरक	५५०.००	श्री मुरारीलाल डिडवानियाँ	५०१.००
श्री विजय शंकर	१,१००.००	श्री मोहनलाल काबरा	५५०.००	मे० जिन्दल ट्रेडर्स	५०१.००
मे० अभिषेक इण्टरप्राइजेज	१,१००.००	श्री मनीराम भिमसजका	५०१.००	श्री नवल सिंह	५०१.००
श्री चन्द्रप्रकाश धुत्त	१,१००.००	श्री मनीष मल्होत्रा	५०१.००	मे० राजहंस इलेक्ट्रिक	५०१.००
श्री श्यामल राम	१,१००.००	श्री गोविन्द दास खेतान	५०१.००	श्री मैनेजर यादव	५००.००
श्री बच्चालाल	१,१००.००	श्री एल० वी० सहगल	५०१.००	श्री जगदीशराज कापरिया	५००.००
मे० सुरेखा हैण्डलूम	१,१००.००	मे० एम० जी० ब्रदर्स	५०१.००	श्री कुमार केतकी	५००.००
श्रीमती मुन्नीदेवी (कलकत्ता)	१,१००.००	श्री नारायण प्रसाद		श्रीमती आशादेवी	५००.००
मे० दम्मानी एण्ड कम्पनी	१,१००.००	विष्णु प्रसाद मंसारी	५०१.००	श्री सन्त सोमेश्वरनाथ शुक्ल	५००.००
श्री वासुदेव अग्रवाल	१,१००.००	श्री गोपाल गोयल	५०१.००	मे० मानसिंहका एजेन्सी	५००.००
श्री विजय कुमार केडिया	१,१००.००	श्री किशनदास जगदीशकुमार	५०१.००	श्री सीताराम चाण्डक	५००.००
मे० गोविन्द दास एण्ड कम्पनी	१,१०१.००	मे० रानी सती इण्टरप्राइजेज	५०१.००	श्री श्रीवल्लभ चाण्डक	५००.००
मे० अग्रवाल ट्रेडिंग कम्पनी	१,१००.००	श्री अशोक सर्राफ	५०१.००	मे० अजन्ता सिल्क इम्पोरियम	५००.००
श्री चन्द्रा बजाज	१,१००.००	मे० जनरल ट्रेडर्स	५०१.००	श्री बिहारी	५००.००
श्री मुरारीलाल जालान	१,१००.००	मे० राजस्थान कार्पोरेशन	५०१.००	श्री मुरलीनारायण	५००.००
श्री अशोक खन्ना	१,१००.००	मे० रोहित टेक्सटाइल्स	५०१.००	योग	१०,४३,२४७.४०
मे० कमला मेडिकल हाल	१,००१.००	मे० एम० पी० साड़ी	५०१.००	फुटकर	५६,९५४.९०
					११,००,२०२.३०

गोशाला गोकुल (बावनबीघा) शाखा

दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया
श्रीमती कान्तादेवी करनानी	५,१००.००	श्री मोहन	३,०००.००	श्रीमती सीताबाई	५००.००
श्रीमती सीताबाई, कलकत्ता	५,१००.००	श्री अनिलकुमार राजेन्द्रकुमार बरनवाल	२,०००.००	श्रीमती कान्ताबाई	५००.००
कैवकान प्रा० लि०, कलकत्ता	५,१००.००	कैवकान प्रा० लि०	५००.००	फुटकर	२,३२१.००
एकता कंकरीट उद्योग	४,२००.००			योग	२८,३२१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशाला गोलक पेटी (सदर)

दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया
मे० रूपदर्शी साड़ीज प्रा० लि०	२,५४५.००	श्री बृजदास गुप्ता	३६१.००	श्री कुन्जलाल कोठारी	२०१.००
श्री भरत लडिया	१,३७८.००	श्री श्याम ब्रदर्स	३५२.००	मे० राणी सती वस्त्रालय	१९०.००
मे० मोहनलाल किशनचन्द	१,०९०.००	श्री शंकर तेल भण्डार	३५३.००	श्री नन्दकिशोर प्रहलादका	१७४.००
श्री भँवरलाल राठी	१,०२५.००	श्री कैलाश माहेश्वरी	३५१.००	मे० नारायणप्रसाद विष्णुप्रसाद	१६७.००
मे० हरि ऑयल स्टोर्स	९९०.००	मे० विशम्भरी सिल्क स्टोर्स	३३७.००	श्री विजय खेतान	१६२.००
श्री विश्वनाथ भावसिंहका	८०७.००	मे० भालोटिया सिल्क हाऊस	३३१.००	श्री दीलीप जैन	१५१.००
मे० बालाजी	८०५.००	श्री मामाजी पंखा वाले	३०१.००	श्री विजय सारस्वत	१५१.००
श्री अनूप सर्राफ	७७१.००	श्री राजेशकुमार चौरसिया	२८५.००	श्री वृजेशकुमार	१४८.००
मे० साड़ी म्यूजियम	७४६.००	मे० सुचित्रा प्रिन्टर्स	२८२.००	श्री अजय मोदी	१५३.००
श्री कमलेश बाजोरिया	७१३.००	श्री हुकूम चन्द्र माहेश्वरी	२७१.००	श्री सिद्धार्थ	१३६.००
श्री घनश्याम चाण्डक	७०१.००	श्री जगदीश माहेश्वरी	२७०.००	मे० पवन साड़ी	१३५.००
मे० बालाजी टेक्सटाइल्स	६५७.००	मे० अग्रवाल सिल्क स्टोर्स	२७५.००	श्री चन्द्रा बजाज	१३२.००
मे० शुभम् साड़ी सेन्टर	६०४.००	मे० प्रकाश ट्रेडर्स	२६७.००	श्री इन्दरलाल अग्रवाल	१२३.००
श्री राजकुमार बजाज	५४०.००	श्री विजय सिंघानिया	२५७.००	श्री देवेन्द्र बजाज	१३२.००
श्री विजय भगवान कश्यप	५१८.००	मे० तिरूपति एजेन्सीज	२५१.००	श्री रामनिरंजन बाजोरिया	१०२.००
श्री हरीप्रसाद गुप्ता	५१५.६०	श्री पराग मोदी	२३३.००	श्री राजकुमार तोदी	१०१.००
मे० सर्राफ साड़ी स्टोर्स	५०१.००	मे० जी० डी० साड़ी	२३२.००	श्री आनन्द स्वरूप अग्रवाल	१०१.००
श्रीमती सुधा देवी किशनचन्द	५००.००	श्री विजयकुमार कक्कड़	२१८.००	श्री किशन शाह	१०१.००
श्री माँगीलाल (मामाजी)	४९९.००	श्री बलदेव मुन्दड़ा	२१२.००	श्री जगदीश चाण्डक	१००.००
श्री जयकृष्ण वृन्दावन धाम	४६५.००	श्री प्रभात कोठारी	२०७.००	मे० चित्रकला साड़ी	१००.००
श्री मेघराज भगवानदास	४०८.००	श्री उमाशंकर अग्रवाल	२०५.००	मे० जगदम्बा सप्लायर्स	१००.००
मे० अग्रवाल साल्ट ट्रेडर्स	४००.००	मे० नन्दलाल स्टोर्स	२०२.००	मे० शिवम् साड़ी सप्लायर्स	१००.००
मे० मानसरोवर साड़ी	३६८.००	श्री शान्तीलाल जैन	२०२.००	श्री सत्यनारायण काबरा	१००.००
श्री अतुल	३६५.००	मे० जयपुर मूर्ति	२०१.००	योग	३३,०३८.७५

विश्वेश्वरगंज से प्राप्त

दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया
श्रीरामजी वृजेशकुमार माहेश्वरी	११,६००.००	ग्रेन मर्चेन्ट	२,१००.००	मे० हरी ऑयल मिल्स	१,५००.००
श्री मुकुन्दलाल रामाशंकर	४,२५१.००	मे० श्रीराम ट्रेडिंग कम्पनी	२,१००.००	मे० छन्नूलाल राजेशकुमार	१,५००.००
मे० अग्रवाल साल्ट	४,०००.००	मे० बजरंग ऑयल मिल्स	२,१००.००	मे० पुरुषोत्तमदास श्रीकृष्णदास	१,५००.००
मे० शम्भूनाथ अभयकुमार	३,०००.००	मे० गुलाबदास गोपालदास	२,१००.००	मे० शिवनारायण शम्भूनारायण	१,३३३.००
मे० मालपानी ट्रेडर्स	२,५००.००	मे० गोपालदास एण्ड कम्पनी	२,०००.००	मे० बनारस ट्रेडिंग कम्पनी	१,१००.००
मे० रामनारायण काशीनाथ	२,३२८.००	मे० सिंघल ट्रेडिंग कम्पनी	१,५०१.००	मे० हनुमान ट्रेडिंग कम्पनी	१,१००.००
मे० जयकृष्णदास रणजीत प्रसाद	२,२५६.६२	श्री राजेश जायसवाल	१,७००.००	मे० गोपालदास राजकृष्णदास	१,१००.००
मे० रामेश्वर दास पन्नालाल	२,१००.००	मे० शिव शक्ति उद्योग	१,५००.००	मे० बालाजी गल्ला भण्डार	१,१००.००
मे० संकठा जागरी एण्ड		मे० अग्रवाल साल्ट ट्रेडर्स	१,५००.००	मे० राजेन्द्रनाथ बनारसीदास	१,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया	दानदाता	रुपया
मे० चौधरी इण्टरप्राइजेज	१,१००.००	मे० भग्गूलाल रघुनाथ प्रसाद	७०१.००	श्री प्रेमकुमार जायसवाल	५०१.००
मे० प्रभात इण्टरप्राइजेज	१,१००.००	मे० शरण शंकर कृष्णकान्त	७०१.००	मे० ओमप्रकाश श्रीप्रकाश	५०१.००
मे० गोर्वधनदास सुधीरकुमार	१,१००.००	मे० आत्माराम अशोककुमार	७००.००	मे० लक्ष्मीनारायण भण्डार	५००.००
श्री पन्नालाल	१,१००.००	मे० छन्नूलाल लक्ष्मीनारायण	७००.००	मे० श्यामशक्ति इण्टरप्राइजेज	५०१.००
मे० गंगा माता ट्रेडिंग कम्पनी	१,१००.००	मे० अग्रवाल ऑयल मिल्स	५००.००	मे० अजय ट्रेडिंग कम्पनी	५०१.००
मे० प्रभुराम रामजी	१,१००.००	मे० वाराणसी इस्पात उद्योग	५०१.००	मे० वाराणसी सुगर सप्लाई	५००.००
मे० अन्नपूर्णा सुगर ट्रेडिंग कं०	१,१००.००	मे० संजीव इण्टरप्राइजेज	५००.००	श्री विंध्यवासिनी प्रसाद	५०१.००
मे० अम्बर ट्रेडिंग कम्पनी	१,००१.००	मे० प्रकाश ट्रेडर्स	५००.००	श्री रघुानथ प्रसाद	५०१.००
मे० शिवशंकर उमाशंकर	१,००१.००	मे० अशोक एजेन्सी	५००.००	मे० विवेककुमार ण्ड ब्रदर्स	५००.००
मे० छन्नूलाल बालकृष्णदास	१,००१.००	मे० मूलचन्द गनपतलाल	५०१.००	मे० छेदीलाल हीरालाल	५०१.००
मे० चौथीराम चुन्नीलाल	७५१.००	मे० छन्नूलाल लालजी	५०१.००	मे० न्यू गोपाल भण्डार	५००.००
मे० आनन्द ट्रेडिंग कम्पनी	७५१.००	श्री रामशरण सिंह	५०१.००	श्री राजकुमार बजाज	५००.००
मे० राधिका ट्रेडिंग कम्पनी	७५१.००	श्रीमती इन्दूदेवी	५००.००	योग	९६,२९७.३२
मे० नारायन ब्रदर्स	७५१.००	श्री गुलाबदास गोपालदास	५०१.००		
मे० कन्हैयालाल एण्ड सन्स	७०१.००	मे० विकास ट्रेडर्स	५०१.००		

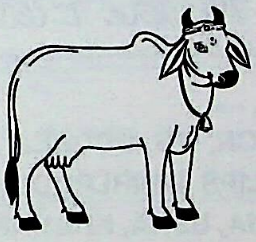

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः।
तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानपि सुदर्लभान्॥
द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्यं सुखप्रदः।
अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत॥
दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां त्युष्टि तथाश्नुते।

''जो पुरुष गौओं की सेवा करता है और सब प्रकार से उनका अनुगमन करता है, उस पर सन्तुष्ट होकर गौएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओं के साथ मन से भी कभी द्वेष न करें, उन्हें सदा सुख पहुँचायें, उनका यथोचित सत्कार करें और नमस्कार आदि के द्वारा उनका पूजन करते रहें। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित होकर नित्य गौओं की सेवा करता है, वह समृद्धि का भागी होता है।''

प्रस्तुति : श्री हरिशंकर जालान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From

R.D. Kothari & Co.

Largest Ultra Modern Electronics Showroom

SONY, L.G., BPL, VIDEOCON, IFB, GODREJ, AIWA, HITACHI, PANASONIC, SYNPHONY, CITIZEN, PHILIPS, WHIRLPOOL, BAJAJ, INALSA, SUNFLAME, LIFETIME, BRAUN, MEDIA, USHA, KHAITAN, CINNI, SINGER, SOFTEL, EUREKA FORBS, CLEARLINE, TATA PHONE, BEETAL, ORPET, SUMEET, TITAN, TIMEX, MAXIMA, IFB DISHWASHAR, MOULINEX, NATIONAL

AND

OTHER ELECTRICAL HOME APPLIANCES.

Near Radio Station, Mahmoorganj, VARANASI

Phone : 223037, 223042

Branch

Hathua Market, VARANASI Phone : 357285

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संख्या——————

सोसाइटी के नवीकरण का प्रमाण-पत्र

नवीकरण संख्या——————199६

फाइल संख्या I—1210—

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि दि काशी जीवदया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला ——————को दिये गये रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र संख्या 70/1934.35 दिनांक 26. 2.1935 को दिनांक 10-10-85 से पांच वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया है।

100/- रुपये की नवीकरण फीस सम्यक रूप से प्राप्त हो गयी है।

दिनांक 23.4. 1996

सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश।

पी०एस०यू०पी०—ए०पी० 5 फार्म्स निबंधक—6-2-92 (2737)—1992—1,50,000 (कि०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
कार्यालय आयकर आयुक्त
वाराणसी

पत्रांक आयुक्त/62/मुख्यालय-II/317/99-2000/1947 दिनांक सितम्बर 99
1.11.99

सेवा में,

प्रधान मंत्री
डॉ. श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला
K 60/25 दूधविनायक जी मंदिर
वाराणसी

विषय :- आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी (5)(vi) के अधीन मान्यता प्रदान करने के लिए अनुरोध -

उपरोक्त विषय पर दिनांक शून्य को दाखिल आपकी नवीनीकरण याचिका [पेटीशन] के सन्दर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि

डॉ. श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अन्तर्गत दानदाता के पक्ष में कर मुक्त होगा, बशर्ते उसकी रकम प्रावधान में निहित सीमा से अधिक न हो।

यह कर मुक्ति तारीख 1.4.1999 से 31.03.2002 तक वैध है।

ह०
(पी०के०पाण्डेय)
आयकर आयुक्त
वाराणसी

पत्रांक आयुक्त/62/मुख्यालय-II/317/99-2000 दिनांक : 1-11-99

(सीताराम वर्मा)
आयकर अधिकारी (मुख्यालय-II)
कृते आयकर आयुक्त, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

सदर, रामेश्वर, मधुबन, वृन्दावन,
पाँचो शिवाला, गोकुल (बावनबीघा) सारंग

आय-व्यय १९९८-९९

चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट
दीपक यशदीप एण्ड कम्पनी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

BALANCE SHEET AS AT 31.03.1999

Sources of Fund	Amount
Goushala Fund	4,99,368.20
Capital Fund	1,56,89,642.44
Current Liabilities	14,54,816.05
	1,76,43,826,69
Application of Fund	
Fixed Assets	1,46,42,087.44
Investments	3,12,600.00
Live Stock	15,83,366.00
Inventories	2,14,932.82
Sundry Debtors	60,620.40
Advances	6,32,315.00
Security Deposits	45,331.00
Cash & Bank Balances	1,52,574.03
	1,76,43,826.69

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1999

A. Income	
Profit from Rameshwar Branch	76,469.47
Profit from Sadar (Golghar) Branch	1,10,515.51
Interest on S/B. A/C.	518.00
Sub Total 'A' :	**1,90,502.98**
B. Expenditure	
Statutory Audit Fees	10,500.00
Loss from Bawan Bigha Branch	6,99,409.74
Loss from Rameshwar Branch	—
Less from Rathyatra Branch	—
Sub Total 'B' :	**7,09,909.74**
Excess of Expenditure over Income	**5,19,406.76**

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)
Proprietor

PLACE : VARANASI
DATED : 25.10.1999

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

BAWANBIGHA BRANCH

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1999

		Amount
A. Income		
By	Agricultural Receipt	11,38,644.35
"	Sale of Gobar	20,100.00
"	Sale of Milk	32,44,333.50
"	Donation	
	-General	20,921.00
	-Specific	—
"	Sarang Agricultural Receipt	17,720.00
"	Go-grass	7,400.00
"	Go-vardai	3,730.00
"	Sale of wood	2,285.00
	Sub Total 'A' :	**44,55,133.85**
B. Expenditure		
To	Agricultural Expenses	3,26,559.23
"	Pashu Ahar Expenses	25,54,858.28
"	Pashu Medical Expenses	1,56,609.78
"	Daily Wages	
	-Agricultural	—
	-Milk Production	2,78,547.27
"	Salary	
	-Agricultural	1,81,334.00
	Milk Production	—
	-Medical	54,529.00
	Bagwani	36,403.00
	-Administrative	1,07,753.50
"	Diesel Expenses	73,253.30
"	Khatal Expenses	3,28,782.00
"	Tractors Repairs	37,448.68
"	Moped Repairs	1,344.00
"	Scooter Repairs	145.00
"	Pump Repairs	490.00
"	Tempo Repairs	3,430.00
"	Petrol Expenses	10,760.00
"	Conveyance Expenses	—
"	Electricity Charges	97,903.40

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

To	Repairs & Maintainance	3,477.00
"	Bullock Cart Repairs	12,903.20
"	Telephone Expenses	5,709.50
"	Printing & Stationery	19,644.80
"	Staff Welfare	46,317.29
"	Legal Expenses	1,367.00
"	Sarang Expenses	26,251.00
"	Cycle Repairs	13,022.95
"	Miscellaneous Expenses	15,236.00
"	Bagwani Expenses	5,111.50
"	Lagan Expenses	1,712.23
"	Milk Wastage	21,701.00
"	Cartage	—
"	Mess Expenses	98,994.43
"	Gopashtami Expenses	—
"	Internal Audit Fees	4,800.00
"	Land Levelling Expenses	—
"	Development Expenses	8,000.00
"	Mobile Expenses	1,259.00
"	Bank Commission	204.50
"	Travelling Expenses	3,298.50
"	Sundry Expenses	13,219.25
"	Electric Repairs & Maintainance	11,683.50
"	Genrator Expenses	29,325.00
"	Goods Expenses	37,560.30
"	<u>Transfer to Capital Fund</u>	
	<u>Investment in Fixed Assets</u>	
	Tubewell Construction	1,70,803.00
	Water Tank Nirman	—
	Building Construction	2,77,291.70
	Tractor Purchases	—
	Generator Purchases	—
	Moped Purchases	—
	Investment in Live Stock	67,800.00
	Investment in Electric Security	—
	Cooler Purchases	7,700.00
	Sub Total 'B' :	**51,54,543.59**
	Excess of Expenditure over Income (B - A)	**6,99,409.74**

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)
Proprietor

PLACE : VARANASI
DATED : 25.10.1999

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

RAMESHWAR BRANCH

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1999

A. Income

		Amount
By	Milk Sale	8,03,138.15
"	Gobar & Khad	96,535.00
"	Donation	
	-General	30,31,608.97
	-Specific	7,98,350.00
"	Bank Interest	284.00
"	Go-dakhila	8,558.00
"	Golak Peti	29,558.55
"	Agricultural Income	13,52,296.60
"	Other Income	76,930.00
"	Sale of Fruits, Flowers & Veg.	44,756.50
	Sub Total 'A' :	**62,42,015.77**

B. Expenditure

To	Pashu Ahar Expenses	24,64,736.84
"	Pashu Medical Expenses	—
"	Salary	
	-Dairy	64,309.50
	-Agricultural	70,740.50
	-General	1,86,497.65
"	Daily Wages	
	-Dairy	2,01,764.00
	-Agricultural	4,03,529.00
	-General	2,01,766.78
"	Diesel & Mobile Expenses	1,48,243.90
"	Electricity Expenses	1,02,407.09
"	Petrol Expenses	1,046.11
"	Repairs & Maintaince	
	-Building	1,51,099.20
	-Cart	30,962.50
	-Cycle	—
	-Generator	18,239.00
	-General	34,459.74
"	Research Home Renovation (U/G)	1,13,000.00
"	Training of AWP of AWB	43,700.00
"	Village Panchayat Training (U/G)	65,975.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

To Telephone Expenses	25,933.50
" Trainer Experiment Exp. (U/G)	47.250.00
" Literature Brochure & Awareness	15,100.00
" Mess Expenses	89,912.05
" General Expenses	2,281.08
" Tractor & Machinery Expenses	—
" Agricultural Expenses	7,52,244.91
" Harticulture Expenses	—
" Gobansh Expenses	—
" Pooja Expenses	23,696.50
" Milk Distribution Expenses	1,058.50
" Bank Charges	4,319.00
" Manager Training (U/G)	86,200.00
" Legal Expenses	22,624.20
" News Paper & Periodicals	2,096.00
" Printing & Stationery	14,167.30
" Staff Welfare	76,624.95
" Travelling & Conveyance	4,573.44
" Advertisement	—
" Internal Audit Fees	12,000.00
" Consumption & Wastage of Milk	3,977.00
" Office Upkeep & Maintainance	1,271.00
" Festival Expenses	36,710.00
" Pumping Set Expenses	—
" Consumption of Gobar Khad	—
" Gobar Gas Plant Expenses	2,205.25
" Land Levelling Expenses	—
" Vehicle Expenses	—
" Transfer to Capital Fund	
Investment in Fixed Assets	
-Water Tank Construction	1,09,800.00
-Building Construction	9,523.81
-Furniture	1,200.00
-Mobile Ambulance	3,11,000.00
-Pumping Set	2,04,301.00
Sub Total 'B' :	**61,62,546.30**
Excess of Income over Expenditure (A - B)	**79,469.47**

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)
Proprietor

PLACE : VARANASI
DATED : 25.10.1999

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

GOLGHAR (SADAR) BRANCH

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1999

		Amount
A. Income		
By	Sale of Milk	49,740.00
"	Smarika Advertisement	75,000.00
"	Miscellaneous Income	7,436.50
"	Golak Peti	33,038.75
"	Interest	491.37
"	Donation	2,20.062.94
"	Gograss	9,67,136.68
"	Go-dakhila	3,274.00
"	Go-bardai	4,620.00
"	Dividend U.T.I.	17,056.40
"	Godan	19,500.00
"	Advance Milk Coupon	—
	Sub Total 'A' :	**13,97,356.64**
B. Expenditure		
To	Developing Govansh	2,88,169.00
"	Dudharu Govansh	—
"	Thath Govansh	4,29,175.95
"	Pashu Medical Expenses	1,00,786.00
"	Daily Wages	13,672.00
"	<u>Salary</u>	
	-Administrative	53,915.00
	-Developing Govansh	61,382.00
	-Dudharu Govansh	—
	-Thath Govansh	48,827.00
	-Dudharu Govansh Chik	—
	-Pashu Chikitsa	11,318.00
	Milk Distribution	—
"	Stationery Expenses	16,804.00
"	Postage Expenses	—
"	Electricity Expenses	42,995.50
"	Miscellaneous Expenses	51,094.43
"	Telephone Expenses	13,164.00
"	Conveyance Expenses	—
"	Legal Expenses	705.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

To Gopashtami Expenses	44,990.50
" Water Tax	2,772.80
" Smarika Expenses	27,566.00
" Bank Commission	407.20
" Repairs & Maintainance	5,077.00
" Staff Welfare	—
" Cycle Repairs	—
" Building Tax	4,528.60
" Cartage	5,743.00
" Security Expenses	25,604.00
" Milk Wastage	—
" Golak Peti Commission	—
" Milk Distribution Expenses	—
" Internal Audit Fees	7,200.00
" Generator Expenses	1,930.00
" Petrol & Diesel Expenses	5,916.15
" <u>Transfer to Capital Fund</u> <u>Investment in Fixed Assets</u>	—
" Building Construction	23,098.00
Sub Total 'B' :	**12,86,841.13**
Excess of Income over Expenditure (A - B)	**1,10,515.51**

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)
Proprietor

PLACE : VARANASI
DATED : 25.10.1999

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गृहणियों की गो-सेवा

डॉ० सुमन जैन
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
बसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

देव अतिथि तुलसी की पूजा गौओं के हित ग्रास प्रदान।
अर्ध्यदान औ दीपदान ये गृहिणी के षट् कर्म विधान॥

भारतीय गृहिणी के लिए देवोपासना, अतिथि सत्कार तुलसी पूजा, गो सेवा, पितृ पूजा और पारिवारिक परिवेश को प्रकाशमान रखना धर्म है। इसी धर्म के लिए 'गृहिणी गृह मुच्यते' गृहिणी ही घर कहलाती है। वह देवाराधन करती है, आने जाने वालों का सत्कार करती है, वृक्ष वनस्पति की सार सम्भाल रखती है, पशु-पक्षियों को पोषण देती है। उसका सबके साथ लगाव रहता है। माना जाता है कि माता पार्वती द्वारा पोषित एक वृक्ष नष्ट होने पर वे इतनी दुःखी हुईं जितनी कि अपने पुत्र स्कन्ध के मरने से हुई थीं। उनके मनोगत भाव समझकर भगवांन शंकर ने उन वृक्षों की रखवाली के लिए एक शेर शरीरधारी गण नियत कर दिया। जब महर्षि वशिष्ठ की गाय नन्दिनी चरते हुए पार्वती पोषित वृक्षावली के पास पहुँची तो उसी शेर द्वारा दबोच ली गयीं। नन्दिनी चारण करने वाले महाराज दिलीप ने उसे बचाने के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया, क्योंकि महाराज व महारानी उनकी सेवा में नियत थे। महर्षि ने उन्हें समझाया था—

गवां सेवा तु कर्त्तव्या गृहस्थैः पुण्य लिप्सुभिः।
गवां सेवा परो यस्तु तस्य श्रीवर्धतेऽचिरात्॥

गो सेवा करने से भी वृद्धि होती है, पुण्य अर्जित होता है और वंश विस्तार भी होता है। कवि ने कहा है—

"भूतल पर गो दुग्ध बिनु विधि संतति नहिं होत।
शक्ति वीर्य बिनु रुक्ष कृश कुरूप नर होत॥"

गो दुग्ध बिना संतति नहीं होती। विधि वश किसी का जन्म हो भी जाता तो वह रूक्ष, निर्वीय, शक्तिहीन और कुरूप होता है। महाराज दिलीप व महारानी सुलक्षणा को पुत्र प्राप्ति हुई वह पुत्र रघु के नाम से विख्यात हुआ, जिसकी वंश परम्परा में ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम आदि महान् रघुवंशी वीर चर्चित हुए।

भूखों को खिलाना, नंगों को पहनाना, बीमारों की सार-सम्भाल करना गृहणियों का काम है। इस काम में गाय सहायक होती है। इसलिए सानी, पानी, गोबर, दूध निकालना, दही जमाना, मक्खन बनाना आदि सारे कार्य गृहिणीयाँ करती हैं। और अपनी कन्याओं को 'दुहिता' यानि दूध दुहने की कला में निपुण बनाती है। वे जानती है कि दूध पीने से उनकी संतानें स्वस्थ होती है और वह रोगों का सामना करने में सक्षम बनती है।

जरा समस्त रोगाणां शान्तिकृत सेविनां सदा।

दूध का महत्त्व समझ में आने के बाद दही जमाने, मक्खन निकालने, घी बनाने और छाछ तैयार करने की विधियाँ अविष्कृत की, गाय के गोबर से खाद तैयार किया उसे मिट्‌टी के साथ सानकर मकान बनाये। लीपने से घर आँगन स्वच्छ हुआ तो गाय बैल बँधने के स्थान को पवित्रता प्राप्त हुई और समझ में आ गया कि गोधन जीवन के लिए आवश्यक है ही जीविका के लिए भी उपयोगी है।

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युतः'

गोकुल में यशोदा मैया को गाय दुहते देखकर श्रीकृष्ण भाव विह्वल हुए थे, तभी तो कहा गया:

धेनु दुहत देखत हरि ग्वाल
आपुन बैठि गये तिनके ढिग,
सिखवो मोहि कहत गोपाल॥

केवल दूध दुहने पर ही गृहिणीयों ने ध्यान नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिया, किन्तु उन्होंने यह भी देखा कि ऐसे स्थान में गाय रखी जाय, जहाँ कुत्ते, मक्खी, मच्छर, डाँस, चोर, आदि की परेशानी न हो. गोबर, गोमूत्र तथा उच्छिष्ट चारे से स्थान गंदा न दिखायी दे और सफाई करना आसान हो। सर्दी, गर्मी वर्षा के प्रकोप से गाय बचे:

शीत उष्ण अरु वायु बचावे, गृह रचना कीजे,
जामे रोग निकट नहीं आवे, सो प्रकार लखि लीजे।
ओस, नीर, आतपहि बचावे, छापर, पुष्टि करीजै।
एक झरोखा ऊपर राखे, तेहि दुर्गन्ध हरी जै।
मल अरु मूत्र साफ बहु राखे, जहाँ रोग नहि आवे,
या विधि गऊ की रक्षा कीजै सकल सुख उपजावै॥

गाय ठीक समय पर दूही जाय, उसके चरने खिलाने-पिलाने की पूरी व्यवस्था की जाय यह भारतीय संस्कृति को अभिप्रेत रहा, इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने गोचारण किया और देशवासियों ने दूध-दही का लाभ लिया। यह लाभ तभी कम हुआ जब महिलाओं के हाथ से निकाल कर गोवंश को सरकारी, गैर सरकारी, गो सदनों व डेयरियों के हवाले कर दिया। वे गाय से अपना हित तो साध लेते है, गाय की हित चिन्ता नहीं करते। गाय अत्यन्त संवेदनशील प्राणी है, ममतामयी महिला उसे जितना समझ सकती है, उतना कौन समझ सकता है। महिलाएँ गाय की उपेक्षा नहीं सहन कर सकती, लेकिन पुरुष है जो न केवल उनकी उपेक्षा करते हैं, वरन् कतलखानों में उसे काटकर गोमांस का निर्यात करते हैं। उसे रोकने के लिए सन्तों ने आन्दोलन किए, राष्ट्र भक्तों ने गुहार लगायी, गो प्रेमियों ने अपीलें की, लेकिन वे सब नक्कार खाने में तूती की आवाज बनकर रह गयी। तब गाय कातर पुकार को राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने शब्द दिये—

जारी रहा क्रम यदि यहाँ यो ही हमारे ह्रास का—
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न बचने पायेगी
यह स्वर्ण भारत भूमि बस मरघट यही बन जायेगी॥

गाय को बचाना है गोवंश को संवर्धित करना है तो मुद्रा रूपी जड़ धन के पीछे पागल होने वाली मनोवृत्ति बदलनी होगी और गोधन रूपी चेतन धन को प्रतिष्ठित रखना होगा। इसके लिए गृहणियाँ आगे आयें और अपने षट्कर्मो को परिणामप्रद बनायें।

■■

प्राचीनकाल में गोपालकों की उपाधि

५ लाख गायवाले गोपालक के लिए –**उपनन्द**

९ लाख गायवाले गोपालक के लिए –**नन्द**

१० लाख गायवाले गोपालक के लिए–**वृषभानु**

५० लाख गायवाले गोपालक के लिए–**वषभानुवर**

१ करोड़ गायवाले गोपालक के लिए–**नन्दराज**

(गर्भसंहिता, गोलोकखण्ड, अध्याय ४)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

प्रधान कार्यालय : (गोलघर), के० ४०/२५, दुलहिनजी रोड, वाराणसी-२२१००१, फोन : ३३३४१३

शाखाएँ :

सदर (गोलघर) ● रामेश्वर, मधुवन, बृन्दावन, पाँचोशिवाला ● गोकुल (बावनबीघा, पाण्डेपुर) ● सारंग (पहड़िया)

गोपालकों से भेंट-वार्ता

(दूध का व्यवसाय न करने वाले गोपालकों से भेंट-वार्ता)

नाम उम्र शिक्षा

व्यवसाय/प्रोफेसन

पता फोन

---

१. गोपालन कब शुरू किया?

२. गोपालन क्यों शुरू किया?

३. कितने गोवंश आपके पास हैं? गाय बाछा बाछी योग

४. किस नस्ल के गोवंश है?

५. गो सेवा कैसे करते हैं?

(क) स्वयं तथा परिवार के सदस्यों के सहयोग से

(ख) कर्मचारी के सहयोग से

६. गाय को गाभिन कराने की क्या व्यवस्था करते हैं?

७. (क) गाय से एक बियान में कितने दिन दूध प्राप्त होता है?

(ख) इस अवधि में कुल कितना दूध प्राप्त होता है?

(ग) औसत प्रतिदिन कितना दूध प्राप्त होता है?

८. क्या आपके घर में छाछ और मक्खन निकाला जाता है?

९. बाछा का क्या करते हैं?

१०. जिन दिनों गाय दूध नहीं देती है उन दिनों दूध की व्यवस्था कैसे करते हैं?

● ग्वाला से ● डेयरी से ● गोशाला से ● पाउडर मिल्क

११. गाय जब ठाँठ हो जाती है तो उसका क्या करते हैं?

१२. 'गो' की खोराकी में अनुमानित दैनिक व्यय

१३. गोबर का क्या करते हैं?

१४. 'गो' के बीमार होने पर चिकित्सा की क्या व्यवस्था करते हैं?

१५. गोवंश के मरने पर उसका क्या करते हैं?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६. गोपालन के सन्दर्भ में आप स्थानीय निकाय (नगरनिगम, नगरपालिका, टाउन एरिया, ग्राम-पंचायत) तथा स्थानीय प्रशासन से क्या अपेक्षा करते हैं?

१७. आप राज्य तथा केन्द्र सरकार से गोपालन के सन्दर्भ में क्या अपेक्षा रखते हैं?

१८. आप गोशाला से क्या अपेक्षा रखते हैं?

१९. यदि आपकी ठाँठ गाय अथवा अपाहिज गोवंश को गोशाला पालने की व्यवस्था करे तो क्या आप उसके दैनिक खुराकी और रख-रखाव का भार उठाने को तैयार हैं?

२०. धार्मिक आस्था है कि गोपालन से भौतिक सुख-समृद्धि की प्राप्त होती है, आपका अनुभव:

२१. आपका अनुभव :

—देसी गाय के बारे में

—जर्सी गाय के बारे में

२२. आपके अन्य सुझाव

भेंट-वार्त्ता देने वाले सम्मानीय गोपालक के हस्ताक्षर

भेंट-वार्त्ता करने वाले का हस्ताक्षर

नाम...

पता...

फोन नं०...

दिनांक..

(नोट—'गो' शब्द से अभिप्राय गाय और गोवंश से है।)

भेंट-वार्त्ता का प्रारूप आप सब लोगों के पास इस अनुरोध के साथ प्रेषित है कि यदि आप गोपालन करते हों तो स्वयं इसे भरकर भेजें साथ ही अपने परिचित गोपालकों से भी भरवाकर हमारे पास भेजने की कृपा करें। आप इसकी छाया-प्रति अथवा टाइप करवा सकते हैं, सूचना मिलने पर मुद्रित प्रारूप भी हम आपके पास भेज देंगे। हम विभिन्न वर्गों के एक हजार गोपालकों से सर्वेक्षण कराकर समाज के सामने उसका निष्कर्ष प्रस्तुत करना चाहते हैं। आपका सहयोग अपेक्षित है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
१९९८-९९ गौवंश विवरण

	गाय	बैल	बाछा	बाछी	साँड़	योग
सदर गोशाला	८९	१	२५	२	३२	१४९
गोकुल (बावनबीघा)	१२७	५	३७	६८	६	२४३
रामेश्वर	७५	६	३२	३१	१	१४५
मधुबन	९६	१६	५१	९६	६	२६५
वृन्दावन	१०६	१	५०	११	१९	१८७

१९९८-९९ दूध उत्पादन

सदर गोशाला	२,३०२.०० लीटर
बावनबीघा	२,१८,८७८.५०० लीटर
रामेश्वर	५४,८०८.०० लीटर

१९९८-९९ हरा चारा उत्पादन

गौशाला	कुन्तल
बावनबीघा	८३६१.०५
मधुबन	६७९५.३२
वृन्दावन	५८०२.०४
पांचोशिवाला	५७४३.१३
योग	१८३५८.४९
अन्य चारा	१८७२.५१
कुल योग	२०२३१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
वाराणसी

पन्द्रह वर्षों के शासक-मण्डल तथा प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष एवं मंत्री

	शासक मण्डल		प्रबन्धकारिणी समिति	
वि०सं०	अध्यक्ष	मंत्री	अध्यक्ष	मंत्री
२०४२-४३	श्री काशीप्रसाद अग्रवाल	श्री मुरारीलाल केडिया	श्री बृजपालदास	श्री दीनानाथ झुनझुनवाला
२०४३-४४	"	"	"	श्री रघुनाथप्रसाद अग्रवाल
२०४४-४५	"	श्री राजकुमार जैन	"	"
२०४५-४६	"	"	"	"
२०४६-४७	"	"	"	श्री अशोककुमार सर्राफ
२०४७-४८	"	"	"	"
२०४८-४९	"	"	"	"
२०४९-५०	"	"	"	"
२०५०-५१	श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	"	"	"
२०५१-५२	"	"	श्री राधेश्याम खेमका	"
२०५२-५३	"	"	श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा	श्री अरुण आशर
२०५३-५४	"	"	"	श्री देवेन्द्रकुमार बजाज
२०५४-५५	श्री राधेश्याम खेमका	श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा	श्री श्रीगोपाल गोयल	श्री भरत लडिया
२०५५-५६	"	"	"	"
२०५६-५७	"	"	"	श्री रामऔतार अग्रवाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय

श्री श्यामकुमारदास

मेरी प्यारी-प्यारी गाय।
घर की राज दुलारी गाय॥
सब के मन को हर लेती है,
कामधेनु-सी न्यारी गाय॥
मस्ती में जब आ जाती है,
हमको बहुत छकाती गाय॥
जो भी दे दो बड़े स्वाद से,
धीरे-धीरे खाती गाय॥
खुद खाती है रूखा-सूखा,
हमको दूध पिलाती गाय॥
माता जैसा प्यार लुटाती,
इसीलिए मन भाती गाय॥

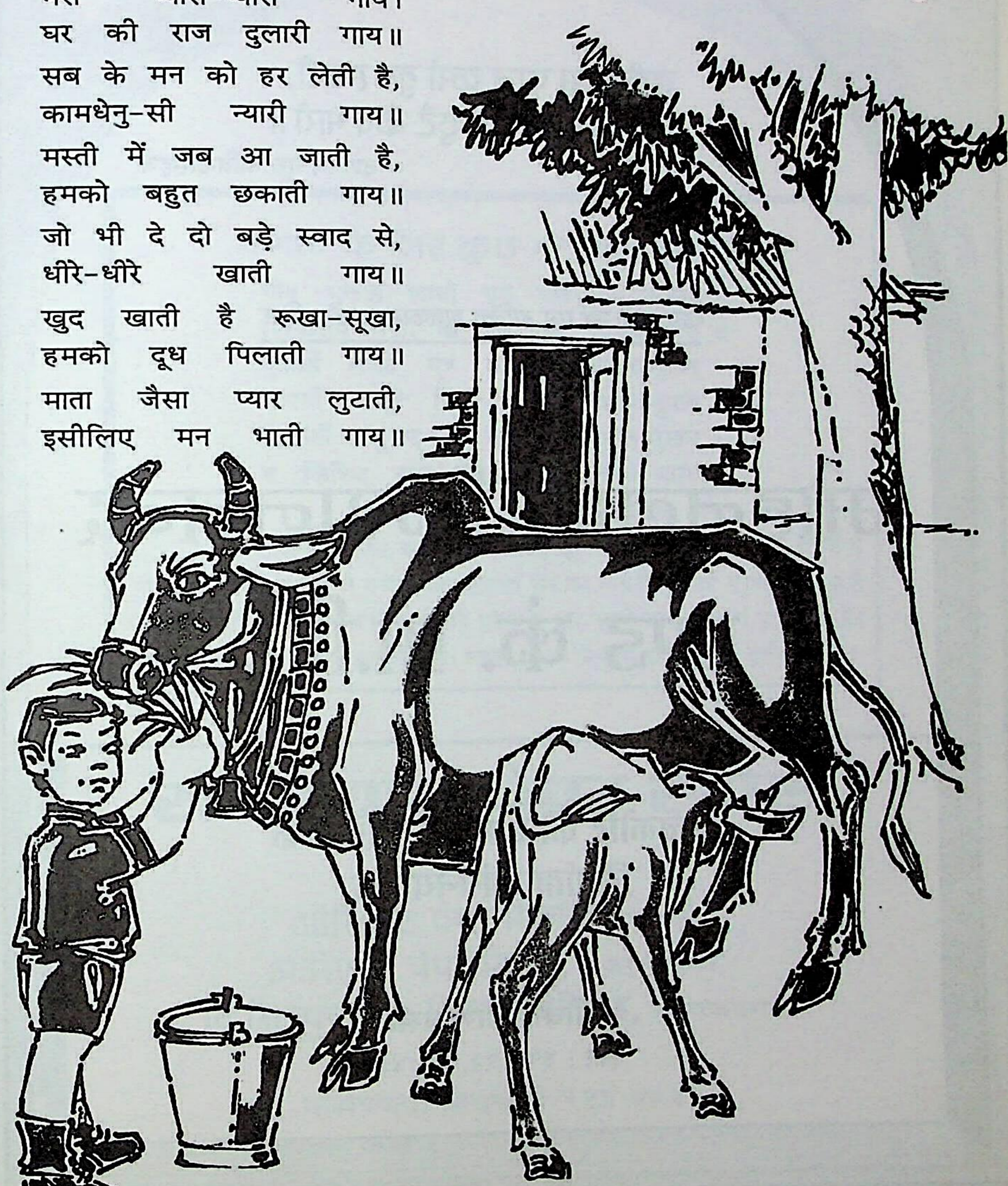

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

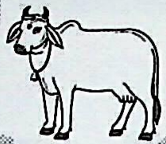

यही आस पूरन करो तुम हमारी,
मिटे कष्ट गौअन, छुटै कैद भारी॥

— दशमेस गुरु गोविन्दसिंहजी

गोपाष्टमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

मोहनलाल किशनचन्द
एण्ड कं. प्रा.लि.

उच्चकोटि की बनारसी साड़ियों के
निर्माता एवं निर्यातक

चौक, वाराणसी

फोन : ३९२६९२, ३२०४१७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोभक्त के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

गोषु भक्तश्च लभते यद् यदिच्छति मानवः ।
स्त्रियोऽपि भक्ता या गोषु ताश्च काममवाप्नुयु ॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवाप्नुयात् ।
धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात् ॥
विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम् ।
न किंचिद् दुर्लभं चैव गवां भक्तस्य भारत ॥

(महाभारत, अनुशा० ८३/५०-५२)

गोभक्त मनुष्य जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है, वह सब उसे प्राप्त होती है। स्त्रियों में भी जो गौओं की भक्त हैं, वे मनोवाञ्छित कामनाएँ प्राप्त कर लेती हैं। पुत्रार्थी मनुष्य पुत्र पाता है और कन्यार्थी कन्या। धन चाहने वाले को धन और धर्म चाहने वाले को धर्म प्राप्त होता है। विद्यार्थी विद्या पाता है और सुखार्थी सुख। भारत! गोभक्त के लिये यहाँ कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

गोपाष्टमी पर्व पर विनम्र शुभकामना

राधेश्याम पेपर स्टोर्स

अधिकृत विक्रेता

ओरिएन्ट पेपर मिल्स, अमलाई
ओरिएन्ट पेपर मिल्स, ब्रजराजनगर
दि सिरपुर पेपर मिल्स लिमिटेड, कागजनगर

कर्णघण्टा, वाराणसी-२२१ ००१

फोन : (कार्यालय) ३५३९५२, ३५३५४६, ३५४८२६ (निवास) ३५०२८४, ३५१४०७, ३६२५६५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments on Gopashtmi

Agrawal Electric Company

Authorised Dealer
L & T Switchgear, Alstom Motors, Philips Lighting, Dowell's, Permacel, Crompton, HPL

Visheshwarganj, VARANASI-221 001
Phone : (Off.) 331670-72, (Resi.) 310735, 311001

SISTER CONCERN

General Electricals

Whirlpool, Samsung, Videocon-Freeze, Sony, Onida, BPL-TV, Video Camera and Washing Machine, Venus Gyser, Milcent Chakki

Bansphatak, VARANASI-221 001
Phone : (Shop) 352055, 352723, (Resi.) 310734, 312001

Agrawal Electric Agencies

Dealer in All kinds of Electrical and Mechanical Goods

Authorised Dealer
GE Power Control, 'Kirloskar' & 'Atul' Diesel Generating Set, Honda Portable Generator Set, Wolf Electrical Portable Tools, Varuna Pump, 'Suguna' Deep Well & Submersible Pump

Machhodari, VARANASI-221 001
Phone : 330080

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

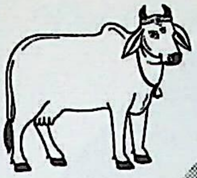

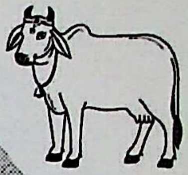

सभी कामनाएँ पूर्ण करने वाली

शास्त्रों में गौ की अनन्त महिमा लिखी है,
उनके दूध, दही, मक्खन, घी, छाछ, मूत्र आदि से अनेक रोग दूर होते हैं,
उनकी सेवा से भोग-मोक्ष कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता,
गोमाता सभी कामनाएँ पूर्ण करती हैं।
महाभारत के अनुशासनपर्व (५१/३३) में कहा गया है–
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम्॥
'गौएँ स्वर्ग की सीढ़ी हैं। गौएँ स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं।
गौएँ समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाली देवियाँ हैं।
उनसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है।'

श्रीनिकेतन सारीज़ प्रा. लि.

द्वारा

सभी गौभक्तों

को

हार्दिक शुभकामनाएँ

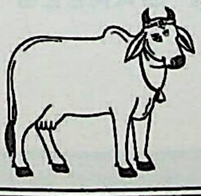

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोग्रास-दान का अनन्त फल

योऽग्रं भक्तं किंचिदप्राश्य दद्याद्
गोभ्यो नित्यं गोव्रती सत्यवादी।
शान्तोऽलुब्धो गोसहस्त्रस्य पुण्यं
संवत्सरेणाप्नुयात् सत्यशीलः॥
यदेकभक्तमश्नीयाद् दद्यादेकं गवां च यत्।
दशवर्षाण्यनन्तानि गोव्रती गोऽनुकम्पकः॥

(महाभारत, अनुशा० ७३/३०-३१)

जो गो सेवा का व्रत लेकर प्रतिदिन भोजन से पहले गौओं को गोग्रास अर्पण करता है तथा शान्त एवं निर्लोभ होकर सदा सत्य का पालन करता है, वह सत्यशील पुरुष प्रतिवर्ष एक सहस्र गोदान करने के पुण्य का भागी होता है। जो गोसेवा का व्रत लेनेवाला पुरुष गौओं पर दया करता और प्रतिदिन एक समय भोजन करके एक समय का अपना भोजन गौओं को दे देता है, इस प्रकार दस वर्ष तक गोसेवा में तत्पर रहनेवाले पुरुष को अनन्त सुख प्राप्त होते हैं।

With Best Compliments From

SADBHAVANA *Enterprises*

Dealers in

BANARASI PLAIN POAT, DRESS MATERIALS & SAREES

Ck. 57/1-4, Govindpura, Chowk, VARANASI-221001
Phone : 353076 (Shop), 310612, 310613 (Resi.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

With Best Compliments On Gopastmi

WORLD CLASS TELEPHONE
AT AN UNBEATABLE PRICE

One Year Warranty

ORPAT®
TELEPHONE

Orpat- India's Largest Telephone Manufacturer by 2000

Ajanta®
QUARTZ

ORPAT®
CALCULATOR

Authorised Depot of
for
VARANASI, SONEBHADRA, MIRZAPUR, BHADOHI, AZAMGARH,
BALLIA, MAU, JAUNPUR, GHAZIPUR

Varanasi Marketing Pvt. Ltd.

42, Hathua Market, Chetganj, VARANASI
Phone : (Office) 351656, (Resi.) 360138
Fax No. : 391098, Mobile No. : 9839056767

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ

गाय हमारे दुग्ध–भुवन की देवी है।
वह भूखों को खिलाती है, नंगों को पहनाती है
और बीमारों को अच्छा करती है।
उसकी ज्योति चिरन्तन है।

सम्पादक-'हार्ड्समैन', अमेरिका

दी इण्डियन टेक्सटाइल्स कम्पनी लिमिटेड

निर्माता तथा निर्यातकर्ता

आधुनिक बनारसी साड़ियाँ, रॉ सिल्क

(कलकत्ता, बंगलोर, बम्बई, दिल्ली, भागलपुर)

ज्ञानवापी, वाराणसी

फोन : ३२१७३५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

वन्दना

साड़ी इम्पोरियम

14 सी, लिन्डसे स्ट्रीट, कलकत्ता-700087

फोन : 2443362, 2450509, निवास : 4791977, 4792056

फैक्स : 033-2447665

सुचित्रा

साड़ीज़ प्रा० लिमिटेड

सीके० 23/27, चौक, वाराणसी-221001

फोन : 320079, 320601

फैक्ट्री

चित्र निर्माण

इण्डस्ट्रियल स्टेट, चाँदपुर

वाराणसी-221106

फोन : 370092, 370594

कार्यालय

"रामायण"

बी० 37/116 जी, पं० बेनीराम बाग

रथयात्रा क्रांसिंग, वाराणसी-221010

फोन: 360861, 360862

निवास : 363864, फैक्स : 0542-360865

Suchitra© PRINTS

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदि आज संसार की सब गौएँ मर जायँ या ठाँठ हो जायँ तो कल ही मानव-जाति पर भयानक संकट आ पड़े। रेल और सड़कें, बैंक, कपास की फसल, इन सबके बिना हम मजे में अपना काम चला सकते हैं, पर गौ के बिना मानव-जाति रोग और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। गौ का हम सम्मान और स्तवन करें जिसके वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों-ज्यों हमलोग ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे, क्रूरता और स्वार्थपरता छोड़ेंगे, त्यों-त्यों उन गौओं की हत्या करना और उनको सताना भी त्याग देंगे, जो हमें बल देती हैं, सुख पहुँचाती हैं और हमारे बच्चों के प्राण बचाती है।

श्री मालकम आर० पेटर्सन
अमेरिकी टेनसी प्रान्त के पूर्व गवर्नर

नारायणदास जगदीशदास
एण्ड कं.

उच्चकोटि की बनारसी साड़ियों के
निर्माता और निर्यातक

सीके० १९/१७, चौक
वाराणसी-२२१ ००१
फोन : ३२०४६७, ३२०४७०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

What Hindalco offers which others don't?

A Long Lasting Relationship

BUILT ON

- Mutual Trust
- Adherence to Delivery Commitment
- Fast Response
- Priority Customer Service

Quality Product and Quality Service is what Hindalco Stands for.

HINDALCO

HINDALCO

Where Success Comes From Commitment

HEAD OFFICE & WORKS : P.O. Renukoot-231 217, Distt. Sonbhadra (U.P.) India

Phone : (05446) 52077-9 Fax : (05446) 52107, 52427

E-Mail : hindalco.rkt@rmj.sprintrpg.ems.vsnl.net.in

ZONAL OFFICES AT : MUMBAI, NEW DELHI, CALCUTTA, BANGALORE & CHENNAI

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतदवै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्।
गाय में सभी देव समाविष्ट हैं। यह गाय का विराट रूप है।

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छात्।
गाय सौभाग्य का चिन्ह है। परमात्मा हमें गाय दें।

धेनुं सदनं रयीणाम्।
गाय ऐश्वर्य का आधार है।

भद्र गृहं कृणुथ भद्रवाचः।
गाय मधुर ध्वनि से घर को शुभ बना देती है।

व्रजं कृणुध्वं सहि वो नृपाणः।
गोशाला बनाओ और मनुष्यों के लिए दुग्धशाला हो।

अयं वो गोइड पोषयिष्णुः।
यह गायों के लिए गोशाला है। यहाँ इनका पोषण होता है।

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना

बिन्नानी चैरिटी ट्रस्ट

43, स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता

मुद्रक : वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi